# सामीअ जा सलोक

अथवा

## वेदान्त सारु

भाङो ब्यिो



प्रकाशकु :
परसराम पारूमल
पारां "सामी" साहित्य

छापो पहियों : फ़बरवरी १९५७

मुल्हु : २-०-० रुपया

मिलण जो हंधु :

**हिन्दुस्तान किताब घरु**

१३, हमाम स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई-१

*Printed by Mansing Chuhermal at the Navrashtra Press, 23, Hamam Street, Fort, Bombay-1 & Published by Parsram Parumal, for 'Sami' Sahitya, 205, Vadala, Bombay-31.*

ॐ

# निवेदनु

## भाङो ब्यो

हिन जे पढ़ियें भाङे में हिननि सलोकनि जे ज़ाण लाइ सलोकनि जो मूलु सिधान्तु ऐ उनहनि जे रूयता महान आत्मा श्री चइनिराय साहिबनि तथा संदनि गुरू महाराज स्वामी मेंघिराज साहिबनि जो थोड़े में जीवन वृितान्तु तथा देवनाग्री अखिरनि में छपाइण जो मकिसदु ऐ छपाईंदर ऐ निष्काम भावसां त्यारु करण जे कार्य लाइ समूरी हकीकत पढ़ियें भाङे में चई आया आहियों ।

हाणे हितिरे हिक मूलु ग़ालिहि जा तमामु जरूरी आहे पाठकनि अग़ियां रखूंथा त हीउ सलोक विलिकुलु ऊन्हे ऐ गूढु वीचारनि द्वारा प्रगटु क्या अथन, जहिंकरे वेदान्ती ज़ाणू ऐ अन्भवीअ जे उपदेस अथवा ज़ाणप खों सवाइ पूरीअ तरह उनजे ग़ुझारत खे ज़ाणी कीन सघन्दो छाकाणि त हीअ हिक अन्भय जी ग़ालिहि आहे ऐ तीक्षण बुधी तथा वीचार वैराग आदी साधननि जी जरूरत आहे जहिंलाइ पढ़ियें भाङे में चयो व्यो आहे ।

उन्खे ज़ाणण लाइ पहिंजे वीचारनि द्वारा ज़ाणणु घुर्जे त जगत छा आहे ऐ कींअ उतप्न थ्यो कींअ लइ थ्यो तथा ब्रहमु ईश्वरु छा आहे ऐ मां जीउ जो शरीरु आहे सो छा आहियां ! इन्हीअ ग़ुझीअ ग़ुझारत खे ज़ाणणु ऐ अन्दर जो अन्दरमें ऊन्हें वीचार सां मननु करण ऐ उन्जो अन्भय करण

सां बूझ उतमु थींदी त अमुलु छा आहे? वसि पोइ उन्जे प्रेम भर्यल रहस्य ऐ सुख रूप ज्योती प्रकास जे अन्भय जां कथनु मुख सां थी नथो सघे जहिं लाइ हिक सलोक में साफ़ चयो अथन:-

मुहंसां चए केरु, ऊन्हीं गालिहि अर्श जी॥
जहिंजो लभे कोन्को, सामी चए सिरु पेरु॥
पर्वत में राई रहे, राईअ मंझि सुमेरु॥
घिरी लधो जहिं घेरु, माहिलु थ्या महिराणमें॥

हिन सलोकमें मथे चयल हकीकत लाइ साफ़ निर्णय थी चुको त इन्हीअ रस्तेई जीउ सभु कुछु प्राप्त करे सघेथो छाकाणि त हिन सलोक मूजिबु ब्यो कुछु आहे ई कोन सभ प्रकार ब्रहमु ई ब्रहमु आहे ऐ सभ में ब्रहमु ई समायलु आहे ऐ उन्जी उतम आहे जींअ व्रिक्षमें फलु फलमें ब्रिजु वरी ब्रिज में व्रिक्षु अहिड़ी रांदि रचे पाण साक्षी थी पयो तमाशो दिसे तंहिंलाइ पुणि हिक सलोक में चवन्था:-

नाना रूप धरे, ख्याली खेले पाणसां॥
ठाहे बुत मिटीअजा, जीएं बालकु रांदि करे॥
रहे पाण परे, नटु नचाए पुतिल्यूं॥

वरी बे हिक सलोक में चवन्था:-

आहियां ऊहोई, जाग्रत स्वप्न सुषोप्तमें॥
ब्रहमणु क्षत्री वैषु, सामी शूद्रु सदे कोई॥
कदी मोटियुसि कीन्की, दिठुमि खिली रोई॥
लखकारे लोई, उजे न अन्भय उन रे॥

सागीअ अवस्था लाइ वरी बे हिक सलोक में चवन्था:-

जाग्रतमें जोई, स्वप्नमें सोई अचे॥
सुम्हें सुषोप्तमें, करे आनन्द ऊहोई॥

तुर्या सा द्वितुर्या, श्री साखि दि॒ए साईं ॥
आत्म ऊहोई, जो चइनी खे चेतनु करे ॥

मथयनि सभिनि सलोकनि मां सलोकनि जे गु॒झारत लाइ न्रिणय थी चुको, जे इन्हीअ गु॒झारत में अन्दरि पढ़ी मंथनु करे उन्जे साड़ जो अन्भय कजे, अहिरीअ तरह ज॒ाणण ऐ वीचार द्वारा समूरनि सलोकनि जे साड़ खे ज॒ाणी सघेथो तंहिं वास्ते तमामु घणा सलोक चया अथन ! हिते जेकद॒हीं उन्हनि जो विस्तारु कयो त ड॒यो हिकु पुस्तकु भर्जी वेंदो तहिंकरे प्रेम्युनिखे वेन्ती आहे त सलोक खे पढ़ी उन्जो ह्रिदय में मनुनु करे ऐ अन्तरि वीचार द्वारां निधिध्यासनु करणसां तहिं पर ब्रहम परमात्मा ब्राकारु सर्वव्यापी ज्योती स्वरूपु जे सर्वत्र व्यापकता जो अन्भय करे पहिंजे भुल्यल स्वरूप खे ज॒ाणी आत्मानन्द में प्यो टु॒ब्कयो दीं॒न्दो जीअं समुन्द्र में अनेक प्रकार जा रतन पदार्थ समायल आहिनि पर उन्जी ग॒ोलहा ऊहोई कंदो जेको तारूं हून्दो तथा ग॒ोल्हे कढन्दो तीअ ब्रहम रूपी रतन खे प्राप्त करण लाइ पुषार्थु (उदमु) करण सां ऐ वीचार रूपी अन्तरि अभ्यास द्वारा खोज करे ज॒ाणी सघेथो त असुलमें छा आहे तहिंलाइ अनेक प्रमाण आहिनि उन्जो जिकिरु ट्रे भाङे जे भूमिका में कयो वेन्दो ।

ही सलोक निष्कामु भावसां त्यारु कया व्या आहिनि तंहिंकरे तयारु कन्दर कहिंजो भी सरीरको नालो कीन दि॒नो व्यो आहे ।

हिननि सलोकनि लाइ वरी छपाइण जो सभ कहींखे अध्किारु आहे ।

बेंगलोरु सिटी
१८-१२-५६

श्रधालू
ॐ तति सति

सामी चैनराइ साहिब

ॐ

# सामीअ जा सलोक

अथवा
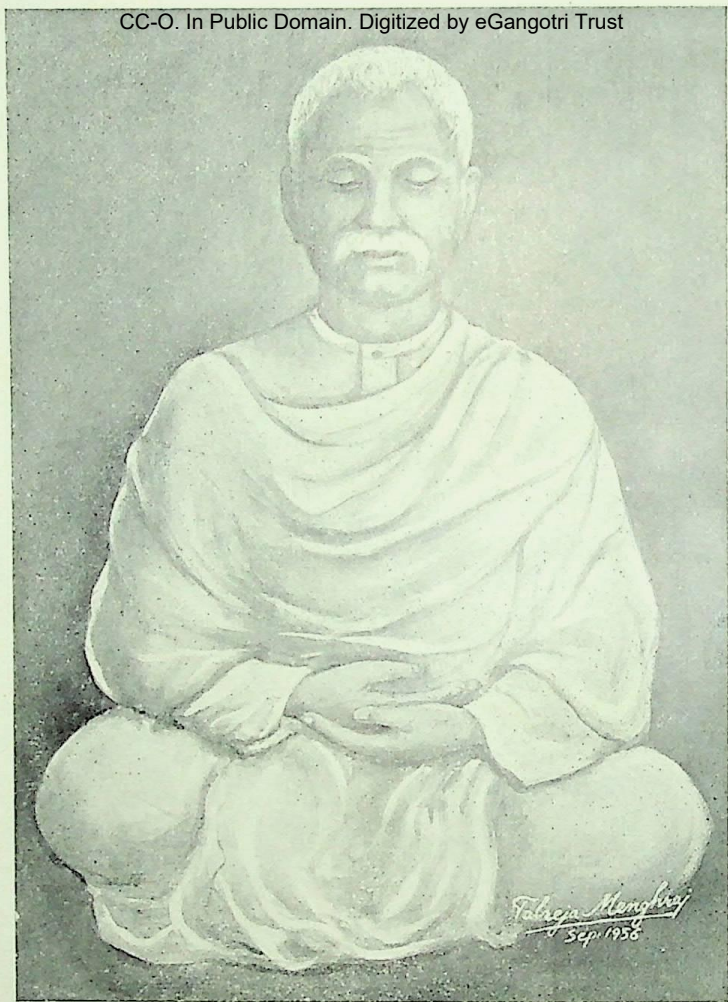
# वेदान्त सारु

भाङो ब्यो

सलोक १६११ खां २९८० सूधी

"ट" खां "म" ताईं

१६११

टाले[१] जहिड़ो टोलु, अथी कोन जगत्रमें ॥
समुझी दि॒सु सामी चए, करे मनु अदो॒लु[२] ॥
भञु भ्रियोई भोलु[३], त सहजि मिलनी सुप्री ॥

१६१२

टाले[४] जहिड़ो टोलु, कोन दि॒ठोसे काथहीं ॥
मनें बठे को महवती, ईहो बेहद बो॒लु[५] ॥
मेटे सभु माहिलु[६] थी, पर्छिन्ता[७] जो पोलु ॥
अन्दरि बा॒हरि दो॒लु[८], सम दि॒से सामी चए ॥

१६१३

टाले[९] जहिड़ो टोलु[१०], कोन्हे लोक प्रलोकमें ॥
साखं दि॒ए सामी चए, नेहीं पुर्षु निगोलु[११] ॥
मिख्यो जहिंजे मन मों, पर्छिन्ता[१२] जो पोलु ॥
ऐनु अभेदु अदो॒लु[१३], माणे सुखु साख्यात जो ॥

१६१४

टेक्यो जहिं मथो, सतिगुर अगि॒यों सिष्यु थी ॥
सहिजे तहिं सेवक जो, सन्सो दुःखु लथो ॥
मोटी अविद्या फास में, सामी कीन फथो ॥
तोड़े करे खथो[१५], तांभी राजा रावल देस जों ॥

---

(१) टरी वञणु–प्रपंच खों पासो करणु (२) निश्चो करे (३) भर्मु–भोलाओ (४) प्रपंच खों टरी वञणु–पासो करणु (५) वचनु (६) अग॒मे थी–मशहूर थी–पधिरो थी (७) नासमातु (८) हिकु (९) प्रपंच खों पासो करणु (१०) पदार्थु (११) साफु करे (१२) नासमातु (१३) पको थी (१४) ग़रीबी.

१६१५

टेक्यो जहिं मथो, सामी साध संगति में॥
तहिंखों कोट जन्म जो, ड्रीह्र[1] तपु लथो॥
कढ़ी ब॒ोले कीनकी, सुली बे अर्थों[2]॥
तोड़े करे खथो, तांभी राजा रावल देसजो॥

११६६

टेढ़ी[3] रमिज़ रखी, नारायण नेणनि में॥
कोर्युनि मों कंहि ह्रिकिड़, लखाए लखी॥
सीत्लु थ्यो सामी चए, बेहद बून्द[4] चखी॥
जीए अन्लु पक्षी, उल्टी चढ़ियो आकास ते॥

११६७

ट्र॒ई लोक रुली, सान्ति न आई जीअ खे॥
मिली साध संगति सां, अविद्या[5] ग॒न्हि[6] खुली॥
पर्ची लधो पहिंजो, अन्भय[7] घरु असुली॥
वेई भास भुली, सामी चए सन्सार जी॥

१६१८

ट्र॒ई लोक रुली, सान्ति न आई जीअखे॥
मिली साध संगति सां, अविद्या[8] ग॒न्हि[9] खुली॥
वेई भास भुली, सामी चए सन्सार जी॥

---

(१) पुञ पाप-जन्म मरण चक्र खों छुटो (२) बिना मतिलब-अजायो (३) तिखी (४) आनंद जी बून्द (५) माया (६) भर्मु (७) आत्म अन्भय (८) मायावी (९) भर्मु लथो.

१६१९

ठगु[1] दीर्घु[2] आयो, साधू थी सन्सार में॥
तहिं सामी जोड़े जीअखे[3], लिवं[4] जादू लायो[5]॥
अमलु पीआरे अन्भई, तनु मनु भुलायो॥
पहिंजो परायो, मालु[6] मेरे[7] थ्यो घरमों॥

१६२०

ठहियो[8] ठहिरायो, देई इशारो[9] अन्भई॥
भोलो भर्मु न रहियो, जो अविद्या[10] उपायो॥
सामी मिली स्वरूपसां, मधुरु[11] मुश्कायो[12]॥
नकी[21] थ्यो आयो, बिना पहिंजे पाणरे॥

१६२१

ठाकुर[14] ठगु ठाही, बेहद बाजी[15] रंग[16] भरी॥
सामी मोहे विश्व सभ, फाहीअ मंझि फाही[17]॥
रहे अलेपु[18] आकास जां, को आशिकु[19] अचाही[20]॥
पूरणु पात्शाही, करे फुर्नें फौज रे॥

१६२२

ठाकुरु विकाणो[21], सामी हथि सन्तनि जे॥
पासे रख्याई प्रीति सां, मन्दाई माणो[22]॥
सेवा करे सेवकु थी, पर्चो सभ पाणो[23]॥
लटिकी[24] लुभाणो, भवंर जां भगुति ते॥

---

(१) ईश्वरु (२) तिखो–पको (३) सरीर जी रचिना कई (४) प्रेमु (५) लगो (६) द्वेतु (७) कढी छदियाई (८) शास्त्रनि जो (९) उपदेसु (१०) मायावी (११) अन्तरि धुनी (१२) आनंदु थ्यो (१३) सभु हिकु पहिंजो पाणमे दिठाईं (१४) ईश्वर (१५) रांदि (१६) अजाइबु (१७) अटिकाई (१८) त्रिलेपु–अलगि (१९) प्रेमी (२०) त्रिइन्छा (२१) वसि थ्यो (२२) वदाई (२३) पाण में जाणी (२४) प्रेम में अची फाथो.

१६२३

ठोके वजाए[१], दिठमि कर्म धर्म सभि ॥
ममत्व[२] जे फाहीअ[३] में, थो सभुको फासाए[४] ॥
साधूअ रे सामी चए, को रोगु[५] न मिटाए ॥
सतिगुरु समुझाए, बन्धन कटे जीअजा ॥

१६२४

ठोके[६] वजाए, दिठा जीअ जहान जा ॥
सभुको मतिलब पहिंजे, बुन्धे गाल्हाए॥
मतिलब रे को महदजनु[७], सामी समुझाए ॥
ममत्व मिटाए, त्रिमलु रहे नभ ज्यां ॥

१६२५

ढोल[८] न छदिजि ढिलो, भौसागर जे भीड़ में ॥
लोड़े[९] लोभ लहरि क्यो, पर्छिन्ता[१०] पलो ॥
कोन्हे कतर जेत्रो, बिगरि तो तबिलो[११] ॥
तुहिंजो नांउ निलो, बांभण जाणे बोहिथो[१२]॥

१६२६

तके[१३] बीठुसि तड़, कहिं पारि लंघायुमि कीनकी ॥
भेष ग्रहस्ती लोक सभि, सामी सूर[१४] सुघर[१५] ॥
तकी साध संगति जी, लिवं सां वढियमि लड़ ॥
सहजे अविद्या[१६] अड़, मिटी वेई मन मों ॥

---

(१) कर्तव्य करे (२) मोह (३) रसी (४) अटिकाए (५) मोह रूपी रोगु (६) जाणी बुझी (७) सन्त जनु (८) असुलु–कुछु–जरो–थोरो (९) गोल्हे (१०) नासमान (११) सरीरु–जीउ (१२) जाणू–सन्तु–ज्ञानी (१३) जाचे दिठमि (१४) सूर्मो (१५) धीर–पहुतल (१६) मायावी अटक.

१६२७

तॾहिं पौदइ कल[1], जॾहिं ईन्दइ अॻयों ओॾड़ा[2]॥
सुकाईन्दइ साह खे, सामी साणु हकल[3]॥
जे हून्दा साणु अमल[4], त रन्दु[5] न पोंदुइ राउरो॥

१६२८

तनमें तम्बूरो[6], वॼे बावन ॿाहरो॥
ॿुधे को ॿांभणु चए, साधूजनु सूरो[7]॥
जहिंखे गुरु पूरो, अचे अजगैबी मिल्यो॥

१६२९

तमां[8] त्रिकाए[9], छॾिया जीअ जहानजा॥
भवनि[10] भौसागर में, कोट जन्म पाए॥
सामी बचो को सूर्मो[11], साधूअ जे साए॥
लिवं सची लाए, चढ़ियो चेतन[12] चिटते॥

१६३०

तमां[13] त्रिकाए[41], विधा जीअ वहण में॥
गोता खाइनि[15] गैब जा, कोट जन्म पाए॥
सामी मिल्यो स्वरूप सां, को नेहीं लिवं लाए॥
जहिंखे जाॻाए, सतिगुर स्वाधानु क्यो॥

---

(१) खबर (२) जमिदूत (३) दर्का (४) ईश्वरी रंगि रतल–ज्ञानी–सन्त–प्रेमी (५) अटक न थींदी–भय न थींदो (६) धुनी (७) पको–ॼाणू (८) घुर्ज–मोथाजी (९) अटिकाए–फासाए (१०) भिटिकनि (११) प्रेमी–ॼाणू (१२) अन्तरि धुनि ते पहुतो (१३) घुर्ज–मोथाजी (१४) फासाए (१५) भिटिकनि.

१६३१

तमां[1] में त्रिकी[2], प्या सभि जीअ जहान जा ॥
गोता खाई गैब जा, साहु खणनि सुदि्की ॥
लंवे चढ़ियो लख्य ते, को प्रेमी पुल्की[3] ॥
समत्व जी मटिकी, जहिं सटे विधी साध संगि ॥

१६३२

त्यागु्यो जहिं अहङ्कारु, तहीं सर्व त्यागु क्यो ॥
सामी सीत्लु जल ज्यां, ठरी थ्यरो ठारु ॥
अन्दरि बा्हरि दह[4] दि्सां, दि्से साक्षी सारु[5] ॥
जा्णे सभु सन्सारु, कल्प[6] पहिंजे जीअ जी ॥

१६३३

त्यागु्यो जहिं अहङ्कारु, पाए ज्ञाति[7] गुरूअ जी ॥
सामी सीत्ल जल ज्यां, ठरी थ्यरो ठारु ॥
अन्दरि बा्हरि दह[8] दि्सां, दि्से दि्सण[9] हारु ॥
जा्णे सभु सन्सारु, कल्प[10] पहिंजे जीअजी ॥

१६३४

त्यागी वैरागी, माया सभि मस्तानु क्या ॥
सामी को वि्रलो बचो, गुर्मुखु वद्भागी ॥
दि्ठो जहिं जागी, पहिंजे अख्यें पाणखे ॥

---

(१) घुर्ज-मोथाजी (२) अटिकी (३) खुशि थी (४) सभकाथे (५) चेतन सता
(६) फुर्नो-बुदिबुदो (७) उपदेसु (८) सभकाथ (९) आत्मसता (१०) फुर्नो.

१६३५

तहिंखे खबर खरी, पेई पद अगम जी ॥
जहिं दीख्या[1] दाति[2] गुरूअ जी, हृदय मंझि धरी ॥
खणी सच्याई सिरतों, सामी भर्म भरी ॥
सुत्हसिधि ठरी, सुम्हियो सुषोप्त[3] सेजते ॥

१६३६

तहिंखे चवनि चरी, चर्या जीअ जहानजा ॥
जहिंखे सार[4] स्वरूप जी, पेई खबर खरी[5] ॥
सुत्ह रहे सामी चए, जीअन्दे जगि मरी[6] ॥
जीएं गरो गरी, पाणी जाणे पाणखे ॥

१६३७

तहिंखे चवनि चरी, चर्या जीअ जहान जा ॥
जा लंवे चढ़ी लख्य[7] ते, तमां[8] तारि तरी ॥
पीउ[9] डिठाई पधिरो, पटे[10] दर्स दरी ॥
सामी अजरु[11] जरी, मुशिके[12] कुशिके कीनकी ॥

१६३८

तहिंखे चवनि चरी, चर्या जीअ जहानजा ॥
पेही[13] डिठो जहिं पाणमें, बेहद ज्योति बरी ॥
अणहून्दे अज्ञान जी, वेई टिकट[14] टरी ॥
सदा रस[15] भरी, सामी रहे स्वभावमें ॥

---

(१) उपदेसु (२) मन्त्रु–सब्दु (३) आनंद अवस्था में (४) आत्मसता (५) पक्की (६) परे थी (७) जाणप ते (८) मोथाजी–घुर्ज (९) ईश्वरु (१०) हृदय शुधि करे डिठाई (११) आत्म सता जाणी (१२) शान्ति–सुनि में अची व्यो (१३) वीचारे डिठो (१४) मान्ता निकिती (१५) सार भरी.

१६३९

तहिंखे चवनि चर्यों, चर्या जीअ जहान जा ॥
जहिंजो संगि साधुनि जे, कार्जु सभि सर्यों[1]॥
चढ़ी ज्ञान जहाज ते, अविद्या सिन्धु तर्यों ॥
सामी अजरु[2] जर्यों, पूरणु जाणी पीअखे॥

१६४०

तहिंखे चवनि चर्यों, चर्या जीअ जहान जा॥
दीओ जहिंजे दीलमें, ध्याईअ[3] बिना बर्यों॥
मुशिके कुशिके कीनकी, महबत मध[4] भर्यों॥
सामी दिसी ठर्यों[5], पहिंजे अख्यें पाणखे॥

१६४१

तहिंखे चवनि चर्यों, चर्या जीअ जहान में॥
दीओ जहिंजे दीलमें, बोध[6] रूपु बर्यों॥
सन्सो आत्म जीअ जो, सामी सभु टर्यों[7]॥
महबत मध[8] भर्यों, सैल[9] करे सन्सार जा॥

१६४२

तहिंखे लखु लानत, विझनि सुजागा[10] सन्त जन॥
जो सामी सचु छदे दे, करे कूड़ी कहवत[11]॥
बोड़े मानुष्य देहिखे, लुड़[12] में देई लत॥
छदे मोहु ममत्व, सूर्यु[13] दिसे न सभ में॥

---

(१) सिधि थ्यो (२) आत्म सता में लय थ्यो (३) द्वैत रहति थ्यो (४) प्रेम जे नशे में लीनु थ्यो (५) आनंद में आयो (६) उपदेसु (७) मिटियो (८) प्रेम जे नशे में लीनु थ्यो (९) सभु सन्सारु पाण में प्रतीत थ्यो (१०) जाणू (११) वादि विवाद (१२) सन्सार में अटिकी (१३) सभमे इश्वर न जाताई.

१६४३

तहिंखे लखु लानत, सन्त विझनि सामी चए॥
जो पण्डतु ज़ाणी पाणखे, रखे हिसु हुजत[१]॥
ब़ोड़े मानुष्य देहि दि॒ब, लुड़[२] में दे॒ई लत॥
करे मनु उपरन्त, सूर्यु[३] दि॒से न सभमें॥

१६४४

तहिंखे लगु कीन, जहिं मनु मारे वसि क्यो॥
तोड़े रहे राज॒ में, तोड़े करे कोपीन[४]॥
पर्चौ दि॒ठाई पाणमें, आत्म पदु प्रबीन[५]॥
सदाई लिवं लीन, सामी सन्से रे रहे॥

१६४५

तहिंजा सभि पर्वाणु[६], ज्ञान ध्यान जप जोगु जगु॥
जहिं मिली साध संगति सां, दि॒ठो पहिंजो पाणु॥
दुःख सुख लाभ अलाभ में, रहे सात्रूतीअ[७] साणु॥
ज़ाणे सभु कल्याणु[८], सदाई सामी चए॥

१६४६

तहीं सभु दि॒नो, जहीं दि॒नो मनु महबूब खे॥
अविद्या भर्मु अन्दर मों, छिकीअ[९] साणु छिनो॥
पाणीअ मंझि भिनो[१०], जीए खेलूणो खंडु जो॥

---

(१) बुर्जाऊ थी (२) सन्सार में अटिकी (३) सर्व आत्म सता खे न ज़ाणे (४) लांगोटी (५) पको–तिखो (६) कबूलु प्या (७) निश्चे सां (८) आनंदु (९) निश्चे सां (१०) मिल्यो.

१६४७

ताउ[1] तिखो आहे, अणहूंदीअ अविद्या सिन्धु जो॥
सामी सभ सन्सार खे, थी वहु[2] में वहाए[3]॥
कहिंजी चले कानका, रह्या बुली बुलु लाए॥
सतिगुरु लंघाए[4], सो लंघे पारि पलकमें॥

१६४८

ताए[5] करे तत्वु[6], जीए सोनारो सोन खे॥
तीए सतिगुर सिष्य जो, मेटे मोहु ममत्वु॥
आणे घूरम[7] घरमें, भेटाए[8] भगिवन्तु॥
सामी सभु जगतु, आहे जहिंजे आसरे॥

१६४९

ताए[9] करे तत्रु[10], जीए सोनारो सोन खे॥
तीए सतिगुरु सिष्य जो, मेटे मोहु ममत्रु॥
जगत्रु दिसे जानीअ में, जानीअ मंझि जगत्रु॥
सामी करे सप्तु[11], साख दिए साक्षी बणी॥

१६५०

तारि[12] मंझों तारे, सभखे संगु साधूअ जो॥
कहिंखे छदे कीनकी, लाए[13] लिवं लारे॥
ईए चवनि था अन्भई, पण्डत पुकारे॥
निजु निश्चो धारे, सामी मिले को सूर्मो॥

---

(१) जोरु–दाबु (२) जारमें (३) अटिकाए (४) रस्तो देखारे (५) गर्मु करे (६) शुधु करे (७) हृदय घरमें (८) देखारे–अन्भय कराए (९) गर्मु करे (१०) शुधु करे (११) सचो करे–निश्चे सां (१२) बुदण खों बचाए (१३) प्रेम में आणे.

१६८१

तालिह[1] बन्द तक़दीर[2], गुणनि कान अन्दरमें ॥
पर्चो लधी जनि पहिंजी, पूरणु पाकु[3] जागीर॥
माणिनि मौज मुक्ति जी, सामी चढ़ी[4] सीर॥
सभखे ड्रेई धीर[5], पारि लंघाइनि पातिणी॥

१६८२

तालिह[6] बन्द तौफ़ीक[7], रखनि सभ सामी चए॥
चढ़या अन्भय अछते, लंवे लोकां लीक[8]॥
तलब[9] बोलिनि कीनकी, कहिंसां वञी वधीक॥
नेणनि खों नज़दीक, सुत्ह डि॒सनि सुप्री॥

१६८३

तिखो तीबरु[10] वहु[11], अथी अविद्या[12] सिन्धु जो॥
पुठी ड्रेई पाणखे, सामी सूर[13] न सहु॥
पुछु तनींखों प्रेमसां, पारि लंघण जो पहु[14]॥
अठई पहर अलहु, रहे जन्जे रूहमें[15]॥

१६८४

त्रिण[16] ओले[17] भगवानु, मूर्खु फोले दू॒ह डि॒सां॥
समुझ न रखे जीअ में, जीअ बा॒लकु नादानु॥
सामी सिरते भानु[18], अन्धो डि॒से कीनकी॥

---

(१) तौकिली (२) प्रालब्धु (३) शुधु अस्थानु (४) ऊच पद ते (५) भर्वसो (६) प्रेमी–ज्ञानी–सन्त (७) ताकत–शकिती (८) लज॒ (९) इन्छा–घुर्ज (१०) जोर्दार (११) प्रपंचु (१२) माया जे समुद्रजो (१३) दु:ख (१४) रस्तो (१५) हृदयमें (१६) थोरो (१७) दु:खु–तकिलीफ़ (१८) सूर्यु.

१६५५

त्रिष्णा[1] घटाए, सो जग्यासी[2] जग्में ॥
मिली साध संगति सां, मुहुं मढ़ीअ[3] पाए ॥
गुर्मु[4] ड्रिसे पाणखे, अविद्या[5] पटु[6] लाहे ॥
ममत्व मिटाए, सामी सबुर में रहे ॥

१६५६

त्रिष्णा[7] जीअ अनेक, विधा वाच[8] वहणमें ॥
डुड्यूं खाइनि नर्क जूं, बिना वैराग्य[9] विवेक[10] ॥
सामी समुझू सूमौं, करे अन्भय वित्रेक[11] ॥
हृदय रखी टेक[12], माणे मौज मुक्ति जी ॥

१६५७

त्रिष्णा[13] तारि[14] नदी[15], सदा वहे तिख[16] ताव सां ॥
तहिंमें[17] वाघू मछ कछ, सन्से सन्बुन्धी ॥
सामी विझे कीनकी, पहिंजो पाणु बुन्धी ॥
केवल हिक कन्धी, वठे साध संगति जी ॥

१६५८

तुहिंजे अशिक अलगु, मनु मोहे क्यो सुप्री ॥
खयों वञे खामोश[18] दे, पोइ न विझे पगु ॥
जाणी बेहद बांवरो, खिली खिन्जाए[19] जगु ॥
सामी चए सहरगु[20], मिली ड्रिए मुईअ खे ॥

---

(१) इन्छा–घुर्जे (२) अधिकारी (३) हृदय रूपी शीशे में पाए (४) गुर्मुखु–गुरसिषु–मोक्ष जे इन्छा वारो (५) मायावी (६) पर्दो (७) इन्छा (८) तूफान जे वहकरे में (९) नासुवन्तु जाणणु–मिथ्या समुझणु (१०) वीचारणु (११) तुर्तु (१२) आसिरो (१३) इन्छाऊ–घुर्जूं (१४) भर्पूरि (१५) मन रूपी नदी (१६) तिखे जोर सां (१७) संकलप विकिलप शत्रू मित्र कुटम्बु सन्बुन्धी. (१८) आनंद दे (१९) पाण दे छिके (२०) स्वर्गु.

१६७९

तुहिंजे अशिक[1] फटे[2], जानी[3] जीउ दुःखी क्यो ॥
रोई रतु अख्युनि मों, रात्यां द्दीहं रटे[4] ॥
ईएं अध मोअनि खे, वेठें कोहु सटे[5] ॥
मिली दुःखु कटे, सुततु में सामी चए ॥

१६८०

तुहिंजे अशिक[6] फटे[7], जानी[8] जीउ दुःखी क्यो ॥
रोई रतु अख्युनि मों, रात्यूं द्दीहं रटे[9] ॥
करे महिर मुअनि ते, अची दुःख कटे ॥
विहे कीन सटे[10], सुततु मिलु सामी चए ॥

१६८१

तोखे जे आहे, सची सिक प्रयनि जी ॥
त छदे लोक लजा खे, पउ पधरि[11] काहे ॥
सामी चढु सूरीअ[12] ते, फुर्णो रे फाहे ॥
पटु पर्दो लाहे, प्रत्क्षु दि्सु पूरण खे ॥

१६८२

तो बिनु रहे कीअं, ब्रिहनि[13] अशिक[14] लपेट्यो[15] ॥
तनु मनु धनु भुलाए, दि्नो तुहिंजे नीहं ॥
सिकन्दे थ्यरा द्दीहं, आउ दया रखु दिलिमें ॥

---

(१) प्रेम (२) अटिकाए (३) ईश्वर (४) घुमें–भिटिके (५) छदे (६) प्रेम (७) अटिकाए (८) ईश्वर (९) भिटिके–घुमें (१०) छदे (११) मैंदान में–पधिरो थीउ (१२) दस्वे द्वार रूपी फाहे ते चढु (१३) प्रेमिणि (१४) प्रेम (१५) अटिकायो.

१६६३

तोड़े नितु चएं, छ चारि अठारह मुखसां॥
तप तीर्थ साधन करे, गुफा मंझि रहें॥
बिना साध संगति जे, वहण[1] मंझि वहें[2]॥
सामी कीअं लहें? पुठी डुई पाणखे॥

१६६४

तोड़े लख लगुनि, चोटां[3] हर्फ़ हिसाब[4] जूं॥
गुर्मुख ग्राहक गुणजा, पलक न पासो कनि॥
भलो जाणी पहिंजो, सन्मुखु सदा रहनि॥
सामी समुझो जनि, पको पूरु[5] प्रयनि जो॥

१६६५

थकीअ[6] लधो थाउं[7], अचे दरि दोसनि जे॥
प्रयनि[8] धर्यो पहिंजो, निमाणीअ ते नाउं[9]॥
सुका सर सावा थ्या, उठे घुघि[10] ग्राउं॥
आजी थ्यरसि आउं, सामी सभ दुःखनि खों॥

१६६६

थकीअ[11] लधो थोकु[12], सुपेर्यनि जे सिकजो॥
मिटी व्यरो मन मों, सामी सन्सो सोकु॥
मंझे लोक अलोकु, डिठो पदु प्रयनि जो॥

---

(१) अजाये (२) घुमे (३)तकिलीफां (४) मेलाप जे रस्ते में–इन्छावान (५) रस्तो–दगु (६) भटिकी भटिकी (७) ठिकाणो-दगु (८) मालिक–ईश्वर (९) कृपा करे (१०) अन्हद सब्दु सरीर रूपी घर में हले (११) भटिकी भटिकी (१२) पको–वडो.

१६६७

थकी[1] पेई थाइं[2], अचे दरि दोसनि जे ॥
अख्युनि में आजुज़ि[3] खे, जानीअ डि़नी जाइं[4]॥
करे अर्दास अदब सां, सामी भोले[5] भाइं ॥
पूरी प्रीति निबाहि, पासे थीउ न हिकु पलु ॥

१६६८

थकी[6] पेई थाइं[7], ममत्व रही न मन में ॥
जगत्रु डि़ठो जगदीस्व में, जगदीस्व डि़ठो जग माहिं॥
गाल्हि चवण जी नाहिं, चवां कीअं ज़बान सां ॥

१६६९

थकी हीअ थी रूइ[8] चए, भवण[9] मंझि भई ॥
भरी[10] जा भर्म जी, सा लाथी कीन कहीं ॥
जडी प्रयनि पाण खई[11], तडी निमाणी निहालु थी ॥

१६७०

थके[12] थाउं[13] लधो, सहजे सुपेर्यनि जो ॥
निमाणो त्रिपक्ष थी, जहिं सस्ता सागु रधो ॥
खाराए खावन्द खे, क्याई जीउ थधो ॥
बांभण हिकु बधो, पहिंजो नूरु त्रिबाण[14] सां ॥

---

(१) भिटिकी भिटिकी (२) ठिकाणे (३) नीज़ारी कंदरि (४) अन्भई ज्योति (५) बिना भोले (६) भिटिकी भिटिकी (७) स्थान ते पहुती (८) रोई (९) सन्सारी भोले में भिटिकी (१०) पाछाओ रूपी बोझो भरी (११) कृपा कई (१२) भिटक्यल (१३) टिकाणो-घरु (१४) आनंद में.

१६७१

थम्भा[1] ऐ थूण्यूं, जोगी[2] जेसल्मेरि जा ॥
गडि॒या[3] गोर्खनाथ सां, खाई कुम कूण्यूं ॥
गा॒ल्हियूं कनि अगम जूं, सामी सलूण्यूं ॥
कहिं प्रेमीअ परूण्यूं, अन्तरि मुखु अभेदु थी ॥

१६७२

थ्यरो जन्मु सफलु, मिली साध संगति सां ॥
जागि॒यो सहजि जतन रे, पुर्षार्थु प्रब॒लु[4] ॥
मिटी वेई मन मों, सामी ममत्व मलु ॥
आत्म पदु अचलु, पर्ची लधो पाणमें ॥

१६७३

थ्यरो साधूअ संगु, ब्या सभि संगु छदे॒ ब्या ॥
अचे अजगैबी लगो॒, लूअं लूअं आत्म रंगु ॥
ममत्व मिटाए मन जी, सामी रहे निसंगु ॥
छाखों घुमे झंगु, जहिं घर मों लधा सुप्री ॥

१६७४

थ्यो जीउ अन्धो, अविद्या[5] मंझि अचे[6] करे ॥
दे॒ई वेठो पाणहीं, अगि॒यों सुख सन्धो[7] ॥
रात्यूं दींहं धन्धो, सामी रचे सखिणो ॥

---

(१) कुबा॒ ऐ कुबि॒यूं (२) पुराणा अस्थान सन्तनि जा (३) मिल्या (४) तिखो (५) मायामें (६) अटिकी करे (७) अटक.

१६७५

दसे छदाईनि, था कर्म साधूजन सिष खे ॥
जुगति सां जोड़े करे, अन्तरि मुखि लाईनि ॥
अविद्या कोट जन्म जी, मन मों मिटाईनि ॥
सामी लखाईनि[1], आत्म पदु अख्युनि सां ॥

१६७६

दाढी देवाली, अविद्या दाइणि दुन्दरी ॥
जहिं फुरे सभि फ़कीर क्या, खलि खलि सां खाली ॥
सामी को साबितु रह्यो, आशिकु अकाली ॥
पूरे गुर पाली, दया जहिंते दर्स[2] जी ॥

१६७७

दाढी देवाली, माया दाइणि दन्दरी ॥
सामी क्यो जहिं सभखे, क्रिपणु[3] कंगाली ॥
विरले को गुर्मुखु रहे, खलि खलि[4] खों खाली ॥
लूअं लूअं में लाली[5], प्रत्क्ष दिठी जहिं पीअजी ॥

१६७८

दाढी देवाली, माया दाइणि दुन्दरी ॥
सामी क्यो जहिं सभखे, समुझ खसे खाली ॥
को गुर्मुखु ज्ञानी रहे, खलि खलि[7] खों खाली ॥
लूअं लूअं में लाली[8], प्रत्क्षु दिठी जहिं पीअजी ॥

---

(१) देखारिनि– जाणाइनि (२) महिर जी (३) सुमो (४) खुटिप्टि (५) सता (६) तिखी (७) खटिप्टि (८) सता.

१६७९

ॾाढी ॾेवाली, माया ॾिठी मोहिणी ॥
लुटे क्याईं लोकजो, खजानो[१] खाली[२] ॥
सामी को सूरो[३] बचो, आशिकु[४] अन्दाली ॥
पूरे गुर पाली, द्या जहिंते दर्स[५] जी ॥

१६८०

ॾाढी ॾेवाली, माया मुठी मोहिणी ॥
जहिं फुरे सभि फकीर क्या, खलि खलि[६] सां खाली ॥
सामी को साबितु रह्यो, आशिकु[७] अकाली[८] ॥
पूरे गुर पाली, द्या पहिंजे सिषते ॥

१६८१

ॾाढी लायइ लोर[९], जानी मुहिंजे जीअखे ॥
सच्यमि सुख सन्सार जा, तोतों घोरे घोर ॥
उथन्दे वेहन्दे निंड्रमें, ओर्यां तुहिंजी ओर[१०] ॥
अचे मिलु चित चोर, सुतत मंझि सामी चए ॥

१६८२

ॾाढो मनु छली, जहिं क्यो ॾुख्यो ॾेहखे ॥
जहिं खसे वदी खिलसां, सभजी मति भली ॥
विृलो को गुर्मुखु बचो, ॿांभणु चए ॿली[११] ॥
जहिंखे सन्धि[१२] सली, सतिगुर सुख अगम[१३] जी ॥

---

(१) स्वास–उमिरि (२) खलासु क्याई (३) सन्तु–ज्ञानी (४) प्रेमी पको (४) स्वरूप जे ॼाण जी (६) खटिष्टि सां मानुष्य सरीरु विञायो (७) प्रेमी (८) जहिं काल खे जीत्यो (९) पचर–इन्छा–प्रेमु (१०) तुहिंजी यादिगीरी (११) सूर्मो (१२) दग–ठिकाणो–रस्तो (१३) अथाह–अकथु–अणॻण्यो.

१६८३

ड़ातर पाण ड़िना, चारि[१] पदार्थ जन्खे ॥
कई तनि कामिलु थी, जगत्र खों जर्ना[२] ॥
सामी सदाई रहनि, भाणे[३] मंझि भिना[४] ॥
जीए हाथी मकिना, झूलनि मध[५] मस्तीअ में ॥

१६८४

ड़िए ड़ेखारी[६], माया मोहे मूढ़नि[७] खे ॥
समुझ खसे सामी चए, करे ड़िलि कारी[८] ॥
रहे अलेपु आकास जां, को भाग्यवानु[९] भारी[१०] ॥
जहिंखे पीआरी, सतिगुर सुर्की सार जी[११] ॥

१६८५

ड़िठा सभि दुःखी, सान्ति वराए जगत्रमें ॥
ज्ञानी ध्यानी ग्रहस्ती, माया पात्र मुखी ॥
कहिंखे छदे कीनकी, चिन्ता चाह भुखी ॥
ध्यरा सन्त सुखी, सन्से रे सामी चए ॥

१६८६

ड़िठा सभि मगनु, पाणोवाणे हालमें ॥
मने वेठा मन में, नाना भांइ मननु ॥
कोर्युनि में को हिकिड़ो, रहे अलेपु अननु[१२] ॥
जहीं जीत्यो मनु, सामी सन्तनि सां मिली ॥

---

(१) धर्मु अर्थु कामु मोक्षु (२) पासो–अटक (३) जा बणी अचे (४) राजी (५) मस्तीअ जे नशेमें (६) तमाशो (७) बेवकूफनि खे (८) कूड़ कप्ट प्रपंच फासाए कारो करे (९) भाग्यशाली (१०) तिखो (११) सच्चे स्वरूप जो अन्भय करायो (१२) हिकरसु–सदाई त्रिलेपु.

१६८७

दि॒ठी जनि चखी, सामी सुर्की सचजी ॥
अविद्या पिण्डु मथेतों, लाहे तनि रखी ॥
लूअं लूअं मंझि लखी[1], सता सभ साक्षीअ जी ॥

१६८८

दि॒ठी जहिं खाई, मिठाई महबतजी ॥
मिटी तहिंजे मन मों, पचर पराई ॥
पाणु वराए पाण सां, लिवं सची लाई ॥
सामी सदाईं, माणे सुखु स्वरूपजो ॥

१६८९

दि॒ठी जहिं चखी, सिल अलूणी[2] समजी[3] ॥
पछिन[4] पिण्डु मथे तों, लाहे तहिं रखी ॥
सामी मरे[5] न मति रे, जगु॒त्र मंझि जखी[6] ॥
जीए अनलु पखी, उल्टी चढ़े आकास ते ॥

१६९०

दि॒ठी जहिं चखी, सिल अलूणी[7] सम[8] जी ॥
मिटी तहिंजे मन मों, तमां ऐं तलखी[9] ॥
वर्तें विधि वीचार सां, सची रहति रखी ॥
मरे कीन[10] मखी, सामी चए सन्सार में ॥

(१) जा॒ती (२) बिना स्वाद–बिना रस (३) हिकरसु–हिकु समुझणु (४) नासमान (५) अटिके–फासे (६) अटिकी (७) बेस्वादु–बिना रस (८) बिना भेद भाव–सभ खे हिकु समुझणु (९) बुर्ज ऐं तलब (१०) वरी जन्म मरण में कीन अचे.

१६९१

द्विठी जहिं चटे, सिल अलूणी[1] सम[2] जी॥
कढी तहिं कल्प[3] जी, मुंढो[4] पार पटे॥
रात्यूं ड्रीहं रहति सां, रम्ता रामु रटे[5]॥
महबत कीन मटे, स्वप्न में सामी चए॥

१६९२

द्विठी जहिं चटे, सिल अलूणी[6] सम[7] जी॥
तहिं अविद्या वड्राईअ[8] जो, विधो पिण्डु[9] सटे[10]॥
नकी थधीअ में वधे, नकी गर्मीअ में घटे॥
कल्प[11] सभ कटे[12], सामी चढ़ियो सीरते[13]॥

१६९३

द्विठी जहिं चटे, सिल अलूणी[14] समजी[15]॥
भर्मनि जो पिण्डु[16] मथे तों, विधो तहिं सटे॥
नकी वाधे में वधे, नकी घाटे में घटे॥
सामी सभु वटे[17], पूरणु ज्ञाणी पीअखे॥

१६९४

द्विठी जहिं चटे, सिल अलूणी[18] सम[19] जी॥
सो पूरो ज्ञाणी पाण खे, सामी सभ वटे[20]॥
नकी वाधे में वधे, नकी घाटे मंझि घटे॥
वेठो कल्प कटे, सुञ वसवं[21] जे विचमें॥

---

(१) बिना रस–स्वाद (२) भेदभाव रहितु (३) प्रपंच (४) जर खों पार कढी (५) लयलीन्ता में रहे (६) बेस्वादु (७) बिना भेदभाव (८) माया जे वड्राईअ जो (९) बोझो (१०) लाहे छद्वियो (११) कल्पा–प्रपंचु (१२) छद्वे (१३) ऊच पद ते (१४) बेस्वादु (१५) बिना भेदभाव (१६) बोझो (१७) द्विसे–समुझे (१८) बेसवादु (१९) बिना भेदभाव (२०) द्विसे–समुझे (२१) दस्वे द्वारमें लीनु थ्यो.

१६९५

ॾिठी जहिं चटे, सिल अलूणी[१] सम[२] जी ॥
सो वेठो अन्भय तखित[३] ते, मांहिं सां मिृच[४] मटे॥
नकी वाधे में वधे, नकी घाटे मंझि घटे ॥
सामी सभ वटे[५], पूरणु ॾिसी पीअ खे॥

१६९६

ॾिठी जहिं चटे, सिल अलूणी[६] समजी[७]॥
सो सुखी थ्यो सामी चए, कल्प[८] सभ कटे[९]॥
नकी वाधे मंझि वधे, नकी घाटे मंझि घटे॥
रम्ता रामु रटे[१०], लूअं लूअं लालु गुलालु थी॥

१६९७

ॾिठी जहिं चटे, सिल अलूणी[११] साध संगि॥
पचीं सो पूरणु थ्यो, सामी सभु वटे[१२]॥
नकी वाधे मंझि वधे, नकी घाटे मंझि घटे॥
कल्प[१३] कालु कटे[१४], सुम्हियो सुषोप्त[१५] सेजते॥

१६९८

ॾिठी महां प्रलय, अन्भय जे अख्युनि सां॥
आत्म जल असगाह[१६] रे, ॿी का रही न शइ॥
सामी पाण अभय, वेठो ॿोध[१७] बृिक्ष में॥

---

(१) बेस्वादु (२) भेद रहितु (३) आनंद अवस्थामें (४) सन्सारी पदार्थ रूपी मांहिं छदे॒ कष्ट रूपी मिृच वठी वेठो (५) ॾिसे–समुझे (६) बेस्वादु (७) भेद रहितु (८) प्रपंचु (९) छदे॒ (१०) जपे (११) बेसवादु (१२) हासुलु करे (१३) प्रपंचु (१४) छदे॒ (१५) आनंद अवस्था में लीनु थ्यो (१६) अथाह (१७) उपदेसक.

१६९९

डि॒ठी रंग[१] भरी, मूर्त महबूबनि जी॥
जीअण मरण दुःख सुख जी, अपदा सभ हरी॥
सामी जीउ ठरी, सुम्हयो सुषोप्त[२] सेजते॥

१७००

डि॒ठी सभोई सुञ, साधूअ रे सन्सार में॥
म्रिघ त्रष्णा जे जलमें, सामी लधी न उञ[३]॥
जागु॒या पूरण पुञ, तदि॒ साधूअ जो संगु थ्यो॥

१७०१

डि॒ठे[४] दे॒खारी, अन्भय लख्य[५] अख्युनि सां॥
जहिंमें उपजे लीनु थिए, सामी विश्व सारी॥
सूक्षम खों सूक्षमु अथी, भारीअ खों भारी॥
मिली न्यारी[६], अन्दरि बा॒हरि[७] आकास जां॥

१७०२

डि॒ठे[८] दे॒खारी, जहिंखे पूरणु पद्वी॥
समुझी तहिं सामी चए, हृदय मंझि धरी॥
सटे विधाईं सिरतों, पर्छिन[९] पिण्डु[१०] भारी॥
सम्ता[११] सचारी, मुखि रखी मौजां करे॥

---

(१) आनंद भरी (२) आनंद में अची व्यो (३) न मिल्यो (४) सन्तु–ज्ञानी–महन्तु–सतिगुरू (५) ज॒ाणप अन्भई (६) न्राली (७) अन्दरि बा॒हरि सर्व व्यापी (८) सन्तु–ज्ञानी (९) नासमानु (१०) बो॒झो (११) बिना भेद.

१७०३

द्ठिो जनि दीदारु, सामी सुपेर्युनि जो॥
चढ़ियो रहे चित ते, तनीखे तकिरारु[1]॥
उतिरे कीन खुमारु, अठई पहर अख्युनि मों॥

१७०४

द्ठिो जनि दीदारु, सामी सुपेर्युनि जो॥
मिट्यो तन्जे मन मों, अविद्या जो अहङ्कारु॥
आत्म पदु अपारु, पाए पर्चो पाणमें॥

१७०५

द्ठिो जहिं अद्रोहु, साक्षी सभ कहीं में॥
मिट्यो तहिंजे मन मों, सामी ममत्वु मोहु॥
कहिंसां करे कीनकी, कूड़ु कप्टु ऐ ड्रोहु॥
तहिंखे लगे कोहु[2], पापु पुञु भय भर्म जो॥

१७०६

द्ठिो जहिं दीदारु, सामी सुपेर्युनि जो॥
मिट्यो तहिंजे मन मों, अविद्या जो अहङ्कारु॥
पर्चो रहे पाणसां, पाए पदु अपारु॥
तोड़े करे व्यवहारु, तांभी न्यारो रहे नभ जां॥

---

(१) उणितुणि—वीचारु (२) छो छाजे करे.

१७०७

दि॒नी ज्ञान कला[१], सतिगुर पुर्ष द॒या करे॥
परखाए पूरनि खों, क्याईं पक तस्ला[२]॥
मिटी वेई मन मों, सामी सभ बला[३]॥
कहिंखे गा॒ल्हि सलां, अन्भय सुख अगम[४] जी॥

१७०८

दि॒नी ज्ञान कला, सतिगुर पुर्ष द॒या करे॥
मिटी वेई मन मों, सामी सभ बला॥
कहिंखे गा॒ल्हि सलां, अहिड़े सुख अगम[५] जी॥

१७०९

दि॒नी गुर सिक्षा, पाणु कढी दि॒सु पाणखे॥
मिटी वेई मन मों, इन्छा अनइन्छा॥
सदा दर्स बिछा, दि॒ए सेवक खे सुप्री॥

१७१०

दि॒नी गुर सिख्या, महबत जागी मन में॥
भेषु वदो भगि॒वन्त जो, त्यागे॒ वादि विख्या॥
पिनी खाधी प्रेम सां, सामी सहज भिख्या॥
ईहे लेख लिख्या, वि॒धाता वर्क[६] में॥

---

(१) शक्तिती–उपदेसु (२) खातिरी (३) प्रपंचु (४) अथाहजी (५) अथाह–निश्चन्त (६) कर्मनिमें.

१७११

ॾिनी लिवं[1] लज़्त, सुत्ह जहिं साधूअ खे॥
सो रहे वादि विवादि खों, अठई पहर अप्रत[2]॥
ॼाणे सुख सन्सार जा, सभि कूड़ा कल्प्त[3]॥
हद[4] परे हैरत, बेहद दिसे ॿांभणु चए॥

१७१२

ॾिनो आत्म ज्ञानु, पूरे गुर पर्चीं[5] करे॥
अविद्या[6] कल्प्त न रही, पुर्षु ॾिठो प्रधानु[7]॥
सामी सभु जहानु, आहे जहिंजे आसरे॥

१७१३

ॾिनो गुर द्रस्तु[8], अख्यूं खुली आयूं॥
पाणो वाणे हालमें, ॾिठा जीअ मस्तु॥
सामी अकह[9] वस्तु, सही कई सभमें॥

१७१४

ॾिनो गुर लखाउ[10], पर्चीं[11] आत्म पद्जो॥
पाए मुहुं महर्याण[12] में, सामीअ क्यो समाउ[13]॥
अन्दरि अविद्या[14] न रही, मिट्यो दुत्या[15] भाउ॥
जीए विज्ञिणे में वाउ, तीए साक्षी ॾिठो सभमें॥

---

(१) प्रेम (२) पासे (३) कल्प्ना मात्र—चवण मात्र (४) सन्सार हद छदि त ईश्वरी अन्भई अजबु दिसें (५) खुशि थी (६) मायावी खटिप्टि (७) पधिरो—अथाहु (८) सही—ठीकु—सचो (९) अजाइबु वस्तु (१०) ॼाणप (११) प्रेम सां (१२) अन्दरि ज्ञाती पाए (१३) पता क्यो (१४) अज्ञानु न रह्यो (१५) भेदु.

१७१५

दि॒नो दे॒खारे, सतिगुर अलखु अखुनि सां॥
सदा सन्मुखु सामी चए, वेठो निहारे॥
प्यालो प्रेम अगम[1] जो पलि पलि पीआरे॥
छदा॒याईं ठारे, हाजत रही न हज[2] जी॥

१७१६

दि॒सी ऐन[3] आजज़ु[4], अचे मिल्या सुप्री॥
क्याऊं दिव्य[5] द्रष्टि सां, सुको बागु[6] सब्जु॥
अविद्या[7] ऊंधइ न रही, सिरते आयो सिजु[8]॥
सदाई लागज़ुं[9], सामी रहे स्वभाव में॥

१७१७

दि॒सी जीउ ठरे, नादि निजु भगि॒तनि खे॥
मां धार्यां ध्यानु तहींजो, जो मुहिंजो ध्यानु धरे॥
ओति प्रोति जा॒णी करे, थ्यां कीन परे॥
सामी कीन सरे, बिना भगु॒ति आहार जे॥

१७१८

दि॒सी थीउ न अन्धु[10], काया माया कुल खे॥
अचे भजन्दुइ ओचते, कालु कहारी कन्धु॥
अथी सभु स्वप्नजो, सामी चए सन्बु॒न्धु॥
छदे॒ फिकुरु फन्दु, जागी॒ दि॒सु जगु॒दीश्व खे॥

---

(१) अथाहजो (२) दि॒सण वाइसण घुमण घतण तीर्थ यात्रा आदी (३) हिकरहु–अखण्डु (४) नीज़ार्यूं (५) अन्तरि वृिती (६) हृदय हर्यों भर्यों थ्यो (७) अज्ञान (८) आत्म ज्योती अनभय थी (९) बेपर्वाहु (१०) मूर्खु.

१७१९

ड्रिसी नेण ठर्या, द्रसनु दर्दवन्दनि[१] जो ॥
उताऊं[२] अन्भय सन्दा[३], वचन मध[४] भर्या ॥
सामी लोक प्रलोक जा, कार्ज सभि सर्या[५] ॥
लखें लोक तर्या, दाव[६] न लगी तनिखे ॥

१७२०

ड्रिसी बाग खिजां[७], आराईअ[८] अर्दास की ॥
खावन्द बुधु बान्हे जूं, आह भयूं अज़ां[९] ॥
अठई पहर अन्दर में, थो तुहिंजे ढांइ[१०] ड्रिजां ॥
सामी तद्री सिजां[११], जद्री पर्ची करें पहिंजो ॥

१७२१

द्रीआ ड्रिसी पतंग, जली ज्योति स्वरूपु थ्या ॥
समाणा सामी चए, जलमें जल तरंग ॥
तीए मिल्या महब्रूबसां, महबती मलंग[१२] ॥
सदा अलेपु[१३] असंग, रहनि विदेही देहिमें ॥

१७२२

द्रीन्द्रो सचु सजाइ, जद्री तद्री कूड़ खे ॥
पछिंनु[१४] ज़ाणी पाण खे, फाहीअ[१५] मंझि न फाहि[१६] ॥
अथी माया मोह जी, बेहद द्राढी बाहि ॥
पिण्डु[१७] मथे तों लाहि, त सुखी थिए सामी चए ॥

---

(१) प्रेमयुनि (२) चयाऊं (३) भर्या (४) प्रेमजा (५) ठहिया (६) दागु
(७) खुल्या–वधिया (८) गुलनि वारी (९) वेनित्यूं (१०) काणि–वास्ते
(११) खुशि थ्यां (१२) सन्त (१३) त्रिलेप–परे (१४) थोरे मात्र–नासुमाञु
(१५) प्रपंचु (१६) अटिकाए (१७) छिप–ब्रोझो.

१७२३

ॾीन्दों सचु सजाइ, जॾी तॾी कूड़ खे ॥
सामी ॻाल्हि सही करे, पेरु पुझीं[१] पाइ ॥
ॼाणी जॻतु स्वप्न जो, कहिंखे कीन दुःखाइ ॥
लिवं तहींसां लाइ, आहीं जहिंजे आसरे ॥

१७२४

दुःखी करे ॾोटी, माया मोहे सभखे ॥
कहिंखे छॾे कीनकी, खलि खलि[२] रे खोटी ॥
सामी हयंसि सम[३] जी, कहिं साधूजन सोटी ॥
मुहुं मोड़े मोटी[४], तके न तहिं तदरूप[५] खे ॥

१७२५

दुःखी छॾि ॾमरु, मतां ॾिसें दुःख ॾोहाॻु जा ॥
ममत्व[६] मिटाए मन जी, वठु ॾोसनि[७] जो दरु ॥
त सहिंजे वरु अमरु, मिलेई महर करे ॥

१७२६

ॾुन्घी[८] ॾिलि ॾेई, जहिं क्यो संगु साधूअ जो ॥
मिथ्या तहिंजे मन मों, सन्सा सभेई ॥
सामी ताकी तस्ला[९] जी, खाल्सु[१०] खुली पेई ॥
लोकु प्रलोकु ॿेई, लंवे चढ़ियो लख्य[११] ते ॥

---

(१) समुझी (२) खटिप्टि (३) अभेद (४) फिरी (५) एकाग्रता वारे खे (६) मोहु (७) प्रेम्युनि (८) ऊन्ही–तिखी–पकी (९) खात्री (१०) खबर (११) ॼाणपमें.

१७२७

द्रौ द्काए, सभखे नांगु नोड़ीअ जो॥
सामी सवे कोनको, पेरु अगे पाए॥
विले कहिं गुर्मुख दिठो, दीओ[1] जागाए[2]॥
सन्सो मिटाए, सुम्हियो[3] सुषोप्ति सेजते॥

१७२८

द्रौ द्हकाए, सभखे नांगु नोड़ीअ जो॥
विले कहिं वेझो दिठो, दीओ जागाए[4]॥
अणहून्दो[5] अभाउ[6] थ्यो, केरु कहिंखे खाए॥
ममत्व मिटाए, सामी मिल्यो स्वरूपसां[7]॥

१७२९

द्रौ द्हकारे, भारी भूतु भर्म जो॥
सामी चए सभुको, मतां अची मारे॥
सही क्यो कहिं सूर्मे, सतिगुरु सम्भारे॥
सन्सो निवारे, इस्थति थ्यो आकास जां॥

१७३०

द्रौ हणे[8] दंगु[9], नारी कारी[10] नागिणी॥
मूर्ख मुठा केत्रा, सामी करे संगु॥
न्यारो रहे नभ ज्यां, को महबती मलंगु[11]॥
जल मे जल तरंगु, लइ दिठो जहिं लख्य[12] सां॥

---

(१) दीओ रूपी वीचारु (२) करे (३) आनंद अवस्थामें लीनु थ्यो (४) वीचारु करे (५) भर्मु (६) मिटी व्यो (७) खाइण वारो ऐ खाराइण वारो हिकु थ्यो (८) देखारे (९) इशारत–नाजु–शोभ्या (१०) अन्दर कारी (११) भगतु–रतलु (१२) अन्तरि वृतीअ में समायलु दिठो.

१७३१

ॾ॒रौ[1] हणे[2] ॾं॒गु[3], नारी कारी[4] नागिणी॥
मूर्ख मुठा केत्रा, सामी करे संगु॥
वि॒लो को गुर्मुखु बचे, आधार[5] निसंगु॥
बे रंगीअ जो रंगु[6], ॾि॒ठो जहिं अभेदु थी॥

१७३२

ॾे॒ई दि॒लि दौ॒लत, आशिक[7] गदि॒या अलह खे॥
वठी नितु नेणनि सां, लाए लिवं[8] लज़त॥
समुझे को सामी चए, अन्भई इशारत॥
मेटे सभि ममत्व[9], चढ़ी वेठो चौदो॒ल[10] में॥

१७३३

ॾे॒ई पाण पटलु[11], मूर्ख मुठा ममत्वमें॥
खोहिनि खाम[12] ख्यालसां, मानुष्य जन्मु अमुलु॥
सच्यारनि सोधे लधो, अन्भय घरु असुलु[13]॥
कटे कल्प[14] कुलु, सामी माणिनि सान्ति सुखु॥

१७३४

ॾे॒ई लटिके[15] लत[16], आशिक अशिक कतलु[17] क्या॥
सामी से सूड़ीअ[18] चढ़ी, लूअं लूअं[19] लहनि लज़त॥
चढ़ी वेठा चौदो॒ल[20] में, लंवे पंजई तत्व॥
जिते सख्यूं[21] सत, पर्चीं रहियूं पीअसां॥

---

(१) पर्ग्चीई (२) दे॒खारे (३) चत्रें (४) अन्दर कारी (५) परे रहियो (६) ईश्वरी मायावी रचिना (७) प्रेमी (८) प्रेम जो मजो (९) मोह इन्छा (१०) आनंद में लीनु थ्यो (११) अज्ञानजो पर्दो (१२) अजाया (१३) ईश्वरजो दगु (१४) प्रपंचु (१५) प्रेमसां (१६) पंधि प्या (१७) मोहे विधा (१८) दस्वे द्वार–अनाहद धुनि (१९) रोम रोम (२०) आनंदमे (२१) ज्ञान भूम्काऊं सत–सरीर जा सत द्वार.

१७३५

ड्ेई लत न ब्रोड़ि, मानुष्य देहि अमूल्य खे ॥
जहिंखे चाहिनि देवता, नितु तेतीस क्रोड़ि ॥
सामी समुझी साध संगि, मन जूं वागूं मोड़ि[1] ॥
जागी[2] ब्रन्धन छोड़ि[3], पहिंजे हथें पहिंजा ॥

१७३६

ड्ेई लिवं[4] लखाउ, सामी चयो सतिगुरूअ ॥
मिली वञु महबूबसां, मेटे दुत्या[5] भाउ ॥
मोटी ईन्दुइ कीनकी, अहिड़ो दि्लबरु दाउ[6] ॥
पोइ कन्दे पछिताउ, सिज[7] लथे सामी चए ॥

१७३७

ड्े को तहिंजो ड्सु?, सामी चए तूं सतिगुरू ॥
जहिंजो वेद पुराण सभि, जुगि जुगि गा़इनि जसु ॥
जड्हीं इन्हीअ जाइते, रेढ़े नीन्दुइ रसु[8] ॥
तड्हिं दि्लि[9] में मारे ड्सु, वेहन्दे खुदि खुदाइ जो ॥

१७३८

ड्े नितु माया मार, करे जेरि[10] जीअनि खे ॥
भवनि[11] भौसागर में, रोअनि[12] ज़ारो ज़ार ॥
क्युसि गुसु ग्याति सां[13], कहिं हर्जन हुश्यार ॥
जहिंखे सुर्ति सम्भार, सामी डि्नी सतिगुरूअ ॥

---

(१) इस्थरि करि (२) वीचारे (३) टोरि (४) प्रेम जी ज़ाणप (५) द्वैतु–भेदु (६) अविसरु–चानसि (७) सरीर छुटण महल (८) प्रेमु–मजो (९) अन्दर जों अन्दरमें पतो पोंदुइ (१०) वसि (११) मिटिकनि (१२) नीज़ार्यूं प्या कनि (१३) वीचार सां.

१७३९

देहीअ मंझि दसे, सतिगुर दिनी सब्द धुनि ॥
पोइ भंवर गून्जार जां, अमृतु नितु वसे ॥
लटक लाए लूअं लूअं में, वर्ती दिलि खसे ॥
सामी दिसी हसे, पहिंजे अख्यें पाणखे ॥

१७४०

देहीअ[1] मंझि दीओ[2], अचलु बरे थो आदिजो ॥
अविद्या खों उल्टी[3] करे, पातो जहिं लीओ ॥
तहिंजो मनु खीओ[4], थ्यो सामी सहज स्वरूपमें ॥

१७४१

दोह गुनाह माफी, सामी क्या सतिगुरूअ ॥
बुधायाई बेहदी, कैफ[5] भरी काफी ॥
पर्ची दिठो पाणखे, सुत्ह थी साफी[6] ॥
थाफिना[7] थाफी, वञे कान कर्तारजी ॥

१७४२

दोहागिणि खे दुःख, वर वराए[8] केत्रा ॥
सजणु जहिंजे कछमें, तहिंखे दुःख न भुख ॥
नकी साड़े पारो, नकी लगे लुख[9] ॥
सभि मिटाए जुख[10], सन्मुखु दिसे सुप्री ॥

---

(१) सरीरमें (२) जोति (३) पासे थी (४) खुशि (५) प्रेम (६) माफी (७) कथ (८) वरी वरी (९) थधि (१०) फुर्ना–वीचार.

१७४३

दोहागिणि[1] पेई, वर वराए[2] दुःखमें ॥
चप चटीन्दे[3] रात्री[4], विहामी[5] वेई ॥
सामी सोहागिणि[6] खे, आहे मै केही ॥
जहिं तनु मनु धनु देई, प्री रीझायो पहिंजो ॥

१७४४

द्बें देवानी, सजण तुहिंजीअ सिक क्यो ॥
हयाई हैरतजी, कहर भरी कानी[7] ॥
सामी सभुकी भुलो, दि्सी जगु फानी ॥
जीअन्दे मिलु जानी, मारे मिलन्दे कहिंसां ॥

१७४५

दम[8] ते रखी कदमु, आशिक चढ़िया अछ[9] ते ॥
जिते दीहुं न राति का, नको कालु कर्मु ॥
नको जीउ न ब्रह्मु को, नको भोलु भर्मु ॥
अन्भय पदु अगमु[10], सुत्ह रहे सामी चए ॥

१७४६

दया धर्मु वीचारु, जन्खे दि्नो सतिगुरूअ ॥
से तप्ति[11] मिटाए मन जी, ठरी थ्यरा ठारु ॥
भिना[12] रहनि भगति में, पाए दिब[13] दीदारु ॥
अन्दरि बाहरि[14] यारु, सामी दि्सनि हिकिड़ो ॥

---

(१) ईश्वर खों परे थ्यल–माया में फाथल (२) वार वार–सदाई (३) प्रपंचमें (४) उमिरि (५) गुजिरी (६) प्रेमिणि (७) लिवं–प्रेम जो तीरु (८) स्वासनि ते (९) पदते (१०) अथाहु (११) खटिप्टि (१२) मिल्या (१३) अन्तरि प्रकासु (१४) सर्व आत्म भाउ.

१७४५

दया[1] मंझि दयालु, अथी दया मंझि दयाल जे ॥
समुझी दि॒सु सामी चए, तूं कढी खाम[2] ख्यालु ॥
दया रे दोसनि जे, अथी बी॒ सभ कल्प कालु ॥
नजर[3] मंझि निहालु, गुर्मुख ध्यरा केत्रा ॥

१७४६

दरि दरि कीम निहारि[4], चरी चेतन वर[5] खे ॥
अथी मंझि महल[6] जे, तूं अविद्या[7] भर्मु निवारि ॥
करि सींगारु मिलण जो, पुछी जेदि॒यूं चारि ॥
गदि॒जी घोटु कुंआरि, सामी माण्यों सेज सुखु ॥

१७४९

दरि दरि कीम बुधाइ, सामी सिक प्रयनि जी ॥
अन्तरि मुखि अदब सां, लिवं लिकाए लाइ ॥
त लूअं लूअं मंझि लखाइ, मूर्त महबूबनि जी ॥

१७५०

दरि दरि कीम बुधाइ, सामी सिक प्रयनि जी ॥
मिली साध संगति सां, वाई[8] सभ विञाइ ॥
पाए ग्याति[9] गुरूअजी, अन्तरि मुखि मनु लाइ ॥
लूअं लूअं मंझि लखाइ[10], मूर्त महबूबनि जी ॥

---

(१) दयामें ईश्वरु ईश्वर में दया (२) अजायो (३) क्रिपा (४) घुमु (५) ईश्वर चेतन पतीअ खे (६) सरीर में (७) माया जो भर्मु (८) स्याणप (९) उपदेसु–सिक्षा (१०) जा॒णाई–वीचारि.

१७६१

दरि दरि कीम बुधाइ, हुब[१] हकीकत गाल्हिरी ॥
मिली महद[२] जननि सां, झाती झरोके[३] पाइ ॥
अविद्या कुल्फु[४] अन्दर जो, लिवं कुंजीअ सां लाइ ॥
लूअं लूअं मंझि लखाइ, मूर्त महबूबनि जी ॥

१७६२

दरि दरि देवाननि जां, कूड़ी कथ म कथि ॥
सामी संगि साधूअ जे, मन पहिंजे खे मथि[५] ॥
अहिड़ो वेलो हथि, मोटी ईन्दुइ कीनकी ॥

१७६३

दर्दवन्द[६] द्वेषु, कहिंसां रखनि कीनकी ॥
सामी डि्सनि सभमें, अन्भय पुर्ष्यु[७] अलेखु ॥
धारे आयो जगमें, बाजीगर जो भेषु ॥
ऊहा वादि[८] विसेषु[९], ऊहो ज्ञानु गुरूअजो ॥

१७६४

दर्दवन्द[१०] दुकानु, कढनि कीन कल्प जो ॥
जन्खे डि्नो सतिगुरूअ, अन्भय आत्म ज्ञानु ॥
सुखी थ्या सामी चए, सटे सभु अभ्मानु ॥
तोड़े लखे[११] जहानु, तांभी सीत्लु रहनि स्वभावमें ॥

---

(१) सिक–प्रेमु (२) प्रेमी महा पुर्षनि सां (३) हृदयमें (४) भर्म रूपी कुलिफु (५) वीचारि (६) प्रेमी–सन्त (७) ईश्वरु–आत्मा (८) वीचारि (९) खासु करे (१०) प्रेमी (११) जाणे–रहे.

१७८५

दर्दवन्द[1] दुःखी, फुटी दर्द फिराक[2] क्या ॥
पुछनि पुकारिनि सदु करे, रोअनि रतु रुखी ॥
निकिरी आयो नेण मों, जानी जीउ जुखी[3] ॥
सामी चवनि सुखी, मिली करि मोअनि खे ॥

१७८६

दर्दवन्द[4] थी दीन, पी पी[5] कनि पपीह जां ॥
विना चन्द्र चकोर खे, मुखि सुहाइनि कीन ॥
सामी मनु मृिघ जो, मोहयो बेहद बीन ॥
जल वराए मीन, तर्फी छदे तन खे ॥

१७८७

दर्दवन्द[6] दबुली, महकमु[7] रखनि मतिजी ॥
कहिंखे सलिनि कीनकी, भोले भाइ भुली ॥
सचीअ सिक वारनि सां, खिल्यत[8] कनि खुली ॥
मेटे कल्प कुली, सामी चढ़िया सीरते ॥

१७८८

दर्दवन्द[9] दर्वेश, दावा[10] रखनि न दमजी ॥
सामी जाणनि स्वप्नु, कुटम्बु कबीलो षेषु[11] ॥
पर्चो लधाऊं पहिंजो, अन्भय आदी देशु ॥
जहिंजी सेषु महेशु, उस्तति करे अभेदु थी ॥

(१) प्रेमी (२) टुंग–छेद–लइ (३) अन्त वृितीअ द्वारा तहिं ईश्वर खे दिठाऊं
(४) प्रेमी (५) सब्द धुनि (६) प्रेमी (७) पकी (८) गा़ल्हि–खुशामन्दि
(९) प्रेमी (१०) सरीर ते भर्वसो न रखनि (११) सभुकुछु.

१७५९

दर्दवन्द[१] ॾातार, ॾया रखनि ॾिलिमें॥
जन्खे ॾसे सतिगुरू, अन्भय मत अपार[२]॥
सोधे कढनि सभजा, वचननि[३] साणु विकार॥
सदा बाग बहार[४], सामी रहनि स्वभावमें॥

१७६०

दर्दवन्द[५] ॾातार, लिकनि छिपनि कीनकी॥
सामी जन्जी सिक सां, लूअं लूअं करे पुकार॥
बिना अशिक अजीब जे, ॿी रखनि कान सम्भार॥
रहनि मंझि ॾीदार, ॼाण वराए पहिंजी॥

१७६१

दर्दवन्द[६] ॾातार, साधूजन समद्रसी॥
ॾया धारे ॾिलिमें, सामी कनि उपकार॥
ॾेई हथ हिमथ जा, तारिनि जीव अपार॥
हर्दमि रहनि हुश्यार, पीअनि पीआरिनि प्रेम रसु॥

१७६२

दर्दवन्द[७] ॾानाह[८], इस्थति[९] रहनि आकास जां[१०]॥
मिटी जहिंजे मन मों, सामी चिन्ता चाह॥
लंघ्या पारि समुन्द्र[११] खों, मिली साणु मलाह[१२]॥
जाॾे कनि निगाह, ताॾे सॼणु सामुहों॥

---

(१) प्रेमी (२) अथाह (३) समुझाणी (४) आनंद में (५) प्रेमी (६) प्रेमी (७) प्रेमी (८) सचार (९) पका (१०) हिक जहिड़ा (११) सन्सारी प्रपंच खों (१२) ज्ञानवान–सन्तु.

१७६३

दर्दवन्द[१] दानाह[२], चढ़िया अन्भय अछते॥
पुछी पेराठ्युनि[३] खों, रहति सचीअ सां राह॥
सोत्लु थ्या सामी चए, मेटे चिन्ता चाह॥
प्रयनि रे पर्वाह, कहिंजी रखनि कीनकी॥

१७६४

दर्दवन्द[४] दानाह[५], द्वेतु न रखनि दिलि में॥
डि॒ठो जनि अदाल्ती[६], सजु॒णु साणु वेसाह॥
हलनि हठ हैबत रे, सूधी सुन्दरु राह॥
सदा अलेपु अचाह, सामी रहनि स्वभावमें॥

१७६५

दर्दवन्द[७] दानाह[८], ममत्व न रखनि मन में॥
गु॒लि[९] लाए कनि गो॒ठ खे, दे॒ई सम सलाह॥
मिली तनि मर्दनि सां, सभु चुकाइनि चाह॥
सामी सूक्षमु राह, अथी पद अगम जी॥

१७६६

दर्दवन्द[१०] दानाह[११], रहनि अलेपु[१२] आकास जां॥
कहिंजा गु॒णिनि कीनकी, डि॒सी दो॒ह गुनाह॥
सभखे दु॒सिनि दे॒ह जी, रहति सचीअ सां राह॥
पुछी डि॒सु ओगाह[१३], सामी चए सिध साध रखी॥ रिषी

---

(१) प्रेमी (२) सचार (३) सन्तनि (४) प्रेमी (५) सचार (६) इन्साफी ईश्वरु (७) प्रेमी (८) सचार (९) प्रेमु करे (१०) प्रेमी (११) स्याणा (१२) त्रिलेपु (१३) शाहिद.

१७६७

दर्दवन्द[१] दाहां, रतु रोई कनि राति ॾींहं॥
सजणु सिक सोघो क्यो, रोके सभि राहां॥
ॾियनि सनेहा ॾेह खे, ॿधी नितु ॿाहां॥
ऐन ॿधी आहां[२], सुततु मिलु सामी चए॥

१७६८

दर्दवन्द[३] ढिमाकु[४], रखनि न रतीअ जेत्रो॥
सामी ॿोलिनि सभसां, नीवों निमलु वाकु॥
तन[५] जो खोले ताकु, सन्मुखु ॾिसनि सुप्री॥

१७६९

दर्दवन्द[६] दीदारु, दमि दमि करिनि दोसजो॥
रखनि न रतीअ जेत्रो, अन्दर में अहङ्कारु॥
सही क्याऊं सम थी, स्वप्न जो सन्सारु॥
ॿांभण जीए ॿारु, मनन खों मुक्तो रहे॥

१७७०

दर्दवन्द[७] दुकानु, कढनि कीन कल्प[८] जो॥
तन्खे ॾिनो सतिगुरूअ, सिदिकु[९] सबूरी दानु॥
पेही[१०] ॾिठाऊं पाणमें, भेद बिना भगुवानु॥
करे अम्रितु पानु, समाणा सामी चए॥

(१) प्रेमी (२) दाहां (३) प्रेमी (४) वहिंवारु ख्यालु-द्वैतु (५) सरीरकु भाउ कढी (६) प्रेमी (७) प्रेमी (८) प्रपंच जो (९) निश्चो (१०) वीचारु.

१७७१

दर्दवन्द[1] दुकानु, कढनि कीन कस्ब[2] जो॥
चढ़िया हकीकी[3] हद्‌ते, छदे माया ओ गुजरानु॥
अन्दरि बाहरि नभ ज्यां, डि॒सनि अनभय भानु[4]॥
सामी सभु जहानु, आहे जहिंजे आसरे॥

१७७२

दर्दवन्द[5] दुको[6], डि॒नो शौक शराब जो॥
पीअन्दरे मनु पत्यो[7], सन्सो भर्मु चुको॥
अचे घरि दुको[8], सामी चए सुप्री॥

१७७३

दर्दवन्द[9] दोषी[10], कहिंजा ध्यनि कीनकी॥
जन्खे डि॒नी सतिगुरूअ, अनभय अप्रोषी[11]॥
हार जीत रे हन्स जां, चाल चलनि चोखी[12]॥
से सदा सन्तोषी, सामी रहनि स्वभावमें॥

१७७४

दर्दवन्द[13] दौलत[14], रखनि समुझ सचीअ सां॥
चढ़िया अनभय अछते, मेटे सभि ममत्व॥
जा॒णनि सुख सन्सार जा, सभ कूड़ी कल्व॥
मिली कनि मदबत, सामी साध संगति सां॥

---

(१) प्रेमी (२) प्रपंचु जो (३) पूरी–मथीं (४) सूर्जु–आत्म प्रकासु (५) प्रेमी (६) थोरो (७) लै थ्यो (८) सरीर रूपी घरमें डि॒ठो (९) प्रेमी (१०) पचरां (११) पकी (१२) तिखी (१३) प्रेमी (१४) नाम रूपी इश्वरी खजानो.

१७७५

दर्दवन्दनि[1] खे दोषु, मूर्ख लाइनि मति रे॥
जन्खे डि्नो सतिगुरूअ, सामी सम सन्तोषु॥
डि्सनि देहि अभ्मान रे, अन्भय पदु अप्रोषु[2]॥
ममत्व मिटाए मोक्षु, सभजो कनि समुझसां॥

१७७६

दर्दवन्दनि[3] जी दाहं, सुत्ह राम सही कई॥
कढी वदाई कुन[4] मों, बा्ंभण डे्ई बा्हं॥
क्याईं लोभ लहरि जी, माया खे मनाहं॥
छ रुत्यूं बा्रह माह, सीत्लु रहनि स्वभावमें॥

१७७७

दर्दवन्दनि[5] जो दरु, वठी वेहु वेसाह सां॥
पर्ची[6] कन्दइ पाणहीं, सामी महिर नज़रु॥
डे्खारीन्दइ डी्लमें[7], अन्भय आदी घरु॥
जहिंमें अजरु अमरु, पुर्षु वसे पर्मात्मा॥

१७७८

दर्दवन्दनि[8] जो दुःखु, सामी कस्यो सतिगुरूअ॥
क्याईं सार स्वरूपजे, सुत्हसिधि सन्मुखु॥
समुझे को सामी चए, महबती मानुष्यु॥
पाए अन्भय सुखु, माणे दौर दर्सजा॥

(१) प्रेम्युनि (२) पको (३) प्रेम्युनि (४) सन्सारी प्रपंच मों (५) प्रेम्युनि
(६) राजी थी (७) सरीरमें (८) प्रेम्युनि.

१७७९

दर्दवन्दनि[१] जो देसु, कामिलु आहे हिकिड़ो ॥
सुखदाई सीतलु सदा, सभजा खालसु खेसु[२] ॥
पुछी दि॒सु तनीखों, जनि पेही[३] क्यो प्रवेसु[४] ॥
कटे कल्प कलेसु, सामी मिल्या स्वरूपसां ॥

१७८०

दर्दवन्दनि[५] देरो[६], पाणु कढी क्यो पाणमें ॥
पलि पलि दि॒सनि पीअखे, पल्कनि सां पेरो ॥
जीअन्दे निबेरो, जागी क्याऊं जमसां ॥

१७८१

दर्दवन्दु[७] दयालु, सामी मिल्यो सतिगुरू ॥
क्यो तहिं क्रिपा सां, निमाणो निहालु[८] ॥
दे॒खार्याईं दी॒लमें[९], सभु आकासु पातालु ॥
कटे खाम[१०] ख्यालु, चाढ़ियाईं चौदो॒ल में ॥

१७८२

दर्दवन्दु[११] दलालु, सामी मिल्यो सतिगुरू ॥
क्यो तहिं क्रिपा सां, नजर मंझि निहालु[१२] ॥
वठी दि॒नाईं वास्तवी[१३], मुक्तो महबत मालु[१४] ॥
कटे कल्स कालु, चाढ़ियाईं चौदो॒ल[१५] में ॥

---

(१) प्रेम्युनि (२) ढकिण वारा (३) वीचारे (४) प्रिया (५) प्रेम्युनि (६) अस्थानु (७) प्रेमी (८) उधारु (९) सरीरमें (१०) अजाया (११) प्रेमी (१२) उधारु (१३) सचो (१४) घणो (१५) उच पदते.

१७८३

दर्द्वन्दु[1] द्लालु, सामी मिल्यो सतिगुरू ॥
चठी द्निो तहिं विधि[2] सां, ऊन्हों[3] अन्भय मालु॥
तनु मनु सभु सीत्लु थ्यो, मिट्यो कल्प कालु॥
करे नज़र निहालु, पहुचायाईं पद्में ॥

१७८४

दर्द्वन्दु[4] द्रातारु, कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
डिठो जहिं अख्युनि सां, द्रोस्त जो दीदारु॥
खोले विहे खुदीअ[5] रे, अन्भय सारु भण्डारु॥
जाग्ये जै जै कारु, सामी सेवक जो करे॥

१७८५

दर्द्वन्दु[6] द्रातारु, समिृथु मिल्यो सतिगुरू ॥
कटी तहिं कल्पना, द्ई वैरागु वीचारु॥
चयो वञे न मूंहंसां, अन्भय सुखु अपारु[7]॥
सदा बागु बहारु, सामी रहे स्वभावमें॥

१७८६

दर्द्वन्दु[8] द्रातारु, समिृथु सल्यो सतिगुरूअ॥
कटी तहिं कल्पना, करे ऐनु[9] उपकारु॥
द्खार्याईं द्रीलमें[10], अन्भय पुर्षु अपारु॥
सामी सभु सन्सारु, आहे जहिंजे आसरे॥

---

(१) प्रेमी (२) रस्ते सां–वीचार सां (३) तिखो (४) प्रेमी (५) स्वार्थ (६) प्रेमी (७) अथाहु (८) प्रेमी (९) साफु–शुधु (१०) सरीरमें.

१७८७

दर्दवन्दु[1] दातारु, सामी मिल्यो सतिगुरू ॥
कटी तहिं कल्पना, देई वैरागु वीचारु ॥
चयो वञे न मूंहंसां, अन्भय सुखु अपारु[2] ॥
सदा बागु बहारु, इस्थति रहे आनन्दमें ॥

१७८८

दर्दवन्दु[3] दातारु, सामी मिल्यो सतिगुरू ॥
तहिं देखार्याई दीलमें[4], अन्भय सुखु अपारु[5] ॥
जहिंजो रूपु न रंगु को, नको अंगु आकारु ॥
अजगैबी इसरारु, अल्यो[6] सल्यो[7] न वञे ॥

१७८९

दर्दवन्दु[8] दातारु, सामी मिल्यो सतिगुरू ॥
तहीं लखायो[9] लख्यसां[10], आत्म पदु अपारु[11] ॥
अचे अजगैबी चढ़ियो, अख्युनि में खूमारु ॥
स्वप्न ज्यां सन्सारु, जागी डि़ठो सभु ज्योति में ॥

१७९०

दर्दवन्दु[12] दातारु, सामी मिल्यो सतिगुरू ॥
तहीं पीआरे प्रेम रसु, क्यो बागु बहारु ॥
रहयो न रतीअ जेत्रो, विधि निषेदु[13] वहिंवारु ॥
घुरे असांखे यारु, त असांभी यादि कयूं था यार खे ॥

---

(१) प्रेमी-सन्तु (२) अथाहु (३) प्रेमी (४) स्वरीरमें (५) अथाहु (६) जातो (७) चयो (८) प्रेमी-सन्तु (९) जाणायो (१०) जाणप सां (११) अथाहु (१२) प्रेमी (१३) शास्त्र विधु.

१७९१

दर्दवन्दु[१] दानाहु, कूड़ु न करे कहींसां॥
जहिंखे डिनी सतिगुरूअ, सिक समुझ वेसाहु॥
सामी रहे संन्सारमें, सदा अलेपु अचाहु॥
राम नगर जो राहु, सूधो दसे सभखे॥

१७९२

दर्दवन्दु[२] दानाहु[३], कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
पर्ची लधो जहिं पहिंजो, रहति सचीअ सां राहु[४]॥
पूरणु ज्ञाणी पीअखे, थ्यो अभेदु असगाहु[५]॥
सामी सदा अचाहु, वर्ते विधि वीचार सां॥

१७९३

दर्दवन्दु[६] दानाहु[७], द्वैतु न रखे दिलि में॥
दिठो जहिं अख्युनि सां, अदाल्ती अलाहु॥
हले हठ हैबत रे, सूधो सुन्दरु राहु[८]॥
सदा अलेपु अचाहु, सामी रहे स्वभावमें॥

१७९४

दर्दवन्दु[९] दानाहु[१०], पासे थिए न पीअखों॥
जहिंखे डिनो सतिगुरूअ, विधि सची वेसाहु॥
लंवे चढ़ियो लख्य[१२] ते, अविद्या[१३] सिन्धु अथाहु॥
सदा अलेपु अचाहु, सामी रहे स्वभाव में॥

---

(१) प्रेमी (२) प्रेमी–सन्तु (३) स्याणो (४) दगु–रस्तो (५) अलगु (६) प्रेमी–सन्तु (७) स्याणो (८) रस्तो (९) प्रेमी–सन्तु (१०) स्याणो (११) ईश्वर खों (१२) ज्ञाणपमें (१३) मायावी सन्सारु.

१७९५

दर्दवन्दु[१] दानाहु[२], सूधो वर्ते सभसां॥
जहिंखे दि॒नो सतिगुरूअ, सिक समुझ वेसाहु॥
पाताईं पर्छिन[३] रे, अन्भय पदु असगाहु[४]॥
सदा अलेपु अचाहु, सामी रहे स्वभाव में॥

१७९६

दर्दवन्दु[५] दानो[६], कल्स[७] रखे कानका॥
लधो जहिं गुर ग्याति सां, खिल्वती[८] खानो॥
सदा रहे सामी चए, अनन[९] अल्सानो[१०]॥
जीए पर्वानो[११], जली ज्योति स्वरूपु थ्यो॥

१७९७

दर्दवन्दु[१२] दानो[१३], सामी मिल्यो सतिगुरू॥
तहिं लखायो[१४] लख्य[१५] सां, खाल्सु[१६] खजानो॥
पाए मनु मगनु थ्यो, गदि गदि॒ गहिरानो॥
सुत्ह समानो, जल पपोटो जलमें॥

१७९८

दर्दवन्दु[१७] दि॒ल्बरु[१८]; प्रत्क्षु दि॒ठो पहिंजो॥
सामी संगि साधूअ जे, दि॒लि जो खोले दरु॥
कहिंखे सले कीनकी, अन्भय सुखु अजरु॥
करे कीअं पधरु, नाज़िकु धागो॒ नीहं जो॥

---

(१) प्रेमी (२) स्याणो–वीचारवानु (३) द्रस्य मात्र (४) अथाहु (५) प्रेमी–भक्तु (६) स्याणो (७) खोटु (८) प्रेम्युनि जो दरु (९) हिक्र करो (१०) मस्त (११) पतंगु (१२) प्रेमी (१३) स्याणो (१४) ज़ाणायो (१५) ज़ाणप सां (१६) शुधु–खासु (१७) प्रेमी (१८) ईश्वर.

१७९९

दर्दवन्दु[1] न दुखाए, सामी कहीं जीअ खे॥
सेवा सभ कहींजी करे, मनु महबत लाए॥
प्रघटु सो पाए, अन्भय सुख अगम खे॥

१८००

दर्वेशनि[2] जो दरु, वदो जहिं वेसाह सां॥
मिट्यो तहिंजे मन मों, सामी ममत्वु मकरु॥
पर्ची लधाईं पहिंजो, अन्भय आदी घरु[3]॥
जहिंमें अजरु अमरु, पुर्षु वसे पर्मात्मा॥

१८०१

दर्सन[4] जो दातो, जहिंखे, मिल्यो सतिगुरू॥
तहिं सामी सभ ल्बास[5] में, पीअ खे पछातो[6]॥
जीअन्दे वेठो जम जो, वारे खतु खातो॥
सदा समातो, रहे पहिंजे हालमें॥

१८०२

दर्सन[7] जो दातो, सामी मिल्यो सतिगुरू॥
अंजनु[8] ऐनु अन्भई, पर्ची तहिं पातो॥
सुत्ह सुजाग़ो थी, साहिबु सुञातो॥
वारे खतु खातो, जीअंदे छद्दियो जमसां॥

---

(१) प्रेमी–सन्तु (२) प्रेम्युनि (३) ठिकाणो (४) पूरणु–प्यासी–ज़ाणू (५) रूप में–तरह (६) सुञातो (७) पूरणु–ज़ातो (८) तिखो सुर्मो.

१८०३

दर्सन जो प्यासी, कोर्युनि में को हिकिड़ो ॥
सामी कटी जहिं सिकसां, जीअन्दे जम फासी ॥
अलखु अबिनासी, दि॒से नितु न्रिबा॒णु थी ॥

१८०४

दर्सनु दि॒नो दानु, महबूबनि महिर सां ॥
लूअं लूअं मंझि अख्यूं थ्यूं, धरे वेठयूं ध्यानु ॥
उथन्दे वेहन्दे निंड्में, भुले न अन्भय भानु[1] ॥
सामी सभु जहानु, लय दि॒ठोसे लख्य[2] में ॥

१८०५

दर्सनु दि॒नो दानु, सामी पूरे सतिगुरूअ ॥
रहियो न रतीअ जेत्रो, अन्दरमें अभिमानु ॥
सम दि॒ठो भगि॒वानु, चीटीअ ऐं कुन्चर में ॥

१८०६

दस्यों[3] दर्दवन्दु[4], मिले विछुरे कीनकी ॥
समुझो जहिं सामी चए, तानी पेटे तन्दु ॥
ब॒ई रूप पवन जा, इस्पन्दु[5] ऐं निस्पन्दु[6] ॥
अन्भय जो आनन्दु, पाए वेठो पदमें ॥

---

(१) सूर्यु (२) ज॒ाणमें पहिंजो पाणमें (३) कबूलु प्यलु (४) प्रेमी (५) सपर्शमात्रु (६) असपर्शु–चवण मात्र.

१८०७

दस्यों[1] डि॒ठु[2] तारो, अजगैबी आकास[3] में॥
मिटी व्यरो मन मों, अविद्या अन्धारो॥
व्यापकु डि॒ठो विश्वमें, आत्म[4] उज्यारो॥
न्रिमलु न्यारो, हद परे बेहद थ्यो॥

१८०८

दस्यों[5] दौलतवन्दु[6], कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
समुझो जहिं सामी चए, ताञीअ पेटे तन्दु॥
सभखे डि॒ए सीत्लु थी, अन्भय जो आनन्दु॥
मिसिरीअ जे मानन्दु, कहिंखे कउड़ो न लगे॒॥

१८०९

दस्यों[7] दौलतवन्दु[8], रहे उधारु अन्दर में॥
समुझो जहिं सामी चए, ताञीअ पेटे तन्दु॥
माणे नितु मर्म सां, अन्भय जो आनन्दु॥
जीए मिसिरीअ जो कन्दु[9], सभ जों मुहुं मिठो करे॥

१८१०

द्वैत मंझि अद्वैतु, सन्त लखाइनि सभखे॥
कोर्युनि में को हिकिड़ो, समुझे सिषु सुचेतु॥
क्यो जहिं कल्प रे, हरि भक्तिनि सां हेतु[10]॥
जा॒णे अन्भय खेतु[11], सामी मानुष्य देहिखे॥

---

(१) प्रघटु थ्यो (२) गुझो (३) हृदय आकासु (४) सर्व आत्म भाउ (५) प्रघटु थ्यो (६) भरपूरि थ्यलु (७) प्रघटु थ्यो (८) भरपूरि थ्यलु (९) संगु-टुकरु (१०) प्रेमु (११) पोख.

१८११

द्वैत[1] सभि दुःखी, क्या जीअ जहानजा ॥
शाह वज़ीर अमीर पीर, महाजन मुखी ॥
सदा रहनि सामी चए, सम्ता वान[2] सुखी ॥
बिना रस[3] रुखी[4], कदी ब॒ोलिनि कीनकी ॥

१८१२

द्वैत[5] सभि दुःखी, क्या जीअ जहान जा ॥
शाह वज़ीर अमीर पीर, महाजन मुखी ॥
सदा रहनि सामी चए, सम्तावान[6] सुखी ॥
बिना रस[7] रुखी[8], ग॒ाल्हि न करिनि गुझजी ॥

१८१३

दाइमु[9] वसें दिलि में, तूं रब रात्यूं ड॒ीहं ॥
जीए सिप समुद्र में, खातरि मोही मीहं ॥
तीए तुहिंजे नीहं, चौद॒सि[10] चारा[11] लाइया ॥

१८१४

दाता दिलावरु, सामी मिल्यो सतिगुरू ॥
तहीं लखायो[12] लख्य[13] सां, पूरणु परमेश्वरु ॥
तनु मनु सभु सीत्लु थ्यो, मिटयो दुःखु द॒मरु ॥
भारी भौसागर[14], लहजे मंझि लंवे प्यो ॥

---

(१) भेदु रखणु (२) हिकु करे समुझणु (३) मिठा (४) कउरो (५) भेदु रखणु (६) हिकु समुझणु (७) मिठो (८) कउरो (९) सदाई–काइमु (१०) चौतर्फ (११) गो॒ल्हा कई (१२) समुझायो (१३) ज॒ाणप सां (१४) सन्सार खों पारि पहतुमि.

१८१५

द्ाना देवाना[1], आशिक सभि अलाह जा॥
मिटी जनिजे मन मों, नाना[2] अनाना॥
सदा रहनि सामी चए, उनिमुनि[3] अलसाना[4]॥
जीए पर्वाना[5], जली ज्योति स्वरूपु थ्या॥

१८१६

द्ाना[6] देवाना[7], कोई घुमनि केत्रा॥
सामी मिली स्वरूपसां, के आशिक अलसाना[8]॥
मेटे वेठा मन मों, न्रिपक्षु थी नाना॥
पर्ची पर्वाना[9], जीए जल्या ज्योति में॥

१८१७

द्ाना देवाना, थ्या साधू जन केत्रा॥
हिकिड़ा साणु संगति जे, हिकिड़ा अलसाना[10]॥
रहनि सभि स्वरूपमें, सामी समाणा[11]॥
वर्तनि विधि नाना, साक्षी थी सन्सारमें॥

१८१८

द्ाना देवाना, प्रेमी प्यारा पीअखे॥
लइ कई जनि लख्य में, न्रिखी[12] सभ नाना[13]॥
सदा रहनि सामी चए, सममें समाणा॥
जीए पर्वाना[14], जली ज्योति स्वरूपु थ्या॥

---

(१) भगुत–सन्त (२) वादि विवाद–घणा थोरा (३) लैलीनु (४) अल मस्त (५) पतंग (६) स्याणा (७) मूर्ख (८) मस्त–मिल्यल (९) पतंग (१०) अकेला–अलमस्त (११) लैलीनु (१२) पासो करे–अलगि थी (१३) प्रपंच (१४) पतंग.

१८१९

दाना देवाना, यार मिरेई यारजा ॥
के सैल कनि सन्सार जा, निपक्षु थी नाना ॥
के देई कंडि कल्प खे, अन्दरि अल्साना[१] ॥
सामी समाणा, रहनि सम सुख सममें ॥

१८२०

दानावनि[२] दर्कारि[३], सभ मिटाई मनजी ॥
भावे देही न रहे, भावे रहे युग चारि ॥
सामी डि्सनि सुप्री, पूरणु पारि उर्वारि[४] ॥
खोले बेहदि बारि[५], शाह सां वेठा सम थी ॥

१८२१

दानो[६] देवानो[७], कोर्युनि में को हिकिड़ो ॥
सामी जहिं सही क्यो, खिल्वत[८] जो खानो[९] ॥
छडे देहि अभिमान खे, सममें समाणो ॥
जीए अनल जो आनो, उल्टी चढ़ियो आकास ते ॥

१८२२

दावा[१०] अग्नि दाही[११], खलिक सभ ख्याल सां ॥
रहे निदावा नभ ज्यां, को विलो वेसाही[१२] ॥
जो लंवे चढ़ियो लख्य[१३] ते, फुर्ने जी फाही[१४] ॥
अदुलु इलाही, सामी करे सम थी ॥

---

(१) अकेला–अलमस्त (२) स्याणनि (३) घुर्ज–पर्वाह (४) सभमें (५) वृतीअ में (६) स्याणो (७) अल्मस्तु (८) प्रेम जो (९) ठिकाणो (१०) माया–अविद्या–प्रकृती–अज्ञानु–शक्ती–प्रधान्ता (११) नासु क्या (१२) प्रेमी–सन्तु (१३) पद ते (१४) नोड़ी.

१८२३

दावा करे केरु, दर्दवन्द[1] दानाह[2] सां॥
आदी अन्भय घरजो, घिड़ी लधो जहिं घेरु[3]॥
पाए पूरणु पद्वी, थ्यो निर्भय निर्वैरु॥
राई ऐं सुमेरु[4], सम जाणे सामी चए॥

१८२४

दावा[5] सभि दुःखी, क्या जीअ जहान जा॥
विले कहिं गुर्मुख जी, मिटी मनमुखी[6]॥
सदा रहे सन्सार में, सामी चए सुखी॥
जरी न दिसे रुखी[7], चेतन चिकिनाईअ रे॥

१८२५

दासु करे अर्दास, अठई पहर अन्दर में॥
जलन्दो[8] दिसी जगु खे, सुदिकी[9] भरे स्वास॥
अचे कटि क्रिपा सां, सभ फुर्नें[10] जी फास॥
ईहा पूरी आस, सामी करि सेवकजी॥

१८२६

दासु करे अर्दास, निउड़ी नारायण खे॥
पूरी करि पर्ची करे, ईहा मुहिंजी आस॥
तो बिना बी भास, रहे न रतीअ जेत्री॥

---

(१) प्रेमी–सन्त (२) स्याणो–ज़ाणू (३) दगु–ठिकाणो (४) पर्वतु (५) घुर्ज (६) आश (७) खाली (८) जीवनि खे फाथलु दिसी (९) चिन्ता सां (१०) मोह ममत्व जी रसी.

१८२७

दि॒ब[1] देही[2] पाए, मूर्ख खोहिनि मति रे ॥
मिली बहु महबूब सां, लिवं सची लाए ॥
कालु तुहिंजे कन्ध ते, बीठो नितु काहे[3] ॥
पिटीन्दे[4] पछुताए, सिज लथे[5] सामी चए ॥

१८२८

द्रिष्टि दि॒नी दीर्घु[6], सामी जहिंखे सतिगुरूअ ॥
खयों तहिं खुशीअ सां, खिम्या जो खगु॒[7] ॥
मारे मन मवास[8] खे, जीत्याईं सभु जगु॒ ॥
थी सीतलु सर्वग्यु, माणे सुखु साख्यात जो ॥

१८२९

दि॒ल्बरु दि॒लि घुरे, दि॒लि रे घुरे कीनकी ॥
कदी॒ दि॒लि दलील[9] में, तूं सामी भेट धरें ॥
त प्री पेर भरे, अचे बीहेई अगि॒तों ॥

१८३०

दि॒ल्बरु देरीनो, वेठो विच बाजारि में ॥
सामी दे॒खारे सभ खे, निर्मलु नागीनो[10] ॥
परखे पर्छिन्ना[11] रे, को प्रेमी पर्बी॒नो[12] ॥
किबिरु ऐ कीनो, मेटे मस्तु मगनु थ्यो ॥

(१) उची–तिखी (२) मानुष्य सरीरु (३) त्यारु थी (४) रोअन्दे (५) अन्ति वकति (६) तिखी–पकी (७) तरारि (८) मवाली चयों (९) ख्याल सां (१०) उतिम्रि कंदरु–रचीन्दरु–बाजीगरु–नाटी अदी (११) बिना भेद (१२) पको.

१८३१

दिल्यों[1] दिलासो[2], जहिंखे दिनो सतिगुरूअ ॥
क्यो तहिं क्रिपा सां, पापिणि[3] खों पासो ॥
समुझी थ्यो सामी चए, खिल्वती[4] खासो ॥
दिसे तमाशो[5], साक्षी[6] थी सन्सार जो ॥

१८३२

दिल्यों[7] दिलासो, जहिंखे दिनो सतिगुरूअ ॥
तहिंखों करे कीनकी, पलक हिक पासो ॥
सहजे थ्यो सामी चए, खिल्वती[8] खासो ॥
दिसे तमाशो, साक्षी थी सन्सार जो ॥

१८३३

दिल्यों[9] दिलासो, जहिंखे दिनो सतिगुरूअ ॥
पर्ची[10] क्यो तहिं पदमें[11], विधि सचीअ[12] वासो ॥
सामी रहे सरीर में, नहं ज्यां निरासो[13] ॥
दिसे तमाशो, साक्षी थी सन्सारजो ॥

१८३४

दिल्यों[14] दिल्दारी, सतिगुर दिनी सिष खे ॥
सामी थ्यो संगति करे, उतमु[15] अधिकारी[16] ॥
लंवे चढ़ियो लख्य[17] ते, भौसागरु भारी ॥
जाणे विश्व सारी, चिमतिकारु[18] चेतन जो ॥

---

(१) क्रिपा सां (२) उपदेसु क्यो (३) मायावी सन्सारु (४) जाणू थ्यो (५) प्रपंच खे दिसे (६) फकति शाहिदु थी–ट्रूस्टी थी (७) दिलिसां कृपा कई (८) जाणू–पहुतलु थ्यो (९) क्रिपा कई (१०) खुशि थी (११) रस्तेमें (१२) सचे वीचार सां (१३) निरालो (१४) प्रेम सां आधारु दिनो (१५) चङो (१६) हक्दिारु (१७) जाणपसां (१८) रचिना–तमाशो.

१८३५

दिलि अन्दरि दर्गाह[1], आहे ऐन अजीब जी ॥
सोधे[2] लधी कहिं सूमें, रहति सचीअ सां राह[3] ॥
जहिंखे दि॒नी सतिगुरूअ, पूरणु पाकु निगाह[4] ॥
मेटे चिन्ता चाह, समाणो सामी चए ॥

१८३६

दीदनि[5] खों दिल्बरु, पलक पराहूं न थिए ॥
वेठो विच पुतिल्युनि[6] में, पाए घूरम घरु[7] ॥
सुत्हसिधि सामी चए, मोहयो मनु भंवरु ॥
अन्भय सुखु अजरु, अल्यो[8] सल्यो न वञे ॥

१८३७

दीनानाथु दयालु, सामी मिल्यो सतिगुरू ॥
क्यो तहिं क्रिपा सां, नज़र भरे निहालु[9] ॥
रहियो न रतीअ जेत्रो, जूठो जगु॒ जन्जालु ॥
लूअं लूअं थी सभ लालु, दि॒सी अपरोषु[10] अलख खे ॥

१८३८

दीनानाथु दयालु, सामी मिल्यो सतिगुरू ॥
क्यो तहिं क्रिपा सां, नृखी[11] नज़र निहालु[12] ॥
अविद्या ऊन्धह न रही, मिट्यो खाम[13] ख्यालु ॥
परमेश्वरु प्रत्पालु, साणु दि॒ठो सभ काथहीं ॥

---

(१) मंदरु (२) गो॒ल्हे (३) दगु॒ (४) वीचारु (५) नजर खों–अख्युनि खों (६) सन्सारमें (७) गु॒झो घरु (८) न चई सघणु (९) उधारु (१०) न जा॒णप–न जा॒णी सघणु (११) खुशि थी (१२) उधारु (१३) अजायो.

१८३९

दीनानाथु दयालु, सामी मिल्यो सतिगुरू॥
क्यो तहिं क्रिपा सां, नि़खी[1] नज़र निहालु[2]॥
अविद्या अन्धइ न रही, मिटयो खाम[3] ख्यालु॥
सदा लालु गुलालु[4], सामी रहे स्वभावमें॥

१८४०

दीनानाथु दयालु, सामी मिल्यो सतिगुरू॥
तहिं पीआर्यो प्रेमजो, प्यालो परम रसालु[5]॥
लूअं लूअं लालु गुलालु थी, मिटयो खामु[6] ख्यालु॥
बेगमपुरि[7] ब्रिहलु, करे छदि॒याईं छिनसें॥

१८४१

दीपक मों दीपकु, जागी॒ थ्यो तहिं जहिड़ो॥
तीए मिली साधूअ सां, साधू थ्यो सेवकु॥
रहियो न रतीअ जेत्रो, सामी फेरु फर्कु॥
भावें अनलहकु[8], भावें बो॒ले रामु रामु॥

१८४२

दुःखी सभु सन्सारु, थ्यो अविद्या फासमें॥
सुखी वि॒रले सापुर्षु थ्यो, कढियो जहिं अहङ्कारु॥
सामी सृजणहारु, पाए पर्चो पाणमें॥

(१) खुशि थी (२) उधारु (३) अजायो (४) आनंदमें (५) तिखो रस भर्यो (६) अजायो (७) हृदय आनंद में अची व्यो (८) पक्षीअ जो नालो आहे जो सदाई आकास में रही अनलहकु शब्दु प्यो चवंदो रहंदो आहे.

१८४३

दुन्या सभ दर्याहु, को को तारू[१] तहिंमें ॥
हिकिड़ी लहरि लोभ जी, ड्यो आतशि जो आराहु ॥
तल्यनि जो ताउ[२], मेड़े[३] चढ़ियूं मुक्ति ते ॥

१८४४

देख्यूं ऐ देवा, मूर्ख पूज़िनि मति रे ॥
लाइनि भोगु भ्रांत[४] जा, खीर खंडूं मेवा ॥
विरले को साधू करे, सामी शुधु[५] सेवा ॥
अलखु अभेवा[६], पूरणु दिसे प्रेम सां ॥

१८४५

देवाने[७] ज्यां दमु[८], वार्यो जहिं वजूद्में[९] ॥
दिठो जहिं अख्युनि सां, पूरणु पाकु प्रीत्मु ॥
आहे जहिंजे आसरे, सामी सभु आलमु ॥
मेटे भेदु भर्मु, सामाणो तहिं सुखमें ॥

१८४६

देवाने[१०] जां दमु[११], वार्यो जहिं वजूदमें[१२] ॥
पूरणु दिठो तहिं पहिंजो, खाल्सु[१३] हिकु खसमु[१४] ॥
सदा माणे सामी चए, अन्भय सुखु अगमु[१५] ॥
तोड़े करे कमु, तांभी सीत्लु रहे स्वभावमें ॥

---

(१) ज़ाणू (२) जोरु (३) सफा करे (४) भर्म जा (५) अन्तरिमुखी (६) अथाहु (७) लय थी (८) स्वास पर स्वास (९) हृदय आकास में (१०) सन्सार खों सुर्ती छदे (११) स्वास स्वास सां (१२) हृदय कोष में लीनु थ्यो (१३) खासु (१४) मालिकु (१५) अथाहु.

१८४७

देवानो[१] दानाहु[२], कोर्युनि में को हिकिड़ो ॥
डि़ठो जंहिं अख्युनि सां, पूरणु पाकु अलाहु ॥
कहिंखे सले कीनकी, अन्भय सुखु अथाहु ॥
सदा बेपर्वाहु, सामी रहे स्वभाव[३] में ॥

१८४८

देवी[४] भवानी, दया करे जहिं दास ते ॥
तहिंखे थिए तत्व पदजी[५], अन्भय आसानी ॥
रहे न रतीअ जेत्री, नानत[६] नादानी ॥
सामी सामाणी, लाली[७] डि़से सभ लालमें[८] ॥

१८४९

देस अगम जो दगु, सतिगुर दस्यो सिष खे ॥
हठु छदे क्यो हेकिलो, पोइ न विझे पगु ॥
पहुची प्रेम प्रतीति सां, थ्यो सीत्लु सर्वग्यु[९] ॥
सामी सारो जगु, जागी डि़ठाईं ज्योतिमें[१०] ॥

१८५०

देस अगम जो दगु, सन्त लखाइनि सभखे ॥
डे़ई कन्ड़ि[११] कल्प खे, कहिं प्रेमीअ रख्यो पगु[१२] ॥
लय डि़ठाऊं लख्य[१३] में, जागी सारो जगु ॥
सामी थी सर्वग्यु[१४], मौजां करे ममत्व रे ॥

---

(१) लै ख्यल (२) प्रेमी भगतु (३) पहिंजे वृतीअ में (४) माया (५) ईश्वर जे ज़ाणप जी (६) भेदु भर्मु (७) सूहं (८) जीव में (९) सभु ज़ाणंदरु (१०) सता में (११) सन्सारी प्रपंच खों वृकतु थी (१२) ईश्वर तर्फि पेरु खंयो (१३) अन्तरि वृतीअ सां सभु लै डि़ठाऊं (१४) सभ जो ज़ाणू.

१८५१

देस अगम जो द॒गु, सामी जहिं सही क्यो॥
पर्ची ख्याईं प्रेम सां, पन्धि पेरनि रे पगु॥
काया माया कुल खों, थी अलेपु अलगु॥
जागी सारो जगु, लय ड्रिठाईं लख्यमें॥

१८५२

देहीअ[1] मंझि दीदारु, अजाइबु अजीबजो॥
मन बुधि वाणीअ खों परे, पूरणु पुर्षु अपारु॥
सूक्षम ऐ इस्थूल जो, साक्षी सिृजणहारु॥
बोध बिमल[2] सुख सारु, कोर्युनि मझों को लहे॥

१८५३

देहीअ मंझे देउ, अथी देही देव में॥
समुझी ड्रिसु सामी चए, गुर्गम ईहो भेउ[3]॥
त अविद्या जो अहंमेउ[4], मिटी वञेई मन मों॥

१८५४

देही[5] न जाणे, गुर्मुखु[6] पहिंजो पाणखे॥
चेतन[7] सार स्वरूपखे, गुर्गम सुञाणे॥
ममत्व मिटाए मन जी, मौजां नितु माणे॥
सुम्हे पटु[8] ताणे, सामी सुषुप्ति सेजते॥

---

(१) सरीर में (२) वीचार सां सुख स्वरूप में लीनु थ्यो (३) भेदु (४) मांपणो (५) सरीरु न समुझंदो आहे (६) गुर सिषु (७) सभमें चेतन स्ता थो समुझे (८) समाधीअ में–ध्यान अवस्थामें.

१८५५

दोस्त[1] जो दर्सनु, कामिल आहे कहिड़ो ॥
चयो वञे न मूहं सां, त्रिहङ्कारु त्रिगुनु ॥
उल्टी[2] दि॒सु अन्द॒र में, करे मनु अमनु ॥
प्रत्क्षु पाकु पूरनु, सामी प्रकासे[3] सभखे ॥

१८५६

दो॒स्त[4] जो द॒र्सनु, कामिल आहे कहिड़ो ॥
चयो वञे न मूहं सां, सदा पाकु प्रसनु ॥
सामी समुझे सीन[5], को सचो साधूजनु ॥
मेटे सभु मननु, माणे मौज मुक्ति जी ॥

१८५७

दो॒स्त[6] जो दस्तूरु, ईहो आहे आदि॒जो[7] ॥
मारे[8] करे मिटनि खे, गगन[9] में गर्कूर[10] ॥
तहिंखां पर्चौ पोइ थिए, हाजरां हजूरु ॥
मुलिक में मशहूरु, साख दि॒यनि सामी चए ॥

१८५८

दो॒स्त[11] जो दीदा॒रु, क्यो जहिं कृपा सां ॥
भुलो तहिंजो भर्म मों, कामु क्रोधु अहङ्कारु ॥
सदाई गुल्ज़ारु, सामी रहे स्वभावमें ॥

(१) प्रेमीअ जो आधारु (२) वीचारे दि॒सु (३) व्यापकु आहे–स्ता दे॒ई रहियो आहे (४) प्रेमीअ जो आधारु (५) वृती–लैलीन्ता (६) प्रेमीअ (७) मुंढ जो (८) भुलाए (९) आनंद अवस्थामें (१०) लैइ थे (११) ईश्वर जो.

१८५९

दोस्त[1] जो दीदारु, क्यो जहिं कल्प रे ॥
भुलो तहिंजे भास मों, कामु क्रोधु अहङ्कारु ॥
सदाई गुल्ज़ारु, सामी रहे स्वभावमें ॥

१८६०

दोस्त[2] जो दीदारु, कामिल आहे हिकिड़ो ॥
चयो वञे न मुहं सां, अजगैबी इसरारु[3] ॥
नको रूपु न रंगु को, नको अंगु आकारु ॥
जदि मिलन्दुइ यारु, तदि पौंदइ सुधि स्वरूपजी ॥

१८६१

दोस्त[4] जो दीदारु, सुञ[5] वसवं जे विचमें ॥
विॖले कहिं गुर्मुख दि॒ठो, हिकदमि करे करारु[6] ॥
चई सघे न मुहं सां, अन्भय सुखु अपारु ॥
सदा मस्तु मवारु, सामी रहे स्वभावमें ॥

१८६२

दोस्त जो दीदारु, सुत्ह करायो सतिगुरूअ ॥
उतिरे कीन अख्युनि मों, खुलासो खूमारु ॥
अविद्या ऊंधइ न रही, लूअं लूअं थी गुल्ज़ारु ॥
सदा मेघु मल्हारु, सामी वसे सिरते ॥

---

(१) ईश्वर जो (२) ईश्वर जो (३) कुदिरत (४) ईश्वर जो (५) हृदय कोष में (६) लै थी (७) अलिवेलो.

१८६३

दोस्त[१] जो दुआरो, सुञ[२] वसवं जे विचमें ॥
सामी पहुंचे को साधूजनु, भाग्यवानु भारो[३] ॥
मिट्यो जहिंजे मन मों, अविद्या अन्धारो ॥
लखे[४] लख्य[५] वारो, माणे मौज मुक्ति जी ॥

१८६४

दोस्त[६] जो देरो[७], अथी अध[८] आस्मान में ॥
सूक्षम खों सूक्षमु अथी, पर्चीं[९] लहु पेरो[१०] ॥
त मिटी वञेई मन मों, अविद्या अन्धेरो ॥
भाग्यवान भेरो[११], सफ़िलो करि सामी चए ॥

१८६५

दोस्त[१२] जो देरो[१३], दीदनि[१४] जे दीदार में ॥
पुछी पेराठ्युनि[१५] खों, पर्चीं लहु पेरो[१६] ॥
मिली[१७] मिटाइ मन जो, अविद्या अन्धेरो ॥
भाग्यवान भेरो[१८], सफ़िलो करि सामी चए ॥

१८६६

दोस्त[१९] जो देरो[२०], सचीअ सिक सही क्यो ॥
मिटायाईं मन मों, भव[२१] जल जो फेरो ॥
करे निबेरो[२२], सामी चढ़ियो सीरते ॥

---

(१) ईश्वर जो (२) हृदय कोष (३) तिखो (४) ज़ाणे (५) ज़ाणप वारो (६) ईश्वर जे (७) ठिकाणे (८) हृदय कोष में (९) समुझी (१०) दगु (११) हे जन्मु (१२) ईश्वर जो (१३) ठिकाणो (१४) नजर जो नजर सां—अन्तरि व्रितीअ सां (१५) ज़ाणुनि—प्रेम्युनि (१६) दगु (१७) वीचारे (१८) हीउ जन्मु (१९) इश्वर जो (२०) ठिकाणो (२१) सन्सारी चक्र (२२) खलासु.

१८६७

दोस्त[१] जो देरो[२]; सुञ[३] वसंव जे विचमें ॥
जाणनि सिक समुझ रे, अन्धा[४] ओखेरो ॥
सामी सुजागुनि[५] खे, प्रत्क्षु थ्यो पेरो[६] ॥
फुर्ने जो फेरो, मेटे वेठा मन मों ॥

१८६८

दोस्त[७] जो देरो[८], सुञ[९] वसवं जे विचमें ॥
पहुचणु प्रेम प्रतीति रे, आहे ओखेरो ॥
पर्ची पेराठयुनि सां[१०], लहु पको पेरो[११] ॥
भाग्यवान भेरो[१२], सफिलो करि सामी चए ॥

१८६९

दोस्त[१३] जो देरो[१४], सुत्ह सफाईअ[१५] में ॥
पहुचे को प्रतीति सां, प्रेमी पकेरो[१६] ॥
जागी थ्यो जहिं जीअ जो, निप्टि[१७] निबेरो ॥
दिसे न अन्धेरो, सामी सूर्य[१८] सार में ॥

१८७०

दोस्त[१९] जो देरो[२०], सुञ[२१] वसवं जे विचमें ॥
पहुचे को प्रतीति सां, प्रेमी पकेरो[२२] ॥
मिल्यो जहिंजे मन मों, सामी मै मेरो ॥
वसे वसेरो[२३], सही करे सुमेर[२४] जां ॥

---

(१) ईश्वर जो (२) ठिकाणो (३) हृदय कोषु (४) अण जाण (५) जाणुनि (६) अन्भय (७) ईश्वर जो (८) ठिकाणो (९) हृदय कोष **में** (१०) जाणुनि (११) रस्तो (१२) हीउ जन्मु (१३) ईश्वर जो (१४) ठिकाणो (१५) शुधि वीचार में (१६) पको (१७) तुरितु (१८) सूर्य रूपी ईश्वरी सता में (१९) ईश्वर जो (२०) ठिकाणो (२१) हृदय कोष में (२२) पूरणु (२३) सभ में व्यापकु (२४) पर्वत वांगे.

१८७१

दोस्त[१] डि॒नी दीद[२], जनिखे पर्चो[३] पहिंजी॥
मरी[४] थ्या से महबती, सामी सभि शहीद[५]॥
हाजुरु रहनि हजूर[६] में, माइल[७] मुल्ह खरीद॥
अठई पहर ईद[८], मिली कनि महबूब सां॥

१८७२

दोस्त दर्वाजो, पटे छडि॒यो प्रेमजो॥
पेही अचे को पाणहीं, नेहीं निवाजो[९]॥
जहिंखे क्यो सतिगुरूअ, अटक[१०] खों आजो॥
भिजी[११] ब्राजो[१२], सामी सुषप्ति सेजते॥

१८७३

दोस्त[१३] दिलि खसे, वदी, दर्सन दाति[१४] सां॥
बिना सिक अन्दर में, बी॒ गा॒ल्हि कान वसे॥
सामी सदा डि॒से, सन्मुखु वेठो सुप्री॥

१८७४

दोस्त[१५] हणु न दमु, माया ब॒ल हुकिम जो॥
अचे वठन्दुइ ओचिते, महां जोरावरु जमु॥
मारे जहिं मिटी क्यो, सामी सभु आल्मु॥
रखी मनि मर्मु[१६], जपे वठु जगदीस खे॥

---

(१) ईश्वर (२) नजर–बु॒धी (३) क्रिपा करे (४) सन्सारखों पासे थी (५) शुधि–जा॒णू (६) हुकुम में (७) मिल्यल (८) खुशी (९) लोर वारो (१०) मोह ममत्व (११) पुरि थी–लै थी (१२) आयो (१३) ईश्वर (१४) सता सां–क्रिपा सां (१५) मित्र (१६) भउ.

१८७५

दौलत[१] दर्दबन्दी[२], सतिगुर ड़िनी सिष खे॥
सभ घट ड़िसे सुप्री, छदे खुदि पिसंदी[३]॥
कहिंखे चवे कीनकी, सूहं सां, चङी मन्दी॥
हर्दमि हथ बन्धी, शेवा करे सामी चए॥

१८७६

दौलत[४] बिना दमु, कूड़ा हणनि केत्रा॥
गाल्हियूं पद[५] अगम जूं, सामी कनि सुगमु॥
रखनि न रतीअ जेत्रो, भूर्ख मनि मर्मु[६]॥
जद़ी पवेन कमु, तड़ी रोई वेहनि राहते॥

१८७७

दौलत्युनि[७] जो दमु[८], गुझो रहे न गोठ में॥
जागी क्यूं जहिं जोर सां, बलाऊं[९] भस्मु॥
रखनि न रतीअ जेत्रो, कहिंसां गूंदरु[१०] गमु[११]॥
सामी सभु आल्मु, मोए भरे मुजिरा[१२]॥

१८७८

धन्धा सभि धई, थकी जीउ थधो थ्यो॥
अविद्या रोगु अन्दर जो, कढ्यो कीन कहीं॥
सामी दसी सतिगुरूअ, सुत्ह गाल्हि सई॥
वेई वेल तहीं, खटि[१३] खुआरी निकिरी॥

---

(१) उपदेसु–सिख्या (२) प्रेमजी (३) ज्ञाण (४) उपदेसु–सिख्या–क्रिपा (५) ऊच पद जूं (६) शर्मु (७) सन्तनि–प्रेम्युनि (८) वर्ताउ–रहिणी (९) घुर्जां (१०) थोरो (११) विरोधु (१२) जूण्यूं–जन्मे मरे (१३) खटिप्टि–प्रपंचु–मां–मेरो.

१८७९

धड़ तों सिरु लाहे, साधू चढ़े संग्रामते[1]॥
वञी पए वेसाह सां, कल्प रे काहे॥
मारे दुःधा[2] दलखे, नौबत वजाए॥
सामी झूलाए[3], अन्भय छत्रु मथेते॥

१८८०

धरें[4] कोहु[5] प्यारु, थो सामी माया मोह सां॥
अथी सभु अविद्या जो, अण हून्दो इसरारु[6]॥
जीएं नांगु नोड़ीअ में, स्वप्न में सन्सारु॥
करि न जीउ[7] खोआरु, मृिघ त्रिष्णा जे जलमें॥

१८८१

धीर[8] जनी धारी, अफुर[9] जहिं आकास जी॥
मिट्यो तहिंजे मन मों, भउ भर्मु भारी॥
जागी डि्ठाई ज्योति[10] में; सामी विश्व सारी॥
सभ सां सचारी, मुखि रखी मौजां करे॥

१८८२

धीर्जु ऐ धर्मु, सामी जहिं सोघो क्यो॥
पातो तहिं प्रयनि जो, महबतीअ मर्मु[11]॥
भञी भोलु भर्मु, चढ़ियो अन्भय अछते॥

---

(१) मैंदानमें- पधिरो थे-प्रेमाभगितीअ में लय थे (२) द्वेतु (३) कृपा करे (४) करें (५) छो (६) तमाशो (७) मानुष्य जन्मु (८) धीर्जु (९) निृमलु (१०) सतामें (११) भेदु.

१८८३

नईं ञोई[1], लख्य[2] लखाई[3] सतिगुरूअ ॥
उपजे निपजे लीनु थिए, जहिंमें जगु सभोई ॥
समुझे सिक सचीअ सां, साधू जनु सोई ॥
जो वेठो हथ[4] धोई, सामी चए सरीर तों ॥

१८८४

न कहिं पढ़िये पाढ़ी, नकी पढ़याईं ॥
ओढ़ो दरु अजीब जो, वञी डि्ठाईं ॥
न जाणां काई[5], माखे प्रयनि पाणु पसायो ॥

१८८५

नका जोग जुगति, नको जाणां जपु तपु ॥
सामी सेवा टहल जी, मासें कान्हे मति ॥
पाण रखंदे पति, अचे ऐब भरीअ जी ॥

१८८६

नकी अलु न सलु, सामी सिक प्रयनि जी ॥
नकी धारे बलखे, नकी थीउ त्रिबलु ॥
अण हून्दीअ अविद्या जो, तूं विचौं कढु खललु ॥
अठई पहर अचलु[6], जुयौं रहु जगदीस सां ॥

(१) शुधु (२) समुझ-जाणप (३) समुझाई-डेखारी (४) मोह छडे (५) कीअं (६) हिक करो.

१८८७

नकी[1] कढु न पाइ, नकी[2] खाउ न बुख मरु॥
नकी[3] सुमुह न जागु की, नकी[4] चुपि गाल्हाइ॥
जिते[5] तूं मां नाहिं का, लोड़े[6] लहु सा जाइ॥
त सामी भोले भाइ, सुत्ह मिलनी सुप्री॥

१८८८

नकी[7] कथि ज्ञानु, नकी[8] धार्जि मौनि खे॥
नकी[9] घुमु घरनि में, नकी[10] धरि ध्यानु॥
समुझ[11] रे सामी चए, अथी[12] सभु अभिमानु॥
पाए पदु न्रिबाणु[13], मिली महद जननि सां॥

१८८९

नकी खणी आएं, नकी नींदे साणु॥
नाहकु माया मोहमें, पचाएं छो पाणु॥
मिली साध संगति सां, सहजे पाणु[14] सुञाणु॥
मन जो भञी माणु[15], सामी दि़सु[16] स्वरूपखे॥

---

(१) खटिप्टि में–पाणु न जा़णाइ (२) खाइण भुख कढण में पाणु न जा़णाइ (३) सुम्हण जागण में मां पणो कढु (४) मौनि करणु गाल्हाइण में मां पणो न समुझु (५) जहिंमें मां पणो कोन्हे (६) उन्हीअ खे गोल्हे लहु (७) ज्ञानी न जा़णु (८) मौनि धारी न समुझु (९) घरि घरि वञी वडा़ई न करि (१०) ध्यानु कंदरु न समुझु (११) ईहा बेसमुझी आहे. (१२) ईहो अभिमानु आहे (१३) न्रिबाण पद में मां पणे खे कढी ज्ञाती पाइ, वधीक दि़सो सलोक १८९० जे माना में (१४) मां केरु आहियां (१५) मां पणो (१६) अन्तरि ज्ञाती पाइ शुधु स्वरूप में लीनु थीउ.

१८९०

नकी* खाउ, न भुख मरु, नकी जागु न सुम्हु ॥
नकी त्यागि न ग्रहणु करि, नकी वेहु न घुमु ॥
आहें जहिंजे आसरे, सो सामी करि माल्मु ॥
ज्ञान सूर्य रे गुमु, अविद्या ऊंधइ न थिए ॥

१८९१

नकी§ खाउ न भुख मरु, नकी जागु न सुम्हु ॥
नकी हारि न हठु करि, नकी ग्रहणु गुमु ॥
मिली साध संगति सां, मतिलबु करि माल्मु ॥
जहिंजो हले हुकुमु, सामी सोई पातिशाहु ॥

१८९२

नकी‡ खाउ न भुख मरु, नकी सुम्हु न जागु ॥
नकी दुरु दोहागु भै, नकी धरि सोहागु ॥
माणिजि खणी मागु[1], त सुखी थिए सामी चए ॥

---

*हीअ ऊहा अवस्था आहे जाते न खाइणु आहे, न भुख मरणु आहे, न सुम्हणु जागणु आहे, न त्यागु ग्रहणु आहे, न वेहणु घुमणु आहे. तूं ऊहो जाणु, जहिंजे असिरे पहिंजे सरीर खे मां थो चएं, ईहो मां पणो ज्ञान रूपी वीचार सूर्य जे प्रकास खों सवाइ मायात्री अन्धारो कीन मिटंदो. वधीक दिसो सलोक १८८८ जे माना में.

§सागये सलोकु १८९० वांगे.

‡दिसो सलोक १८८८: १८९० जे माना में. (१) खावंदु–मालिकु.

१८९३

नकी[1] जाणु परे, नकी ओरे आत्मा ॥
सुञ[2] वसवं जे विचमें, थो सदा सैल करे ॥
समुझी[3] दिसु सामी चए, निर्मलु नेण भरे ॥
ब्याईअ[4] बिना बुरे, थो दीओ तुहिंजे दीलमें ॥

१८९४

नकी[5] जीउ मरे, नकी अचे गर्भ में ॥
नकी बुडे जलमें, नकी अग्नि जरे ॥
रहे अलेपु आकास जां, नाना रूप धरे ॥
सन्तनि सही करे, साख दिनी सामी चए ॥

१८९५

नकी[6] जीउ मरे, नकी जन्मे जगमें ॥
वेठो अन्भय तख़्त ते, कूड़ी कल्प करे ॥
को सुजागो सूमों, जागी अजरु जरे ॥
सामी दिसी ठरे, पहिंजे अख्यें पाणखे ॥

१८९६

नकी तोरि न तकि[7], नकी करि कल्मा[8] ॥
सटे विझु सन्सार जूं, आशाऊं अधिक[9] ॥
मिली थी महबूब सां, फुर्ने खो फार्कि[10] ॥
विधि सां वेठो फकि, सामी रसोई[11] रस भरी ॥

---

(१) आत्म सता ओरे परे कान आहे (२) हृदय कोष में सरीर सां सदा व्यापकु ऐं आधारु आहे (३) ईहा गाल्हि शुधु वीचार सां वीचारि ऐ समझु (४) बिना भेद जें सदाई आत्म सता (जोती प्रकासु) व्यापकु आहे (५) आत्म सर्वदा ऐ सर्व व्यापी आहे. सलोक उन लाइ खोले चयो अथनि (६) पहिंजो पाणु सुञाणण खों पोइ कुछ कोन आहे केवल्य आत्म सता पहिंजे पाण में व्यापकु आहे (७) गुण गोत (८) प्रपंचु (९) बवीक. (१०) घुर्जनि–फुर्ननि खे छदे (११) गुर मंत्रु- अजपा जापु.

१८९७

नकी थीउ विृकतु, नकी गपु ग्रहस्तमें ॥
मिली वठु महबूब सां, सामी चए सुततु ॥
मोटी ईंदुई कीनकी, अहिड़ो हथि वखतु॥
पोइ रोअन्दे रतु, अख्युनि सों आजज़ु थी॥

१८९८

नको आरु न पारु[1], सुपेर्युनि जे सिकजो[2] ॥
स्वातीअ बिना सिप खे, अचे कीन करारु॥
मछीअ जे मन में, वसे पाणी प्राण आधारु॥
सामी स्रिजणहारु, पलक पराहूं न थिए॥

१८९९

नको[3] कोहु न अधु कोहु, नको पेरु परे॥
जानी झरोकनि में, थो सामी सद् करे॥
जहीं प्रलाउ कनि प्यो, तहीं डि॒ठा नेण भरे॥
मोहे झोक झरे, पलक पराहूं न थिए॥

१९००

नको सुखु सुम्हण में, नको जाग॒ण जसु॥
नको खैरु खिलण में, नको रोअण रसु॥
दि॒लि में दि॒ल्बरु पसु, त सुखी थिए सामी चए॥

---

(१) आदि अन्तु (२) प्रेम जो (३) ईश्वर ओरे परे कोन आहे, हू सदा साणु ऐ पाण आहे जो सरीर जे मैदान में स्वासनि धुनी द्वारा सद-करे याने वुधाए रह्यो आहे, पर जेको जाणी ऐ डि॒ठो सो वरी छदे॒ नथो, ऐ उन्हीअ आनंद में लीनु थो रहे.

१९०१

न कोहु न अधु कोहु, न विरांग न विख॥
अन्दरि अन्मय आत्मा, पखें सभ पखं॥
आहिनि जहिंजे आसरे, सति अस्ति गुर सिष॥
साख देई सालिख[1], सामी व्या सन्सार मों॥

१९०२

नज़र[2] मंझि निहालु, गुर पूरे पचीं[3] क्यो॥
अजगैबी इसरार[4] जो, कहिंखे कयां हालु॥
मिटी व्यरो मन मों, सन्सो ऐ सोआलु॥
कटे कल्प कालु, सामी मिल्यो स्वरूप सां॥

१९०३

न्यो[5] निहाड़े[6], जहिंखे अशिक अजीब जे॥
सो वेठो दर्स दर्गाह[7] में, ड्याईअ खे बोड़े[8]॥
सामी मूहुं मोड़े, कहिंदे दि्से कीनकी॥

१९०४

त्राधारु नौबत[9], अखंडु बजे थी आदिजी॥
बुधे को बांभणु चए, जोगी करे जौरत[10]॥
पाए पछिनता रे, उनु[11] मुनु सुखु अमत[12]॥
रहे मंझि जगत, सदा अलेपु आकास जां॥

(१) सचा प्रेमी भगित–ज्ञानवान मर्थीअ रीति चई व्या (२) कृपा सां (३) खुशि थी (४) कुदिरत (५) खयों (६) कृपा करे (७) सभ में (८) कढी (९) धुनी (१०) जतनु (११) तिखो (१२) बे अन्दाजु.

१९०५

ञासो[1] निरंगु[2], काणि न कटे कहिंजी ॥
कटे सभ कल्पा, क्यो जहिं सतिसंगु ॥
वेठो विच बजारि[3] में, पाए प्रेम पलंगु[4] ॥
बेरंगीअ जो रंगु, सुञ्ह दि॒से सामी चए ॥

१९०६

नागनि कीन निवायो, नाथु निवायो नीहं ॥
असुलु औधूतनि खे, मड़हीअ उठा मीहं ॥
कनि जागन्दे दी॒हं, कनिखे पलक में पचो थ्यो ॥

१९०७

नाना घाट[5] घड़े, सन्त लखाइनि सम्ता ॥
तहीं में तद रूपु थी, को वि॒लो जनु वड़े[6] ॥
सामी सारु सही करे, चेतन चिट चढ़े[7] ॥
वरी कीन वड़े[8], भुली कल्प[9] कन्डि में ॥

१९०८

नाना निहारे, मूर्खु मन जे भांइ थो ॥
चई हिकु जबान सां, सभखे दे॒खारे ॥
घरु पहिंजो न दि॒से, सामी सम्भारे ॥
हिफ़्न[10] थो हारे, हीरो जन्मु हथनि मों ॥

---

(१) विना आस (२) वेपर्वाहु (३) अन्तरि व्रितीअ में (४) प्रेम सां लीनु थ्यो (५) रस्ता-द्रष्टान्त (६) अचे (७) पद दे पहुचे (८) अचे (९) सन्सारी कल्पा में (१०) अजायो-व्यर्थु.

१९०९

नाना भेष म धरि, मूर्ख मन जे भांइ तूं॥ .
कीन बुधोसे काथहीं, फीणु लंघायो पारि॥
मिली साध संगति सां, अविद्या भर्मु निवारि॥
जागी पाणु सम्भारि, त सुखी थिए सामी चए॥

१९१०

नाना रूप धरे, ख्याली[1] खेले[2] पाणसां॥
जोड़े बुत मिटीअ जा, जीए बालकु रांदि करे॥
रहे पाण परे, नटु नचाए पुतिल्यूं॥

१९११

नाना रूप धरे, माया मोहे सभखे॥
भोग भोगाए भर्म जा, फुरे फकीरु करे॥
विॣलो को गुर्मखु रहे, प्रेमी पाकु परे॥
जहिंदे नजर भरे, सामी दिठो सतिगुरूअ॥

१९१२

नाना रूप धरे, माया मोहियो सभखे॥
सामी बचो को सूमों, सतिगुरु सम्भारे॥
जादे निहारे, तादे सजणु सामुहों॥

---

(१) ईश्वरु (२) ठाहे.

१९१३

नाना रूप धरे, सन्त लखाइनि सारु था ॥
भय दिलासो भाविना, वचन विलास करे ॥
कोर्युनि मों को हिकिड़ो, समुझी अजरु[1] जरे[2] ॥
जहिंजो पटु परे[3], सामी करे सतिगुरू ॥

१९१४

नाना वाक्य रचे, सन्त लखाईनि सारु था ॥
सामी जहिंखे समुझ में, ईहा गाल्हि अचे ॥
सो पुर्झियो[4] कीन पचे[5], नाहकु अविद्या भर्म में ॥

१९१५

नाना विधि केई, वाटां आत्म पद जूं ॥
वञी बेगमपुरि में, गदु थ्यूं सभेई ॥
विॾे कहिं गुर्मुख खे, सम सोझी पेई ॥
तहिंजी सभ वेई, अविद्या कल्प निकिरी ॥

१९१६

नामु जनीजे मन में, से बोलिनि कीन ड्यो ॥
निविरत जो नानकु चए, जहिंखे पेचु[6] प्यो ॥
रात्यूं दींहं रहियो, दिल्बरु तनिजे दिलि में ॥

---

(१) अणजाणु (२) जाणे (३) अज्ञान जो पर्दो (४) समुझी (५) फासे
(६) रस्तो मिल्यो.

१९१७

नामु न निहारे, पाए मुहुं मढ़ीअ में ॥
जन्मु पातुई जगमें, सो हिफ़त[1] क्यूं हारे ॥
मूर्खु थो मारे, पहिंजे हथें पाणखे ॥

१९१८

नार्द सभु कबूलु, भगितनि जो भतु पाणी ॥
जनी डि़नो मांखे, महबत सां मनु मूलु ॥
लइ क्याई लख्य[2] में, सूक्षमु ऐ अस्थूलु ॥
तूं भी वञी झूलु, प्रेम हिन्दोरे तनिसां ॥

१९१९

नारायण जे नाम जो, धर्यो जनि ध्यानु ॥
कोरे[3] कसे कढियो, तनि अन्दर मों अभिमानु ॥
तनीखे भगिवानु, मालमु मंझेई[4] थ्यो ॥

१९२०

नारी पीअ प्यारी, पासे थिए न पीअखों ॥
जहिंखे सुख सोहागु जी, पेई सुधि सारी ॥
कहिंखे सले कीनकी, बेहद सुखु भारी ॥
न्भ जां न्यारी, वर्तें सभ वहिवार में ॥

(१) अजायो छो विञाए (२) वीचार सां (३) साफ़ु करे (४) सरीर मों–अन्दर मों.

१९२१

नाहकु जीउ रुले, थो कर्मनि जो कल्प में॥
बिना भगिति भगिवान जे, भर्म कीन भुले॥
तद्री गुंढि खुले, जद्री सामी मिले स्वरूप सां॥

१९२२

नाहकु मनु न हारि, नांगु डि्सी नोड़ीअ में॥
कल्प कढी जीअ मों, तूं न्रिमलु नैन[1] निहारि॥
पहिंजो पाणु सम्भारि, त सामी मिलें स्वरूप सां॥

१९२३

नाहकु विञाए, थो मूर्खु मानुष्य देहिखे॥
सामी सन्तनि सां मिली, लेखे न लाए॥
जागी सति सन्सार खे, थो रोए ऐ खाए॥
बुकु भर्यू लाए, थो मिटी पहिंजे मूहंखे॥

१९२४

नितारे[2] नेणनि, लधो पेरु[3] पलकमें॥
नाना भांति छदे करे, हाजुरु हिकु डि्सनि॥
महबूबनि जे मूहं खों, पलक न पासो कनि॥
सदा गर्कु रहनि, सामी सार स्वरूप में॥

---

(१) वीचार सां डि्सु (२) अन्तरि वीचार सां (३) ठिकाणो.

१९२५

नितु प्राप्ति[1] ज़ाणु, आत्म सुखु अन्दरमें ॥
जीए आकासु घटनि में, तीए साक्षी तुहिंजो साणु ॥
कढी पहिंजो पाणु, सामी दि़सु स्वरूपखे ॥

१९२६

निन्दा[2] निवाजी[3], खावन्दु खस्मानो[4] करे ॥
चढ़ी सुषप्ति सेजते, थी ऐबनि खों आजी ॥
कहिंजी रहे कानका, मिन्थ मोथाजी ॥
न ज़ाणा राजी, थ्यरो कहिड़ीअ ग़ाल्हिते ॥

१९२७

निमाणनि जो माणु, प्री पराहूं न थिए ॥
वेहां त वेहे सुम्हां त सुम्हें, दि़सां त दि़से पाणु ॥
सामी पुर्षु सुजाणु, हथु लायां हथि न अचे ॥

१९२८

निमाणनि जो माणु, सहिजे मिल्यो सतिगुरू ॥
लख्य लखाए अन्भई, क्यो तहिं कल्याणु ॥
सुतह दि़ठो सामी चए, पाण वराए[5] पाणु ॥
जहिंजो वेद वख्याणु[6], सदा करिनि सन्सारमें ॥

---

(१) नआं-सदा व्यापकु (२) निन्दयल (३) आजी थी (४) क्रिपा करे
(५) ज्ञाती पाए-अन्तरि वीचारे (६) उस्तती.

१९२९

निमाणनि जो माणु, साम्हिथु मिल्यो सतिगुरू ॥
पुरि पीआरे प्रेम रसु, क्यो तहिं कल्याणु ॥
जागी दि॒ठो जहिं ज्योति में, पाण वराए[1] पाणु ॥
सदाई त्रिबा॒णु, सामी रहे स्वभावमें ॥

१९३०

निमाणनि जो माणु, सामी मिल्यो सतिगुरू ॥
अन्जनु[2] पाए अन्भई, क्यो तहिं कल्याणु ॥
जागी दि॒ठो ज्योति में, पाण वराए[3] पाणु ॥
सिद्धि थिए जहिं साणु, स्वप्न जो सन्सारु सभु ॥

१९३१

निमाणनि जो माणु, सामी मिल्यो सतिगुरू ॥
क्यो तहिं कल्प खों, ममत्व रे त्रिबा॒णु ॥
अन्दरि बा॒हरि आत्मा, सम दि॒ठो सभ साणु ॥
जहिंजो वेद वखाणु, सदा कनि सन्सारमें ॥

१९३२

निमाणो नेही, नितु दाहूं करे दर्द सां ॥
तुहिंजे सिक सोघो क्यो, तर्फे दि॒लि देही ॥
त्रिधु सुजाणी पहिंजो, आउ प्री पेही ॥
सामी चए वेही, कयों मूहं मुकाबिलि गा॒ल्हियूं ॥

---

(१) पहिंजो पाण खे दि॒ठो (२) दारू–सुर्मो–दवा–उपदेसु (३) पहिंजो पाणु दि॒ठो.

१९३३

न्रिखी[1] न्याईं[2], प्रेमीअ खे पीअ पाण सां ॥
लाली पसी लालजी, जवर[3] जीत्याईं ॥
सामी सुख सन्सार जा, सद्रिके क्याईं ॥
पत्यो[4] पीताईं, पीअन्दरे पाकु थ्यो ॥

१९३४

न्रिगुणु ऐं स्रिगुणु, ब॒ई आकार अलख जा ॥
जहिंखे प्रेम प्रतीति सां, मने तुहिंजो मनु ॥
तहिंजो करि तद्‌रूपु थी, बिना भेद भज॒नु ॥
प्रीति उते प्रसनु, सामी थीन्दुइ सुप्री ॥

१९३५

न्रिगुणु ऐं सृिगुणु, ब॒ई रूप स्वरूप जा ॥
लेपु न लगे॒ तनिखे, जीए अलेपु गगनु ॥
निस्पन्द[5] ऐं अस्पन्द[6] में, सामी हिकु पवनु ॥
सदाई प्रसनु, पाणीअ लहरि तरंगमें ॥

१९३६

न्रित[7] सां नाड़ी[8], सामी ड्रिठी सतिगुरूअ ॥
पर्ची पाड़[9] पलकमें, सन्से जी साड़ी ॥
पूरी पछाड़ी, निबाहे त्रिबा॒णु क्यो ॥

---

(१) खुशि थी (२) खयाईं (३) तपति (४) त्यारु कयलु फलु (५) सपर्शु (६) असपर्शु (७) रस्ते सां (८) नबिज़ (९) जर.

१९३७

न्रिभय कीन भजे॒, सामी रण[1] मों सूमों ॥
जहिंखे छदि॒यो सतिगुरूअ, क्रिपा साणु कजे॒[2] ॥
चोट[3] हणी चेतन ते, तन जी आस तजे॒ ॥
सिरमें सदा वजे॒, नगारो न्रिबा॒ण जो ॥

१९३८

न्रिभय गा॒ल्हि चई, सामी पूरे सतिगुरूअ ॥
चढ़ी[4] सुर्ति आकास ते, छदे॒ पख बु॒ई ॥
मिली सार स्वरूप सां, क्याई सुखु सही ॥
अन्भय सुखु लही, रहे मुक्ति मैदानमें ॥

१९३९

न्रिभय दे॒हु दु॒से, सामी दि॒नो सतिगुरूअ ॥
जहिंमें मेघु[5] महिर जो, अठई पहर वसे[6] ॥
कोयुंनि मों को हिकिड़ो, रहति वानु रसे[7] ॥
विधा जहिं दसे[8], दुशिमन[9] पहिंजे दरते ॥

१९४०

नृभय नगरु दु॒से, सामी दि॒नो सतिगुरूअ ॥
जिते मेघु[10] महिर जो, अठई पहर वसे[11] ॥
कोयुंनि मों को हिकिड़ो, रहति वानुरसे[12] ॥
विधा जहिं दसे[13], दुशिमन[14] पहिंजे दरते ॥

---

(१) मैदानु (२) खंयो (३) चेतन सता में लीनु थ्यो (४) त्रिती दस्वे द्वार में लीनु थी (५) धुनी (६) हले (७) पहुचे (८) जीते (९) कामु क्रोधु आदी (१०) धुनी (११) हले (१२) पहुचे (१३) जीते (१४) कामु क्रोधु आदी.

१९४१

निर्भय नगारो[1], अखंडु वजे थो आदिजो[2] ॥
बुधे[3] को बांभणु चए, भाग्यवानु भारो[4] ॥
मिट्यो जहिंजे मन मों, अविद्या[5] अन्धारो ॥
जाणे जगु सारो, चिमतिकारु[6] चेतन जो ॥

१९४२

निर्भय निवालो[7], सामी खाधो[8] साध संगि ॥
दीओ[9] डिठो तहिं देहिमें, न्भ जां निरालो ॥
करे न कतर जेत्रो, कल्प कशालो ॥
सम थी सुखालो, वर्ते विधि वीचार सां ॥

१९४३

निर्मल निराला, साधूजन सन्सारमें ॥
काणि न कढनि कहिंजी, सदा सुखाला[10] ॥
रता रहनि रंगमें[11], मगनु मतिवाला[12] ॥
बुढा ऐ बाला[13] सामी थ्यड़ा कीनकी ॥

१९४४

निर्मलु नाना भांड्[14], सन्त लखाइनि[15] सम्ता ॥
सामी समुझी सर्वगति[16], ममत्व मैलु मिटाइ ॥
पूरणु जाणी पीअखे, नकी कढु[17] न पाइ ॥
लूअं लूअं सां लिवं लाइ, ऐनु अखंडु अन्तरिमुखी ॥

(१) धुनी–अनाहद सब्दु–स्वासु (२) सदाई (३) जाणे (४) उतमु (५) माया जो अज्ञानु (६) रचिना–तमाशो (७) न्यारो–सन्सार खां अलगि थी (८) सुखु पातो (९) आत्म अन्भय प्रकासु (१०) आनंद में (११) प्रेम में–लैलीन्ता में (१२) संसार जी सुर्ती छदे (१३) वरी संकल्प इन्छा न थी (१४) घणनि प्रकारनि (१५) समुझाईंदा आहिनि (१६) सभुकी (१७) फुर्ने संकल्प में न फासु.

१९४५

निर्मलु नेति[1] डि॒सी धीज॒ आयो दिलि खे ॥
जागी[2] अविद्या निंड्र मों, वेठी[3] हीअ विसी ॥
पासो[4] करे व्या पाणहीं, सामी हठु[5] हिसी ॥
महबत साणु मिसी, खाई रहे ख्यालमें ॥

१९४६

निर्विकलपु[6] निह कामु[7], कोर्युनि में को हिकिड़ो ॥
पर्चो लधो जहिं पहिंजो, आदी अन्भय धामु[8] ॥
चीटीअ ऐ कुन्चर में, डि॒से रम्ता रामु ॥
धार्जि[9] थी गुलामु, सामी साध संगतिमें ॥

१९४७

निर्विकलपु नेहीं, कोर्युनि में को हिकिड़ो ॥
जहिं[10] डि॒ठो पहिंजो पाणखे, पलिकनि[11] मंझि पेही ॥
जागी कढियाई जीअ मों, सन्सा समेई ॥
बा॒ंभण विदेही, रहे सदाई देहिमें ॥

१९४८

निर्विकलपु नेहीं, कोर्युनि में को हिकिड़ो ॥
जहिं सुत्ह स्वरूपु सही क्यो, गुर्गम[12] घरि पेही ॥
पलि पलि पीए प्रेम रसु, विद्यमानु[13] वेही ॥
बा॒ंभण विदेही, रहे दावा[14] रे देहिमें ॥

---

(१) आज्ञा–हुकुमु (२) अज्ञान मों निकिरी (३) अचिरज में अची वई (४) कामु क्रोधु आदी (५) निश्चो (६) बिना संकल्प (७) कामिना बिना (८) घरु–ठिकाणो (९) रहिति (१०) पहिंजो पाण खे जा॒तो (११) अन्तरि त्रितीअ में–अन्तरि अन्भय सां (१२) सरीर रूपी घर में झाती पाए सही क्यो (१३) जा॒णू (१४) सदाई.

१९४९

निृविकलपु नेहीं, पाकु रहे पुज पापखों ॥
प्रत्क्ष पूरणु आत्मा, पस्यों[1] जहिं पेही ॥
सामी माणे सांति सुखु, विधि सचीअ वेही ॥
मानुषा देही, सफलु क्याईं साध संगि ॥

१९५०

निृविकलपु नेहीं, समुझी सम सीत्लु थ्यो ॥
दरि दरि देवाननि जां, पुछनि न पेही ॥
दमि दमि दिसनि दोसखे, विद्यामान वेही[2] ॥
ब्रांभण विदेही, दावा रखनि न देहिसां ॥

१९५१

निश्चे बिना नामु, कहिंखे मिले कीनकी ॥
तोड़े तप तीर्थ करे, थी नांगो निष्कामु ॥
ईए चवनि था अन्भई, करे अनन[4] आरामु ॥
समुझी जनि सलामु[5], सामी क्यो सभखे ॥

१९५२

निश्चो दे्ई निजु, सामी चयो सतिगुरूअ ॥
पुठी दे्ई पाणखे, नाहकु खपु[6] न खिजु ॥
उल्टी[7] दि्सु अख्युनि सां, सुत्ह सिधि सूर्जु[8] ॥
सारो बागु[9] सब्जु, क्यो जहिं क्रिपा[10] सां ॥

---

(१) दि्ठो–जा्तो (२) वीचारे–ध्यान में (३) ख्यालु न कनि (४) एकाग्रता में तिखो–षको आरासु (आनंदु) पातो (५) सन्सार सां मोकिलाणी कई (६) भटिकु न (७) अन्तरि त्रितीअ सां–वीचार सां (८) आत्म सता सूर्जु दि्सु (९) सरीरु (१०) सता सां.

१९८३

निहारे नेणनि, लधो पेरु[1] पलकमें ॥
बिनि भर्युनि[2] विच सीर में, मिली मौजां[3] कनि ॥
अबोल्या[4] लाल लहनि, तक्यो[5] करे तहिंमें ॥

१९८४

नींदो कालु कुटे, समे सां सभ कहींखे ॥
पीरु पेगम्बरु अहुल्या, सामी कोन छुटे ॥
अचे वञे ओचिते, जदी खर्चु खुटे[6] ॥
जीए बाजु घुटे, खाए तनु तितिर जो ॥

१९८५

नीहं बिना नादान, वेद पढ़ी वादी थ्या ॥
प्रत्क्षु दिसनि न पीअ खे, अन्धा कनि उन्मान ॥
इस्थति थ्या अन्दर में, के नेही निर्बाण ॥
रहनि मंझि जहान, सामी अलेपु आकास जां ॥

१९८६

नीहं बिना नादान, वेद पढ़ी वादी थ्या ॥
पाणु पछाणनि कीनकी, सभ जी कनि गिलान ॥
पीअनि पीआर्नि प्रेम रसु, के साधूजन सुजान ॥
सदा निृअभ्मान, सामी रहनि स्वभावमें ॥

---

(१) ठिकाणो–दगु–रस्तो (२) हृदय कोष में (३) ज्ञाणप ऐ वीचार सां
(४) अण दिठा (५) निश्चो (६) दींहं पूरा थ्यनि.

१९५७

नीहं विना नादान, वेद पढ़ी वादी थ्या॥
बांभण कनि ड्याईअ सां, जप तप दान इस्नान॥
नेहीं नारायण रे, बी सुधि रखनि कान॥
रहनि मंझि जहान, निपक्षु न्यारा न्भजां॥

१९५८

नूड़ीअ[१] ज्यां म निहारि, तन भरि भरु[२] देई॥
खुदीअ[३] खों खलासु थी, गदु गद्या[४] बेई॥
तदी सुम्हियूं[५] सभेई, झप्यूं झरोकनि में॥

१९५९

नेण[६] जहिंखे निजु[७], सामी दिना सतिगुरूअ॥
डिठो तहिं अभेदु थी, सुत्ह सम्ता सिजु[८]॥
सुम्हियो सुषुप्त[९] सेजते, करे सभु कार्जु॥
नकी बोए[१०] बिजु, नकी खणे बारि का॥

१९६०

नेणनि जे निगाह, आशिक कुठा केत्रा॥
कुर्कनि कंझनि कीनकी, रहनि बे पर्वाह[११]॥
अठई पहर अजीब जी, सहजे कनि सलाह[१२]॥
छदे चिन्ता चाह, सामी चढ़िया सीरते॥

---

(१) नागिणि–डाइणि (२) सरीर ते भर्वसो रखी (३) मां पणे (४) जीव ब्रह्म जी एकता थी (५) आनंदु मिल्यो (६) ज्ञानु (७) शुधु (८) आत्म सता (९) आनंद अवस्था में लीनु थ्यो (१०) कर्म उपास्ना या उनजे फल जी घुर्ज कान अथसि (११) आनंद में (१२) लीन्ता में.

१९६१

नेणनि[1] लायो नीहुं, नूर महल जे नाथ सां ॥
जिते सिजु न चन्डु को, नको राति न ड्रीहुं ॥
विना वादल मीहुं, सामी सदाई वसे ॥

१९६२

नेणनि[2] लायो नीहुं, नूर महल जे नाथ सां ॥
जिते सिजु न चन्डु को, नको राति न ड्रीहुं ॥
महिरऊं वसे मीहुं, सामी सदा अर्श जो ॥

१९६३

नेहिनि जो नगरु[3], कामिलु आहे हिकिड़ो ॥
भर्यो भाव भगुति सां, सीतल सहज सुभरु[4] ॥
पुछी डि्सु तनीखों, जनि गहरो[5] क्यो गुज़रु[6] ॥
सदा वाग वहारु, सामी रहनि स्वभावसें ॥

१९६४

नेहिनि जो नीशानु[7], सुञ[8] वसवं जे विचमें ॥
वेठा हणनि विधिसां[9], नितु कमानो कानु[10] ॥
समुझी सवे कोनको, इशारो अजानु ॥
सामी सभु हैरानु, स्याणा पण्डत पारखू[11] ॥

---

(१) अख्युनि जो प्रेमु अख्युनि जे डि्सण वारो जेको नाथु याने आत्म सता में इस्थति थ्यो उते न ड्रींहं न राति न सिजु न चंडु आहे, उते सदाई विना वादलनि जे वर्षा रूपी धुनी सदाई वसे थी (२) डि्सो सलोक १९६१ जो अर्थु (३) आधारु (४) भर्पूरि (५) प्रेम सां (६) लैलीनु थ्या (७) ठिकाणो (८) दस्वें द्वार (९) वीचार सां–समुझ सां–निश्चे सां (१०) शब्द जो बाणु (११) जाणू.

१९६५

नेहीअ क्यो न्याउ, वेही विधि सचीअ सां॥
तहिंखे सति असति जो, सचो ध्यो समाउ॥
वेठो अन्भय तखित ते, मेटे दुत्या भाउ॥
जाणी दि़ल्बरु दाउ, सामी माणे सान्ति सुखु॥

१९६६

नेहीअ क्यो निृवारु[1], सामी सति असति जो॥
कटी तहीं कल्मा, दि़ठो दि़सण हारु॥
उपजे निपजे लीनु थे, जहिंमें सभु सन्सारु॥
सदा रहे गुल्ज़ारु, निमाणो निृबाणमें॥

१९६७

नेहीअ जी निगाह, कहिंमें बुदे कीनको॥
जहिंखे लालु गुलालु क्यो, सिक समुझ वेसाह॥
वेठो अन्भय तखित ते, मेटे चिन्ता चाह॥
साध संगति जी राह, सामी रखी सिरते॥

१९६८

नेही दि़सी नूरु[2], पाकु थ्या प्रपंच खों॥
बाकी रहियुनि कोनको, करिणो जतनु जरूरु॥
सदा रहनि सामी चए, भेद बिना भर्पूरि॥
मुल्कनि में मशहूरु, वेद चवनि वाका करे॥

---

(१) त्रिनो (२) ज्योती प्रकासु.

१९६९

नेहीं थ्या निर्मल, दर्सनु पसी दोसजो ॥
जनिखे आई साध संगि, अन्भई अटिकल ॥
पुठी ड़ेई पाणखे, खणनि कीन खलल ॥
अठई पहर अचल, सामी रहनि स्वभावमें ॥

१९७०

नेहीं नज़र पाक, रोअनि रतु अख्युनि सों ॥
दाहां कनि दर्दसां, फ़ट्या अशिक[१] फ़िराक़ ॥
ड़ियनि सनेहा सभखे, सामी चए बे बाक[२] ॥
सुततु पचीं पाक, अचे मिलु मोअनि सां ॥

१९७१

नेहीं आधारु, करे कान कल्पना ॥
ड़िठो जहिं देहीअ में, दोस्त जो दीदारु ॥
पीए पीआरे प्रेम रसु, सुन्दरु सीत्लु सारु ॥
बणीअ ते हुशियारु, सदा रहे सामी चए ॥

१९७२

नेहीं आधारु, कोर्युनि में को हिकिड़ो ॥
जागी जहिं सही क्यो, स्वप्न जो सन्सारु ॥
करे उपदेसु अन्भई, ऐनु ड़िसी अधिकारु ॥
सदाई गुल्ज़ारु, सामी रहे स्वभावमें ॥

(१) प्रेम जा फाथल (२) बिना हिसाव.

१९७३

नेहीं त्रासो, आस न रखे कहिंजी ॥
रहे चंद्र चकोर जां, दर्सन जो प्यासो ॥
क्याईं चरण कमल में, विधि सचीअ वासो ॥
कीअं करे पासो, सामी तहिंखां सुप्री ॥

१९७४

नेहीं त्रासो, पलि पलि पीए प्रेम रसु ॥
पचीं क्यो तहिं पदमें, विधि सचीअ वासो ॥
सामी खेले सर्वगति[1] खाल्सु खुलासो[2] ॥
डि्से तमाशो, साक्षी थी सन्सार जो ॥

१९७५

नेहीं त्रासो, रखे न आस अन्दरमें ॥
क्यो जहिं क्रिपा सां, पछिन[3] खां पासो ॥
सुत्ह थ्यो सामी चए, खिल्वती खासो[4] ॥
डि्से तमाशो, साक्षी थी सन्सार जो ॥

१९७६

नेहीं त्रासो, रखे न आस अन्दरमें ॥
पचीं क्यो जहिं पदमें, विधि सचीअ वासो ॥
माणे सुखु स्वरूप जो, खाल्सु खुलासो[5] ॥
जीए प्यो पतासो, सागर में सामी चए ॥

---

(१) सभ में (२) हिकु ईश्वरु (३) नासमातु पदार्थ (४) चङो अधिकारी
(५) निश्चय सां आनंद में.

१९७७

नेहीं नाना भांति, भगुति करिनि भगिुवान जी ॥
धि्रले कहिं वर्याम[1] खे, सामी आई सान्ति ॥
मिली जहिं महबूब सां, मेटी मन जी भ्रान्ति ॥
उथान[2] मंझि एकान्ति, रहे रहनि सचीअ सां ॥

१९७८

नेहीं नितु मरे, पसण काणि प्रयनि जे ॥
रोए रतु अख्युनि मों, सुदि्की सद् करे ॥
अठई पहर अन्द्र में, महबत मचु बु्रे ॥
सामी तद्ी ठरे, जद्ी वसे मेघु महिर जो ॥

१९७९

नेहीं निमाणा, रोअनि रतु अख्युनि मों ॥
पसण काणि प्रयनि जे, पहियाऊं[3] भाणा ॥
अठई पहर अन्द्र में, ओनि ओराणा ॥
सामी समाणा, रहनि सदाई सिकमें ॥

१९८०

नेहीं निमाणो, माणु[4] छदे् मस्तानु थ्यो ॥
जहिंखे अजगैबी दि्नो, आशिक ओराणो[5] ॥
मन्याई मुशिताकु[6] थी, भगि्वत जो भाणो ॥
रहे विकाणो, सामी साध संगति में ॥

---

(१) बहादुर–योधो (२) खटिपटि–प्रपंचु (३) मञाऊं (४) वदा्ई (५) रस्तो
(६) प्रेमी थी–बहादुरु थी.

१९८१

नेहीं निमाणो, माणु[1] छदे माहिलु[2] थ्यो ॥
रहे साध संगति में, विधि सां विकाणो ॥
पचीं लधाई पहिंजो, प्रीतमु पुराणो ॥
भगि़वत जो भाणो, सामी रख्याई सिरते ॥

१९८२

नेहीं निमाणो, माणु[3] न रखे मन में ॥
जहिंखे संगु साधूअ जो, भलीअ भांति भाणो[4] ॥
पचीं लधाई पहिंजो, प्रीतमु पुराणो ॥
सामी पेटो ताणो[5], आहे जहिंजे आसरे ॥

१९८३

नेहीं निमाणो, माणु[6] न रखे मन में ॥
जा़णी जूठि जगत्र खे, सुनि[7] में समाणो ॥
पचीं लधाई पहिंजो, प्रीतमु पुराणो ॥
रहे विकाणो, सदा साध संगति में ॥

१९८४

नेहीं निमाणो, माणु[8] न रखे मन में ॥
सेवा साधुनि जी करे, पचीं प्रमाणो ॥
सदा रहे सामी चए, विधि सां विकाणो ॥
भगि़वन्त जो भाणो, मने वेठो सभमें ॥

---

(१) वडा़ई (२) पधिरो–मशहूरु–मथे चढ़ियो (३) वडा़ई (४) वणियो (५) जगत्रु (६) वडा़ई (७) शान्ति (८) वडा़ई.

१९८५

नेहीं निमाणो, माणु[1] न रखे मन में॥
सेवा साधुनि जी करे, पर्चो सभु भाणो॥
सदा रहे सामी चए, विधि सां विकाणो॥
प्रीतमु पुराणो, लही लालु गुलालु थ्यो॥

१९८६

नेहीं निमाणो, रोए रतु अख्युनि मों॥
सजुण तुहिंजे सिक क्यो, सुकाए साणो॥
सामी सदाई रहे, वस[2] में विकाणो॥
पर्चो करि पाणो, अचे महिर मोअनि ते॥

१९८७

नेहीं निृअभिमानु, करे कान कल्मा॥
ड़िठो जहिं अख्युनि सां, उल्टी अन्भय भानु[3]॥
आहे जहिंजे आसरे, सुनि समाधि उथानु[4]॥
सदाई निृबाणु, सामी रहे स्वाभमें॥

१९८८

नेहीं निृअभिमानु, कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
मिली जहिं महबूब सां, क्यो अमृितु पानु[5]॥
सुखी थ्यो सामी चए, पाए पदु निृबाणु॥
जा़णे सभु जहानु, आहे हिक अलाह जो॥

(१) वडा़ई (२) अधीनु (३) सूर्यु (४) जगतु (५) पीतो.

१९८९

नेहीं निृअभिमानु, सजुण तुहिंजे सिक क्यो॥
छदे खाम[1] ख्याल खे, धरे वेठो ध्यानु॥
जाणे बेहद बांवरो, सामी सभु जहानु॥
घुरे दर्सन दानु, आतरु थी अदब सां॥

१९९०

नेहीं निृअहङ्कारु, कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
जहिंखे दिनी सतिगुरूअ, अन्भय मति अपारु॥
सामी सदाई रहे, बणीअ ते हुशियारु॥
स्वप्न जो सन्सारु, लय दिठाईं लख्य[2] में॥

१९९१

नेहीं निृइन्छतु, कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
जहिं जागी वार्यो जम जो, खिली खातो खतु॥
अन्दरि बाहरि न्भ ज्यां, दिसे अन्भय तत्व[3]॥
आत्म सभु जगतु, स्वप्न वत सामी चए॥

१९९२

नेहीं निृबन्धनु, कहिंखे बन्धे कीनकी॥
पातो जहिं प्रतीति सां, गहरो ज्ञान अन्जनु[4]॥
सामी दिसे सर्वगति[5], परमेश्वरु पूरनु॥
ऐनु अभेदु भजनु, लूअं लूअं करे लालु थ्यो॥

---

(१) कूड़ो–अजायो (२) जाणप सां–वीचार सां (३) आत्म सता (४) सुर्मो–उपदेहु (५) सभ में.

१९९३

नेहीं निृमला, मैलु न रखनि मन में॥
समुझी जनि सामी चए, गहरी ज्ञान कला॥
जागी ड्रिनाऊं जगु जे, लेखे उते तिला[१]॥
बुरा ऐ भला, जाणनि कर्म कल्प जा॥

१९९४

नेहीं निवाजा, लिकनि छिपनि कीनकी॥
सामी क्या सतिगुरूअ, तलब[२] खों ताजा॥
रहनि माया मोहजे, अटक[३] खों आजा॥
रमी[४] थ्या राजा, बेहद बेगमपुरि जा॥

१९९५

नेहीं निहकर्म, कर्म कनि कल्प रे॥
नकी माया मोह्या, नकी जोह्या[५] जम॥
ब़ोलिनि ब़ुधनि ड्याईअ रे, अन्भय वाक्य अगम[६]॥
सामी ड्रिसनि सम; अन्दरि ब़ाहरि आत्मा॥

१९९६

नेहीं निहारे, दहदिसि पहिंजे दोसखे॥
रोए रतु अख्युनि मों, सद्दे सुद्दकारे॥
तुहिंजे ब्रिह[७] भसमु क्यो, जीउ जुसो जारे॥
वेहु न विसारे, सुततु मिलु सामी चए॥

---

(१) तिलान्जली–खतमु समुझणु (२) ब्रुर्ज (३) फास–नोडी (४) खुशि थी
(५) खाधा–मार्या–नासु क्या (६) अथाह (७) मोह–प्रेम.

१९९७

नेहीं नेण भरे, रोए रतु अख्युनि मों॥
पुछे पाधेड़ुनि खों, सुदि्की सद् करे॥
सिक त तुहिंजी सुप्री, हर्दमि हद् घरे॥
सवे न धीर धरे, सुतनु मिलु सामी चए॥

१९९८

नेहीं[१] नैन भरे[२], जहिंदे् जुबे्[३] जां दि्से॥
सहजे थिए सामी चए, तहिंजो पटु[४] परे॥
जीअ भ्रिंगी कीट खे, पल्टे भ्रिंगु करे॥
ब्याईअ विना बु्रे, दी्ओ दी्ए सां मिली॥

१९९९

नेहीं रहनि त्रासु, सदाई सन्सारमें॥
क्याऊं कल्प कढी करे, नैननि मंझि निवासु[५]॥
पूरणु दि्सनि प्रेम सां, चेतनु चिदाकासु[६]॥
जहिंमें प्रेम प्रकासु, सामी रहे स्वरूप जो॥

२०००

नेहीं सभि निहालु[७], रहनि[८] पहिंजो पाणमें॥
जनिखे दि्सी सतिगुरूअ, सामी रहति[९] रसालु॥
वेठा अन्भय तखित ते, कटे कल्स कालु॥
जादे् कनि ख्यालु, तादे् सजणु सामुहों॥

---

(१) प्रेमी–सन्तु (२) क्रिपा करे (३) जोड़ीदारु–पाण जहिरो प्रेमी–सजाती भाउ (४) अज्ञान जो पर्दो (५) जोती ज्योति में वासो (६) सभमें आकास वांगे (७) उधारु (८) पाणहीं पाण में पाण खे दि्सनि (९) ऊचु रस्तो.

२००१

नैन[१] नास्का नासु, सोध्यो जहिं गुर ग्याति सां ॥
सो सामी नाना भर्म में, करे न जीउ खरावु ॥
पाताई पर्ची करे, अन्भय आत्म लाभु ॥
जम जो हर्फु हिसावु, वारे वासुलु थी रह्यो ॥

२००२

नैननि मंझि निवासु, प्रत्क्षु परमेश्वर जो ॥
लिके छिपे कीनकी, जीए अलेपु आकासु ॥
सुखी थ्यो सामी चए, को दर्सनु[२] पाए दासु ॥
जहिंजा बन्द खलासु, पर्ची पूरे गुर क्या ॥

२००३

पचणु[३] पचायो, सापुर्षनि स्वरूपजो ॥
वठी कखु कृपा जो, सामी घरि आयो[४] ॥
सहजे मिटायो, तहिं अविद्या[५] रोगु अन्दरजो ॥

२००४

पटी पढ़ाए, सो उस्तादु अन्भई ॥
समुझाए सम्रिथु करे, लकुरु[६] न लाए ॥
जन्म मरण दुःख सुख जो, सन्सो मिटाए ॥
सामी लखाए[७], अन्भय ज्योति अख्युनि सां ॥

---

(१) हीउ सलोकु अभ्यास अवस्था लाइ आहे (याने) गुर उपदेस द्वारा नजर, स्वास ऐ नाभीअ दे रखी अभ्यास अन्भय कंदो रहे त सो भर्म खों छुटी आत्म पद में प्राप्त थींदो (२) अन्भय करे (३) कष्टु सठो—अन्भय क्यो (४) जोती जोति सां लय थ्यो (५) अज्ञानु मिटियो (६) बिना कल्पा (७) देखारे—समुझाए.

२००५

पटे दोसु[१] दर्यूं, सन्मुखु वेठो सुप्री ॥
हणे नितु अशिक[२] जा, बेहद बाण भर्यूं ॥
सदिके कयाँ तहिं सुख जे, पल तों हूर पर्यूं ॥
सामी दिसी ठर्यूं, अख्यूं आशिकनि जूं ॥

२००६

पढ़ण खों पुझंणु[३], आशिक जाणनि अगिरो[४] ॥
पातो तनि प्रतीति सां, सामी अन्भय अणु[५] ॥
कढी विधाऊं कल्प[६] रे, महीअ[७] मंझों मखणु ॥
अचणु ऐ वञणु, दिसनि कोन आकास में ॥

२००७

पढ़नि सभेई, था उत्मु वाक्य गुरूअ जा ॥
कोर्युनि मों कहिं हिकिड़े, बुधा दिलि देई ॥
सामी तहिं सापुर्ष खे, गुर्गम लख पेई ॥
तहिंजी सभ वेई, अविद्या कल्प निकिरी ॥

२००८

पढ़यल पलाली, जगमें घुमनि केत्रा ॥
कथन्दा वतनि एकता, द्रढता[८] खों खाली ॥
लधी लख्य [९]अलख जी, नेहिनि त्राली ॥
सदा सान्ति साली, सामी रहनि स्वभाव में ॥

---

(१) ईश्वर सदाई दिसण लाइ दर्यूं खुल्यूं रख्यूं आहिनि (२) प्रेम जा (३) समुझणु (४) चङो (५) नीशानी–इशारो–अटिकल (६) खटिप्टि बिना–विलोरिण बिना (७) समुझ रूपी दही (८) निश्चो (९) जाणप.

२००९

पढ़िया पुझंनि कीनकी[1], द्राहा कीन द्रिसनि॥
मंझो खाब ख्याल जे, कूड़ा किसा कनि॥
हिकिड़ो अखरु प्रेम जो, सामी रखनि न मनि॥
पत्यो[2] पीतो जनि, से माहिलु थ्या महिराण में॥

२०१०

पढ़िये[3] पढ़ाई, पटी प्रेम अगम जी॥
पूरणु ज्ञाणी पीअ खे, लिवं सची लाई॥
जागी[7] जन्म मरण जी, चिन्ता चुकाई[8]॥
सामी[9] सभाई, लुद्री लहरि समुन्द्र जी॥

२०११

पढ़िये पढ़ायो, अखरु[10] प्रेम अगम[11] जो॥
समुझे सो सामी चए, मिठो मनि भायो[12]॥
जल पपोटो जलमें, जलु थी समायो॥
नकी वञी आयो, बिना पहिंजे पाणरे॥

२०१२

पढ़िये पढ़ायो, पूरो अखरु प्रेम जो॥
अन्दरि ब्राहरि आत्मा, अनभय में आयो॥
जीए आकासु घटनि में, सुत्ह समायो॥
नकी विञायो, नकी पातो पाण रे॥

---

(१) समुझनि (२) पहिंजो कयो (३) सन्तु—ज्ञाणू (४) समुझायो (५) रस्तो (६) अथाहु (७) ज्ञाण थी—अज्ञानु मिटियो (८) खलासु थी (९) पैदा भी समुन्द्र मों थी लय भी उन में थी (१०) उपदेसु (११) अथाह (१२) व्गो.

२०१३

पढ़िये पढ़ायो, पूरो अखरु प्रेम जो ॥
सामी चाढ़े सीरते[1], सभु सन्सो मिटायो ॥
अन्दरि बाहरि आत्मा, रमी[2] रंगु लायो ॥
नकी विञायो, नकी कुझु पातो पाणरे ॥

२०१४

पढ़ियो जहिं पूरो, गुर्गम अखरु प्रेम जो ॥
मिट्यो जहिंजे मन मों, अविद्या अन्धेरो ॥
सामी सो सूरो, जीते वेठो जग खे ॥

२०१५

पढ़ियो पढ़ाए, जहिंखे पटी प्रेम जी ॥
तहिंखे महिर माया सां, सभुकी समुझाए ॥
सुखी थी सामी चए, चिट[3] चौको पाए ॥
जादे वाझाए, तादे सजणु सामुहों ॥

२०१६

पढ़ियो पढ़ाए, जहिंखे पटी प्रेम जी ॥
मिली सो महबूब सां, मुहुं मढ़ीअ[4] पाए ॥
सुखी थी सामी चए, ममत्व मिटाए ॥
वरी न वाझाए, दरि दरि देवाननि जां ॥

---

(१) वीचार सां—ज्ञान कला सां (२) लय थी (३) शुधि थी आनंद में वेठो
(४) अन्तरि झाती पाए.

२०१७

पढ़ी ऐ कढ़ी, सही क्यो जहिं सारखे॥
सहजे तहिं सापुर्ष खे, च्यरो अमलु[1] चढ़ी॥
सुखी थ्यो सामी चए, भजी भर्म भड़ी॥
छदे कीन मढ़ी[2], अठई पहर अलख जी॥

२०१८

पढ़ी कुरानु किताबु, काजी कोहु किसा करें॥
मिली वठु महबूब सां, छदे जोरु जबाबु॥
मतां अचे ओचिते, करेई कालु कबाबु॥
थीन्दे पोइ खराबु, सिज लथे सामी चए॥

२०१९

पढ़ी जहिं पुर्धो[3], पूरो अखरु प्रेम जो॥
पहिंजे हथें पाणपो[4], सटे तहिं विधो॥
सदा रहे सामी चए, समुझ मंझि सिधो॥
मरी मुल्हि गिधो, परमेश्वर खे प्रीति सां॥

२०२०

पढ़ी जहिं पुर्धो[5], पूरो अखरु प्रेम जो॥
पाणखे[6] तहिं पाणहीं, सटे सभु विधो॥
सदा साध संगति में, सामी रहे सिधो[7]॥
मरी मुल्हि गिधो, परमेश्वर खे प्रीति सां॥

---

(१) प्रेम जो नशो (२) ठिकाणो–रस्तो (३) समुझो (४) मां पणो (५) समुझो (६) मां पणो (७) रुधो.

२०२१

पढ़ी थ्या प्रपक[1], आशिक अखरु[2] अन्भई॥
रख्याऊं रहति[3] सां, वेढ़े सभि वर्क[4]॥
खलिक डि॒सनि खालिक में, खालिक मंझि खलिक॥
सामी थी सेवक, रह्या साध संगति जा॥

२०२२

पढ़ी थ्या प्रपक, आशिक अखरु प्रेम जो॥
चढ़या अन्भय[5] अछते, वेढ़े सभि वर्क[6]॥
पलि पलि डि॒सनि पूर्वी, झग॒ मगादि झलक[7]॥
ब॒ांभण पाए ब॒क, सुत्ह प्या स्वरूप खे॥

२०२३

पढ़ी थ्या प्रपक[8], आशिक अखरु[9] प्रेम जो॥
रख्याऊं रहति[10] सां, वेढ़े सभि वर्क[11]॥
चढ़िया चेतन[12] चिट ते, लंवे ओट अटक॥
पाए रमिज़ रसक[13], समाणा सामी चए॥

२०२४

पढ़ी थ्या प्रपक[14], आशिक अखरु[15] प्रेम जो॥
सामी मिल्या स्वरूप सां, वेढ़े सभि वर्क[16]॥
माणिनि सुखु सम्ता जो, लाए लिवं लटक[17]॥
अन्दरि[18] ऊंन अलख, कहिंखे ज॒ाणनि कीनकी॥

---

(१) निश्चो क्यो–पका थ्या (२) शब्दु (३) वीचार सां (४) प्रपंच खे (५) ऊच पद ते (६) प्रपंचु छदे॒ (७) चिम्तकारु (८) निश्चो क्यो (९) शब्द (१०) वीचार द्वारा (११) प्रपंचु छदे॒ (१२) उच पद ते (१३) मिठी–रस भरी (१४) निश्चो क्यो (१५) शब्द (१६) प्रपंचु छदे॒ (१७) प्रेमी आनंदु (१८) पोइ अन्दरिई गुसु याने कुछु भी न.

२०२५

पढ़ी थ्या प्रवीन[1], आशिक अखरु[2] प्रेम जो ॥
सामी सुखु अन्दर जो, कहिंखे सलिनि कीन ॥
सदा सुपेर्युनि जे, लिवं में रहनि लीन ॥
जीए जल खों मीन, पलक पराहूं न थिए ॥

२०२६

पढ़ी थ्यो पुखितो, गुर्गमु अखरु प्रेम जो ॥
कढ्याईं कोरे[3] करे, नाना जो नुकितो ॥
क्याईं लेखो सभ सां, चित मंझि चुकितो ॥
सदाई मुकितो, सामी रहे स्वभावमें ॥

२०२७

पढ़ी पुझाए, स्याणो बणी सभखे ॥
माया कारणि मन खे, दहदिस दौराए ॥
पेही दि॒से न पाणखे, मुहुं मदी़अ पाए ॥
जाग॒यो जाग॒ाए, त सुखी थे सामी चए ॥

२०२८

पढ़ी पुझीं वेदु, अखरु लधो जनि अन्भई ॥
मिली थ्या महबूब सां, से सामी ऐन अभेदु ॥
पीअनि पीआरिनि प्रेम रसु, बिना विधि निषेदु ॥
तोड़े कनि अस्मेदु, तांभी सीतलु रहनि स्वभावमें ॥

---

(१) पका (२) शब्दु (३) वीचारे (४) मां मेरो वारो हिसाबु.

२०२९

पढ़ी पुर्थो[1] जनि, तनि वर्क[2] वराए वेढ़िया॥
ढ़रि ढ़रि देवाननि जां, कूड़ा किसा न कनि॥
वर्तनि विधि वीचार सां, महबत रखी मनि॥
सामी सम ड्रिसनि, अन्दरि बाहरि आत्मा॥

२०३०

पढ़ी पुर्थो जनि, तनि वर्क वराए वेढ़िया॥
हिकिड़ो अखरु प्रेम जो, महकमु रखनि मनि॥
अन्दरि बाहरि आत्मा, सामी सम ड्रिसनि॥
ड्या सभि बक बकिनि, स्वप्न मंझि समुझ रे॥

२०३१

पण्डत करे पुकार, सारु लखाइनि[3] सभखे॥
समुझी सच्यारनि जो, खुल्यो दस्वो द्वारु॥
देउ ड्रिसी थ्या देहिमें, बेहद बाग बहारु[4]॥
वणीअ ते हुशयारु, सदा रहनि सामी चए॥

२०३२

पण्डत चवनि परे, मन वाणीअ खों आत्मा॥
तहिंखे जाणनि कीनकी, जो सभ खे सद[5] करे॥
चीटीअ ऐ कुन्चर में, बेहद ज्योति बरे॥
सामी ड्रिसी ठरे, पहिंजे अख्यें पाणखे॥

---

(१) पको क्यो (२) प्रपंच जा वीचार फिटा क्या (३) बुधाइनि (४) आनंदु मिल्यो (५) पहिंजो पाण खे.

२०३३

पण्डत पुकारे, सारु लखाइनि सभखे ॥
सामी समुझे को सूमों, हिदय मंझि धरे ॥
लाहे छॾे सिर तों, पर्छिन[1] पिण्ड भरे ॥
सामी ॾिसी ठरे, प्रत्क्षु पूरणु आत्मा ॥

२०३४

पण्डतु ऐ जोशी, रुधा लेखे लुड़में[2] ॥
आशिक चढ़िया अछते[3], छॾे बेहोशी ॥
मुखि रख्याऊं मनमें, खिम्या खामोशी ॥
थधी ऐ कोसी, सामी सहनि सिरते ॥

२०३५

पण्डतु तहिंखे ॼाणु, जहिंखे सुधि स्वरूप जी ॥
अठई पहर स्वरूप सां, जुड़े सो जोॻी ॼाणु ॥
सन्यासी सन्से बिना, सभमें ॼाणे पाणु ॥
आत्म जल में अप्रसी, धोए मनु सुजाणु ॥
उदासी उदासु थी, ॼाणे जॻि महिमानु ॥
सो औधूती अन्भई, कथे वेद प्रमाणु ॥
वैराॻी पहिंजो पाण खे, ॾिसण लाइ हैरानु ॥

(१) नासमानु—ॿोझो (२) तक़िरार में (३) ऊच पद ते.

नांगो थ्यो निबाणु सो, पाण कढियो जहिं पाणु ॥
मुलां सो पर्वानु थ्यो, जो मन मसीति करे दौरु कुराणु ॥
मोमिनु जाणे मन में, आहे सभ जाइ साणु ॥
दाता दया वन्दु सो, जो करे पाणु कुर्बाणु ॥
रागी गाए दीप रागु, दीओ बरे तहिं साणु ॥
सुल्तानी साहिबु सो, जो न्याउ करे निबाणु ॥
सचो लेखो जो लिखे, शाहु तहींखे जाणु ॥
सूरो सचो जाणु सो, जो जीते पंजई पाणु ॥
ग्रही ज्ञानु गुरूअ जे, दया धर्म सां रहे माण निमाणु ॥
सती रहे पतीव्रतमें, कर्तारूपु भतारं खे, ईहो जाणे जाणु ॥
ईहे गाल्हियूं प्रमाणु, सामी जाणे को सचो ॥

२०३६

पण्डतु पढ़ाए, पर्चो अखरु प्रेम जो ॥
अन्दरि बाहरि आत्मा, लिवं[1] सां लखाए[2] ॥
सामी चए सभ जीअजो, ममत्व मिटाए ॥
पलक में पाए, ईहो दानु अन्भई ॥

२०३७

पडणतु पुकारे, वेद बुधाए विधि सां ॥
साखां देई समुझ जूं, सभ जो मनु ठारे ॥
रखी चाह अन्दर में, पाणु न सम्भारे ॥
वेठो सो हारे, हीरो जन्मु हथनि मों ॥

---

(१) प्रेम सां (२) जाणाए.

२०३८

पण्डतु पुकारे, सारु बुधाए सभखे॥
सामी पहिंजे मन जी, ममत्व न मारे॥
रखी द्वैतु अन्दर में, समता दे़खारे॥
हल्यो सो हारे, मानुष्य देहि अमोल्य खे॥

२०३९

पतित[1] खे पावनु[2], सामी क्यो सतिगुरूअ॥
पर्ची दि़नाई पहिंजो, निजु निर्मलु दर्सनु॥
थ्यरो मनु अमनु, अविद्या कल्प न रही॥

२०४०

पथर पूजा कनि, देउ न दि़सनि देहिमें॥
पण्डतु जा़णी पाणखे, कर्मनि मंझि बझनि[3]॥
साखां सन्तनि जूं बुधी, मर्मु[4] न रखनि मनि॥
से कीअं रंगि रचनि, सामी सुपेर्युनि जे॥

२०४१

पननि मों पढ़ी, हर्फु[5] लधो जहिं हिकिड़ो॥
सो मरे कीन मुंझनि जां, रात्यूं डी़हं रड़ी[6]॥
भजी भर्म[7] भड़ी, सैल करे सामी चए॥

---

(१) दुःखी (२) सुखी (३) फासनि (४) लज़-शर्मु (५) शब्दु (६) भिटिकी (७) अज्ञान जी भड़ी

२०४२

पना कुझु पढ़ी, पण्डतु समुझनि पाण खे॥
सामी चए सन्सार में, चर्चा कनि चढ़ी॥
दिसनि न अन्भय आत्मा, पर्ची पाउ घड़ी॥
रात्यूं दीहं रड़ी[1], मुआ रहनि था ममत्वमें॥

२०४३

पना कोहु पढ़ें, अथी हर्फु हकीकत हिकिड़ो॥
पाए सूहुं महियाण में, अन्दरि छोन अड़ें[2]॥
कल्प कढी जीअ मों, सामी सीर[3] चढ़ें॥
नाहकु कोहु घड़ें[4], थो अण हूंदो घाटु[5] अन्दरमें॥

२०४४

पना ढेर पढ़ी, वादि कनि वेदान्त जी॥
सार[6] न लहनि लिवं[7] सां, वाक्यनि मंझि वड़ी[8]॥
सामी थ्यो को सूमों, चेतन[9] चिट चढ़ी॥
भञी भर्म[10] भड़ी, सदा माणे सेज सुखु॥

२०४५

पना सभि पढ़ी, पूरा क्या जहिं पलकमें॥
अखरु लधो जहिं ऐन जो, वेसासीअ वड़ी॥
सामी चढ़ियो सुमेर ते, लंघे मसीति मढ़ी॥
लाए ध्यानु घड़ी, लूअं लूअं लालु गुलालु थ्यो॥

---

(१) भिटिकी (२) दिसें (३) मदे (४) ठाहे (५) वीचार (६) सम्भार (७) प्रेम सां (८) अटिकी (९) ऊच पद ते (१०) अज्ञान जी भड़ी.

२०४६

पना सभि पढ़ी, वेसास्युनि वेढ़े रख्या॥
सीत्लु थ्या सामी चए, क्रिपा साणु कुढ़ी॥
अन्दरि बाहरि आत्मा, दिसनि चिट चढ़ी॥
भञी भर्म भड़ी, मस्तु रहनि महिराणमें॥

२०४७

पना सभि पढ़ी, हर्फु लधोसे हिकिड़ो॥
कामिल[1] जे कर्म[2] सां, भगी भर्म[3] भड़ी॥
व्यड़ो चितु चढ़ी, नूरमहल जे नाथ सां॥

२०४८

प्यालो पीआर्यो, व्रिले कहिं गुर्मुख खे॥
दिठो जहिं अख्युनि सां, अन्भय उजारो[4]॥
जागी कल्याई जीअ मों, भर्मु भउ सारो॥
रहे मतिवारो, पीए पीआरे राम रसु॥

२०४९

परमेश्वर जो पारु, कहीं पातो कीनकी॥
थकी बीठा केत्रा, करे वेद वीचारु॥
वर्ती[5] कहिं गुर्मुख क्यो, दिलि में दिब दीदारु॥
सटे सभु अहङ्कारु, सीत्लु थ्यो सामी चए॥

---

(१) ईश्वर जे (२) क्रिपा सां (३) अज्ञान जी ऊंधइ नासु थी (४) सोझिरो–चिमत्कारु (५) वीचारे.

२०८०

परमेश्वर पठी, भगुति दे॒ई भोरिड़ी॥
रखी दिलि दबु॒लीअ में, वेसास्युनि वठी॥
कसौटी कामिल जी, सामी जनि सटी॥
सटे कल्प कटी, इस्थति थ्या आकास जां॥

२०८१

परमेश्वर पहने[1], सामी सन्सो न रहे॥
ईहा गा॒ल्हि अन्दर में, को महबती मने॥
पर्ची लाए पहिंजा, बे॒ड़ा पाण ब॒ने॥
जीए धरे ध्यानु घने, ठाकुर खे पैदा क्यो॥

२०८२

परमेश्वरु थी पारि, मन बु॒धि वाणीअ वाच खों॥
हेदे॒ होदे॒ हथिरा, मूर्ख अन्ध न मारि॥
सिक समुझ वेसाहु सचु, हृदय धीर्जु धारि॥
निउड़ी नेण निहारि, त सुत्ह मिले सामी चए॥

२०८३

परमेश्वरु पधरि, अन्धा दि॒सनि कीनकी॥
भुली भवनि पाणहीं, ओलहि ऐ ओभरि॥
सामी सुजाणु॒नि खे, नेड़े अचे नजरि॥
अन्दरि ऐ बा॒हरि, दि॒सनि सदा आकास जां॥

(१) मिल्ये—ज़ा॒णप सां.

२०४६

पना सभि पढ़ी, वेसास्युनि वेढ़े रख्या ॥
सीत्लु थ्या सामी चए, क्रिपा साणु कुढ़ी ॥
अन्दरि बा॒हरि आत्मा, दि॒सनि चिट चढ़ी ॥
भञी भर्म भड़ी, मस्तु रहनि महिराणमें ॥

२०४७

पना सभि पढ़ी, हर्फु लधोसे हिकिड़ो ॥
कामिल[1] जे कर्म[2] सां, भगी॒ भर्म[3] भड़ी ॥
व्यड़ो चितु चढ़ी, नूरमहल जे नाथ सां ॥

२०४८

प्यालो पीआर्यो, व्रिले कहिं गुर्मुख खे ॥
दि॒ठो जहिं अख्युनि सां, अन्भय उजारो[4] ॥
जागी॒ कढ्याईं जीअ मों, भर्मु भउ सारो ॥
रहे मतिवारो, पीए पीआरे राम रसु ॥

२०४९

परमेश्वर जो पारु, कहीं पातो कीनकी ॥
थकी बीठा केत्रा, करे वेद वीचारु ॥
वर्ती[5] कहिं गुर्मुख क्यो, दिलि में दि॒बु दीदारु ॥
सटे सभु अहङ्कारु, सीत्लु थ्यो सामी चए ॥

---

(१) ईश्वर जे (२) क्रिपा सां (३) अज्ञान जी ऊंधइ नासु थी (४) सोझिरो-चिमत्कारु (५) वीचारे.

२०८०

परमेश्वर पठी, भगुति ड्रेई भोरिड़ी॥
रखी दि़लि दबुलीअ में, वेसास्युनि वठी॥
कसौटी कामिल जी, सामी जनि सटी॥
सटे कल्प कटी, इस्थति थ्या आकास जां॥

२०८१

परमेश्वर पहने[1], सामी सन्सो न रहे॥
ईहा गा़ल्हि अन्दर में, को महबती मने॥
पर्ची लाए पहिंजा, बे़ड़ा पाण बु़ने॥
जीए धरे ध्यानु धने, ठाकुर खे पैदा क्यो॥

२०८२

परमेश्वरु थी पारि, मन बुधि वाणीअ वाच खों॥
हे॒दे़ होदे़ हथिरा, मूर्ख अन्ध न मारि॥
सिक समुझ वेसाहु सचु, हृदय धीर्जु धारि॥
निउड़ी नेण निहारि, त सुत्ह मिले सामी चए॥

२०८३

परमेश्वरु पधरि, अन्धा दि़सनि कीनकी॥
भुली भवनि पाणहीं, ओलहि ऐं ओभरि॥
सामी सुजागु़नि खे, नेड़े अचे नजरि॥
अन्दरि ऐं बा़हरि, दि़सनि सदा आकास जां॥

---

(१) मिल्ये—जा़णप सां.

२०५४

परमेश्वरु पधरि, सन्त लखाइनि सभखे॥
डि॒से देहि अभिमान रे, सुजाणो सरि[1]॥
जहिं पर्ची लधी पहिंजी, अन्भय आदी जरि॥
सदा तीबुरु[2] तरि, सामी रहे स्वभावमें॥

२०५५

परमेश्वरु प्रत्क्षु, सामी सूर्य जां रहे॥
अन्धा डि॒सनि कीनकी, पटे पहिंजी अखि॥
तहिंखे तद्‌रूपु थी, लिवं सचीअ सां लखि॥
कोहु करे जखि जखि, दरि दरि देवाननि जां॥

२०५६

परमेश्वरु प्रत्पालु, साणु सदाई थी रहे॥
मूर्ख भवनि मति रे, खणी खामु ख्यालु॥
माणे मौज मुक्ति जी, को रहति वानु रसालु[3]॥
जहिंखे नजर निहालु, सामी क्यो सतिगुरूअ॥

२०५७

परमेश्वरु परे, कदुहीं कहिंसां न थिए॥
सभिनी जी सामी चए, भाउना सिधि करे॥
कहिं सुजागे सूमें, डि॒ठो ध्यानु धरे॥
प्यालो पाकु भरे, पीए पीआरे प्रेम जो॥

(१) ज॒ाणू (२) पका (३) ज॒ाणू–पहुतलु (४) शुधु आनंद जी अमृत वर्षा (वचन) पीए पीआरे याने वु॒धाए.

२०५८

परमेश्वरु परे, मूर्ख ज़ाणनि मति रे॥
तहिंखे दि॒सनि कीनकी, जो सभखे सिधि करे॥
कोर्युनि में को हिकिड़ो, समुझी अजरु जरे॥
जहिंते हथु धरे, सामी पूरो सतिगुरू॥

२०५९

परमेश्वरु पूरणु, व्यापी रहयो विश्वमें॥
जीए मिठाइणु खंडु में, अग्नि मंझि ऊषणु॥
समुझी दि॒सु सामी चए, करे दिलि दर्पणु॥
कोहु फिरें थो बनु, पुठी दे॒ई पाण खे॥

२०६०

परमेश्वरु पूरनु, चीटीअ ऐ कुन्चर में॥
जाइ दि॒ठीसे कानका, आत्म रे ऊरनु॥
थ्यरो चितु चूरनु, सामी दि॒सी स्वरूप खे॥

२०६१

परमेश्वरु पूरनु, सन्त लखाइनि सभखे॥
सामी क्यो जहिं सूमें, दिलि में दिबु॒ दर्सनु॥
पर्छिन्ता[1] खों पाकु थ्यो, मेटे सभु मननु[2]॥
भावे रहे नग्नु, भावे पहड़े पट पाबू॒यूं॥

---

(१) नास्वन्त प्रपंच सफा थ्यो (२) मां मुहिंजो मिटाए.

२०६२

परमेश्वरु पूरो, रहे सजाती सभसां॥
कहिंसा थिए कीनकी, ऊन्हो अधूरो॥
समुझे को सामी चए, साधूजनु सूरो[1]॥
तमा तम्बूरो, दूरि क्यो जहिं दिलिमों॥

२०६३

प्रभु परमु सुन्दरु, सिष क्यो शङ्का धरे॥
कीअं मिले काथे रहे, अगहून्दो दिल्बरु॥
सामी ड्रिनो सतिगुरूअ, ऐन अभेद उतरु॥
घर धणीअ जो घरु, घर में वसे घर धणी॥

२०६४

पर्चाए पिंगलु, सामी क्यो सतिगुरूअ॥
ड्रेखार्याई ड्रीलमें, अन्भय पदु असुलु॥
रहियो न रतीअ जेत्रो, अन्दरि हैबत हुलु॥
मेटे कल्प कुलु, चाढ़याई चौड्रोल में॥

२०६५

पर्ची को पाढ़े, पण्डतु पटी प्रेमजी॥
मन खे महबूबनि ड्रे, लिवं लाए लाड़े॥
सामी भगुति जहाज में, धिके छिके चाढ़े॥
फिकुर सां फाड़े, पर्दो भेद[2] भर्म जो॥

(१) ज्ञाणू (२) द्वैत जे अज्ञान में.

२०६६

पर्चो गुर पतो, ड़िनो पद अवाच जो ॥
जुड़ी पहिंजो[1] पाण सां, सामी रंगि रतो[2] ॥
अजबु अण छुतो[3], गाल्हि न करे गुझ जी ॥

२०६७

पर्चो जहिं पको, लधो पेरु[4] प्रयनि जो ॥
सो रहे पहिंजे हालमें, रात्यां ड़ीहं थको[5] ॥
पाए खुम्हियों कछमें, सामी यारु यको ॥
गंगा गया मको, भवे कीन भुलनि जां ॥

२०६८

पर्चो जहिं पको, लधो पेरु[6] प्रयनि जो ॥
सो रहे पहिंजे हालमें, सामी सदा थको[7] ॥
अन्दरि बाहरि नभ ज्यां, ड़िसे यारु यको ॥
गंगा गया मको, भवे कीन भुलनि जां ॥

२०६९

पर्चो जहिं पको, लधो पेरु[8] प्रयनि जो ॥
सो सामी सदाई रहे, थृिता[9] मंझि थको ॥
सदिके क्याईं सुखतों, तनु मनु सभु यको ॥
गंगा गया मको, भवे कीन भुलनि जां ॥

---

(१) पहिंजो पाण में लै थीउ (२) तड़ी रंग में रचें (३) अण ड़िठो ड़िसें (४) ठिकाणो–रस्तो (५) लगो (६) रस्तो-ठिकाणो (७) रुधो (८) रस्तो–ठिकाणो (९) एकाग्रता में लगो.

२०७०

पर्चो जहिं पढ़ियो, पूरो अखरु प्रेम जो ॥
दे्ई कनु[1] कल्प खे, क्रिपा साणु कढियो ॥
छदे् भेद भर्म[2] खे, वञी चिट चढ़ियो ॥
सुत्ह अण घर्यों, देउ दि्ठाईं देहि में ॥

२०७१

पर्चो जहिं पढ़ियो, पूरो अखरु प्रेम जो ॥
सो ममत्व मिटाए मन जी, अन्भय अछ चढ़ियो ॥
सामी अण घर्यों, देउ दि्ठाईं देहि में ॥

२०७२

पर्चो जहिं पढ़ी, पटी प्रेम अगम जी ॥
दि्ठो तहिं सभु आत्मा, चेतन चिट चढ़ी ॥
मरे न माया मोह में, रसनि काणि रड़ी ॥
भञी भर्म भड़ी, सामी माणे सेज सुखु ॥

२०७३

पर्चो जहिं पढ़ी, पटी प्रेम अगम जी ॥
पीउ दि्ठो तहिं जीअमें, वेसासीअ वड़ी ॥
सुखी थ्यो सामी चए, भञी भर्म भड़ी ॥
चेतन चिट चढ़ी, मजा करे महबूब सां ॥

---

(१) कल्पा समुझी (२) मायात्री अज्ञान खे छदे् मथे चढ़ियो.

२०७४

पर्ची जहिं पढ़ी, पटी प्रेम अगम जी ॥
पीउ डिठो तहिं जीअसें, वेसासीअ वड़ी ॥
सुखी थ्यो सामी चए, भञी भर्म भड़ी ॥
चेतन चिट चढ़ी, सैल-करे सन्सार जा ॥

२०७५

पर्ची जहिं पढ़ी, पटी प्रेम अगम जी ॥
सो मरे कीन मर्म में, रात्यूं डींहं रढ़ी ॥
सहजे थ्यो सामी चए, चेतन चिट चढ़ी ॥
भञी भर्म भड़ी, इस्थति थ्यो आकास जां ॥

२०७६

पर्ची जहिं प्यासे, साधूअ जो संगु क्यो ॥
सहजे थ्यो सामी चए, तहिंजो पटु[1] पासे ॥
अन्दरि बाहरि नभ ज्यां, साक्षी सम भासे ॥
फिरी ना फासे, अविद्या जे अहङ्कार में ॥

२०७७

पर्ची जहिं पढ़हो, बुधो सार सब्द जो ॥
देउ डिठाईं देहिमें, लाहे कुल्फु कड़ो[2] ॥
सामी सम सीत्लु थ्यो, भञी भर्म घड़ो[3] ॥
जीए गुरी गुड़ो, पाणीअ मंझि पाणी थ्यो ॥

(१) अज्ञान जो पर्दो (२) प्रपंच खों पासे थी (३) अज्ञान जो घरो.

२०७८

पर्चो जहिं पलालु, गुर्गम कढियो घरमों ॥
तहिंखे लगे कीनकी, सामी कल्म कालु ॥
जाणे जाणु[1] कढी करे, सभु खावन्द जो ख्यालु ॥
सदाई निहालु, रहे पहिंजे हालमें ॥

२०७९

पर्चो जहिं पातो, गुर्गम मुहुं मढ़ीअमें ॥
तहिं सामी सुपेर्युनि खे, सुत्ह सुञातो ॥
वारे खतु खातो, जीअन्दे वेठो जम सां ॥

२०८०

पर्चो जहिं पातो, गुर्गम मुहुं मढ़ीअमें ॥
सामी तहिं स्वरूप खे, सुत्ह सुञातो ॥
जागी वार्याई जम जो, जीअन्दे खतु खातो ॥
वाए न वातों, वर्ते विधि बीचार सां ॥

२०८१

पर्चो जहिं पातो, गुर्गम मूहुं मढ़ीअ में ॥
सामी सुपेर्युनि खे, तहिं सहजे सुञातो ॥
जीअन्दे वेठो जम सां, वारे खतु खातो ॥
सदा मध[2] मातो, रहे पहिंजे हालमें ॥

---

(१) मां पणो (२) प्रेम भर्यलु.

२०८२

पर्चो जहिं पातो, गुर्गम मूंहुं मढ़ीअ[1] में॥
सामी सुपेर्युनि खे, तहिं सहजे सुञातो॥
वारे खतु खातो, जीअन्दे वेठो जमसां॥

२०८३

पर्चो जहिं पीती, गहिरी भंग ज्ञान जी॥
बाजी मन मवास खों, जागी तहिं जीती॥
लंवे चढ़ियो लख्य ते, माया मध माती॥
सामी तहिं जाती, ज्योति स्वरूपी जग जी॥

२०८४

पर्चो जहिं पीतो, पाकु प्यालो प्रेम जो॥
मिली तहिं महबूब सां, अमूल्य जन्मु जीत्यो॥
सामी सुख अगितों, सिरु सदिके कीतो॥
हार्यो तहिं जीत्यो, जुगतीअ सां जहान मों॥

२०८५

पर्चो जहिं पीतो, पाकु प्यालो प्रेम जो॥
मिली तहिं महबूब सां, अमूल्य जन्मु जीत्यो॥
सामी सुख अगम तों, सिरु सदिके कीतो॥
खोले खलीतो[2], विहे न विच बजारि में॥

(१) पाण में–हृदय रूपी शीशे में (२) गोथिरी–थेल्ही.

२०८६

पर्ची जहिं लधो, पको पेरु[1] प्रयनि जो ॥
सदिके क्यो तहिं सुख तों, तनु मनु सभु थको ॥
सामी सदाई रहे, थिता मंझि थको ॥
गंगा गया मको, भवे कीन भुलनि जां ॥

२०८७

पर्ची जीअं पतंग, जली मोआ ज्योति में ॥
तीएं दोस्तीअ जे दौरमें, नेहीं थ्या निसंग ॥
लाए लालु गुलालु थ्या, रहति सचीअ जा रंग ॥
सहनु सीलु सबुंग, सामी क्या सतिगुरूअ ॥

२०८८

पर्ची दि॒ठी पीर[2], ओधे गा॒ल्हि स्वरूप जी ॥
दे॒खार्याई दु॒ील सां, सामी सभि सरीर ॥
तहिंखे दि॒सु तद्रूपु थी, धारे धीर सुधीर ॥
खाए खन्डू खीर, इस्थिति रहे आकास जां ॥

२०८९

पर्ची दि॒नो पहु[3], मुर्शिद खासु मुरीद खे ॥
उथन्दे वेहन्दे अशिक सां, ओर[4] इनीहं में रहु ॥
वठी राह रिन्दीअ जी, सभुकी सिरते सहु ॥
अचे पाण अलहु, मतिलब कंदुइ मन जा ॥

(१) रस्तो (२) जर (३) दग-रस्तो (४) तार.

२०९०

पर्चो दिनो पहु[1], सतिगुर खासु मुरीद खे॥
अणहून्दे दर्याह जे, वहमें भुली न वहु॥
जाणु[2] विञाए पहिंजो, थी महबत में महु[3]॥
न अचे पाण अलहु, आशिकु थिएई अर्श खों॥

२०९१

पर्चो प्यड़ा पन्धि, आशिक सिक सचीअ सां॥
लंघ्या पारि समुंड्र खों, बिना बेड़ीअ बन्धि[4]॥
वञी सूक्षम देसमें, सामी ह्याऊं सन्धि[5]॥
करे कल्प[6] कन्धि, सन्मुखु थ्या स्वरूप जे॥

२०९२

पर्चो प्यालो, सतिगुर दिनो सारजो[7]॥
ममत्व रही न मन में, थ्यो मगनु मतिवालो॥
चढ़ियो आत्म सूरजो, अन्भय उजालो॥
न्रिमलु न्रालो, सामी रहे सन्सार में॥

२०९३

पर्चे पर्चायो, रोअन्दे खे रहति सां॥
डेई दिलासो दिल्बरी, घरि वठी आयो॥
अण घर्यो देउ अण मयो, लूअं लूअं लखायो॥
नकी विञायो, नकी पातो पाण रे॥

---

(१) रस्तो (२) मां पणो कढी (३) मगनु थीउ (४) बनो-भर्वसो (५) नीशानु (६) मायावी कल्पा प्रपंच खों पासो करे (७) सब्द जी.

२०९४

पर्चीं प्रबोधे[1], सामी जहिंखे सतिगुरू॥
सो अर्ध उर्ध जे सन्धि खे, सूक्षमु थी सोधे॥
कढे त्रोधे, अन्भय सुखु अगम जो॥

२०९५

पर्चीं प्रीति घणी, कामिल कयीं कहिंसां॥
जेको तुहिंजे जीअ खे, वञे यारु वणी॥
बांभण निएई बुलसां, गहिड़े घरि खणी॥
आशिकु माशूकु बणी, सुधि दिएई समजी॥

२०९६

पर्चीं पाउ घड़ी, जहिं मज्लस[2] कई मोअनि सां॥
तहिंखे अमल अभेद जो, व्यो खूमारु चढ़ी॥
पाए वेठो पदमें, सामी मौज मढ़ी॥
लाए ध्यान धड़ी, पलि पलि दिसे पाण खे॥

२०९७

पर्चीं पाण दिनी, सतिगुर सुर्की सारजी[3]॥
अमलु चढ़ियो अजगैब जो, लूअं लूअं रस भिनी[4]॥
अविद्या गुन्हि छिनी, सामी सन्सो न रह्यो॥

---

(१) वीचारे (२) सति वीचारु (३) उपदेस जी–ज्ञाणप जी (४) प्रेम में भजी व्यो.

२०९८

पर्ची पीआर्यो, सतिगुर प्यालो प्रेम जो ॥
अचिर्जु हिकु अख्युनि सां, दून्धो[1] ड़ेखार्यो ॥
सन्सो सभु सामी चए, क्षिण में निवार्यो ॥
वठी वेहार्यो, आदी अन्भय घरमें ॥

२०९९

पर्ची पीआर्यो, सतिगुर प्यालो प्रेम जो ॥
प्रत्क्षु पूरणु आत्मा, ड़ेहीअ ड़ेखार्यो ॥
सन्सो सभु सामी चए, निसंग निवार्यो ॥
अबोत्यो[2] बार्यो, गैबी ड़ीओ ज्ञान जो ॥

२१००

पर्ची पीआर्यो, सतिगुर प्यालो प्रेम जो ॥
सामी समुझ सचीअ सां, ठोके[3] मनु ठार्यो ॥
अन्दरि बाहरि आत्मा, प्रत्क्षु ड़ेखार्यो ॥
ड्याईअ रे बार्यो, ड़ीओ मुहिंजे ड़ीलमें ॥

२१०१

पर्ची पीआरी, सतिगुर सुर्की सचजी ॥
अचे अजगैबी चढ़ी, खाल्सु खुमारी ॥
खुली पेई पाणहीं, बेहद जी बारी ॥
खुदी खोआरी, सामी मेटे सम थ्यो ॥

(१) ऊन्दहों (२) अण ठहियो (३) समुझाए.

२१०२

पर्ची पीआरी, सतिगुर सुर्की सचजी ॥
उतिरे कीन अखुनि मों, खाल्सु खूमारी ॥
दि॒ठी बेहद बाग़में[1], गहरी गुल्ज़ारी ॥
करे सम सारी, सामी मिली स्वरूप सां ॥

२१०३

पर्ची पीआरी, सतिगुर सुर्की सारजी ॥
सुत्ह चढ़ी सामी चए, खाल्सु खूमारी ॥
खुली पेई पाणहीं, बेहद जी बा॒री ॥
जहिंमें विश्व सारी, उपजे निपजे लीनु थिए ॥

२१०४

पर्ची पीतो जनि, प्यालो प्रेम अगम[2] जो ॥
अन्दरि बा॒हरि आत्मा, हिृदय मंझि दि॒सनि ॥
पर्छिनु[3] ज़ाणी पाण खे, कीनो किबिरु न कनि ॥
सदा गर्कु रहनि, सामी सम्ता पदमें ॥

२१०५

पर्ची पुराणी, सन्धि लधी जहिं समजी ॥
लय दि॒ठी तहिं लख्य में, बां॒भण सभ बा॒णी ॥
पाणु वराए पाण सां, मौज मिली माणी ॥
ग॒ड़ो थ्यो पाणी, पाणीअ जे पर्वार में ॥

---

(१) हृदय रूपी बाग़ में (२) अथाह जो (३) नास मनु.

२१०६

पर्चों पुर्षार्थु, सामी क्यो कहिं सूमें॥
खयों जहिं खुशीअ सां, हार जीत तों हथु॥
घिड़ी लधाई घरमों, व्यापकु रूपी वथु[1]॥
क्यो कीन अकथु, इस्थति रहे आलममें॥

२१०७

पर्चों पूर पके, सामी चाढ़ियो सतिगुरूअ॥
उल्टी ऐन आकास में, लधो थाउं थके[2]॥
अठई पहर अलाह खे, लाए तार[3] तके[4]॥
गंगा गया मके, भवे कीन भुलनि जां॥

२१०८

पर्चों पूरो पहु[5], सामी दिनो सतिगुरूअ॥
अणछून्दे दर्याह जे, वह में भुली न वहु॥
उल्टी अलख अभेद खे, लिवं सचीअ सां लहु॥
रात्यूं दीहां रहु, अनल जां आकास में॥

२१०९

पर्चों रख्यो पाण, सतिगुर हथु मथे ते॥
अन्दरि बाहरि दहदिसां, दिसां पहिंजो पाण॥
साक्षीअ रे सामी चए, रही न सुर्ति सुजाण॥
सहजे खिन्चा ताण, मिटी वेई मन मों॥

(१) खजानो (२) मिटिक्यल (३) लिवं (४) यादि करे (५) रस्तो.

२११०

पर्चो सभेई, क्या लोलीअ जे लाद् में ॥
विरले कहिं गुर्मुख खे, सम सोझी[1] पेई ॥
जहिं संगति साधूअ जी कई, सामी दि़लि देई ॥
तहिंजी सभ वेई, अविद्या कल्प निकिरी ॥

२१११

पर्छिन्ता[2] पलीतु[3], क्या जीअ जहान जा ॥
कोर्युनि में को हिकिड़ो, रहे अलेपु[4] अतीतु ॥
पर्चो[5] लधो जहिं पहिंजो, आदी अन्भय मीतु[6] ॥
सदाई सुर्जीतु[7], सामी रहे स्वभावमें ॥

२११२

पर्छिन्ता[8] पलीतु[9], क्या जीअ जहान जा ॥
सामी थ्यो को साध संगि, प्रेमी पर्म पुनीतु[10] ॥
जागी जहिं जुगति सां, जीत्यो मनु अजीतु ॥
तन में तुर्यातीतु[11], प्रत्क्षु दि़से पाणखे ॥

२११३

पर्छिन्ता[12] पिटाए[13], मारे मूर्खनि खे ॥
पाणु[14] पहिंजो पाणमें, वेठा विसाए[15] ॥
सुतह सिधि स्याणनि दि़ठो, उल्टी[16] लिवं लाए ॥
पूरणु पदु पाए, सामी माणिनि सान्ति सुखु ॥

---

(१) जा़ण (२) नासमान पदार्थनि (३) फासाए खराबु क्या (४) परे रहे–पासो करे (५) प्रेम सां (६) आत्म सता (७) लगल (८) मायावी नासमान प्रपंच (९) खराबु क्या (१०) ऊच अधिकारी (११) साक्षी चेतनु (१२) नासुमानु–दि़सण मात्र प्रपंच (१३) भिटिकाए (१४) साक्षी पणो (१५) भुलाए (१६) प्रपंच खों उल्टी

२११४

पर्नीअ खों कोआरी, पुछे सुखु सोहग॒ जो ?॥
हुन मुश्की दि॒नो मर्म सां, बेहद दु॒सु भारी[1]॥
पर्ने[2] पवन्दइ पाणहीं, सामी सुधि सारी॥
खिल्वत[3] जी खोआरी[4], बणदी नाहि बजारिमें॥

२११५

प्रत्क्षु प्रकासे, अन्दरि बा॒हरि आत्मा॥
अन्धनि अज्ञान्युनि खे, भोरी[5] न भासे॥
सामी दि॒ठो साध संगि, कहिं नेहींअ त्रासे[6]॥
पलक न थिए पासे, पाणु[7] वराए पाणखों॥

२११६

प्रत्क्षु प्रकासे, सामी सूर्यु अन्भई॥
वि॒र्ले वद॒भागी॒अ खे, भर्म[8] रे भासे॥
जहिंजो क्यो सतिगुरू, पटु पर्दो[9] पासे॥
फिरी[10] न फासे, अण हून्दे अज्ञान में॥

२११७

प्रत्क्षु परमेश्वरु, अन्धा दि॒सनि कीनकी॥
हणानि कर्म धर्म[11] में, कल्पे[12] नितु टकरु[13]॥
सुजाग॒नि[14] सही क्यो, पर्चो पहिंजो घरु॥
मेटे दु॒ःखु द॒मरु, सीत्लु थ्यो सामी चए॥

---

(१) तिखो–न चई सघण जो (२) जदी॒ ईश्वर जो मेलाप अन्भय थींदुइ (३) प्रेम जी (४) कोई निंदा न करे सघंदो (५) जरी मात्र (६) इन्छा बिना (७) पहिंजो साक्षी पणो न भुलाईंदो (८) सन्देहु (९) अज्ञान जो पर्दो (१०) वरी (११) क्र्या कर्म (१२) खटिप्टि करे (१३) नितोप्रति मथा थ्या मारिनि (१४) जा॒णुनि.

२११८

प्रत्क्षु परमेश्वरु, सन्त लखाइनि[1] सभखे॥
दि॒से देहि अभिमान रे, को सुजाणो सुभरु[2]॥
जहिंखे दि॒नो सतिगुरूअ, सामी सम समरु॥
छद्दे[3] घरु म घुरु, वहे कीन वहणमें॥

२११९

प्रत्क्षु पहिंजो पाणु[4], क्यो विसनि खों विसरी॥
भुली भौसागर[5] में, फोलिनि फुनें[6] साणु॥
कद्हीं थिए कीनकी, नानत[7] खों निबा॒णु॥
मिले सन्तु सुजा॒णु, त सुत्ह दि॒सनि सामी चए॥

२१२०

प्रयनि जो प्रलाउ, अचे प्यो अख्युनि ते॥
जहिंजो रूपु न रंगु को, नको पीउ न माउ॥
तहिंजो अशिक अभेदु क्यो, लूअं लूअं मंझि लखाउ[8]॥
लगो॒ दि॒ल्बरु दाउ[9], सुत्ह सिधि सामी चए॥

२१२१

प्रयनि[10] हथु[11] रखी, निमाणी निहालु की॥
पचीं क्याऊं पहिंजी, सोहागि॒णि सखी॥
आत्म रसु चखी[12], सामी लूअं लूअं लालु थी॥

---

(१) जाणाइनि (२) जा॒णू अधिकारी (३) घरु घरु भिटिकी जन्मु अजायो म विआईंदो (४) साक्षी पणो (५) सन्सार सागर में (६) चिन्ताऊं फुर्ना साणु खणनि (७) खटिप्टि–प्रपंच (८) जा॒णप (९) चान्सि (१०) ईश्वर–सन्त (११) क्रिपा कई (१२) जो मजो वठी.

२१२२

प्रयनि[1] रे पेई, दोहागिणि दुःखनि में॥
सामी सोहागिणि जा, व्या सन्सा सभेई॥
तहिंखे भइ केही, सजणु[2] जहींजे कछमें॥

२१२३

परिवर्ता[3] जो पूरु, काथो प्यो हिन जीअ खे॥
मोटी कीअं मिटी वञे, सामी सन्सो सूरु॥
पुठी देई पाणखे, मालिकु[4] बणियो मजूरु[5]॥
दिसी निर्मलु नूरु[6], नाना खों निर्बाणु थ्यो॥

२१२४

प्री गाल्हियुनि[7] खों पारि, अथी गाल्हियुनि जे गोठमें॥
ईएं चवनि था आदि[8] खों, छह अठारह[9] चारि॥
समुझी तूं सामी चए, नाना[10] भर्मु निवारि॥
बेहदि[11] दीओ बारि, त पसणु[12] थेई पिर जो॥

२१२५

प्री गाल्हियुनि[13] खों पारि, अथी गाल्हियुनि जे गोठमें॥
सामी सिक[14] सचीअ सां, तूं वेही सन्धि वीचारि॥
अविद्या[15] भर्मु निवारि, त लहें पेरु[16] प्रयनि जो॥

---

(१) बिना ईश्वर जे (२) जहिंसां सजणु साणु आहे (३) जमणु मरणु–अचणु वञणु–बदलि सदलि (४) ईश्वरु (५) जीउ–सरीर धारी भुली पाणखे मिटिकाए श्रो (६) आत्म अन्भउ (७) ईश्वरु सन्सार खों परे भी आहे पर सन्सार में भी आहे (८) हमेशां खों (९) शास्त्र पुराण वेद (१०) मां मेरो जो सन्देहु मिटाइ (११) तिखो वीचारि (१२) साख्यात कार जो अन्भय थे (१३) ईश्वरु परे भी आहे ऐ साणु भी आहे (१४) सचे प्रेम सां वेही नीशानु पतो वीचारि (१५) मायावी भर्मु मिटाइ (१६) रस्तो.

२१२६

प्रीति अचे पेई, सामी सापुर्सनि[१] सां॥
खासु खजानो ग्याति[२] जो, छॾियो तनि ॾेई॥
वेरी रहियो कोनको, थ्या सॼण सभेई॥
भास भुली वेई, अविद्या भर्म असार जी॥

२१२७

प्रीति क्यो पर वसि[३], सामी तुहिंजे सुप्री॥
अचे अजगैबी लॻी, अन्दर में आतसि[४]॥
अठई पहर अख्युनि मों, बून्दां कनि न बसि॥
या ॾेहु[५] पहिंजो ॾसि, या अचे मिलु मोअनि सां॥

२१२८

प्रीति बिना प्रीतमु, कहीं पातो कोनकी॥
समुझी ॾिसु सामी चए, तूं रखी मनि मर्मु[६]॥
खणे पेरु प्रयनि ॾे, लाहे गून्दर[७] गमु॥
जेको[८] अथी कमु, पसण मंझि प्रयनि जे॥

२१२९

प्रीति रखी पूरी, आशिक चढ़िया अछते[९]॥
सामी काणि सॼण जे, सठाऊं सूरी[१०]॥
खल लाहे ॾियनि पहिंजी, हथें हजूरी[११]॥
नैननि[१२] सां नूरी, लटक लाए लालु थ्या॥

---

(१) सन्तनि सां (२) उपदेसु–रस्तो (३) वेबसि (४) प्रेमा अग्नि (५) ठिकाणो–रस्तो (६) शर्मु–वीचारु (७) निश्चो करे (८) हिन मानुष्य सरीर जो इहोई कमु अथी ईश्वर जे ॾिसण जो (९) ऊच पद ते (१०) कष्ट (११) जे सरीरु ॾियण लाइ वि त्यारु रहनि (१२) अन्तरि अभ्यास द्वारा ज्ञाती पाए लालु थ्या.

२१३०

प्रीति लगी प्यारी, जहिंखे पीअ[1] पसण जी ॥
तहिंखे पेई साध संगि, सामी सुधि सारी ॥
थिए अगणत[2] कला[3] सां, अतितु[4] घर बारी ॥
सभमें[5] सचारी, मुखि रखी मौजां करे ॥

२१३१

प्रीतिवान पर वसि[6] कदी थ्यनि कीनकी ॥
भावें को निन्द्या करे, भावें करे शाबसि ॥
माणिनि सुखु स्वरूप जो, छदे तमां तामसि ॥
हमेशा हिक रसि, सामी रहनि स्वभावमें ॥

२१३२

प्रीतिवानु प्यासो, पासे थिए न हिकु पलु ॥
पर्चो क्याई पदमें, विधि सचीअ वासो ॥
सामी वर्ते सर्वगति[7] खालिसु[8] खुलासो[9] ॥
दिसे तमासो, साक्षी थी सन्सार जो ॥

२१३३

प्री पसारे, आयो जहिं आशिक दे ॥
सो साम्रिथु थ्यो सामी चए, नानत[10] निवारे ॥
देई बाहं बुदनि[11] खे, तारि[12] मंझों तारे ॥
प्यालो[13] पीआरे, करे मस्तु मया सां ॥

(१) ईश्वर जे मेलाप जी (२) अथाह (३) शक्ति शाली (४) सभ खों परे (५) सचारु (६) बे हिमथ (७) सभ तरह (८) खास (९) अलगि–न्रालो (१०) मां पणो विञाए (११) अज्ञानी (१२) सन्सार सागर मा (१३) समुझाणी–उपदेसु देई.

२१३४

प्री पाण मिल्यो, जदी सतिगुर पुर्ष दया कई ॥
अविद्या ऊंधह न रही, सिज रे दीहुं थ्यो ॥
अजगैबी आशिक जो, उल्टी पेचु प्यो ॥
सामी सभु थ्यो, विछोड़ो वर्हनि जो ॥

२१३५

प्री बेपर्वाह, कीमों कनि कुठनि जो ॥
सामी सिरु सदिके कनि, आशिक कढनि न आह ॥
पलि पलि पीअनि प्रेम रसु, अन्दर में असिगाह[1] ॥
सलिणु नाहि सलाह, मतां छुली छोल छला करे ॥

२१३६

प्री वसनि था पारि, मन बुधि वाणीअ कर्म खों ॥
हेदे होदे हथिरा, मूर्ख अन्ध न मारि ॥
पेही पहिंजे घरमें[2], गुर्गम दीओ[3] बारि ॥
हीरो जन्मु[4] न हारि[5], सामी चए समुझ रे ॥

२१३७

प्री वसनि था पारि, मन बुधि वाणीअ वाच खों ॥
हेदे होदे हथिरा, मूर्ख ऊन्ध न मारि ॥
जे तोखे प्यास पसण जी, त सामी वस्तु[6] वीचारि ॥
नाना[7] भर्म निवारि, त हाजुरु दिसें हरिखे ॥

---

(१) अथाहु (२) पहिंजो पाण में (३) वीचारि (४) मानुष्य जन्म (५) न विञाइ (६) पाण खे वीचारि त मां केरु आह्यां (७) मां पणो विञाइ.

२१३८

परे खों परे, ओरे खों ओरे आत्मा ॥

ब्रह्मा चीटीअ खों वठी, सभ खे सिधि करे ॥

सामी डि्ठो कहिं सूमें, उनि मुनि ध्यानु धरे ॥

मोटी कीन मरे, पाए पूरणु पद्वी ॥

२१३९

परे खों परे, महिमा मानुष्य देहिजी ॥

साख डि्यनि सामी चए, सन्त सही करे ॥

जनि पीतो प्यालो प्रेम जो, पूरणु पाकु भरे ॥

वेठा ध्यानु धरे, नृमलु नारायण जो ॥

२१४०

परे खों परे, माया महबूबनि जी ॥

कहीं पातो कीनकी, अन्तु उथानु[1] करे ॥

गुमु क्युसि कहिं ग्याति सां, ज्ञानवान गहरे ॥

सामी डि्सी ठरे, पहिंजे अख्यें पाणखे ॥

२१४१

प्रेम अखरु पाढ़े, सतिगुर मनु सीतलु क्यो ॥

सामी छडि्याई छिनमें, सन्सा सभि सारे ॥

चौबारे चाढ़े, साक्षी क्याईं सभजो ॥

---

(१) हिसाबु करे.

२१४२

प्रेम पटी पाढ़े, सामी जहिंखे सतिगुरू ॥
तहिंखे आणे घर में, क्रिपा सां काढ़े ॥
जन्म मरण दुःख सुख जा, सन्सा सभि सारे ॥
चेतन चिट चाढ़े, इस्थिति करे आकास जां ॥

२१४३

प्रेम पटी पाढ़े, सामी जहिंखे सतिगुरू ॥
तहिंखे आणे घरमें, लिवं सचीअ लाड़े ॥
कटे सभ कल्पा, चेतन चिट चाढ़े ॥
पर्दो उघाड़े, गाल्हि न करे गुझजी ॥

२१४४

प्रेम पटी पाढ़े, सामी जहिंखे सतिगुरू ॥
सन्सो तहिं सेवक जो, सपाडूं[1] साड़े ॥
देई हथ हिमथ जा, चेतन चिट चाढ़े ॥
पर्दो उघाड़े, पीउ देखारे पधिरो ॥

२१४५

प्रेम प्रवाहु वह्यो, वेई बुधि[2] बुदी करे ॥
बिना दर्सन दोस जे, सामी कीन रह्यो ॥
जेकी सन्त चयो, सो हाजुरु डिठो हथमें ॥

---

(१) पार सुधो–जड़ खों (२) सन्सारी तर्फ़ खों बुधी नासु थी वेई.

२१४६

प्रेम बिना प्रकासु, कहिंखे थ्यो कीनकी ॥
ईए चवे थो नामदेउ, कबीरु ऐ रविदासु ॥
करे ड्रिसु कल्प रे, सामी अनन[1] अभ्यासु ॥
त चेतनु चिदाकासु, प्रघटु थेई पाणहीं ॥

२१४७

प्रेम्युनि जो प्रतापु, प्रघटु लोक प्रलोकमें ॥
मिट्यो जहिंजे मन मों, सामी पर्छिनु[2] पापु ॥
भगुति करिनि भगिवान जी, ऐन अभेद अमापु ॥
विधि रे वरु आपु, कहिंखे ड्रियनि कीनकी ॥

२१४८

प्रेम्युनि जो प्रतापु, लिके न लोक प्रलोक में ॥
मिट्यो जनिजे मन मों, अविद्या जो पुञु पापु ॥
भगिती कनि अभेदु थी, अगिन्त ऐ अमापु ॥
सामी वरु आपु, लंवे लालु गुलालु थ्या ॥

२१४९

प्रेम्युनि जो प्रतापु, लिके न लोक प्रलोक में ॥
मिट्यो जहिंजे मन मों, पर्छिन्ता[3] पुञु पापु ॥
भगुति कनि भगिवान जी, ऐन अभेदु अमापु ॥
सामी वरु आपु, लंवे लालु गुलालु थ्या ॥

---

(१) पक्को (२) मायावी प्रपंच जो पापु (३) मायावी.

२१८०

प्रेम्युनि पुकारे, पढ़ो घुमायो प्रेम जो॥
बुधी को बा॒ंभणु चए, धीर[1] सची धारे॥
पाणु[2] वराए पाणखे, दि॒सी दी॒ओ बा॒रे॥
नानत[3] निवारे, माणे दौर दर्स जा॥

२१८१

प्रेम वराए[4] पदु, कहीं पातो कीनकी॥
पुछी दि॒सु तनी खों, जनि पीतो महबत मधु॥
माहिलु थ्या महिराण में, मेटे दुःखु दर्दु॥
हद परे अनहदु, सामी बुधनि सम थी॥

२१८२

प्रेम वराए[5] पदु, कहीं पातो कीनकी॥
वञी पुछु तनी खों, जनि पीतो महबत मधु॥
माइलु[6] थ्या महिराण[7] में, मेटे दुःखु दर्दु॥
अद्वेती[8] अनहदु[9], सामी बुधनि सम थी॥

२१८३

प्रेमीअ खे पर्लाउ, सुत्ह प्यो स्वरूपजो॥
बुधाई बा॒वन[10] रे, गगन[11] में गोगाहु[12]॥
मेटे दुत्या भाउ, सीत्लु थ्यो सामी चए॥

---

(१) धीर्जु–निश्चो (२) साक्षी पणो पाण में वीचारे दि॒से (३) मां पणो मिटाए (४) विना (५) विना (६) मशहूरु–पधिरा (७) मैदान में (८) बिना भेद (९) अनाहद धुनी (१०) विना सरीर (११) दस्वे द्वार में (१२) धुनी.

२१५४

प्रेमीअ खों प्रीत्मु, पलक पराहूं न थिए॥
जहिंजी कई सतिगुरूअ, खोले खयों कद्मु॥
विकयाई[1] वेसाह सां, जाग़ी[2] सभु जोखमु[3]॥
जीते हल्यो जन्मु, सामी चए सन्सार मों॥

२१५५

प्रेमीअ खों प्रीत्मु, पलक पराहूं न थिए॥
वार्यों[4] जहिं वजूद[5] में, देवाने[6] जां द्मु[7]॥
कहिंखे सले कीनकी, सामी सुखु अगमु[8]॥
तोड़े करे कमु, तां भी इस्थति रहे आकास जां॥

२१५६

प्रेमीअ खों प्रीत्मु, पलक पराहूं न थिए॥
सेवक जो सेवकु थी, करे सभोई कमु॥
सदा सापुर्षनि जो, रखे मनि मर्मु॥
सामी हिकिड़ो द्मु, हरि भगि॒तनि रे न रहे॥

२१५७

प्रेमीअ प्रोली, बु॒धी बेहद[9] पद्जी॥
सदा सुपेर्युनि सां, कीअं कजे होली[10]॥
सुभावकु सामी चए, खिल्वतीअ[11] खोली॥
बा॒वन[12] रे बो॒ली, समुझी रहिजे सुनिमें॥

---

(१) कढियाई निश्चे सां (२) जा॒णू थी (३) प्रपंचु (४) मार्यों (५) हृदय कोष में (६) ख्याल छदे॒ (७) लै थ्यो (८) अथाहु-ऊन्हों (९) ऊच पद जी (१०) लय लीन्ता (११) प्रेमीअ पधिरी कई (१२) बिना जबान जी बो॒ली (अन्तरि धुनी).

२१५८

प्रेमी थ्यो प्रीत्मु, अचे प्रेम नगरमें[१] ॥
पाताईं प्रयनि जो, सामी सहज मर्मु ॥
भुलाए[२] भर्मु, पाणु[३] ॾिठाईं पाणमें ॥

२१५९

प्रेमी प्यारो, सामी साध संगति खे ॥
मिट्यो जहिंजे मन मों, अविद्या अंधारो ॥
करे न कतर जेत्रो, ॾुम्भु ऐ ॾेखारो ॥
ॾिसे[४] ॾिसण वारो, प्रत्क्षु पूरणु आत्मा ॥

२१६०

प्रेमी प्यासो, प्यास रखी पूरणु थ्यो ॥
कॾी करे कीनकी, प्रीत्म खों पासो ॥
सामी रहे सन्सार में, न्भ ज्यां त्रासो ॥
किंगिरु[५] कौरो कासो, ॼाणे मूलु मिटीअ जो ॥

२१६१

प्रेमी पसारो, कनि न कतर जेत्रो ॥
ॾिठो[६] जनि अख्युनि सां, घर में घर वारो ॥
आहे जहिंजे आसिरे, अंधइ उजारो ॥
मिल्यो न्यारो, सुत्ह रहे सामी चए ॥

---

(१) हृदय कोष में (२) सन्सारु भुलाए (३) पाण में पाणहीं साक्षी थी प्रतीति क्याईं (४) ॾिसण वारे खे ॼाणे (५) हिन द्रष्टान्त मूजबु सभु ईश्वर उतिपति ॼाणे सन्सार में रहंदे भी त्रालो रहे ऊहोई ॼाणी सघंदो (६) सरीर रूपी घरमें सरीर खे हलाइण वारो याने सता ॾियण वारो रूपी घर वारो प्रतीति क्यो याने ॾिठो.

२१६२

प्रेमी पसारो, कर्नि न कतर जेत्रो ॥
सिख्यो जनिजे मन मों, अविद्या अन्धारो ॥
प्रत्क्षु पूरणु आत्मा, द्सिे द्हिारो ॥
मिल्यो न्यारो, सदा रहे सामी चए ॥

२१६३

प्रेमी पाण अचे, मोअनि जे मजिलसमें[1] ॥
खयो[2] खुलासो करे, जहिंखे शौक सचे ॥
पतंग ज्यां पाणु छदे, द्सिी मचु मचे ॥
सामी[3] रंगि रचे, सुत्ह सुपेर्युनि जे ॥

२१६४

प्रेमी मूहं पट्यो, लिके छिपे कीनकी ॥
खजानो[4] खुशीअ जो, लधो जहिं लट्यो[5] ॥
सन्सो आत्म जीअ जो, सामी खणी[6] सट्यो ॥
खाए[7] खासु खट्यो, सुत्ह साथ संगति जो ॥

---

(१) सन्तनि जे सति वीचार रूपी मजिलस में (२) सन्सार खों पासो करे (३) अहिरो ईश्वर जे रंग में रची सघंदो (४) आत्म सता रूपी खजानो (५) विजायलु लधो याने प्रतीति थ्यो जो अगु अज्ञान करे लटियलु हो (६) ज्ञान प्राप्ती सां सन्सो भर्मु जीव आत्मा जो विप्रीति भेदु निकिरी व्यो (७) ईहो खासु खट्यो थ्यो.

२१६५

प्रेमी से चइजनि, जनि खे अमलु अखन्ड[1] जो॥
सिरु[2] सटे सौदो करे, प्यालो[3] पीतो तनि॥
पाए मूंहुं[4] महियाण में, सदा गर्कु रहनि॥
पचेंरीअ[5] प्रयनि, सामी सारिनि कनि खे॥

२१६६

प्रेमी सो प्यारो, आहे परमेश्वर खे॥
करे न कतर जेत्रो, दम्भु ऐं देखारो॥
लंवे चढ़े लख्य ते, भौसागरु भारो॥
कंवल जां न्यारो, सामी रहे सरीरमें॥

२१६७

प्रेमु खरीद करें, त सिरु[6] लाहे विझु कागि में॥
देई दिलि दलाल[7] खे, सामी अजरु[8] जरे॥
जेकी जाणे पहिंजो, सो सभु भेट धरे[9]॥
तहिंखों पोइ भरे, मुक्ता भार भण्डार मों॥

२१६८

प्रेमु प्रेमु सभि कनि, प्रेमु पुर्षु परमात्मा॥
मन बुधि वाणीअ खों परे, लखाया[10] लहनि॥
ड्या सभि बाद बकनि, समुझ रे सामी चए॥

---

(१) त्रिविकल्प समाधि (२) सरीर सिर जो सर्फो न क्यो (३) प्रेम में ई लयलीनु थ्या (४) पहिंजो पाण में झाती पाए सदा लीनुता में रहनि (५) ईश्वरु राजी थी उन्हनि खे पाण जहिड़ो कंदो आहे (६) सिर सांगो न करि (७) सन्त खे (८) ईश्वर सां जोरे (९) मैं मेरो पणो कढु (१०) जाणू.

२१६९

प्रेमु पिसाचु लगो॒, द्वैतु न रहियो दिलि में॥
विधि निषेद वहिवार जो, सन्सो भर्म भगो॒॥
सामी पिछो अगो॒, रोके वेठो रिन्दु थी॥

२१७०

पलक न थिए परे, नेही नारायण खों॥
मन में चन्द्र चकोर जां, दर्सन ध्यानु धरे॥
भंवरो रहे न वास रे, जल रे मीन मरे॥
सामी तदि॒ ठरे, जदि॒ पवे बून्द पपीह खे॥

२१७१

पलक न थिए परे, सिक त तुहिंजी सुप्री॥
हणे नितु अन्दर में, बेहद बा॒ण भरे॥
सुततु मिलु सामी चए, कुठीअ कर्म करे॥
तदि॒ जीउ ठरे, जदि॒ दि॒सां हिन अख्युनि सां॥

२१७२

पलक न थिए परे, सिक त तुहिंजी सुप्री॥
हर्दमि हणे हांव में, बेहद बा॒ण भरे॥
सामी रोए रतु नितु, सवे न धीरु धरे॥
मिलन्दे महिर करे, की मारीन्दे मोअनि खे?॥

२१७३

पलक मंझि कल्प[1], लंघे लख हजार थ्या ॥
अकह सुखु समाधि जो, चई सघनि न चप ॥
समुझे को सामी चए, ईहा सची स्याणप ॥
जो करे जप तप, नाना[2] खों न्रिबाणु थ्यो ॥

२१७४

पलक मंझि झलक, डिठी जहिं गुर ग्याति[3] सां ॥
तहिं भान्डो भेद भर्म जो, भजी क्यो ब तक ॥
सुत्ह प्यो स्वरूप खे, बांभग पाए बक[4] ॥
समुझनि के प्रपक, ईहो इशारो अन्भई ॥

२१७५

पल्टी था पढ़नि, आशिक गाल्हि अशिक जी ॥
सामी चए सन्सार में, हुनिर[5] साणु हलनि ॥
सुत्ह सिधि सही क्यो, ईहो भेदु भलनि[6] ॥
जागी डिठो जनि, पहिंजे अख्यें पाणखे ॥

२१७६

पल पल मंझि पले[7], ज्ञानी गुर्मुखु पाणखे ॥
तोड़े सीत्लु थ्यो सामी चए, पंजई दूत दले[8] ॥
ईहा गाल्हि अन्दर जी, कहिंखे कीन सले ॥
बिना चाह चले, साक्षी थी सन्सार में ॥

(१) युग (२) मैं मेरो (३) उपदेस सां (४) वेझो भाकुरु पाए–बिचिरी करे (५) वीचार सां (६) स्याणनि (७) झले (८) वसि करे.

२१७७

पलि पलि कनि पुकार, कुठा दर्द फ़िराक़ जा॥
पसण काणि प्रयनि जे, रोअनि ज़ारों ज़ार॥
सामी चए सरीर जी, रखनि कान सम्भार॥
आउ मिलु जानी यार, नत दि॒यूं था दमु दर्दमें॥

२१७८

पलि पलि कनि पुकार, फट्या अशिक़ फ़िराक़ जा॥
सामी चवनि मिलु सुप्री, रोअनि ज़ारों ज़ार॥
लूअं लूअं मंझि लगी॒ रही, तिखी तुहिंजी तार॥
सुततु लहु सम्भार, नत दि॒यूं था दमु दर्दमें॥

२१७९

पलि पलि कीम पुकारि, दरि दरि देवाननि जां॥
सामी सिक सचीअ सां, हर्जसु हृदय धारि॥
जन्म मरण दुःख सुख जो, सन्सो भर्मु निवारि॥
त लंघे पवें पारि, सहजे अविद्या सिन्धु खों॥

२१८०

पलि पलि पुकारे, नेहीं नेण भरे करे॥
आउ मुहिंजा सुप्री, वेहु न विसारे॥
तुहिंजे अशिक़ अलगु॒ क्यो, लाए लिवं लारे॥
मोअनि खे मारे, मेलो कंदे कनिसां॥

२१८१

पलि पलि पुकारे, सन्त लखाइनि सम्ता ॥
समुझी को सामी चए, हृदय मंझि धारे ॥
जाग़ी सभ स्वप्न जी, नानत[1] निवारे ॥
चढ़ी चौबारे[2], दह दिस[3] दिसे दोसखे ॥

२१८२

पलि पलि पुकारे, सन्त लखाइनि सम्ता ॥
समुझे को सामी चए, हृदय मंझि धारे ॥
कढी सभ कल्पा, तृहनि ज्यां तारे ॥
जादे निहारे, तादे सजणु सामुहों ॥

२१८३

पले[4] पाड़ोसी[5], आशिक चढ़िया अछते ॥
कढी पुछनि कीनकी, पण्डतु ऐ जोसी ॥
मुख्यु रख्याऊं मन में, खिम्यां खामोसी ॥
थधी ऐ कोसी, सामी सहनि सिरते ॥

२१८४

पवन आहारी, कोर्युनि में को हिकिड़ो ॥
खोली जहिं खुशीअ सां, बेहद जी बारी[6] ॥
सामी विश्व सारी, जाणे लहिर समुन्द्र जी ॥

---

(१) भास्कारी–भर्मु (२) दस्वे द्वार (३) सभमें–चौतर्फ (४) झले–वसि करे (५) काम क्रोध आदी (६) दर्वाजो–दरु.

२१८५

पवनि[1] पहिंजो पाण, अन्धा जीव अज्ञान में॥
गोता खाइनि गैब जा, करे खिन्चा ताण॥
माणिनि सुखु स्वरूप जो, सुजागा सुजाण[2]॥
सदाई न्रिबाण, सामी रहनि स्वभावमें॥

२१८६

पवे न तनाबीअ[3] पेरु, ड्रिजां भै काछनि[4] जे॥
मुन्दो[5] थिए न मोकिड़ो[6], फल[7] जो पवे न फेरु॥
उते चौदो केरु, त हिन जी बनी ब्रह्[8] सार्यो॥

२१८७

पश्चम खे पूर्बु, मूर्ख जाणनि मति रे॥
वेठा पीर फकीर थी, करे कूड़ु कस्बु॥
समुझे को सामी चए, महबती मतिलबु॥
ढौल[9] मिलण जो ड्बु[10], जहिंखे दुस्यो सतिगुरूअ॥

२१८८

पसर्यो पसारो, सभो कारणि सन्त जे॥
आयो आत्म राम जो, भगुति रसु भारो॥
जाणे पहिंजे जीअखे, प्रीत्मु प्यारो॥
दिनाई सारो, सामी हालु हरिजन खे॥

---

(१) अटिकनि–भिटिकनि (२) जाग्रयल–जाणू (३) छिक ताण–प्रपंच में (४) दिसण वारे ईश्वर जे (५) शब्दु (६) गल्तिी फर्कु (७) नतीजे में–क्रिया (८) टीकु कीन हुई–न कयो (९) ढंगु (१०) रस्तो

२१८९

पसर्यो पसारो, सभो कारणि सन्त जे॥
दि॒सी खेलु खुशि थिए, साक्षीअ जो सारो॥
मिल्यो ज॒णे सभमें, न्रिमलु न्यारो॥
तद॒हीं प्यारो, प्रीत्म खे प्रेमी लगे॒॥

२१९०

पहिंजी पाड़ पटे, थो मूर्खु जीउ मर्म रे॥
साखां सन्तनि जूं बु॒धी, हठ खों कीन हटे॥
मानुष्य देहि अमोल्य खे, थो सागर मंझि सटे॥
वेठो कचु मटे, दे॒ई लाल अणमुल्हा॥

२१९१

पहिंजी पोख[1] सम्भारि, प्राणी पेहे[2] ते चढ़ी॥
दे॒ई वाड़ि[3] वेसाह जी, पाणी प्रेमु पीआरि॥
क्षिम्या खाभांणीअ सां, कढी कल्प[4] झारि[5]॥
खणे बेहद ब॒ारि, सामी अन्भय अन[6] जी॥

२१९२

पहिंजी पोख सम्भारि, प्राणी पेहे[7] ते चढ़ी॥
क्षिम्यां खाभांणीअ सां, कढी कल्प[8] झारि॥
दे॒ई वाड़ि[9] वेसाह जी, सामी भर्मु निवारि[10]॥
त खणे बेहद ब॒ारि[11], अन्भय अखुट अनाज[12] जी॥

---

(१) मानुष्य जन्मु जी जूणी (२) वीचारु करे–सति संगु करे (३) रस्तो (४) प्रपंचु–संकल्प (५) कढु (६) साख्यातकार जी (७) वीचारु करे–सतिसंगु करे (८) इन्छा संकल्प कढु (९) वेसाह जो रस्तो वठी (१०) भर्मु कढु (११) पैदास- फसलु (१२) आत्म धनु.

२१९३

पहिंजो कीतो पाण, मूर्ख पाइनि[1] मतिरे॥
दांवर[2] ज्यां देहिमें, ताणे[3] फासनि ताण॥
सामी चढ़िया सीरते, के नेहीं त्रिबाण॥
जन्खे प्रीति पछाण, सतिगुर डि़नी स्वरूपजी॥

२१९४

पहिंजो कीतो पाण, मूर्ख पाइनि[4] मतिरे॥
खणी खणति कला[5] सां, पसूं प्रेत पखाण[6]॥
सामी वेठा सम थी, के नेहीं त्रिबाण॥
जन्खे प्रीति पछाण, सतिगुर डि़नी स्वरूपजी॥

२१९५

पहिंजो पाण पए, थो मूर्खु अविद्या फासमें॥
खणी पिण्डु[7] मनन[8] जो, नाहकु दुःख सहे॥
मृिघ तृष्णा जे जलमें, उञ वुख कीन लहे॥
गुर्गम रहति रहे, त सुखी थिए सामी चए॥

२१९६

पहिंजो पाण प्यो, भुली जीउ भर्म में॥
न कहिं मेड़ि मिन्थ कई, न कहिं जोरु क्यो॥
देहीअ जे धर्मनि सां, मिली देहि थ्यो॥
बा़भणु चए ड्यो, चेतनु न ज़ाणे ज़ाण रे॥

---

(१) भोगिनि (२) ज़ारे जे कीड़े समानु (३) पहिंजो पाण फासणु
(४) भोगिनि (५) शक्ती–सता (६) मानुष्य आदी (७) वजनु बारु
(८) सां पणे जो

२१९७

पहिंजो पाण पवनि, भुली जीव भर्म में॥
सति जाणी सन्सार खे, जन्मनि नितु मरनि॥
साधूजन समुझी सची, सामी साख डि्यनि॥
जागी डि्ठो जनि, हिकु हेकलो आत्मा॥

२१९८

पहिंजो पाण मरे, थो मूर्खु जीउ मनन[1] में॥
जीए भोलो भर्म में, फाथो मुठि भरे॥
जागी[2] अविद्या निन्ड मों, करे न पटु[3] परे॥
सतिगुरू महिर करे, त सामी छुटे दुःख खों॥

२१९९

पहिंजो पाण मले, थो मूर्खु मिटी मूहंखे॥
छदे साध संगति खे, कुसंग साणु रले[4]॥
देई[5] लाल[6] अण मुल्हा, बन्धे[7] कचु पले॥
कढी खोटि[8] हले, थो समुझ वराए सखिणो॥

२२००

पहिंजो पाण रुले, चोरासीअ में जीउ हे॥
जीए मृघी जलखे, डि्सी मृघु भुले॥
तदी गुन्डि खुले, जदी सामी मिले सतिगुरू॥

---

(१) मां पणे में (२) अज्ञान मों (३) अन्धकार जो पर्दो (४) मिले
(५) विञाए (६) स्वास (७) खणे–ठाहे (८) कर्म भोगु ठाहे खणी
(९) कर्म भोगु रुपी कर्जु खणी प्यो जन्म भोगे

२२०१

पहिंजो पाण वहे, खलिक पहिंजे ख्याल में॥
मिली माया मोह सां, सूर[1] अपार सहे॥
गोता खाए गैब जा, को गुर्मुखु अलखु लहे॥
सामी सदा रहे, ऐनु अलेपु आकास जां॥

२२०२

पहिंजो पाण हणे[2], थो मूर्खु झुगो[3] मतिरे॥
हीरा[4] लाल फिटा करे, थो कंङ्करु[5] कचु खणे॥
सामी दिसे कीनकी, नफो नुकसानु गणे॥
ताणे[6] मंझि तणे, थो दावंर ज्यां पाणखे॥

२२०३

पहिंजो पाण हवालु[7], मूर्ख जीअ मंदो क्यो॥
रखी चाह अन्दर में, दरि दरि करे सोआलु॥
साणु रहे प्रतिपालु, तहिंखे दिसे कीनकी॥

२२०४

पहिंजो पाणु[8] पले, रख्यो जहिं रहतिसां॥
तहिंखे सबे कोनको, सामी छलु छले॥
जगमें जग जहिड़ो थी, बिना चाह चले॥
तदी सिधान्त सले, जदी दिसे जगयासीअ जां वरी॥

---

(१) दुःख (२) नासुकरे (३) मानुष्य जन्मु रूपी खजानो (४) स्वास रूपी लाल छदे (५) कर्मनि जो कचरो खणे (६) जूणयनि मे भिटिके (७) कर्मु (८) झले

२२०५

पह्र्यो जहिं चोलो, फार्कु फकीरीअ जो ॥
कढियो तहिं अन्दर मों, भर्म जो भोलो ॥
लधाई रसु राम जो, अन्भय अमोल्यो ॥
सामी थ्यो गोलो, सन्तनि सापुर्षनि जो ॥

२२०६

पहियों पुछिजि पाणु, त आउं कुजाड़ो आहियां ॥
अन्दरि ओअंकार जी, थे वाई ऐ वखाण ॥
महबत सां मेंघो चए, तूं जाणिजि ईहो जाणु ॥
पर पसिजि पहिंजो पाणु, जो दिसी देहु न सघे ॥

२२०७

पहुचे न प्रमाणु, अन्भय गुझ अन्दर जो ॥
विलो को गुर्मुखु लखे, समुझ सत्कृत साणु ॥
दिसी पहिंजो पाणु, सीत्लु थिए सामी चए ॥

२२०८

पाइन पहिंजो पाण, मिटी मेरे मूहंमें ॥
गोता खाइनि गैबजा, करे खिन्चाताण ॥
माणिनि सुखु स्वरूपजो, के साधूजन सुजाण ॥
सदा रहनि त्रिबाण, सामी सहज अनंदमें ॥

२२०९

पाढ़े क्यो प्रपकु, मुर्शिद खासु मुरीद खे ॥
चढ़ियो ऐन अर्श ते, लिवं सां बधी लकु[1] ॥
दिसी मूहुं महबूब जो, सामी थ्यो लाशकु[2] ॥
तूअं तूअं ऐनलहकु,, बोले ब्याईअ रे सदा ॥

२२१०

पाढ़े क्यो प्रपकु, मुर्शिद खासु मुरीद खे ॥
भौसागर जे भीड़ खों, लंघे थ्यो लाशकु[3] ॥
सामी सदाई रहे, गगन मंझि गर्कु[4] ॥
तूअं तूअं एनलहकु, बोले बुधे ब्याईअ रे ॥

२२११

पाढ़े[5] क्यो प्रपकु[6], मुर्शिद खासु मुरीद खे ॥
रखे न रतीअ जेत्रो, तमासां[7] तालकु[8] ॥
पहिंजे अख्ये पाणखे, दिसी थ्यो लाशकु[9] ॥
हर्दमि ऐनलहकु, बाभण बोले बलसां ॥

२२१२

पाण[10] अन्दरि सो पहु[11], देरो[12] जहिंजो दममें[13] ॥
तो[14] माहीं तो जहिड़ो, मुर्शिद दिनो दसु ॥
जेको लगेई वसु, त गुझो गोल्हिजि गुझखे ॥

---

(१) वंझु (२) पको थ्यो (३) पको–परिप्यो (४) सून्य अवस्थामे (५) उपदेसु (६) पको (७) मोथाजी (८) वास्तो (९) पूरणु (१०) पहिंजे अन्दरमों (११) ठिकाणो (१२) स्वासनि मे–स्वासनि द्वारा जाणु (१३) गोल्हे लहु–ज्ञान वीचारसां लहु (१४) हिक जहिड़ा याने हिक सता आहियो

२२१३

पाण अशिक[1] सोरे, क्यो वसि वेसाह सां॥
मासु खाधाईं मनु खसे, सामी सभु[2] कोरे॥
बाकी पोलो[4] पिञिरो, ग्गां हन्यूं तोरे॥
आउ प्री ओरे, नत ड्रिसूं था दसु दर्दमें॥

२२१४

पाण प्रयनि क्यो यादि, तदी बन्दगी ब्रिहालु[5] थी॥
ड्रिसी मूहुं महबूब जो, मिटी सभ उपाधि[6]॥
सामी थ्यो स्वरुपमें, इस्थरु आदि जुगादि॥
सुत्ह सिधि समाधि, हिक पलक पराहूं न थिए॥

२२१५

पाण प्रयनि क्यो यादि, तदी बन्दगी ब्रिहालु[7] थी॥
ड्रिसी मूहूं महबूब जो, मिटी सभ उपाधि॥
सुत्ह सिधि समाधि, हिक पलक पराहूं न थिए॥

२२१६

पाण प्रयनि ड्रिनी दाति[8], आशिकु[9] मुकाऊं एल्ची॥
रेढ़[10] थ्यो रहति सां, जिते ड्रीहुं न राति[11]॥
मिटी वेई मन मों, सामी चए सभ ताति[12]॥
अशिकु इलाही जानि, थी जाति सुञाणे जातिखे॥

---

(१) प्रेम (२) छिके वढाई (३) मां मेरो मायाची प्रपंचु कढयाई (४) सरीर भाउ निकरी व्यो (५) सावि पेई–पासि पेई (६) मां मेरो–प्रपंचु (७) सावि पेई–पासि पेई (८) शक्ती (९) प्रेम अगिवानु करे डिनाऊं (१०) छिके व्यो (११) सुनि अवस्थामे (१२) प्रपंचु

२२१७

पाणीअ मंझि मरे, मीन प्यासी पाणहीं ॥
भर्म मंझि भुली करे, दह दिसि गमनु करे ॥
बिना प्रेम परे, सामी ज़ाणे सीरखे ॥

२२१८

पाणु कढी जे पाणमो, आतण[1] मंझि आणीनि ॥
मिली महबूबनि सां, मौजां से माणीनि ॥
जादे निहारीनि, तादे मौज प्रयनिजी ॥

२२१९

पाणु न[2] पले जिन्दुड़ी, तोखे झुगे में झेड़ो ॥
रहियो तहिंजे राज़में[4], वेर्युनि जो वेड़ो[5] ॥
खाद्[6] मारि[7] खर्यनि खे, वठु क्षिम्या जो खेड़ो[8] ॥
तदी थे मेड़ो[9], आसर अजीबनि सां ॥

२२२०

पाणु पहिंजो पाणमें, पस्यो जनि पेही ॥
प्रयां सन्दे पार जी, तहिंखे कल केही ॥
विहामी वेई, चप चटीन्दे रातड़ी ॥

---

(१) वीचार मे–ज्ञान अवस्था मे अचनि (२) पाण खे न सुञातो अथी (३) सरीर मे आहे (४) काम क्रोध अदि वेर्युनि (५) विछोर देई भुलायो आहे (६) धिक कढु (७) प्रपंच जे खटिपृ खे (८) रस्तो (९) मेलापु

२२२१

पाणु पहिंजो पाणमें, पसां जां पेही॥
त नको मुल्कु खल्क का, नके असेही॥
असे सार्यो जनिखे, से पुणि असेही॥
घ॒ी वाई वेई, लाति प्रथनि जी हिकिड़ी॥

२२२२

पाणु पहिंजो पाण में, पेही जनि डि॒ठो॥
सामी लगो॒ तनिखे, आत्म रसु मिठो॥
कर्मनि जो चिठो, फ़ारे तनि फिटो क्यो॥

२२२३

पाणु पहिंजो पाणमें, पेही जनि डि॒ठो॥
सामी लगो तनिखे, आत्म रसु मिठो॥
फ़ारे तनि फिटो क्यो, कर्मनि जो चिठो॥
लगे॒ कीन मिठो, बिनां सुख स्वरूपजे॥

२२२४

पाणु पहिंजो पाणमें, पेही जां पसां॥
त नको मोती सिपका, नको ईश्वरु असां॥
अन्दरि भी असां, बा॒हरि भी पाण ब॒ोल्यूं॥

२२२५

पाणु वराए पाण, डि॒ठो जहिं गुर ग्यातिसां॥
सहजे तंहिंजे मन मों, मिटयो जा॒णु अजा॒णु॥
माहिलु थ्यो महिराण[1] में, पाए पदु त्रिबा॒णु॥
सामी कहीं साणु, गा॒ल्हि न करे गुझजी॥

२२२६

पाती जहिं झाती, गुर्गम पहिंजे घरमें॥
सामी तहीं सापुर्षजी, मन्सा मध[2] माती॥
सभ घट सुञाती, मू॒र्त महबू॒बनि जी॥

२२२७

पातो जनि मर्मु, पचें जो प्रतीति सां॥
से[3] टुकरे पाणीअ लुंगजो[4], आशिक रखनि न गमु॥
दोस्त बा॒झूं दमु, सामी खणनि कीनकी॥

२२२८

पातो जहिं लीओ, गुर्गम पहिंजे घरमें॥
बि॒नि बा॒र्युनि जे विचमें, डि॒ठो तहिं डी॒ओ॥
सदाई खीओ, सामी रहे स्वभाव में॥

---

(१) मैदान में (२) सिक पूरीथी (३) रोटी (४) कपिड़े

२२२१

पाणु पहिंजो पाणमें, पसां जां पेही॥
त नको मुल्कु खल्क का, नके असेही॥
असे सार्यों जनिखे, से पुणि असेही॥
घ़ी वाई वेई, लाति प्रयनि जी हिकिड़ी॥

२२२२

पाणु पहिंजो पाण में, पेही जनि डि़ठो॥
सामी लगो तनिखे, आत्म रसु मिठो॥
कर्मनि जो चिठो, फ़ारे तनि फिटो क्यो॥

२२२३

पाणु पहिंजो पाणमें, पेही जनि डि़ठो॥
सामी लगो तनिखे, आत्म रसु मिठो॥
फ़ारे तनि फिटो क्यो, कर्मनि जो चिठो॥
लगे कीन मिठो, बिनां सुख स्वरूपजे॥

२२२४

पाणु पहिंजो पाणमें, पेही जां पसां॥
त नको मोती सिपका, नको ईश्वरु असां॥
अन्दरि भी असां, बा़हरि भी पाण ब़ोल्यूं॥

२२२५

पाणु वञाए पाण, डि॒ठो जहिं गुर ग्यातिसां॥
सहजे तंहिंजे मन मों, मिट्यो जा॒णु अजा॒णु॥
माहि॒लु थ्यो महिराण[1] में, पाए पदु त्रिबा॒णु॥
सामी कहीं साणु, गा॒ल्हि न करे गुझजी॥

२२२६

पाती जहिं झाती, गुर्गम पहिंजे घरमें॥
सामी तहीं सापुर्षजी, मन्सा मध[2] माती॥
सभ घट सुञाती, मूर्त महबूबनि जी॥

२२२७

पातो जनि मर्मु, पचें जो प्रतीति सां॥
से[3] टुकरे पाणीअ लुंगजो[4], आशिक रखनि न गमु॥
दोस्त बा॒झूं दमु, सामी खणनि कीनकी॥

२२२८

पातो जहिं लीओ, गुर्गम पहिंजे घरमें॥
बि॒नि बा॒र्युनि जे विचमें, डि॒ठो तहिं डी॒ओ॥
सदाई खीओ, सामी रहे स्वभाव में॥

---

(१) मैदान में (२) सिक पूरीथी (३) रोटी (४) कपिड़े

२२२९

पान्हि॒ पलइ पाए, सभुको बी॒जो[1] पहिंजो ॥
ईहा राह असुल जी, छद॒ी ठाकुर ठाहे ॥
सतिगुरु पहिंजे सिष खे, सामी समुझाए ॥
जाग॒ाए लाहे, अविद्या फास गि॒चीअमों ॥

२२३०

पापी ए पुञी, भोगि॒नि भोग॒ कर्म जा ॥
खयूं वतनि सिरते, सामी कल्प[2] कुनी ॥
रहनि अलेपु आकास जां, ज्ञानवान गुनी ॥
ग॒ाइनि वेद धुनी, महा वाक्य माहिल थी ॥

२२३१

पापी करें पापु, फाहीअ फासनि पाणहीं ॥
भोगि॒नि भोग॒ नर्क जा, सिरते खणी सिरापु ॥
सामी सच्धारनि खे, कोन्हे दुःखु सन्तापु ॥
मन में रखी मेलापु, वर्तनि विधि वीचार सां ॥

२२३२

पापी पापनि साणु, भोगि॒नि भोग॒ नर्कजा ॥
पुञी सङ्ग स्वर्ग॒ जा, पाए कनि प्रमाणु ॥
बि॒न्हीं जे ब॒न्धन खों, नेही थ्या न्रिबा॒णु ॥
पांण वराए पाणु, सामी जा॒णनि सर्ब॒ गति ॥

---

(१) पोख्यो-क्यो (२) प्रंतु

२२३३

पापी पापु करे, फाहे फासनि पाणहीं॥
रोअनि रतु अख्युनि मों, जम जो दुन्डु भरे॥
सामी सच्यारनि जो, सभुको अदबु धरे॥
दूरौ डिसी दुरे, वाट जगाती धर्मराइ॥

२२३४

पार्वती परे, मूड़ौ थिए न महेस खों॥
सीता सदाई राम जा, हृदय चरण धरे॥
तीएं सुर्ति स्वरूप सां, जुड़ी जतन करे॥
तदहिं कार्जु सरे, सभोई सामी चए॥

२२३५

पार्सु लगी सुधीरु, लोहे खे कञ्चनु करे॥
सामी जीए समुन्द्र में, लूणु गरी थे नीरु॥
तीए सतिगुरु सिष खे, समक करे गम्भीरु॥
हीरे बेध्यो हीरु, रही कान कल्मा॥

२२३६

पारे मंझि पाणी, तीए साक्षी डिठो सभमें॥
वञी सुर्ति स्वरूपमें, सामी समाणी॥
सन्तनि सापुर्षनि सां, मौज मिली माणी॥
जागाए जाणी, सूक्षमु सन्धि प्रयनि जी॥

२२३७

पारे में पाणी, तीए व्यापकु वसे विश्वमें ॥
सूक्ष्मु सन्धि[1] प्रयनि जी, कहिं ज़ाणाए ज़ाणी ॥
सामी सामाणी, तहिंजी सुर्ति स्वरूपमें ॥

२२३८

पाली जहिं द्या, सामी सभ कहींते ॥
तहिंजा कम सभेई, प्रयनि पाण क्या ॥
जेके वचन चया, से वाक्य मिरेई सति थ्या ॥

२२३९

पिटीअ[2] खों पालो[3], व़िलो को गुमुखु रहे ॥
जहिंखे द़िनों सतिगुरूअ, त्रिभय नवालो[4] ॥
करे न कनर जेत्रो, कल्प[5] कशालो ॥
सदा सुखालो, सम वर्ते सामी चए ॥

२२४०

पीतो जहिं प्यासे, प्यालो प्रेम अगम जो ॥
सामी तंहिंखे सभमें, भगि़वतु हिकु भासे ॥
पची क्याईं पोशि सां, पछिन्ता[6] पासे ॥
फिरी ना फासे, फुनें जे फाहीअमें ॥

---

नीशानी (२) माया (३) पासे (४) उपदेसु–रस्तो (५) विषादु (६) मायावी प्रपंचु

२२४१

पीतो जहिं पिनी, पाकु प्यालो प्रेमजो॥
सट्या तहिं सन्सार जा, छिका सभि छिनी॥
सदा रहे सामी चए, भाणे मंझि भिनी॥
वेठी मुल्हि गिन्ही, दिलि देई दिल्बर खे॥

२२४२

पीतो जहिं पुल्की[1], प्यालो प्रेम अगम जो॥
भगी तहिं भर्पूरि थी, ममत्व जी मटिकी॥
सम ज़ाणे सामी चए, दूई ऐ इकी॥
जीए सोन टिकी, हेठि मथे हिक जहिड़ी॥

२२४३

पुकारे पण्डत, सारु लखाइनि[2] सभखे॥
समुझे को सामी चए, आशिकु इशारत॥
पूरणु ज़ाणी पीअखे, मेटे मोहु ममत्व॥
सदा करे सुहबत, सन्तनि सच्यारनजी॥

२२४४

पुछण मंझि पलनि, से सामी से सतिगुरू॥
जग्यासीअ जे जीअखे, रे फन्द फास झलिनि॥
उल्टी मंझि सलिनि, सामी राह प्रयनि जी॥

(१) खुशिथी (२) जणाइनि

२२४५

पुज॒णु नाहिं पूरति, सन्त चवनि सन्सार सां ॥
जनिखे दि॒नी सतिगुरूअ, पर्चीं पूरी मति ॥
सदा रहनि सामी चए, अन्दरमें उपरन्ति ॥
बा॒हरि बु॒धनि अति, तांभी वर्तनि विधि विचार सां ॥

२२४६

पुञी पुञ करे, भोगे॒ भोग सुर्ग॒जा ॥
पापी घोर नर्क में, रोअनि रतु भरे ॥
सामी रहनि सभ खों, प्रेमी पाकु परे ॥
दि॒सनि ध्यानु धरे, प्रत्क्षु पूरणु आत्मा ॥

२२४७

पुत्र खे जीए पिता, पाढ़े करे परपक्कु ॥
तीए सतिगुरु सिषजी, मेटे सभ मम्ता ॥
प्रत्क्षु पूरणु आत्मा, दि॒से हर्ता कर्ता ॥
वेदनि जा वाक, साख दि॒यनि सामी चए ॥

२२४८

पुन्यनि सारे पाप, मनु निर्मलु क्यो न्भ जां ॥
सामी मिल्यो सतिगुरू, मिट्या टे॒ई ताप[१] ॥
वेहार्यांईं विचमें, लाए अन्भय छाप[२] ॥
जोग जग जप तप, लय दि॒ठा नहिं लख्यमें[३] ॥

---

(१) मलु विक्षेपु आवरणु–आदी व्याधी उपाधी (२) पूरणु करे (३) ज़ाणप में

२२४९

पुझंनि[१] कीन पढ़िया, सुत्ह सुखु स्वरूपजो॥
रहनि विद्या[२] जे वाचमें, अठई पहर अर्या॥
ममत्व मिटाए मन जी, आशिक अछ चढ़िया॥
सामी अण[३] घर्या, घरिनि[४] घाट अन्दर में॥

२२५०

पुझीं[५] पर्मार्थु, सन्तनि अर्थु सिधि क्यो॥
मैलु विञाए मन जी, सामी थ्या समृथु॥
लेपु न लगे तनिखे, तोड़े कथिनि अकथु॥
बिए खे देई हथु, पारि लंघाइनि पातिणी॥

२२५१

पुझीं[६] पाइजि पेरु, आशिक जे आराहमें[७]॥
सूक्षम खों सूक्षमु अथी, सुपेर्युनि जो सैरु॥
मोटी मोटयो कोनको, गैबी[८] गुझो वेरु॥
जागिजि फन्दु न फेरु, अथी ऊन्हीं गाल्हि अजीबजी॥

२२५२

पुझीं[९] पाइजि पेरु, महबत जे मैदानमें॥
गजे थो अजगैब जो, सदा सामुहों शेरु[१०]
चम्बो[११] हणी चितखे, ड्राहे[१२] कन्दुई ढेरु॥
अथी फन्दु न फेरु, सप्ति[१३] क्यो सामी चए॥

---

(१) समुझनि—जाणनि (२) माया जे वहकिरे में (३) अण डिठा (४) दिसनि (५) समुझी (६) समुझी (७) ऊन्ही गाट्—अथाह में (८) अजाइबु गुझी गाट् (९) समुझी (१०) मायावी पसारो (११) उपदेस जो चम्बो (१२) विप्रीति भाउ कढंदुइ (१३) निश्चेक्यो

२२५३

पुर्बनि[1] जो पाड़ो, अचे थ्यो कहिं पुञ ते॥
तनि ढक्यो[2] पहिंजे पांद[3] सां, डि॒सी उघाड़ो[4]॥
झिट्यो सभु अन्दर मों, सामी चए साड़ो[5]॥
लोकनि खों लाड़ो[6], करे मनु मगनु थ्यो॥

२२५४

पुर्षार्थ जो पेरु, सामी दु॒स्यो सतिगुरूअ॥
सही करे स्वप्न जो, कर्ता आहे केरु॥
जागी॒ कढु अन्दर मों, अविद्या रूपु अन्धेरु॥
समझो ज॒ाणनि मेरु[6], पाणु[7] वराए पीअखे॥

२२५५

पुर्षार्थ जो पेरु, सतिगुर दु॒स्यो सिष खे॥
आदी॒ अन्भय घरजो, घिरी लधाईं वेरु[8]॥
पाए सुखु स्वरूप जो, थ्यो निर्मलु निर्वेरु,॥
सामी जीए सुमेरु, रहे अदो॒लु अन्दर में॥

२२५६

पुर्षार्थ पूरो, क्यो जहिं कल्प रे॥
पर्ची तहिं पंजनि जो, खपायो खू॒रो[9]॥
सिरि चढ़यो सूरो[10], सामी वञी स्वरूपजे॥

---

(१) ईश्वरी ख्यालु (२) समुझायो (३) उपदेस सां (४) अज्ञानी ज॒ाणी (५) द्वैतु–मां मेरो (६) पासो (७) मालिकु (८) पाणु कढी पाण साक्षी रूपी आत्म सता पीअ खे वीचारि (९) रस्तो (१०) ज़ोरु–सता (११) प्रेमी

२२५७

पुर्षु मिल्यो प्रधान, सामी पूरो सतिगुरू ॥
जहिं रखी द्रष्टि दयाजी, कढयो गैरु गुमानु ॥
देई आत्म ज्ञानु, इस्थति क्याई पदमें ॥

२२५८

पुर्षु मिल्यो पूरणु, वठी क्यो दिब देसदे ॥
लखायाई लख्य सां, अन्भय आत्म धनु ॥
चाह मिटाए चितजी, क्याई मनु अमनु ॥
उतरु ऐ प्रश्नु, सामी सभु भुली क्यो ॥

२२५९

पूजें कोहु पथर, तूं चर्या चेतन खे छदे ॥
जहीं साधन सिधि क्या, तहिंजी करि नज़र[२] ॥
साक्षी बोले सभमें, थो व्यापकु चर अचर ॥
सामी अजर अमर, छदे पूजि म पिण्ड खे ॥

२२६०

पूरणु रहति रहे, पाए ज्ञाति गुरूअजी ॥
लगो रहे लख्य[३] में, कहिंखे कीन चए ॥
समत्व विञाए मन जी, दुःख सुख सभि सहे ॥
तदी सुखु लहे, जदी सामी दिसे पाणखे ॥

---

(१) मूर्तयू–ठाकुर (२) ध्यान करि (३) वीचार में

२२६१

पूरणु परमेश्वरु, सन्त लखाइनि सभखे॥
सोधे सिक सचीअ सां, कहिं गुर्मुख डिठो घरु[१]॥
सीत्लु थ्यो सामी चए, मेटे दुःखु दूसरु॥
ओलहु ऐ ओभरु, भवे[२] कीन भुलनि जां॥

२२६२

पूरन पुर्ष उती[४] मथे गाल्हि मर्म जी॥
सामी साध संगति जी, खई जहिं जुती[५]॥
तहिंजी मति वेसाह सां, थी उतमु अछुती॥
वञी द्रष्टि खुती, अन्भय सुख अगममें॥

२२६३

पूरन पुर्ष चयो, वचनु हिकु विश्राम जो॥
सामी जाणनि कूड़ु सभु, कल्प जो क्यो[६]॥
जीए सुखु स्वप्न जो, जागये कीन रह्यो॥
साक्षी ठहियो डुहियो, अथी आदि जुगादिजो॥

२२६४

पूरनु पुर्षु दयालु, सामी मिल्यो सतिगुरू॥
क्यो तहिं क्रिपा सां, न्जर मंझि निहालु॥
पर्ची लधो पूर्बी[७], घर मों अन्भय लालु॥
मिट्यो कल्प कालु, सहजे मनु अमनु थ्यो॥

---

(१) वीचारे (२) ठिकाणो (३) भिटिके (४) चई–समुझई (५) सेवा (६) रचिना (७) असुली

२२६५

पूर्व खे पश्चमु, मूर्खु ज़ाणे मति रे॥
फ़ाले नितु फ़ुर्नें सां, दौलत खे दमु दमु॥
सामी चए सभ मों, पातो पदु अगमु॥
बिना डि॒ठे आलमु, अन्धो करे आसिरो॥

२२६६

पूर्व भागु जगा॒यो, जहिंजो साधूअ संगते॥
सतिगुर संदे सब॒द में, रहे रात्यूं डी॒हं लगो॒॥
जन्म जन्म जो सुम्हियों, तहिंजो भागु॒ जगा॒यो॥
सामी कीन ठगा॒यो, वर आप जे फासमें॥

२२६७

पूरे गुर डि॒ई, दा॒ति छदी॒ दर्सन जी॥
सुत्ह सिधि सामी चए, द्रष्टी खुली पेई॥
हथ ब॒धी हाज़रु थ्यूं, सिध्यूं सभेई॥
ममत्व मिटी वेई, चाह न रही चितमें॥

२२६८

पूरे गुर प्रसादि, आत्म सुखु सही क्यो॥
पाणु विसार्यो निन्डमें, जागा॒ये आयो यादि॥
मिटी वेई मन मों, बां॒भण वादि विवादि॥
जहिंजो अन्तु न आदि, सो कीअं अचे कथमें॥

२२६९

पूरे गुर पल्यो, जहिंखे वादि विवादि खों ॥
सामी माया मोह्जे, छलमें कीन छल्यो ॥
अनल जां आकास में, हठ रे व्यो हल्यो ॥
रहसे[1] वञी रल्यो, सुत्ह सिधि स्वरूपसां ॥

२२७०

पूरे गुर पारी, ग॒ाल्हि पहिंजे मूहं जी ॥
दे॒ई हथु हिमथ जो, चाढ़याईं चाढ़ी ॥
पार[2] सफा सारी, सन्से जी सामी चए ॥

२२७१

पूरे गुर पाली, दया पहिंजे दास ते ॥
सन्धि[3] द॒स्याईं सुखजी, निर्भय निराली ॥
सहजे थी सामी चए, मन्सा[4] मतिवाली ॥
खावन्द रे खाली, जाइ न दि॒से जरिड़ो ॥

२२७२

पूरे गुर पूरी, दीख्या दि॒नी दिलि सां ॥
अची वेई जीअखे, समुझ सबूरी ॥
सामी सुपेर्युनि सां, नीहुं लग॒ो नूरी ॥
हर्दमि हजूरी, पलक पराहूं न थिए ॥

---

(१) प्रेमसां (२) जड़ (३) [illegible] (४) दिलि

२२७३

पूरो को पर्खे, आत्म लालु अण मुल्हो॥
सामी जहिंते सतिगुरू, सम वर्षा वर्षे॥
सदा सो हर्षे, चिन्ता चाह कढी करे॥

२२७४

पूरो पदु पातो, पर्ची पूरे गुर सां॥
सामी पहिंजो पाणखे, सुत्ह सुञातो॥
बार्यो सभ सङ्कलप जो, ख्यालु देई खातो॥
नानत जो नातो, अण हून्दो ऊन्धो थ्यो॥

२२७५

पेट क्यो पाजी, सामी सभ जहान खे॥
विॿले कहिं गुर्मुख जी, मिटी मोथाजी॥
सही कई जहिं सम थी, स्वप्न जी बाजी॥
रजा में राजी, रहे सदाई रामजे॥

२२७६

पेराटूअ[२] पेरो[३], दुस्यो ऐन आकासजो[४]॥
लधो कहिं लखनि[५] मों, दोस्त जो देरो॥
करे निबेरो, वञी सामी चढ़यो सीरते॥

---

(१) रांदि (२) सन्त (३) रस्तो (४) अन्तरि वृिती आकास जो
(५) ज़ाणप मों (६) ठिकांणो

२२७७

पेरू पुझीं[1] पाइ, महबत जे मैदान में ॥
कुठा प्या थी केत्रा, जानीअ लइ तहिं जाइ ॥
डि॒सी दु॒हके कीनकी, सामी सिक वधाइ ॥
जीअन्दे पाणु जलाइ[2], त पसणु थेई पिरजो ॥

२२७८

पेरू पुझीं[3] पाए, महबत जे मैदानमें ॥
डि॒सी अध मोअनि खे, मतां भउ खाए ॥
आश अन्देशो देहिजो, जीअन्दे जलाए ॥
सामी समाए[4], तदि॒ दरि दासनि जे ॥

२२७९

पेरू पुझीं पाए, महबत जे मैदानमें ॥
मतां अध मोअनि खे, डि॒सी भउ खाए ॥
पर्चीं पहिंजो पाणखे, जीअन्दे कुहाए ॥
तदि॒ कोठाए, आशिकु ऐन अलाह जो ॥

२२८०

पेरू पुझीं[6] पाइ, मोअनि जे मजिल्स में ॥
जे तोखे प्यास पसण जी, त जीअन्दे पाणु जलाइ ॥
चिन्ता सभ चुकाइ, त कनी खासु खिल्वती ॥

---

(१) समुझी (२) कढु–दिजाइ (३) समुझी (४) पहुचंदें (५) समुझी (६) समुझी

२२८१

पेही डि॒ठो जनि, सामी सुपेर्युनि खे॥
पसी एन अख्युनि सां, हिक पलक न पासो कनि॥
कल्प कढी जीअमों, सामी सम रहनि॥
तां भी सिक सिकनि, तोड़े वाक़िफ़ु थ्या विरूहजा॥

२२८२

पोख घणी थोरी, सामी खणनि सभि पहिंजी॥
नेति निरन्जनि देवजी, आदि ईए टोरी॥
समुझी सटी कहिं सूमें, जूठी जोरां जोरी॥
न्रिमलु निहोरी, माणे मौज मुक्तिजी॥

२२८३

पोथ्यूं ऐ पना, वेसास्युनि[1] वेढ़े रख्या॥
समुझाऊं सामी चए, सारी लाकिना[2]॥
चढ़िया अन्भय अछते, पले पंज रनां॥
वढिया जनि ब॒नां, अग॒यों आत्म रामजे॥

२२८४

पोथिर पलाली, कोड़े[4] घुमनि केला॥
ग॒ाल्हियूं कनि जबान सां, खिल्वत[5] जूं खाली॥
जाग॒ी डि॒सनि कीनकी, खावन्दु ख्याली॥
लूअं लूअं मंझि लाली, सामी तहिं स्वरूपजी॥

---

(१) जा॒णुनि (२) ग॒ाल्हि–अटक (३) कामु क्रोधु आदी (४) ठही ठुकी
(५) ईश्वरजूं

२२८५

फ़कीरनि फ़र्ज़ु, सदयो लोकु लखावजो॥
मिली कनि महबूबसां, हर्दमि हृदय हज़ु॥
सामी लाल गुलाल थ्या, कटे कल्प कर्ज़ु॥
बेहद बेगर्ज़ु, रहनि पहिंजे हालमें॥

२२८६

फ़कीरनि फ़र्मानु, मन्यो महबूबनि जो॥
तनि कोरे कपे कढियो, अन्दर जो अभिमानु॥
घिड़ी लधाऊं घरमों, अन्भय आत्म ज्ञानु॥
थ्यरा से पर्वानु, अगयों अजीबनि जे॥

२२८७

फ़कीरनि फ़र्यादु, ऊन्हो क्यो अन्दरमें॥
पाताऊं प्रतीति सां, सामी दर्सन दादु॥
लूअं लूअं लालु गुलालु थी, वठनि सारु स्वादु॥
पछिन्ता प्रमादु, रखनि न रतीअ जेत्रो॥

२२८८

फ़कीरनि फ़र्यादु, क्यो दरि दोसनि जे॥
जनि विछोर्यो तोखे, से मुदई[३] करि मादु[४]॥
पर्ची पाण प्रयनि क्यो, दिलासे सां दादु॥
सामी सभु विषादु, मेटे क्याऊं मुक्तो॥

---

(१) दि्सण मातु–चवण मातु (२) सन्सो–भासकारी (३) प्रपंचु–काम क्रोध आदी (४) मासु कनि–वसि कनि

२२८९

फ़कीरनि फ़सलु, मिली थ्यो महबूबसां॥
जाग॒ी कढियाऊं जीअमों, सामी सभु खललु॥
अख्यूं अख्युनि में रखी, पासे थ्यनि न पलु॥
सदा॒ई सीतलु, रहनि पहिंजे हालमें॥

२२९०

फ़कीरनि फ़िकुरु, सटे विधो सभु साध संगि॥
पूरणु दि॒ठो परमात्मा, जाग॒ी जनि जाहिरु॥
मन में लोक प्रलोक जी, तमां रखनि न तिरु॥
सामी करे सबुरु, माणिनि मुक्ती मौज खे॥

२२९१

फ़कीरनि फ़िराकु[1], साधनु दु॒स्यो सुखजो॥
समुझे को सामी चए, महबती मुशिताकु[2]॥
सट्यो जहिं सन्सारजो, दिलमों सभु दिमाग़ु॥
पर्छिन्ता खों पाकु, मिली थ्यो महबूब सां॥

२२९२

फ़कीरनि फीणो[4], जहिंखे ह्यो हाल[5] जो॥
तहिं बु॒धो सराज[6] सबुर सां, झुगे॒[7] झीणो॥
सहजे थ्यो सामी चए, लटिकी[8] लखीणो॥
पर्चीं[9] पतीणो, गा॒ल्हि न सले गु॒झ जी॥

---

(१) पको–पुख़्तो–तिखो (२) रतलु–भर्पूरि (३) दि॒स्ण मात्र–चवण मात्र
(४) मंत्रु–शब्दु (५) प्रेमजो (६) तार–तम्बूरो (७) हृदयमें (८) धीर्जसां
(९) प्रेममें अची (१०) भर्पूरि थ्यो–लेखिजण में आयो (११) पूरणु

२२९३

फकीरनि फोले, लधो देसु अगमजो ॥
नको कोहु न अधु को, अण हून्दे ओले[1] ॥
सामी मिल्या स्वरूपसां, पटु पर्दो खोले ॥
वेठा विचोले, पलि पलि पीउनि प्रेम रसु ॥

२२९४

फटे[2] दर्द फिराक जा, महबती मस्तान थ्या ॥
रोअनि रतु अख्युनि मों, छदे दौर दिमाग ॥
सामी लाए सान्ति थ्या, खामोशीअ जी खाक ॥
अलह मंझि ओताक, पेही डिठाऊं पाणहीं ॥

२२९५

फार्सी ऐं हिन्दी, सन्त चवनि था गाल्हि हिक ॥
समुझे को सामी चए, ब्याईअ बिना बिन्दी ॥
चढ़े अन्भय अछते, वठे राह रिन्दी ॥
पाए ज्ञान गिन्दी, सुम्हे सुषुप्त सेजते

२२९६

फार्सी ऐं हिन्दी, सन्त लखाइनि सम्ता ॥
समुझे को सामी चए, रहति वानु रिन्दी ॥
मिटी जहिंजे मन मों, खोआरी खुदि खुदी ॥
पाए ज्ञान गिन्दी, सुमिह्यो सुषुप्त सेजते ॥

---

(१) भोले (२) प्रेमजा

२२९७

फाहीअ बिना फथो, सभुको माया मोहमें॥
सति जाणी सन्सार खे, मूर्ख हणनि मथो॥
विॾे कहिं गुर्मुख जो, सामी भर्मु लथो॥
सोई ग़ाल खथो, ज़ाणे अन्भय उन जो॥

२२९८

फाहीअ रे फाथी, खलिकत खाम ख्याल में॥
सामी मारे सभखे, स्वप्न जो हाथी॥
जाग़ी कहिं जतन रे, ओति पोति लाथी॥
सदा संगि साथी, ॾिसे अन्भय आत्मा॥

२२९९

फिकुर खों फार्कु, आशिक थ्या अटिकल सां॥
जाग़ी कढयाऊं जीअमों, लिवं सां अविद्या लिकु॥ चं
अन्दरि ॿाहरि हिकु, सामी ॾिसनि सुप्री॥

२३००

फिरी लधोसे फर्कु, अनल पक्षीअ जे आसरे॥
उल्टी[1] चढ़ियो आकास[2] ते, थी पूरणु पर्पकु[3]॥
समुझे को सामी चए, रहति वानु रसकु॥
लिवं सा ॿधी लकु, पहुचे पद पुरण ते॥

(१) सन्सार खों उल्टी (२) दस्वे द्वारते (३) पको

२३०१

फुर्नें क्या फोक, फुरे जीअ जहान जा॥
भवनि भौसागर में, मिटी पाए मोक॥
को आशिकु चढ़ियो अछते, लंवे ट्रेई लोक॥
जहिंखे रमिज़ रोक, सामी ड्रिनी सतिगुरूअ॥

२३०२

फुर्नें करे फकीर, क्या जीअ जहान जा॥
पिटिनि कारणि पेटजे, धरे सघिनि नि धीर॥
सामी के साधू बचा, ज्ञान वान गम्भीर॥
पाण लखायो पीर, जनिखे पूरणु पाणसें॥

२३०३

फुर्नें करे फकीर, क्या जीअ जहानजा॥
भवनि भौसागर में, धरे सघनि न धीर॥
को सुजाणो सूमों, सामी चढ़ियो सीर॥
जहिंखे पूरे पीर, लख्य लखाई अन्भई॥

२३०४

फुर्नें खों फार्कु, को विलो वेसासी रहे॥
सामी ड्रिनो सतिगुरूअ, जहिंखे तत्व तिल्कु[1]॥
अन्दरि ब्राहरि आत्मा, हर्दमि ड्रिसे हिकु॥
जीए नाणो नाजिकु, रखे सराफु संदूकमें॥

---

(१) उपदेसु

२३०५

फुर्ने खों फार्कु, सामी रहे को सूमों॥
जहिंखे दि॒नो सतिगुरूअ, ऐन अभेद अशिकु॥
चेठो अन्भय तखित ते, लाए तत्व तिल्कु[1]॥
हर्दम दि॒से हिकु, अन्दरि बा॒हरि आत्मा॥

२३०६

फुर्ने जो फर्यादु, आशिक कनि अन्दर में॥
जन्खेि आयो अशिक जो, सामी चए स्वादु॥
दर्सनु पाए दा॒दु, प्रीति न मटिनि पहिंजी॥

२३०७

फुर्ने फासाए, छदि॒या जीअ जहानजा॥
भवनि भौसागर में, कोट जन्म पाए॥
तहिंजो लेखो कोनको, जहिंखे[2] छुटो छदा॒ए॥
चेहे वजा॒ए, नंगारो निबा॒णजो॥

२३०८

फुर्ने फासाए, छदि॒या जीअ जहानजा॥
भुली भवनि पाणहीं, कोट जन्म पाए॥
सामी बचो को सूमों, साधूअ जे साए॥
ममत्व मिटाए, सदा माणे सेज सुखु॥

---

(१) ज्ञानु–वीचारु (२) ईश्वरु माफु करे–ज्ञान अग्निमें जलाए

२३०९

फुर्नें फासाए, विधा जीअ वहणमें॥
गोता खाइनि गैब जा, कोट जन्म पाए॥
सामी बचो को सूर्मों, हरि सां लिवं लाए॥
वेठो वजाए, नंगारो निबाण जो॥

२३१०

फुर्नें फुरे फोक, क्या जीअ जहान जा॥
पछिनु ज़ाणी पाणखे, सामी सहनि सोक॥
को आशिकु चढ़ियो अछते, लंघे ट्रेई लोक॥
मारे वेठो झोक, आदी अन्भय घरमें॥

२३११

फुर्नें फुरे फोक, क्या जीअ जहानजा॥
पिटिनि[१] कारणि पेटजे, चित में चोद्ह लोक॥
सामी वेठा सम में, के जागया मारे झोक[२]॥
जनि खे ड्रिना सतिगुरूअ, रीझी[३] टका रोक[४]॥
लाए महवत[५] मोक, पोख[६] पकाऊं पहिंजी॥

२३१२

फुर्नें फुरे फोक, क्या जीअ जहान जा॥
भवनि भौसागर में, पाए तमां तोकु॥
इस्थति रहे आकास जां, को औधूतु असोकु॥
जागी लोकु प्रलोकु, लै ड्रिठो जहिं लख्यमें॥

---

(१) फिरनि–घुमनि (२) पको निश्चो करे (३) राज़ीथी (४) उपदेसु
(५) प्रेमजो पाणी ड्रेई (६) मानुष्य जन्म सफल क्यो

२३१३

फुर्ने मंझि अफुरु, वि॒लो वेसासी रहे[१]॥
भेट्यो[२] जहिं भर्म रे, ज्ञान प्रकासी गुरु॥
लाए लालु गुलालु थ्यो, अन्भई अतुरु[३]॥
ठिकर[४] में ठाकुरु[५], सुत्ह दि॒से सामी चए॥

२३१४

फुर्ने मंझि फासी, प्या जीअ जहान जा॥
भुली भवनि पाणहीं, चर्या चौरासी॥
सामी कई जहिं सूर्में, खतु[६] फारे खलासी॥
अलखु अबिनासी, दि॒ठो जहिं अभेदु थी॥

२३१५

फुर्ने मंझि फासी, प्या जीअ जहान जा॥
भुली भवनि पाणहीं, चर्या चौरासी॥
सामी बचो को साध संगि, वि॒लो वेसासी[७]॥
अलखु अबिनासी, घिरी लधो जहिं[८] घरमों॥

२३१६

फुर्ने मंझि फासी, प्या जीअ जहान जा॥
रहे अलेपु आकास जां, को नेहीं निरासी॥
सामी जहिंखे सर्व गति, सम सता भासी॥
गंगा गया कासी, भवे कीन भुलनि जां॥

---

(१) सन्त- ज्ञानी-प्रेमी (२) पूजो-मन्यो (३) अन्भय आत्म सुखु
(४) सभमें (५) शक्ती-सता (६) पूर्व कर्म कटे (७) वीचारी-ज्ञानी
(८) जहिं पहिंजे सरीर में प्रतीति क्यो

२३१७

फुर्नें मंझि फासी, थ्या जीअ जहान जा ॥
सदा भवनि सामी चए, मूर्ख म्वासी[1] ॥
रहे अलेपु आकास जां, को विृलो वेसासी[2] ॥
अलखु अबिनासी, सम दि्ठो जहिं साध संगि ॥

२३१८

फुर्नें मंझि सन्सारु, फुर्नों कल्प पहिंजी ॥
जीए स्वप्न में सिधि थ्यो, अण हून्दो सन्सारु ॥
समुझी दि्सु सामी चए, तूं करे शुधु वीचारु ॥
त अविद्या जो अहङ्कारु, मिटी वञेई मन मों ॥

२३१९

फुर्नें सभि फाहे, छदि्या जीअ जहान जा ॥
भुली भवनि पाणहीं, रूप रंग ठाहे ॥
सामी सटी कहिं सूर्मे, पर्छिन्ता[3] लाहे ॥
नकी रुली राहे, नकी खणे खोआरु थी ॥

२३२०

फुर्नों छदे् फकीरु[4], वासलु[5] थ्यो वहदत[6] में ॥
जहिंखे मुर्शिद महिर जो, तके[7] हयों हिकु तीरु ॥
रहियुसि न रतीअ जेत्रो, सामी साणु सरीरु ॥
ज्योति रूपी जिन्दपीरु, दि्से पहिंजे द्रीलमें ॥

(१) स्वाली (२) वीचारी (३) मायावी भोलो लाथो (४) प्रेमी (५) मालिकु
(६) जगतमें (७) वीचारे दि्नो ज्ञानु-मन्त्रु

२३२१

फुरे फिकुर साणु, सभखे माया मोहिणी॥
लदूं खाराए लोभ जा, करे महबत माणु॥
रहे अलेपु आकास जां, को साधू जनु सुजाणु॥
पले[1] रख्याऊं पाणु, सामी भेद भर्म खों॥

२३२२

फोले फकीरनि, सचु लधाऊं सिक[2] मों॥
तिते क्याऊं तक्यो, जिते महिरों मेघ वसनि॥
मिली मौजां कनि, अठई पहर अजीब सां॥

२३२३

ब॒धनि[4] खे बो॒ड़े, थी सामी लहरि[5] समुन्द्र जी॥
तनिखे चए कीनकी, जे सन्त छद॒या छोड़े[6]॥
वेठा मूहुं मोड़े, जग॒त खों, जग॒दीस दे॒॥

२३२४

ब॒धी क्यो ब॒ान्हो, माया मूर्खनि खे॥
खसे खाम ख्याल सां, खिम्या खजानो॥
सामी बचो साध संगि, को दर्दवन्दु[7] दानो॥
निृभ्य निशानों, डि॒ठो जहिं अन्भई॥

(१) झले (२) प्रेममों (३) अनाहद धुनी आनंद जी वर्षा वसे (४) मायामें फाथल (५) सन्सारी खटिपृिजी लहरि (६) ज्ञान कला डि॒नी (७) दानाहु प्रेमी

२३२५

ब॒धी जहिं कमरि, पकी पुर्षार्थ जी॥
सो ट्रेई लोक लंवे करे, पहुतो प्रेम नगरि॥
रहे पहिंजे हालमें, सदाई तत्परि॥
हार जीत में हरि, सम ज़ाणे सामी चए॥

२३२६

ब॒धी जहिं कमरि, सामी सफाईअ जी॥
सो कटे सभ कल्पना, गुर्मुखु आयो घरि॥
दि॒से न बेहद बो॒ध[1] खों, बून्द लहरि[2] बा॒हरि॥
रहे तीबु॒रु तरि, सुत्हसिधि स्वभावमें॥

२३२७

ब॒धो जहिं पले, सचु सुञाणी पहिंजो॥
हुकुमु तहिं हर्जन जो, सभते सेषि ह्ले॥
पंजई क्याईं पहिंजा, सामी दास दले[3]॥
अचलु कीन चले, निश्चलु नृमलु सारखे॥

२३२८

ब॒धो सभु जहानु, माया फासीअ[4] फन्द रे॥
पचीं रहनि पिण्डसां[5], भुलाए भगि॒वानु॥
जागी॒ कढनि कीनकी, अन्दर मों अभिमानु॥
को सामी पुर्षु सुजानु[6] समुझी चढ़ियो सीरते॥

---

(१) ईश्वर खों (२) कोई बा॒हरि कोन्हे (३) वसि-अधीनु (४) बिना नोड़ीअ
(५) सरीर सां (६) ज्ञान कला वठी

२३२९

ड्याईअ मंझि बुद्वी, मूर्ख मोआ केत्रा॥
सामी को साधू लंवे, प्यो क्रिपा साणु कुद्वी[1]॥
चाढ़ी जहिं गुर ग्याति सां, गगन मंझि गुद्वी[2]॥
तोड़े करे लादु लुद्वी, तांभी सीत्लु रहे स्वभावमें॥

२३३०

ड्याईअ मंझि बोड़े, माया छद्यो मूढ़निखे॥
मरनि मति मर्म रे, सदा सिरु फोड़े॥
को प्रेमी लंवे पारि प्यो, सामी मूहुं मोड़े[3]॥
वेठो वंझु[4] खोड़े, आदी अन्भई घरमें॥

२३३१

ड्या सभि कम कूड़ा, साध संगति हरि भगुति रे॥
सामी समुझनि कीनकी, मूर्ख मति मूढ़ा॥
के गुर्मुख गूढ़ा, पचीं रहनि पाणमें॥

२३३२

ड्या सभि कूड़ा कम, अथी नाले नाम रे॥
समुझी दिसु सामी चए, लाहे गून्दर गम[5]॥
विना साधन सम, पदु प्राप्ति न थिए॥

---

(१) टपी प्यो (२) दस्वे द्वार में धुनी (३) माया खों पासो करे
(४) धुनी लगाए (५) लय लीन्ता करे—वीचारे

२३३३

ॿ्या सभि कूरा सुख, बिना सुख स्वरूपजे ॥
कहीं लाथी कीनकी, जन्म मरण जी जुख ॥
अचिर्जु ग़ाल्हि अगम जी, पुर्झाई पुर्ष ॥
भज़ी वेई भुख, सामी द्विसी स्वरूप खे ॥

२३३४

ॿ्या सभि जीअ ज़ाणे, ज़ाणे न ज़ाणण हार खे ॥
लाल भुलाए अन्भई, छाणी नितु छाणे ॥
समुझायो सामी चए, साधूअ कहिं स्याणे ॥
मिली मौज माणे, पाणु वराए पाणसां ॥

२३३५

ॿ्या सभि मूढु ग़णे, हिकु ग़णिण वारो न ग़णे ॥
बिना ग़णिये पहिंजे, हर हर हथ हणे ॥
जद्दी ग़णायो ग़णे, तद्दी सीत्लु थे सामी चए ॥

२३३६

ॿ्यो द्रिसें थो सभुकी, हिकिड़ो पाणु न पछाणे ॥
मने वेठे मिटीअ खे, भर्मी भुलाणे ॥
पवेई गम ज्ञान जी, तां साहिबु सुञाणे ॥
टिकी टिकाणे, करे संग साधुनि जो ॥

२३३७

ड्यो सभु दे॒ई बु॒नि, कजे संगु सन्तनि जो॥
जे आए खे आदर सां, पर्चीं पहिंजो कनि॥
जाति वरण कुल कुटम्ब दे॒, सामी कीन दि॒सनि॥
गढे॒ गदु॒ छदि॒नि, सुत्ह श्रुधि स्वरूपजे॥

२३३८

बा॒णी लखाए बो॒धखे, सा बो॒ध रूपु बा॒णी॥
पाणीअ उथन्ति पपोटरा, से पपोटरा पाणी॥
सामी चए सूमें, ज़ाण सची ज़ाणी॥
मौज मिली माणी, पाणु वराए पाणसां॥

२३३९

बा॒भण कीन बु॒दे॒, आशिकु अविद्या सिन्धु में॥
जहिं जागी॒ कढी जीअमों, ग़ैरत सभ गु॒दे॒॥
अठई पहर लुदे॒, प्रेम हिन्दो॒रे पीअसां॥

२३४०

बा॒भण कीम बु॒धाइ, कहिंखे ज्ञानु गुरूअजो॥
पर्चीं प्रीति सचीअ सां, अन्तरि मुखिं लिवं लाइ॥
अगस्त जां आचमनु करे, अविद्या[1] सिन्धु सुकाइ॥
रहे भोले भाइ[2], त सहज मिलनी सुप्री॥

---

(१) मायावी भर्मु कढु (२) परे

२३४१

ब्राम्हण को बुझे, बेहद ब्रोली बिहजी[1] ॥
तोड़े स्याणो सूर्मो, पढ़यलु छोन हुजे ॥
को जनु प्रेमी प्रीतिवानु, समुझियो समुझे ॥
मोटी कीन मुंझे, अविद्या जे ऊंधइमें ॥

२३४२

ब्राभण को बुझे, ब्रोली[2] ब्रावन[3] ब्राहिरीं ॥
तोड़े स्याणो सूर्मो, पण्डतु पढ़ियो हुजे ॥
को प्रेमी प्रीतिवानु, समुझायो[4] समुझे ॥
सो मोटी कीन मुंझे, अविद्या जे ऊंधइ में ॥

२३४३

ब्राभण जहिं ब्रधो, तौकलि[5] तुरहो नारिमें[6] ॥
सहजे सुपेर्युनि खे[7], लोड़े तहिं लधो ॥
कोसो ऐ थधो, गुणीदूर थकी थ्या ॥

२३४४

ब्राम्हण जहिं ब्रधो, लिवं सां लकु[8] छिके करे ॥
गुणे कीन अन्दर में, कोसो ऐं थधो ॥
सुत्ह सुपेर्युनि खे, लोड़े[9] तहिं लधो ॥
ज्ञाणी धूरि धन्धो, माहिलु थ्यो महिराण में ॥

---

(१) प्रेमजी (२) धुनी (३) सरीरी अन्तरी (४) ज़ाणू (५) वेसाह
(६) सन्सार में (७) गोल्हे (८) निश्चो (९) गोल्हे

२३४५

ब्राभण जहिं बुधा, अन्भय वाक्य अशिकजा॥
पर्ची कई तहिं पहिंजी, महबतीअ मुदा॥
जानीअ खों जुदा, कदी थिए कीनकी॥

२३४६

ब्राभण जहिं बुधा, वेदी वाक्य वेदान्त जा॥
पर्ची कई तहिं पहिंजी, महबती मुदा॥
पीए पीआरे पुरि करे, सभखे सम सुधा[1]॥
जानीअ खों जुदा, कहिंखे ज़ाणे कीनकी॥

२३४७

ब्राभण ज़ायो[2] बारु, निपूसंक[3] जे नारिखे॥
जहिंजो[4] रूपु न रंगु को, नको अंगु आकारु॥
दिसी[5] जीउ ठरी थ्यो, तहिंजो दिब दीदारु॥
अजगैबी[6] इसरारु, अचे न वाणीअ वाचमें॥

२३४८

बाभण बुध[7] ज्ञानी, कूड़ा घुमनि केत्रा॥
गाल्हियूं कनि ज़बान सां, अन्भइ आसानी॥
रहनि रस कस लोभ में उझा[8] अभिमानी॥
ज़ाणनि न फानी, पुतलो पंजनि तत्वनिजो॥

(१) सुती–दवा (२) ईश्वर जो अन्भय थ्यो सो बारु पैदा थ्यो (३) जेको मायावी प्रपंच खों निकिरी निपुसंखु थ्यो (४) तहिं आत्म अन्भय सता जो कोई रूपु रंगु अंगु आकारु कोन्हे (५) तहिं आत्म अन्भय जोति जे प्रभाव करे जीउ ठरी थ्यो (६) इहो अजाइबु चई नथो सघिजे (७) कूड़ा (८) फाथा

२३४९

ब्राम्हण ब्रधु म ठाठ, कूड़ा माया मोहजा॥
खणी हणदड़ खद्रमें, ईहा द्राड़णि द्राठ॥
छदे पोथ्यूं पाठ, जागी दि्सु जगदीस खे॥

२३५०

ब्राम्हण ब्राणु करो, सतिगुर हंयो शब्द जो॥
वर्ताई वेसाह सां, व्यो सभु ख्यालु खसे॥
अठई पहर अन्दर में, रम्ता रामु वसे॥
कहिंखे कीन दसे, अन्भय सुखु अन्दर जो॥

२३५१

ब्राम्हण सो बुधिमानु, साधू जनु सन्सार में॥
दि्ठो जहिं अख्युनिसां, चारि[1] अङुर अस्मानु॥
जहिंमें सम सीत्लु रहे, सदा साक्षी भानु[2]॥
अहिड़ो पदु न्रिब्राणु, पाए पर्चो पाणमें॥

२३५२

ब्रारीअ[3] टिकाणो, कोर्युनि मंझों को करे[4]॥
मन्यों जहिं महबूबजो, भर्म रे भाणो॥
सामी समाणो, पर्ची मंझि प्रयनि जे॥

---

(१) हृदय अन्तरि आस्मानु (२) सूर्य माफक्रि जोती प्रकासु
(३) सरीर में (४) दिसे

२३५३

बारीअ[1] लहाई[2], तते[3] नूड़ निसोहरो[4]॥
फिरे[5] जोरु जबान बिनु, थिए अदुलु इलाही॥
भय भर्मु सन्सो रोगु, दुःखु रहे नां राई॥
सामी सदाई, अन्भय राजु आत्मजो॥

२३५४

बारीअ[6] परमु[7] प्रकासु, छो अठासीअ उन मरें॥
पर्ची पेराठयुनुसां, सामी करि अभ्यासु॥
पहुचाईंदइ पन्ध रे, करे कल्प नासु॥
जिते अन्भय रे आकासु, तिते ढ़ीन्दइ तक्यो॥

२३५५

बारीअ[9] बेटारी,[10] ज्यो[11] सभु दौरु दर्याह जो॥
समझे को सामी चए, भाग्यवानु भारी॥
जहिंखे ज्योति झिलमिली, दातर देखारी॥
खाल्सु खूमारी, उतिरे कीन अख्युनि मों॥

२३५६

बारीअ[12] मंझि बारी,[13] अथी अजाइबु अजीबजी॥
मन बुधि वाणीअ खां परे, निर्मलु न्यारी॥
पेही दिसु प्रयनि जी, तूं सूर्त मोचारी॥
त सामी खोआरी[14], मिटी वञेई मनजी॥

(१) सरीरमें (२) त्रिगुणीमाया (३) तेजु जोती प्रकासु (४) अणदिठो-दिसणखो परे (५) अन्तरि धुनी बिना मुख-स्वासो स्वास (६) सरीर में (७) ज्योती प्रकासु (८) सन्तनि-ज्ञाणुनि सां (९) सरीर में (१०) प्रकासुमानु (११) जीए दर्याह में सभि दोर थींदा आहिनि (१२) सरीर में (१३) ठिकाणो-सता (१४) खटिपि

२३७७

ब़ारीअ मंझि ब़रे, थो अखंडु ड़ीओ आदिजो॥
पहुचे को गुर ग्याति सां, पवनु अहारु करे॥
दि़सी ज्योति अख्युनि सां, ततो जीउ ठरे॥
सामी सभु विसरे, ममत्व माया देहि बुधि॥

२३७८

ब़ारीअ मंझि रही, तूं सामी दि़सु स्वरूप खे॥
जहीं जागा़यो ज्योति खे, सो साक्षी करि सही॥
त वञेई सभु वही, सन्सो आत्म सीरमें॥

२३७९

ब़ारे[1] जहिं ड़ीओ[2], सही क्यो घरु पहिंजो॥
सो दरि दरि देवाननि जां, पाए कीन लीओ॥
सदाई खीओ, सामी रहे स्वभाव में॥

२३८०

ब़ावन[3] रे ब़ाणी[4], बुधी जहिं ब़ाभणु चए॥
तहिं लधी खाणि[5] खुशीअजी, पर्ची पुराणी॥
कहिंखे सले कीनकी, अकह कहाणी॥
गु़ड़ो थ्यो पाणी, सुरत सूर्य सां मिली॥

---

(१) वीचारे (२) ज्ञान रूपी ड़ीओ (३) विना जवान (४) धुनी (५) आत्म सता विञायल (भुल्यल) खाणि

२३६१

ब़िनि जी कान्हे जाइ, साक्षीअ सूक्षम पद में॥
समुझी तूं सामी चए, विचौ पाणु विञाइ॥
लूअं लूअं मंझि लखाइ, मूर्त महबूबनि जी॥

२३६२

ब़ी सभ अथी सुञ, बिना साध संगति जे॥
म्रिग त्रष्णा जे जलमों, सामी लहे न उञ॥
जागनि पूरणु पुञ, त साधू सुख सागरु मिले॥

२३६३

ब़ी सभ डि़ठी सुञ, सामी साध संगति रे॥
म्रिग त्रिष्णा जे जल में, कहिंजी लथी न उञ॥
वञी पुछु तनीखों, जनि क्या पूरण पुञ॥
तोड़े कुटिनि मुञ, तांभी राजा रावल देसजा॥

२३६४

ब़ुधि न पहुचे जिति, तिते नेणनि लायो नीहड़ो॥
वाच परे अवाच पदु, सामी सति न असति॥
बिना भर्म भगति, थी अठई पहर अचलु चले॥

२३६५

बुधी बेहद बीन, आशिक सभु अलगि थ्या ॥
दि॒सी मूहुं महबूबजो, मुशिकनि कुशिकनि कीन ॥
रहनि पहिंजे हालमें, सामी चए लयलीन ॥
जीए जल खों मीन, पलक पराहूं न थिए ॥

२३६६

बुधी वेद वचनु, मन्यों जहिं महबतीअ ॥
वेही क्यो तहिं विधि सां, निर्मलु निध्यासनु ॥
जागी दि॒ठाई ज्योति में, परमेश्वरु पूरनु ॥
सदा मस्तु मगनु, सामी रहे स्वभावमें ॥

२३६७

बुधे बो॒ले केरु, सामी सभ घटनि[1] में ॥
चयो वञे न मूहं सां, निजु निर्मलु निर्वैरु ॥
जहिंजो रूपु न रंगु को, सिरु न पेरु ॥
घिरी लहन्दे वेरु, तदी पाणु न रहंदुइ पाणमें ॥

२३६८

बुधे सो बुधिवानु, मुर्ली[3] मन मोहन जी
मिटयो जहिंजे मन मों, सामी सभु अभिमानु ॥
रंहे पहिंजे हालमें[4], सदाईं ग़ल्तानु ॥
करे अमृतु पानु, माणे दौर दर्स जा ॥

---

(१) सरीरनि में (२) पतो-नीशान (३) अनाहद धुनी (४) वृतीअ में

२३६९

ब॒धो जहिं अनहदु, गुर्गम[1] गगनि चढ़ी करे॥
मिट्यो तहिंजे मन मों, सामी दुःखु दर्दु॥
पाए आत्म पदु, पचों रहे पाण सां॥

२३७०

ब॒धो जहिं ज्ञानु, सामी गुर्गम वाच सां॥
मिट्यो तहिंजे मन मों, अविद्या जो अभिमानु॥
पचीं रहे पाण में, लाहे सहज ध्यानु॥
सम दि॒से भगि॒वानु, अन्दरि ब॒ाहरि दह दसां॥

२३७१

ब॒ेड़ी सीर[2] चढ़ी, सौदागर[3] सापुर्षजी॥
सौदे सार अपार सां, पूरणु प्रेम भरी॥
कुन[4] कपड़ लुड़ लहर में, सामी कीन अड़ी॥
बि॒ना घाट घिरी, गुण कारी गुर ग्याति सां॥

२३७२

ब॒ोध[5] वराए ब॒ाधु, थ्यो न भेद भर्म जो॥
समुझे को सामी चए, सुत्ह सुजाणो साधु॥
मिट्यो जहिंजे मन मों, अणहून्दो उदिमादु[6]॥
करे अननु आराधु, पहुतो पूरण पदमें॥

---

(१) दस्वे द्वार ते पहुची (२) समाधी दस्वे द्वार चढ़ी (३) सन्त प्रेमीअ जी (४) मायावी प्रपंचमें न अटिकी (५) ज्ञान खों पोइ (६) बन्धनु भर्मु न थ्यो (७) सन्सो

२३७३

ॿोरा कीन ॿुधनि, दाहां[1] दर्दवन्दनि जूं॥
म्रिघ त्रिष्णा जे जलमें, वद्या कीन वञनि॥
समुझी के सामी चए, प्रेमी पारि पवनि॥
जागी ड्रिठो जनि, अन्दरि ॿाहरि आत्मा॥

२३७४

ॿोरिनि लत ड्रेई, था मूर्ख मनुष्य देहिखे॥
जहिंखे चाहिनि देवता, सामी सभेई॥
विर्ले कहिं गुर्मुख खे, सुधि साबितु पेई॥
उर्वारि[3] पारि ॿेई, साधे वेठो सम में॥

२३७५

ॿोलिणु ऐ ॿुधणु, समुझ वराए सखिणो॥
जीए मोती आब रे, फल वराए वणु॥
पण्डतु ज़ाणी पाण खे, ताणे मंझि न तणु॥
सामी सुत्ह सज़णु, पूरणु ड्रिसु प्रतीति सां॥

२३७६

ॿोलिणु ऐ ॿुधणु, समुझ वराए सखिणो॥
जीए मोती आब रे, फल वराए वणु॥
समुझी ड्रिसु सामी चए, थी सीत्लु सहणु॥
त अन्भय आत्म अणु, सम ड्रिसे सभ काथहीं॥

---

(१) उपदेस (२) प्रेम्युनि जा (३) अग पोउ

२३७७

ब॒ोलिणु ऐ ब॒ुधणु, समुझ वराए सखिणो॥
जीए मोती आब रे, फल वराए वणु॥
सामी दि॒सु साक्षी थी, सुत्ह सिधि सज॒णु॥
जहिंमे अचणु वञणु, कोनहे कतर जेत्रो॥

२३७८

ब॒ोलिणु ऐ ब॒ुधणु, समुझ वराए सखिणो॥
पण्डतु ज॒ाणी पाणखे, सामी सेल्ह न खणु॥
उल्टी दि॒सु अख्युनि सां, परमेश्वर पूरणु॥
अचणु ऐ वञणु, अथी कोन आकास में॥

२३७९

ब॒ोलिणु ऐ ब॒ुधणु, समुझ वराए सखिणो॥
स्याणो थीउ सामी चए, पछिनु पिण्डु न खणु॥
पेही दि॒सु परमात्मा, प्रत्क्षु पाकु पूरणु॥
रती मासो मणु, आहे जहिंजे आसरे॥

२३८०

ब॒ोलिणु ऐ ब॒ुधणु, समुझ वराए सखिणो॥
सामी चवनि सभि सन्त जन, पाए पदु पूरणु॥
मिट्यो जहिंजे मन मों, भोलाओ भिटकणु॥
अचणु ऐ वञणु, दि॒सनि कोन आकास में॥

२३८१

ब॒ोले ब॒धाए, सन्त लखाइनि सम्ता॥
सामी दि॒से को सूमों, घरमें[1] घुटाए[2]॥
चढ़ी वेहे चौदो॒ल ते, पूरणु पदु पाए॥
जादे॒ वाझाए, तादे॒ सज॒णु सामुहों॥

२३८२

ब॒ोहिथो[3] साधूअ संगु, पूरो सतिगुर पत्यो[4]॥
सामी मिले तहिंखे, जहिंते आग॒ो[5] रखे अंगु[6]॥
सो भौसागर जे भीड़ खों, पघड़ो पारि निसंगु[7]॥
अन्भय आत्म रंगु, लग॒ो कोयुंनि मंझो कनिखे॥

२३८३

बगुलो रीस करे, हन्सनि सां हिसाबरे॥
हो निर्मलु मलखों परे, हो कपि ध्यानु धरे॥
हो मोती खाए मान्सरि, हो मछीअ काणि मरे॥
सामी साख भरे, मर्मु वीचारे मन मों॥

२३८४

बणीअ ते हुशयारु, सदा रहे को सूमों॥
जहिंखे दि॒नी सतिगुरूअ, अन्भय मति अपारु॥
पेही दि॒ठाईं पाणमें, दोस्त जो दीदारु॥
ज॒ाणे सभु सन्सारु, स्वप्न जो सामी चए॥

---

(१) हृदयमें-पाणमें (२) वीचार (३) पको-तिखो (४) दे॒खार्यो-मिलायो
(५) ईश्वरु (६) क्रिपा (७) हिकदमि

२३८५

बन्दगी ब्रिहालु[1], कोर्युनि मंझों को करे॥
मिट्यो जहिंजे मन मों, सामी जगु जन्जालु॥
रह्यो न रतीअ जेत्रो, हउमै रेख रिवालु॥
मंझे हाल निहालु, मिली थ्यो महबूबसां॥

२३८६

बाकी बक न बकु, महबत जे मैदानमें॥
रावर[2] वठंदइ रोकड़ो, हाक्माणो हकु॥
तदिहिं तूं मुर्कु[4], जदहिं खन्धो खलासो थिए॥

२३८७

बाहि अविद्या आहि, साड़े सभ सन्सार खे॥
तहिंखे विद्या[5] जल सां, वारोवारु बुझाइ॥
साफु करे सामी चए, मन जी ममत्वु मिटाइ॥
नकी कढु[6] न पाइ, आदी अन्भय पदमों॥

२३८८

बिना अंग[7] अखरु[8], सतिगुर पाढ़ियो सिष खे॥
लहजे मंझि लंघे प्यो, भारी भौसागरु॥
करे न कतर जेत्रो, कहिंसां मोहु मकरु॥
पाए पदु अमरु, सामी माणे सहज पदु॥

---

(१) सफलु—निहालु (२) थोरे मात्र (३) यमदूत (४) खुशि थी (५) ज्ञानु
(६) भर्म में न अचु (७) बिना नीशान (८) आत्म सत रूपी अखरु

२३८९

बिना अङ्ग[1] अखरु, सतिगुर पाढ़ियो सिषखे ॥
लहजे मंझि लंघे प्यो, भारी भौसागरु ॥
करे न कतर जेतो, कहिंसा मोहु मकरु ॥
पाए पदु अमरु, सामी माणे सान्ति सुखु ॥

२३९०

बिना अङ्ग अखरु, सन्त लखाइनि समझे ॥
समुझे को सामी चए, जाग्यो जोगेस्वरु ॥
डि॒ठो जहिं अभेदु थी, बेगमपुरि शहरु ॥
ओलहु एं ओभरु, भवे कीन भुलनिजां ॥

२३९१

बिना अनन[2] अभ्यास, सान्ति न अचे जीअखे ॥
ईए चवनि था आदि॒जो, दर्स समाणा दास ॥
कटीं जनि क्रिपा सां, सभ फुर्ने जी फास ॥
रहनि मंझि आकास, सदाई सामी चए ॥

२३९२

बिना आत्म ज्ञान, ममत्व न मिटे मन जो ॥
तोड़े सभि साधन करें, पढ़ें वेद पुरान ॥
गीतामें भगि॒वान, अर्जन खे ईए चयो ॥

---

(१) डि॒सो सलोकु २३८८ जी माना (२) डि॒सो सलोक २३८८ जी माना
(३) सिखो

२३९३

बिना आत्म ज्ञान, ममत्व न मिटे मन जो॥
तोड़े सभि साधन करें, पढ़ें वेद पुरान॥
रखी सुर्ति सब्द में, सहजे डि॒सु सुजान[1]॥
गीतामें भगि॒वान, अर्जन खे ईए चयो॥

२३९४

बिना आत्म ज्ञान, ममत्व न मिटे मन जो॥
तोड़े सभि साधन करें, पढ़ें वेद पुरान॥
सामी चए सन्सार खे, ज़ाणी स्वप्न समान॥
गीतामें भगि॒वान, अर्जन खे ईए चयो॥

२३९५

बिना आत्म ज्ञान, ममत्व न मिटे मन जो॥
तोड़े सभि साधन करें, पढ़ें वेद पुरान॥
सामी सुख साख्यात खो, अथी सभि अनुमान॥
गीतामें भगि॒वान, अर्जन खे ईए चयो॥

२३९६

बिना गप गपी, प्या सभि जीअ जहान जा॥
मरनि मति मर्म रे, खपि मंझि खपी॥
कहीं सुजागे॒ सूमें, कल्प गं॒ढि कपी॥
जहिंखे गा॒ल्हि छपी, सामी बु॒धाई सतिगुरूअ॥

(१) सता खे जाणु

२३९७

बिना गप गपी, प्या सभि जीअ जहानजा ॥
मरनि मति मर्म रे, खपि मंझि खपी ॥
कहिं सुजागे सूमें, सामी कल्प कपी ॥
जहिंखे छुटे छपी, लख्य लखाई अन्भई ॥

३२९८

बिना ज्ञाति ज्ञानु, कूड़ा कथिनि केला ॥
गाल्हियूं वेदनि जूं बुधी, कनि अन्दरमें उन्मानु ॥
दिसनि कीन अख्युनि रे, अन्धा अन्भय भानु ॥
सदा रहनि गल्तानु, सामी माया मोह में ॥

२३९९

बिना ज्ञाति ज्ञानु, कूड़ी कथ कल्प जी ॥
जीए सुञो स्वप्न में, सामी थे सुल्तानु ॥
अणहून्दो अभिमानु, जागये रहे न जीअमें ॥

२४००

बिना ज्ञाति गुलाम, मूर्ख माया जा थ्या ॥
हर्दमि हथ बधी करे, सामी कनि सलाम ॥
रहनि अलेपु आकास जां, के नेहीं निर्बाण ॥
जनिखे रम्ता राम, साधु लखाए पाणमें ॥

२४०१

बिना ज्ञान गवस[1], जतनु कर्नि था जोगजे॥
पुछनि न पेराठ्युनि खों, देह अगम जो दसु॥
जिते दीहुं न राति को, नको सूर्यु ससु[3]॥
सुत्ह अन्भय रसु[4], बाभण ड्याईअ रे वसे॥

२४०२

बिना जोग वैराग, पदु प्राप्त न थिए॥
साख दियनि सामी चए, साधूजन सुजाग॥
मोड़े मन पवन जी, जनि विधि सां रखी वाग॥
ज़ाणी पूरणु भाग, आया आदी घरमें॥

२४०३

बिना दर दरी, मूर्ख मरनि ममत्व में॥
मृिघ त्रिष्णा जे जलजी, सघनि न सिन्धु तरी॥
स्याणनि खे सामी चए, पेई खबर खरी॥
सटे भर्म भरी, माणिनि सुखु स्वरूप जो॥

२४०४

बिना दर दरे, जगतु सभोई जीअमें॥
नांगु ज़ाणी नोड़ीअ खे, सवे न धीर धरे॥
वद्यो वञे वीचार रे, कूड़ी कल्प करे॥
जन्मे ऐ मरे, स्वप्न में सामी चए॥

---

(१) वीचार (२) सुत्तनि खों (३) चन्द्रमा (४) सुखु

२४०५

बिना दू॒र दु॒रे, जगु॒तु सभोई जीअमें ॥
पछिनु ज़ाणी पाणखे, जन्मे नितु मरे ॥
पूरणु दि॒से पीअ खे, को नेहीं नेण भरे ॥
जहिंते हथु धरे, सामी पूरो सतिगुरू ॥

२४०६

बिना दू॒र दु॒रे, थो जगु॒तु सभोई जीअमें ॥
अणहून्दे अविद्या भूत खे, सही कोन करे ॥
विृले कहिं गुर्मुख क्यो, पर्चो पटु परे ॥
सामी दि॒सी ठरे, सभु चिमत्कारु चेतनजो ॥

२४०७

बिना दुःख दुःखी, मूर्ख रहनि मति रे ॥
पछिन ज़ाणी पाणखे, जु॒मनि मरनि जुखी ॥
मिली थ्यो महबूबसां, को सामी सन्तु सुखी ॥
गहरी गुरमुखी, मुखि रखी मोजां करे ॥

२४०८

बिना द्वैत दौलत[१], लख्य[२] लखाई[३] सतिगुरूअ ॥
पर्ची दि॒ठी जहिं पीअजी, मूर्त मंझि मूर्त ॥
रही न रतीअ जेत्री, सामी हीर हुजत ॥
सुत्ह सिधि उस्तत, ज़ाणे पहिंजो पाणमें

---

(१) आत्म सता (२) [illegible] (३) [illegible]

२४०९

बिना नीर नदी, सामी लखाई सतिगुरूअ॥
को प्रेमी लंघे पारि प्यो, कानूं कमरि बुधी॥
रखे न रतीअ जेत्री, चितमें चङी मन्दी॥
जाणे सुञ वसन्दी, आभा अनभय लालजी॥

२४१०

बिना पाकीअ[२] पाकु[३], कहीं पातो कीनकी॥
समुझे को सामी चए, महबती मुशताकु[४]॥
चढ़ी जहिं अर्श[५] ते, बुधो वहदत वाकु[६]॥
छदे सन्सो साकु, जुदा थ्यो जहानखों॥

२४११

बिना भगति भगिवन्त, गाल्हियूं सभि कूर्यूं अथी॥
वेद पुराण सिध देवता, पुछी दिसु गुर सन्त॥
नारी बालकु न जणे, बिना क्रिपा कन्त॥
सामी सदा अचिन्त, पर्ची थ्या प्रयनि सां॥

२४१२

बिना भगति वैरागु, जगयासी न जुरे[७]॥
बारु पिघोरे न दिसे, नारी बिना सोहागु॥
जगयासी वैरागु रे, तजे न नाना रागु॥
जागनि जहिंजा भागु, सो सामी सन्धि[८] सही करे॥

(१) उतिपति ज्ञान कला—जाणप (३) शुध स्वरूपु (४) सन्तु (५) दस्वें द्वारते (६) अनाहद धुनी (७) पारि न पहुचंदो (८) गुन्हि—गाल्हि—नीशानी

२४१३

बिना मुख खाई, सन्सो क्यो सन्सार खे॥
कहिंजी चले कानका, स्याणप चतुराई॥
इहा गाल्हि समुझ में, कहिं गुर्मुख खे आई॥
तहिंजी समाई, सामी सुर्ति स्वरूपसें॥

२४१४

बिना रब[1] रफ़ीकु[2], कहिंजो कोन्हे काथहीं॥
सोधे क्यो सामी चए, ताल्बनि[3] तहकीकु[4]॥
सटे खाम ख्याल सभि, थ्या बेहद बारीकु[5]॥
नैननि खों नज़दीकु, पेही दिसनि पाणमें॥

२४१५

बिना रब[6] रफ़ीकु[7], कोन दिठोसे काथहीं॥
सही करे को साध जनु, ईहा गाल्हि तहकीकु[8]॥
अन्दरि बाहरि आत्मा, दिसे हिकु हकीकु[9]॥
सामी लाए ठीकु, लिवं सची लालन सां॥

२४१६

बिना रब[10] रफ़ीकु[11] कोन्हे कहिंजो काथहीं॥
मुर्शिद सां मिली करे, क्यो ताल्बनि तहकीकु॥
सटे पिण्ड सामी चए, थ्या बेहद बारीकु॥
नैननि खों नज़दीकु, पेही दिठाऊं पाणमें॥

---

(१) ईश्वर (२) सचो–मददिगारु (३) सन्तनि (४) निश्चो (५) सूक्षमु
(६) ईश्वरु (७) सचो–मददिगारु (८) पूरी खबर–पूरो सारु (९) व्यापकु
(१०) ईश्वर (११) सचो–मददिगारु

२४१७

बिना लख्य[१] लंवे, वञे न अविद्या सिन्धु मों॥
लहर्यूं मारे लोभ जूं, नाना रङ्ग[२] रङ्गे॥
को प्रेमी लंवे पारि थ्यो, सामी लत संवे[३]॥
साहिबु सर्बङ्गे, डिठो जहिं देहीअ में॥

२४१८

बिना, वाच[५] वचनु, सारु बुधायो सतिगुरूअ॥
बुधी जीउ ठरी थ्यो, रह्यो न ममत्व मननु॥
देउ सुञातो देहिमें, सभ अंगे[६] सम्पनु॥
सामी चए घरु बनु, भगति सां भरपूरि थ्यो॥

२४१९

बिना वाच[७] वगी, गुर्गम[८] मुर्ली घरमें॥
बुधण सां बाभणु चए, झग मग जोति[९] जगी॥
पहिंजे अख्ये पाणखे, डिसी भ्रान्ति भगी॥
रहे लिवं लगी, सदा अभेदु आकास जां॥

२४२०

बिना वाच[१०] वजी, मुर्ली[१२] मन मन्दरमें॥
बुधण सां बाभणु चए, थ्यो भर्मु भय भजी॥
खन्ड ब्रहमन्ड ख्याल जी, पेई सुधि सजी॥
तोड़े रहे रजी, ताभी करे भीष[१३] भुख्यनि जां॥

---

(१) ज्ञान (२) ख्याल करे (३) हणी (४) सर्व व्यापी (५) जवान (६) परी पूरणु (७) जवान (८) धुनी (९) आनंदुत ज्योती अन्भय थ्यो (१०) जवान (११) धुनी (१२) प्रेमु

२४२१

बिना वादि विवादि, सुनि परे असुनि[1] पदु॥
जुबें रे[1] जुबों सदा, अचलु आदि जुगादि॥
सुरुहु सिधि समाधि, सामी सहज[3] स्वरूपमें॥

२४२२

बिना विधि वेसाह, कहीं पातो कीनकी॥
तोड़े लोक लक बधी, कनि उपाव अथाह॥
साख दि्यनि सामी चए, दर्दवन्द दानाह॥
पूरणु पाकु निगाह, जनिखे गुर गोबिन्द दि्नी॥

२४२३

बिना विधि वेसाह, कहीं पातो कीनकी॥
पुछी दि्सु प्रतीति सां, सामी सभि दानाह॥
घिड़ी लधी जनि घरमों, राम नगर जी राह॥
मेटे चिन्ता चाह, इस्थति थ्या आकास जां॥

२४२४

बिना विधि वेसाह, पदु प्रप्ति न थिए॥
पुछी दि्सु प्रतीति सां, दर्दवन्द दानाह॥
मिटी जन्जे मन मों, सामी चिन्ता चाह॥
सदा बेपर्वाह, रहनि विदेही देहिमें॥

---

* ही सलोकु अन्दरि सूनि वीचार जो आहे

(१) तुर्या पद खोभी पेर जाते कुछु जाण न थी सघंदी उते (२) बिना सरीर जे सरीर में अचलु याने इस्थरि आहे (३) सहजही पहिंजे स्वरूपमें लीनु थ्यो

२४२५

बिना विवेक वैराग॒, लालु न लभे अन्भई॥
साख दि॒यनि सामी चए, साधू जन सुजाग॒॥
मोड़े मन श्वास जी, वसि कई जनि वाग॒॥
ज॒ाणी पूरणु भाग॒ इस्थति थ्या आकासजां॥

२४२६

बिना विवेक वेसाह, पदु प्राप्ति न करे॥
ईए चवनि सभि अन्भई, दर्दवन्द[1] दानाह[2]॥
मिटी जन्जे मन मों, सामी चिन्ता चाह॥
जादे॒ कनि निगाह, तादे॒ सज॒णु समुहो॥

२४२७

बिना वेसाह विसा, भुली प्या भर्म में॥
पछिंनु ज॒ाणी पाण खे, कूड़ा कनि किसा॥
सामी औधे सिधि कई, महबत्युनि मन्सा[3]॥
दोस्तु दह दि॒सां, भयसां[4] दि॒सनि पहिंजो॥

२४२८

बिना वेसाह विसा, भुली प्या भर्म में॥
पुठी[5] देई॒ पाणखे, कूड़ा कनि किसा॥
उल्टी दि॒से को अन्भई, बे॒हद जी वर्षा[6]॥
सामी सभ दसा, भरे जहिं भर्पूरि कई॥

(१) प्रेमी (२) स्याणा (३) मुराद– इन्छा (४) प्रेमसां (५) अज्ञानमें
(६) आनंदु

२४२९

बिना वेसाह विसा, भुली प्या भर्म में॥
पुठी[1] ड्रेई पाणखे, कूड़ा कनि किसा॥
को आशिकु चढ़ियो[2] अछते, मेटे मन मन्सा[3]॥
सामी सर्व दिसां, पूरणु दिसे पीअखे॥

२४३०

बिना वेसाह विसा, भुली प्या भर्म में॥
पुठी[4] ड्रेई पाणखे, कूड़ा कनि किसा॥
सामी श्रोवे शुधि कई, महबत्युनि मन्सा[5]॥
दोस्तु दह दिसा, पूरणु दिसनि पधिरो॥

२४३१

बिना वेसाह विसे, पुठी दिनी पाणखे॥
तहिंखे[6] दिसे कीनकी, जहिंसा देहु दिसे॥
अस्ताचल[7] अउले जां, को प्रेमी पर्से॥
सामी सन्त हिसे, आया जहिंजे अन्भई॥

२४३२

बिना वैरागु वीचार, कहीं पदु पातो कीनकी॥
थकी बीठा केता, हीला करे हजार॥
ईए चवनि था अन्भई, दर्दवन्द[8] दातार॥
वणीअ ते हुशियार, सदा रहनि सामी चए॥

---

(१) अज्ञानमें अटिकी (२) पदते पहुतो (३) इच्छा (४) अज्ञानमें फासी (५) मुराद-इच्छा (६) बिना वे जे सता-पहिंजे सतासां (७) औधूतु (८) प्रेमी सन्त

४२३३

बिना सम सन्तोष, पदु प्राप्ति न थिए॥
साख ड्रियनि सामी चए, सचा साईं लोक॥
जनि पोख[1] पचाई पहिंजी, लाए महबत मोक[2]॥
मारे वेठा[3] झोक, सुञ वसवं जे विचमें[4]॥

२४३४

बिना समुझ जखे[5], थो कुतो कच[6] मन्दरमें॥
बालकु बुधि पछांव खों, भुली मै रखे॥
ज्ञानी पाणु लखे[7], सुखी थे सामी चए॥

२४३५

बिना समुझ सिदिक, पदु प्राप्ति न थिए॥
वञी पुछु तनीखों, जन्खे सची सिक॥
मूर्त महबूबनि जी, हर्दमि डि्सनि हिक॥
ड्या सभि चटिनि चिक, मूर्ख जीअ मर्म रे॥

२४३६

बिना साध संगति, पदु प्राप्ति न थिए॥
साख ड्रियनि सामी चए, करे सन्त सप्ति॥
मिटी जन्जे मन मों, बी सभ ममत्व मति॥
रात्यूं ड्रीहां रति[8], रहनि रम्ता राम सां॥

---

[१] मानुष्य जन्मु सफलु क्यो [२] प्रेमसां लयलीन्ता जे आनदु पातो
[३] पको निश्चो करे [४] दस्वे द्वार में लीनु थ्या [५] भौंके भटिके
[६] शीश जे घरमें [७] ज़ाणी–पछाणी [८] लगा रहनि

२४३७

बिना साध संगति, वसवं कान्हे विश्वमें॥
ईए चवनि था अन्भई, करे सन्त सत्ति[1]॥
जागी जगु स्वप्न जो, डि़ठो जनि असति[2]॥
सामी डि़यनि सुमति, सभ खे सार स्वरूपजी॥

२४३८

बिना साध संगति, सामी सुध्यों कोनको॥
जागी कढ़ु अन्दर मों, ब़ी सभ ममत्व मति॥
पाए ज्ञानु गुरूअजो, करि अभेदु भगि़ति॥
त साक्षी डि़सें सति, चीटीअ एं कुन्चरमें॥

२४३९

बिना सिक सज़णु, कहीं पातो कीनकी॥
निकिरे कीअं दु़हीअ रे, मंझो खीर मखणु॥
फल वराए वणु, सामी सुञो सखिणो॥

२४४०

बिना सिक सज़णु, कहीं पातो कीनकी॥
साख डि़ए सूधी सची, नेहीं पुर्षु निपणु[3]॥
मिट्यो जहिंजे मन मों, भोलाओ भवणु[4]॥
सदा पाकु पूरणु, सामी रहे स्वभावमें॥

---

[१] सचसां–कसमु खणी [२] नास वन्तु [३] सदाई–नितो प्रति [४] भिटिकणु

२४४१

बिना सिक समाउ, पए न पूरण पद जो॥
ईए चवनि था अन्भई, जन्खे आयो साउ[१]॥
जाॻी क्याऊं जग जो, उशिनाई[२] अभाउ[३]॥
ॼाणी ॾिल्बरु ॾाउ, पासे थ्यनि न पीअखों॥

२४४२

ब्रिहनि[४] कुरि[५] लाए[६], विछुरी वर अगम खों॥
रोए रतु अख्युनि मों, ॾरि ॾरि वाझाए॥
सामी चए को सुप्री, आणे मिलाए॥
अहिड़ो को आहे, दर्दवन्दु ॾातारु जनु॥

२४४३

ब्रिहनि[७] खे भर्कों[८], लॻी बाहि ब्रिह[९] जी॥
रोए रतु अख्युनि मों, सदु करे सुॾिकी॥
अचे मिलु मुईअ सां, लालन पउ न लिकी॥
वेन्दो साहु सुकी, तॾी खणन्दे मैलु[१०] मथेते॥

२४४४

ब्रिहनि[११] वेरानी[१२], रोए रतु अख्युनि मों॥
सम्भारे सामी चए, ॾिल्बरु ॾिल्जानी॥
लॻी तुहिंजे अशिक जी, कलेजे[१३] कानी॥
मुशकुलु आसानी, मिली करि मुईअजी॥

---

(१) रसु–मज़ो–आनंदु (२) सन्सारी चिमतिकारु–फुनों (३) मेटियाऊं
(४) प्रेमजो (५) मुंझाए (६) करे–ॾेई (७) भुख्यनि खे–प्रेम्युनि खे
(८) जोरजी (९) भुखजी–प्रेमजी (१०) कलंकु–ॾोहु [११] प्रेमणि
[१२] भिटिकन्दड़ [१३] हृदयमें तीरु

२४४५

ब्रिहनि रही रोइ, कुठी दर्द[2] फिराक जी॥
कढे पार प्रयनि जा, ब़ाम्हण बुधे न कोइ॥
नितु चढ़े थो चित ते, पेरु न विझे पोइ॥
का वहण[3] वारो होइ, जो गाबो कढे अनमों॥

२४४६

ब्रिहमा विष्णु महेसु, सामी चए सभि सां॥
कूड़ो सभु कल्स जो, कुटम्बु कबीलो सेषु[5]॥
समुझे को जनु सूरमों, अन्भई उपदेसु॥
पर्ची जहिं प्रवेसु, क्यो पद पूरण में॥

२४४७

बिरहिणि[6] नेण भरे, रोए रतु अख्युनि मों॥
पुछे पान्धेर्युनि खों, सुद्हिकी सद़ करे॥
सामी चए सुप्री, पेरु न थीउ परे॥
तद़ी जीउ ठरे, जद़ी मेलो करे मुईअसां॥

२४४८

बिरही रोए रतु, अठई पहर अख्युनि मों॥
सज़ण तुहिंजे सिक क्यो, मनु मुहिंजो मोहितु॥
थी बेहद बावरी, भुली सभु जग़तु॥
सामी चए सुनतु, अची मिलु मुईअ सां॥

---

(१) प्रेममें (२) प्रेम प्यासी (३) देखाणं वारी (४) विथी–विछोरो–फर्कु
(५) सभु (६) प्रेम स्वीत [७] प्रेमियुनिखों (८) प्रेमी

२४४९

वीहनि कीन भजनि, आशिक अगयों अजीबजे॥
सामी रखु सही करे, आगया मंझि रहनि॥
जीअण मरण दुःख सुख जो, सन्सो सोचु न कनि॥
हलाइया हलनि, जाण[1] विञाए पहिंजी॥

२४८०

बेअन्त जो अन्तु, कहीं पातो कीनकी॥
समुझे को सामी चए, ममोष्यी महन्तु॥
डिठो जहिं अख्युनि सां, भेद बिना भगिवन्तु॥
बारहां[2] माह बसन्तु[3], गावन्दो[4] वते गिल्हियुनिमें॥

२४८१

बेअन्त जो अन्तु, कहीं पातो कीनकी॥
समुझे को सामी चए, सुजागो सन्तु॥
डिठो जहिं अख्युनि सां, भेद बिना भगिवन्तु॥
जीए कामिणि[5] पाए कन्तु, रती रहे रंगमें॥

२४८२

बेअन्त जो अन्तु, पातो पीर फकीर कहिं॥
साख डिए सामी चए, माहिलु[6] पुर्षु महन्तु॥
डिठो जहिं आकास जां, भेद बिना भगिवन्तु॥
बिलावलु बसन्तु, गावन्दो[7] वते गोठमें[8]॥

---

(१) स्याणप कढी (२) सदाई (३) अनंदमें-शद्बमें (४) धुनीमें अन्तरि त्रितीअ प्यो फिरे याने वीचारे (५) प्रेमी (६) पूरणु (७) वीचारींदो रहे (८) हृदयमें

२४८३

बेगमपुरि[१] शहरु, अथी ऐन[२] आकास में ॥
मन बुधि वाणीअ वाचखों, अगमु[३] अगोचरु[४] ॥
खणे प्रेम प्रतीति सां, सामी सहज[५] समरु ॥
अन्भय पुर्षु अमरु, भेंटे वञे भर्म रे ॥

२४८४

बेगमपुरि[६] शहरु, सुञ वसवं[७] जे विचमें ॥
साख दिए सामी चए, जागियो[८] जोगेश्वरु ॥
जहिं भञी भिति भर्म जी, क्यो पाकु पधरु ॥
दहदिसां दिल्बरु, पूरणु दिसे पहिंजे ॥

२४८५

बेगमपुरि[९] शहरु, सुञ वसवं जे[१०] विचमें ॥
साख दिए सामी चए, जागियो[११] जोगेश्वरु ॥
मिटयो जहिंजे मन मों, माया मोहु मकरु ॥
सदा सरु[१२] सुभरु, माणे मौज मुक्ति जी ॥

२४८६

बेहद कीम हले, सामी हद[१३] जे जीअसां ॥
ममत्व जे मुठिनि[१४] खों, रखे पाणु पले[१५] ॥
जग में जग जहिड़ो थी, बिना चाह चले ॥
तहिंखे गाल्हि सले, जहिंखे सिक स्वरूपजी ॥

---

(१) आनंद जो अस्थानु (२) हृदय आकासमें–दस्वें द्वार में (३) अथाह
(४) इस्थर्ता सां–पको–पूरणुपदु (५) सब्दुधुनी (६) आनंद अस्थानु
(७) हृदय कोषमें (८) जाणूं (९) आनंद जो अस्थानु (१०) हृदय कोषमें
(११) जाणूं–प्रेमी (१२) भरिपूरि (१३) पहिंजे लैलीन्ता खों परे न थिए
(१४) सदाई पाणमें लैलीनु पाणखे प्यो दिसे (१५) गाल्हियुनि खों (१६) झले

२४८७

बेहद ग़ाल्हि बारीकु, आहे अशिक[1] अगमजी[2]॥
कोथुनिमों कहिं हिकड़े, तल्ब[3] कई तहकीकु[4]॥
सहजे थ्यो सामी चए, जहिंसां रूहु रफ़ीकु[5]॥
नैननि खां नज़िदीकु, सुत्ह डि़से सुप्री॥

२४८८

बेहद[6] ना ब़ोले, सामी हद्जे[7] जीअसां॥
वर्ते विधि वीचार सां, अण[8] हून्दे ओले॥
अचे मिल्यो महबती[9], ग़ोठ मंझों ग़ोल्हे[10]॥
तद्‌ी गन्हि खोले, जद्‌ी गाहिकु डि़से गुणजो॥

२४८९

बेहद नां ब़ोले, सामी हद जे जीअखों॥
सदा रहे सन्सार में, आशिक जे ओले[11]॥
तद्‌ी ग़ुन्हि[12] खोले, जद्‌ी गाहिकि[13] डि़से गुणजो॥

२४९०

बेहद पदु भारी, सन्त लखाइनि सभखे॥
समुझे को सामी चए, उतमु अधिकारी॥
घिड़ी कई जहिं[14] घरमें, कुझु दमु करारी॥
सटे[15] पिण्ड सारी, सन्मुखु थ्यो स्वरूपजे॥

---

(१) प्रेम (२) अथाह (३) इन्छा–घुर (४) सची–पकी (५) राजीथ्यो (६) अजायो स्वास कीन विञाए (७) सदा पाणमें लैलीन रहे (८) अण हूंदे सन्सार में (९) प्रेमी–आत्म अन्भय थ्यो (१०) सरीर जो सरीरमें मिल्यो सजाती सन्तु (११) भर्वसे (१२) बुधाए (१३) अधिकारी (१४) पहिंजे हृदय घर में (पही) वीचारे कुझु आनंदु वदो (१५) पाणु सरीरु कुर्बानु क्यो

२४६१

बेहदि बाणु[1] लगो, जहिंखे अशिक अगमजो[2] ॥
मिली तहिं महबूबसां, भोलो[3] भर्म भगो ॥
गणे कीन अन्दर में, पर्छिनु[4] पीछो[5] अगो ॥
विकिणी[6] ढोरु ढगो, सामी माणे सेज सुखु ॥

२४६२

बेहद बाणु[7] हणी, सतिगुर जागायो सिष्य खे ॥
दिठाई अख्युनि सां, घर में[8] घर धणी ॥
भवे[9] कीन भुलनि ज्यां, पर्छिनु[10] पिण्डु खणी ॥
छदे मान[11] मणी, सीत्लु थ्यो सामी चए ॥

२४६३

बेहद बक बके, बधो[12] जीउ ब्याईअमें ॥
सामी चए सिराणि[13] जां, तमां[14] नितु तके[15] ॥
अन्भय घर अगम में, पातो थाउं थके ॥
जहिंखे पूरि पके, पारि लंघायो पातिणीअ ॥

२४६४

बेहद[16] वजाई, मोहन मुर्ली मध[17] भरी ॥
बुधी बुधीवाननि[18] खे, भली भांति भांई[19] ॥
छदे खाम[20] ख्याल सभि, लिवं सची लाई ॥
सामी सदाई, मस्तु रहे महिराणमें ॥

---

(१) प्रेम (२) अथाह जो (३) भेदु भाउ विञायो (४) समानु (५) प्रपंचु (६) मां मुहिजो पणो कढियो (७) उपदेसु करे (८) पाण में पाणु ढिठो (९) भिटिके (१०) नासमान प्रपंच में (११) मानु वदाई छदे आनंदु पातो (१२) फाथो (१३) चऊं तिखे जो चक्र वागे (१४) सदाई घुर्जी पयो पूर्यूं करण जा पह पचाए (१५) प्रेमीअ भिटिकी पहिंजे सरीर रूपी घरमो पतो ठिकाणो लधो (१६) हदखो परे अनाहद धुनी (१७) प्रेम जी (१८) प्रेम्युनि खे (१९) आनंदु थ्यो (२०) अजायो

२४६५

बेहदि बेपर्वाह, आशिक अन्भय देसजा ॥
जन्खे प्यालो प्रेम जो, डि॒नों पाण अलाह[1] ॥
रखनि न रतीअ जेत्री, चित में चिन्ता चाह ॥
करे पाकु[2] निगाह, सामी डि॒सनि सभखे ॥

२४६६

बेहदि बेपर्वाह, सामी डि॒ठा सन्त जन ॥
रखनि न रतीअ जेत्री, चित में चिन्ता चाह ॥
चढ़िया अन्भय[3] अछते, रहति सचीअ जी राह ॥
जाडे॒ कनि निगाह, ताडे॒ सजु॒णु सामुहों ॥

२४६७

बेहदि भुख भछी, माया मूर्खनि खे ॥
सामी सघनि कीनकी, भरे पेट पछी ॥
खाए सम सन्तोष्य सां, को साधू सत रछी ॥
अन्भय लख्य लछी, जहिंखे डि॒नी सतिगुरूअ ॥

२४६८

बेहद लिवं बारीक, आहे अशिक अगम जी ॥
सामी लाथी कहिं सूमें, लंवे लोकां लोक ॥
जहिंखे डि॒नी सतिगुरूअ, तरि[4] तीबु॒र तौफ़ीक[5] ॥
नैननि खों नजिदीक, सुत्ह डि॒से सुप्री ॥

---

[१] ईश्वर–सन्त [२] शुधि वीचार [३] पूरणु पदते [४] तिखी–पकी
[५] शक्ती

२४६९

बेहदि लिवं बारीक, आहे अशिक अगम जी॥
सामी लाथी कहिं सूमें, लंघे लोकां लीक॥
जहिंखे दि॒नी सतिगुरूअ, पर्ची पूरणु फूक॥
नैननि खों नजिदीक, सभमें दि॒से सुप्री॥

२४७०

भग॒त नाना भान्ति, तप तीर्थ कनि साधनां॥
विॼले कहिं गुर्मुख खे, सामी आई शान्ति॥
जाग॒ी मेट्यो जहिं जीअजो, भोलाओ भ्रान्ति॥
अन्भय रे एकान्ति, कूड़ी ॼाणे कल्पना॥

२४७१

भग॒त प्यारा ॼाणु, नार्द माखे सभखों॥
जनीं मुहिंजे नांव ते, दि॒नो पहिंजो पाणु॥
सन्सो कढी जीअमों, सम रहनि सभ साणु॥
भोरी तनिजो भाणु, सामी छदि॒यां कीनकी॥

२४७२

भग॒ति जुगति ऐं जोग॒, क्यो जहिं गुर ज्ञाति सां॥
मिट्यो तहिंजे मन मों, अणहून्दो अविद्या रोग॒॥
रखे न रतीअ जेत्रो, सामी सन्सो सोग॒॥
तोड़े भोगे भोग॒, तांभी रहे अलेपु आकास जां॥

२४७३

भगति बिना भगिवानु, कहीं पातो कीनकी॥
समुझे को सामी चए, नेहीं त्रिअभ्मानु॥
जहिंखे दि̱नो सतिगुरूअ, दीक्षा दर्सनु दानु॥
करे अम्रितु पानु, इस्थति थ्यो आकास जां॥

२४७४

भगति बिना भगिवानु, कहीं पातो कीनकी॥
साख दि̱ए सूधी सची, साधूजनु सुजानु[1] ॥
जागी̱ दि̱ठो जहिं ज्योति[2] में, सामी सभु जहानु॥
सदा त्रिअभिमानु, वर्तें वेद वीचार सां॥

२४७५

भगि̱तनि खों भगिवानु, पलक पराहूं न थिए॥
अन्दर बा̱हरि सर्व गति, दि̱ए दर्सनु दानु॥
कटे कोट जन्म जो, अन्दर जो अभिमानु॥
पाए पदु न्रिबा̱णु, सामी माणिनि सान्ति सुखु॥

२४७६

भगति अभेदु करे, जेको सिक सचीअ सां॥
सामी तहिंखों सुप्री, पलक न थिए परे॥
अठई पहर ब̱रे, महां मशाल अन्दरमें॥

---

(१) जा̱णूं (२) अन्दरि त्रितीअ द्वारा

२४७७

भग़ति कमाए, गुर्मुखु छुटो दुःख खों॥
द़िठाई गुर ज्ञाति सां, मूहुं मढ़ीअ पाए॥
ग़ाल्हि न सले कहिंखे, जीए गूंगो गुरु खाए॥
रहिया लिवं लाए, सामी सुपेर्युनि सां॥

२४७८

भग़ति ज्ञान में भेदु, कोन्हे कतर जेत्रो॥
साख द़िए सूधी सची, साधू जनु सुफेदु॥
ओधे द़िठो सामी चए, विधि सचीअ सां वेदु॥
मेटे विधि निषेदु, इस्थति थ्यो आकास जां॥

२४७९

भग़ति जो कुण्को, पातो जनि प्रतीति सां॥
वधी तनिजो वणु थ्यो, जीए ब़ट[1] ब़ीजनि[2] को॥
अठई पहर अन्दर में, लायो तनि लटिको[3]॥
मोटी जम झटिको[4], सामी खाइनि कीनकी॥

२४८०

भग़ति जोगु कर्मु, कोहु चवनि था सन्त जन॥
जुग़ति सां जोड़े करे, मन खे द़ियनि मर्मु॥
कढी भोलो भर्मु, सामी चढ़िया सीरते॥

---

(१) पोख्यल (२) ब़ि[illegible] (३) [illegible] (४) [illegible]

२४८१

भगुति जोगु वैरागु, ट्रेई साधन सुखजा॥
साख देई सामी चए, साधू जनु सुजागु॥
खोल्यो जहिं अलख[1] जो, बेहद भारी बागु॥
फुर्नें बिना फागु, हर्दमि[4] खेले हिकु थी॥

२४८२

भगुति दि्नी भगिवान, जहिंखे पर्ची पहिंजी॥
जहिं सामी सभेई क्या, जप तप दान इसनान॥
जन्म मरण दुःख सुख जी, कल्प रखे कान॥
ईएं वेद पुरान, चवनि विधि वीचार सां॥

२४८३

भगुति दि्नी भगिवान, जनिखे पर्ची पहिंजी॥
तनि सामी सभेई क्या, जप तप दान इसनान॥
राज भोगु सुख सुर्गु जी, इन्छा रखनि कान॥
रहनि मंझि जहान, सदा अलेपु कंवल जां॥

२४८४

भगुति दि्नी भगिवान, जनिखे पर्ची पहिंजी॥
सहजे थ्या सामी चए, से नेहीं निबाण॥
जन्म मरण दुःख सुख जी, कल्प कर्नि कान॥
रहनि मंझि जहान, सदा अलेपु आकास जां॥

---

[१] ईश्वर जे प्रापतीअ जो—आत्म अन्भय जो [२] हृदय कोष में अनाहद धुनी में लीनु थ्यो [३] पोइ फुर्ना नासु थीव्या [४] सदाई हिक आत्मा में लीनु थी प्यो वर्ते

२४८५

भग॒ति डि॒नी भगि॒वान, जनिखे पर्ची पहिंजी॥
सामी तनि सन्तनि जी, मुशिकुलु थिए आसान॥
काया माया कुलजी, कल्प रखनि कान॥
रहनि मंझि जहान, सदा अलेपु आकास जां॥

२४८६

भग॒ति डि॒नी भगि॒वान, जनिखे पर्ची पहिंजी॥
से पीअनि पीआर्नि, प्रेम रसु, नेही निअभ्मान॥
सामी साध संगति रे, बी॒ सुधि रखनि कान॥
रहनि मंझि जहान, सदा न्यारा नभजां॥

२४८७

भग॒ति पदु भारी, पातो जहिं प्रतीति सां॥
मिटी तहिंजे मन मों, खुदी खोआरी॥
सामी करे सभ खे, निउड़ी नीज़ारी॥
ज़ाणे विश्व सारी, चिमत्कारु चेतनजो॥

२४८८

भग॒ति पदु भारी, सामी अथी सभ खों॥
वञी पुछु तनीखों, ममत्व जनि मारी॥
पाए ज़ाति गुरूअ जी, थ्या दोस्त द॒बा॒री॥
खुदी खोआरी, कढी डि॒आं पागखे॥

२४८९

भगति पदु भारी, पातो जहिं प्रतीति सां॥
मिटयो तहिंजे मन मों, अविद्या अन्धारो॥
लय डिठाई लख्य[1] में, सामी जगु सारो॥
नभ जां न्यारो, रहे विदेही देहिमें॥

२४९०

भगति बिना भगिवानु, कहीं पातो कीनकी॥
समुझे को सामी चए, नेहीं निअभिमानु॥
जहिंखे डिनो सतिगुरूअ, दिल्यों दर्सनु दानु॥
तनु मनु धनु, कुर्बानु, सभुकी क्याईं सुखतों॥

२४९१

भगति भागिवती, सन्त लखाइनि सभखे॥
समुझे को सामी चए, माहिलु[2] महबती॥
मिटी जहिंजे मन मों, अविद्या[3] अनमती[4]॥
पाए प्राण पती, इस्थति थ्यो आनन्दमें॥

२४९२

भगति भिजाए, सहंस्र जन सीत्लु थ्या॥
सामी मिल्या स्वरूपसां, लिवं सची लाए॥
ममत्व मिटाए, पीअनि पीआर्नि प्रेम रसु॥

---

[१] वीचार सां (२) पुरण प्रेमी (२) मायाजी (३) भास्कारी—मान्ता

२४९३

भगुति भिज़ाए, साधू जन सीतलु थ्या ॥
पाणु ड्रिठाऊं पाणमें, अविद्या[1] पटु लाहे ॥
सामी चढ़िया सीरते, ममत्व मिटाए ॥
जगु खे जागाए, वाट ड्रसिनि वेसाह जी ॥

२४९४

भगुति भोले भाइ, कई जहिं कर्तारजी ॥
अचे तहिंसां ओचिते, सामी थ्यो सहाइ ॥
तूंभी ड्रिसी तनिखे, लिवं सचाई लाइ ॥
विचों भर्मु विञाइ, त माणे दौर दर्सजा ॥

२४९५

भगुति मंझि भगिवन्तु, जीए गन्धु गुलनिमें ॥
कोर्युनि मों को हिकिड़ो, समुझे सन्तु महन्तु ॥
जो कल्प कढी जीअसों, सामी थ्यो बुल्वन्तु ॥
जहिंजो आदि न अन्तु, सो देउ ड्रिठाईं देहिमें ॥

२४९६

भगुति रीअ भगिवन्तु, कहीं पातो कीनकी ॥
साई नारि सुलछिणी, जहीं रीझायो कन्तु ॥
सामी सन्तु महन्त, पर्चे में पर्चो रहे ॥

---

(१) अज्ञान जो पर्दो

२४९७

भगति रे भगिवानु, कहीं पातो कीनकी॥
तोड़े वेद पुराण पढ़ी करे, करें गीतां ज्ञानु॥
समुझी दिसु सामी चए, तूं कढी गैरु गुमानु॥
वेसासी[1] विद्मानु[2], पचीं थ्यो वञी पीअजो॥

२४९८

भगति वराए[1] ज्ञानु, जीए मोती आब[4] रे॥
बोध[5] वराए न मिटे, अविद्या जो अभिमानु॥
समुझी दिसु सामी चए, कढी सभु उन्मानु॥
निमलु पदु निबाणु, हाजुरु दिसें हथते॥

२४९९

भगतु भागिवती, कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
जहिंखे दिनी सतिगुरूअ, गहरी ज्ञान गती॥
सुखी थ्यो सामी चए, पाए प्राण पती॥
जीए लोई रंग रती, तीए रतो रहे रंगमें॥

२५००

भगतु भागिवती, कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
जहिं पचीं दिठो प्रीति सां, सामी प्राण पती॥
जीए लोई रंग रती, तीए रतो रहे रंगमें॥

---

(१) विस्वासी (२) प्रेमी (३) खों स्वाद (४) पाणी (५) उपदेस-वीचार-सिक्षां

२८०१

भग॒तु भाग॒िवती, कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
ड॒िठो जहिं अख्युनि सां, प्रत्क्षु प्राण पती॥
जाचे कीन जहान जा, सामी साध सती॥
जीए लोई रंग रती, तीए रतो रहे रंगमें॥

२८०२

भग॒तु भाग॒िवती, कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
साधे जहिं सिधि कई, सामी सुर्ति सती॥
ड॒िठाईं अभेदु थी, प्रत्क्षु प्राण पती॥
जीए लोई रंग रती, तीए रतो रहे रंगमें॥

२८०३

भग॒तु भाग॒िवती, ब॒ोले मिठो मोहिणो॥
जहिंखे ड॒िनी सतिगुरूअ, सामी ज्ञान गती॥
ड॒िसे देहि अभिमान रे, प्रत्क्षु प्राण पती॥
जीए लोई रंग रती, तीए रतो रहे रंगमें॥

२८०४

भग॒ितनि खों भग॒िवानु, पलक पराहूं न थिए॥
करे तहिंखे सर्व[1] गति, डे॒ई दर्सनु दानु॥
मिट्यो तहिंजे मन मों, देहीअ जो अभिमानु॥
पाए पदु न्रिबा॒णु, सामी माणिनि सहज सुखु॥

---

(१) पूरणु–शक्ति शाली

२५०५

भगितनि खों भगिवन्तु, पासे थिए कीनकी॥
खाए खिचिणी खीरु सागु, खलां ऐं भतु॥
सामी सभ में सारु, जनि ज़ातो आत्म तत्वु॥
रखे न मनि ममत्वु, ज़ाणे रूप स्वरूपजा॥

२५०६

भगितनि हथि भगिवानु, कीअं विकामी वसि थ्यो॥
सामी चए हे सतिगुरू, पर्ची दे प्रमानु॥
कयाऊं सिक सचीअ सां, तनु मनु धनु कुर्बानु॥
पाए पदु निबाणु, माहिलु थ्या महिराणमें॥

२५०७

भगिवत खे भाईं, सा राणिनि जी राणी थी॥
सामी मिली तहिंखे, वदी वदाई॥
रिध्यूं सिध्यूं सभि बान्हयूं, कर्नि कमाई॥
सजणु सदाई, निहारे नेण भरे करे॥

२५०८

भगिवत खे भाएं, तहिसां दावा नाहिं का॥
सामी मिले तहिंखे, पदु पदों लाहे॥
पाए सुखु सोहागु जो, खिले ऐं खाए॥
सन्सो मिटाए, झूले झरोकनि[1] में॥

---

(१) आनंद अवस्थामें

२८०९

भगिवत खे भाणी, आउं सोहागिणि सा चवां॥
रखी नेण नेणनि में[1], नि्खे निमाणी॥
साहुरनि ऐ पेकनि में, सहजे सेवाणी॥
सा राणिनि जी राणी, सामी माणे सहज सुखु॥

२८१०

भगिवतु जहिंजी भ्रान्ति, मेटे महिर मयासां॥
सामी तहिं साधूअ खे, सहजे आई शान्ति॥
अन्भय रे एकान्ति, कूड़ी ज़ाणे कल्स जी॥

२८११

भगिवतु भुलाए, मूर्ख मुठा केत्रा॥
भवनि[2] भौसागर में, कोट जन्म पाए॥
सामी बचो को सूर्मो, साधूअ जे साए॥
ममत्व मिटाए, इस्थति थ्यो आकासजां॥

२८१२

भर्म जी भारी, छोति लगी हिन जीअखे॥
चाह[4] रख्याई चितमें, चमारी चुहुरी॥
कयासि तहिं कल्स सां, सामी दिलि कारी॥
बेहद जी वारी[5], पूरे वेठो पाणहीं॥

---

(१) खुशिये (२) भिटिकनि (३) [illegible] (४) इच्छा–लोड़ (५) दर्वाजो

२५१३

भर्म जी भारी, भिट लगी हिन जीअखे॥
चाह रखयाईं चितमें, चुहड़ी चमारी॥
कयसि जहिं कल्प सां, सामी दिलि कारी॥
करे न करारी, परे ज़ाणी पीअखे॥

२५१४

भर्मु भुजंगु भारी, हले चले कीनकी॥
दंगी जहिं दुन्दनि रे, सामी विश्व सारी॥
विृले वीचारी, को बचो गुर ज्ञाति सां॥

२५१५

भर्म मंझि भिटकी, मूर्ख मोआ केत्रा॥
सति ज़ाणी सन्सार खे, अन्धा प्या अटिकी॥
भकीं[२] भगी कहिं, भाग्यवान, ममत्व जी मटिकी॥
लटिके[३] मंझि लटिकी, सामी रह्यो स्वरूपजे॥

२५१६

भर्म मंझि भुली, प्या सभि जीअ जहानजा॥
जन्मनि मरनि मति रे, रसनि काणि रुली॥
सामी लधो कहिं सूमें, अन्भय घरु असुली॥
मेटे कल्प कुली, माणे मौज मुक्तिजी॥

---

[१] नांगु—भोलाओ (२) जोरसां (३) प्रेम में

२५१७

भर्म मंझि भुली, प्या सभे जीअ सन्सारमें ॥
जन्मनि मरनि मति रे, रसनि काणि रुली ॥
सामी लधो कहिं सूमें, अन्भय घरु असुली ॥
मेटे कल्प कुली, इस्थति थ्यो आकास जां ॥

२५१८

भर्म मंझि भुली, मूर्खु फोले आत्मा ॥
ब॒ारु विञाए निड्रमें, जीए दरि दरि नारि रुली ॥
जागये ग॒न्ढि खुली, बि॒न्ही जी ब॒ालो चए ॥

२५१९

भर्म मंझि भुली, मूर्ख मुठा केत्रा ॥
पर्चीं डि॒सनि न पहिंजो, अन्भय घरु असुली ॥
को आशिकु चढ़ियो अछते, मेटे कल्प कुली ॥
जहिंजो कंवलु खुली, सामी प्यो साध संगि ॥

२५२०

भर्म रे भाणो, मन्यो जहिं महब्रूबजो ॥
तनिजो मनु मौज में, सहजे सामाणो ॥
ड॒ेई वेढाणो, सामी सुम्हयां सेज़ते ॥

२५२१

भर्मु मिट्यो भारी, जुदाईअ[1] जो जगमें॥
जन्मनि मरनि जीअ सभि, बणी देहि धारी॥
सामी मिल्यो स्वरूपसां, को उतमु अधिकारी॥
नानत निवारी, जागी जहिं अन्दर जो॥

२५२२

भर्मु विञाए भेण, अचे आत्म विचेमें॥
सहे साहेर्युनि जा, सम थी वेण[2] कु वेण॥
सामी लाए सिरते, रहु सन्तनि जी रेण[3]॥
त भरे निर्मलु नेण, कनी निहालु नजरसां॥

२५२३

भर्याऊं खाली, प्रयनि पचीं पाणहीं॥
पीआर्याऊं[4] प्रेम रसु, थी मन्सा मतिवाली[5]॥
चढ़ी[6] चोटीअ ते वञी, क्याई कमाली॥
लूअं लूअं मंझि लाली, सामी डिसे स्वरूपजी॥

२५२४

भर्यो जहिं मुजिरो[8], सामी साध संगति जो॥
सहजे तहिं सेवक जो, अन्दरु थ्यो उजिरो॥
लधाई हुजिरो[9], पचीं पाकु प्रयनि जो॥

---

(१) द्वैत जो–जीव ईश्वर जे जुदाईअ जो (२) डोरापा (३) धूरि–उपदेस रूपी धूरि–वचन (४) प्रेमजो उतमु उपदेसु (सब्दु मन्तु) डिनाउं (५) मनु आनंद में आयो सन्सारी मिति भुली (६) सब्द धुनी में लीनु थी ऊच पद ते पहुता (७) रोम रोम में आत्म सता प्यो डिसे (८) फेरो–रोजानो सतिवीचारु साधसंगु (९) घरु–ठिकाणो

२५२५

भर्यो जहिं सलामु, सूधो सुपेर्युनि खे॥
मिल्या तहिं मुशताक़ खे, ट्रई लोक इनामु॥
क्याईं कल्प कढी करे, अन्भय मंझि आरामु॥
शादी ऐं मातामु, सामी ज़ाणे सम सभु॥

२२२६

भर्वसो भारी, जहिंखे ड़िनो सतिगुरूअ॥
सामी सटी तहिं सिरतों, अविद्या[१] पिण्ड सारी॥
ज़ाणे मोचारी[२], कई कर्ता पुर्ष जी॥

२५२७

भरे मार्या[३] ब्राण[४], सतिगुर पूरे सचजा[५]॥
चूड़ु क्या चित खे, रही न सुर्ति सुजाण॥
सामी सुपेर्युनि रे, ब्री सभ भुली ज़ाण॥
अचे बीठा पाण, सन्मुखु मुहिंजे सुप्री॥

२५२८

भले साणु भलो, सामी करे सभुको॥
बुरे साणु भलो करे, सो जग में व्रिलो॥
जहिं जोड़े मन म्वास खे, हयों खासु खलो[६]॥
तहिंखे कौन वलो[७], पए अगयों अजीबजे॥

---

(१) मायावी प्रपंचु (२) चड़ी (३) बुधाया (४) उपदेस (५) सचे आत्म अन्भय जा (६) वसि क्यो (७) अटक

२५२९

भलो भलाई, बुरो बुराई लहे॥
ईए न्यत असुल जी, ठाकुर ठहराई॥
वि॒ले कहिं गुर्मुख खे, अन्भय में आई॥
सामी सफ़ाई[1], मुखि रखी मौजां करे॥

२५३०

भलो भलाई, बुरो बुराईअ खे लहे॥
ईहा रीति न्याव जी, आदि दुरी आई॥
सामी समुझी कहिं सूमें, ममत्व मिटाई॥
सम्ता[2] सफ़ाई, मुखि रखी मौजां करे॥

२५३१

भवण[3] सभि भईं[4], मूर्ख मुठा मति रे॥
सामी सुखु स्वरूपजो, पातो कीन कहीं॥
इस्थति रहे आकास जां, को आशिकु अगु॒हीं॥
जागी॒ दि॒ठो जहीं, पहिंजे अख्यें पाणखे॥

२५३२

भवण[5] सभि भवी[6], थकी जीउ थ्यो थ्यो॥
ममत्व[7] पिण्ड मथे तों, लाथी कीन कहीं॥
सामी दि॒सी सतिगुरूअ, सुत्ह गा॒ल्हि सईं॥
वेई वेल तहीं, खपि खोआरी निकिरी॥

(१) सचाई (२) समिता सचाई (३) जन्म (४) भिटिकी (५) जन्म (६) भिटिकी (७) मायावी प्रपंच मों कहीं कीन कढियो

२५३३

भाउना करे भगतु, मिलाए महबूबसां ॥
भाउना विझी भर्मसें, नितु रोआरे रतु॥
समुझी डि॒सु सामी चए, छडे॒ मोहु ममत्वु ॥
ग्रिहस्ती ऐं त्रिकतु, भाउनां में भासी रहियो॥

२५३४

भाउनां करे भूतु, राक्षस मानुष्य देवता ॥
भाउनां भगतु ज्ञानी, अचार्जु औधूतु॥
भाउनां भर्ता इस्त्री, गुरु चेलो पूतु कुपूतु॥
सामी सभ जो सूतु, भा॒गिवन्ति भाउना चई॥

२५३५

भाउना जे भोले, सामी लिको सुप्री॥
लधी सिक सचीअ सां, फकीरनि फोले॥
जन्वे अशिक अगम जी, चिणिग पई चोले॥
पट्ट पर्दो खोले, माणिनि दोर दर्स जा॥

२५३६

भाउना ज्ञानु ध्यानु, भाउना मूर्खु मस्किरो॥
भाउना पापी पाखंडी, भाउना दानु इसनानु॥
समुझी डि॒सु सामी चए, छडे॒ सभु अभिमानु॥
भाउना खों भगिवानु, पलक पराहूं न थिए॥

२८३७

भाउना ड्रिए भाड़ो, सभ कहींखे पहिंजो॥
समुझी ड्रिसु सामी चए, कढी कबाड़ो[1]॥
साझुरि ड्रिसु सुपेर्युनि द्रे, करि लिवं सचीअ लाड़ो[2]॥
आहिड़ो ड्रिहाड़ो, मोटी ईंदुइ कीनकी॥

२८३८

भाउना द्रे भाड़ो[3], सभ कहींखे पहिंजो॥
समुझी ड्रिसु सामी चए, छद्रे रोसु[4] राड़ो॥
साझुरि करि साईंअ द्रे, लिवं सचीअ लाड़ो[5]॥
अहिड़ो ड्रिहाड़ो[6], मोटी ईन्दुइ कीनकी॥

२८३९

भाउना ड्रिए भाड़ो[7], सभ कहींखे पहिंजो॥
समुझी ड्रिसु सामी चए, रोजु[8] छद्रे राड़ो॥
साझुरि सुपेर्युनि द्रे, करि लिवं सचीअ लाड़ो[9]॥
अहिड़ो ड्रिहाड़ो[10], वरी लहंदे कीनकी॥

२८४०

भाउना भमु करे, भाउना कटे भमु सभु॥
भाउनां सुञो सखिणो, भाउनां सुभरु भरे॥
समुझी ड्रिसु सामी चए, नृमलु नेण भरे॥
भाउनां पीड परे, भाउना अख्युनि ओड्रिड़ो॥

---

(१) कचिरो–द्वेतु–मांपणो आदी (२) प्रेमु (३) फलु (४) खुशी गमु (५) प्रेमु
(६) जन्मु (७) फलु (८) रोअणु ररणु (९) प्रेमु (१०) जन्मु

२५४१

भाउना भवाए, चौरासी लख जूणिमें॥
दुःख सुख नर्क स्वर्ग जा, भाउनां भोगाए॥
जप तप साधन साध सङ्गि, भाउनां कराए॥
भाउना मिलाए, सामी सार स्वरूपसां॥

२५४२

भाउना भवाए, चौरासी लख जूणिमें॥
भाउना मनु निश्चलु करे, लिवं सची लाए॥
समुझी दिसु सामी चए, सूहुं मढ़ीअ[1] पाए॥
भाउना लखाए[2], प्रत्क्षु पूरणु आत्मा॥

२५४३

भाउना भवाए, थी चौरासी लख जूणि में॥
भाउना गोता गैबजा[3], खपी नितु खाए॥
भाउना मिली साधूअसां, साधन कराए॥
पदमें पहुचाए, शुधि भाउनां सामी चए॥

२५४४

भागनि दिनो भरु, तदी जागी समुझ अन्दरजी॥
क्यो साध संगति जो, अदब सां आदरु॥
तहीं पीआरे राम रसु, खोल्यो दस्वों दरु॥
मेटे दुःखु दमरु, सामी मिल्यो स्वरूपसां॥

---

(१) हृदय में श्रोधे वीचार दिसु (२) जाणाए (३) प्रपंचजा

२५४५

भागनि ड्रिनो भरु, तद्री साधूअ जो संगु थ्यो॥
लधो लिवं सचीअ सां, बेगमपुरि[1] शहरु॥
जिते तूं मां नाहिं का, नको चहनु चकरु॥
पूरणु परमेश्वरु, सुतह रहे सामी चए॥

२५४६

भागथ्वान अभयासु, क्यो जहिं गुर ज्ञातिसां॥
वञी पहुतो पद्में, करे कल्प नासु॥
सन्से रे सामी चए, जगमें रहे उदासु॥
जीए घटनि में आकासु, तीए साक्षी ड्रिसे सभमें॥

२५४७

भागिवती भगत, पासे थ्यनि न पीअखों॥
जनखे ड्रिनी सतिगुरूअ, अनभय इशारत॥
पीअनि पीअरिनि प्रेम रसु, मेटे मोहु ममत्व॥
जाग्रत में सुषुप्त, सदा रहनि सामी चए॥

२५४८

भागिवती भगत, पासे थ्यनि न पीअखों॥
जनखे ड्रिनी सतिगुरूअ, मध[2] भरी महबत॥
सामी माणिनि सेज[3] सुखु, कटे सभ कल्प[4]॥
रहनि मंझि जगत, सदा अलेपु आकास जां॥

(१) आनंद अस्थानु (२) प्रेमजी प्रीती (३) आत्म अन्भय जे आनंद जो सुखु (४) मायावी प्रपंच कल्पना मिटी

२८४९

भागि॒वती भगु॒त, पासे थ्यनि न पीअखों॥
जनिखे दि॒नी सतिगुरूअ, सामी मति महबत॥
जगु॒ दि॒सनि जानीअमें, जानी मंझि जगु॒त॥
कटे सभ कल्स, इस्थति थ्या आकास जां॥

२८५०

भागि॒वती भगु॒त, पासे थ्यनि न पीअखों॥
सहजे जनिजी सतिगुरूअ, कटी सभ कल्स॥
सदा रहे सामी चए, जाग्रत[1] में सुषुप्त॥
गोर्ख नार्द दत्त, साख दि॒नी सुखि देवजी॥

२८५१

भागि॒वती भगु॒त, मागि॒नि सुखु स्वरूपजो॥
समुझी जनि सामी चए, उल्टी इशारत॥
चढ़िया चेतन चित्तते, कटे सभ कल्स॥
ऐन अभेद अध्भूत, बा॒णी बो॒लिनि बेहदी॥

२८५२

भागि॒वति भगु॒ति, कई जहिं गुर ज्ञाति सां॥
मिटी तहिंजे मन मों, सहजे ममत्व मति॥
वर्ती वेद वीचार सां, रङ्गिली[2] रहति॥
जाग्रत में सुषुप्त[3], सदा रहे सामी चए॥

(१) जाग्रता जे आनंद में (२) प्रेम[illegible] (३) जाग्रता जे आनंद में

२५५३

भागि॒वती भगति, वि॒ले को गुर्मुखु करे॥
कढ़ी जहिं अन्द॒र मों, सामी ममत्व मति॥
चीटीअ ऐं कुन्चर में, साक्षी दि॒से सति॥
रात्यूं दी॒हां रति, रहे पुर्ष अगम सां॥

२५५४

भागि॒वती भग॒ति, वि॒लो को गुर्मुखु करे॥
रंगीली रस भरी, रखी जहिं रहति॥
सुखी थिए सामी चए, मेटे ममत्व मति॥
अन्भय में इस्थति, सदा रहे सुखदेवजां॥

२५५५

भागि॒वती भग॒तु, कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
जागी॒ जहिं जग॒त जो, वार्यो खातो खतु॥
सामी मिल्यो स्वरूपसां, मेटे सभु ममत्वु॥
गोर्खु नादु॒ दतु, साख दि॒यनि सभ सुखजी॥

२५५६

भागि॒वती भग॒तु, कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
मिट्यो जहिंजे मन मों, सामो ममत्व मतु॥
अन्द॒रि बा॒हरि नभ ज्यां, दि॒से साक्षी सतु॥
वारे वेठो खतु, जीअन्दे पहिंजो जमसां॥

२८८७

भाग्ग्रिवती भगतु, पासे थिए न पीअखों ॥
जन्खे दि्नी सतिगुरूअ, सची मति महबत ॥
दि्सनि नितु देहीअ में, मधभरी मूर्त ॥
कटे सभ कल्प, सामी माणिनि सान्ति सुखु ॥

२८८८

भाग्ग्रिवती भगु्तु, पासे थिए न पीअखों ॥
मिटयो जहिंजे मन मों, सामी मोहु ममत्व ॥
वर्तें विधि बीचार सां, ऐन अभेद उपरतु ॥
राई ऐ पर्वतु, सभ ज़ांणे सामी चए ॥

२८८९

भाग्ग्रिवती भगु्तु लिके छिपे कीनकी ॥
दि्ठो जहिं देहीअ में, अन्भय आत्म तत्व ॥
माणे मौज मुक्ति जी, मेटे सभु ममत्व ॥
राई ऐ पर्वतु, सभु ज़ाणे सामी चए ॥

२८९०

भाग्ग्रिवती भगु्तु, लिके छिपे कीनकी ॥
दि्ठो जहिं देहीअ में, अन्भय आत्म तत्व ।।
माणे मौज मुक्ति जी, मेटे सभु ममत्व ॥
राई ऐ पर्वतु, सामी ज़ाणे स्वप्न सभु ॥

२५६१

भागि॒वती भज॒नु, हर्दमि कर्नि हिकिड़ो॥
जहिंमें तूं मा नाहिंका, नको माया मनु॥
डि॒सनि देहि अभिमान रे, परमेश्वरु पूरणु॥
सदा मस्तु मगनु, सामी रहे स्वभाव में॥

२५६२

भागि॒वती भलो, सामी घुरनि सभजो॥
रखनि न रतीअ जेत्रो, रिदे मंझि रलो[1]॥
जागी॒[2] हयाऊं जग॒त्र जे, लेखे उते[3] खलो॥
करे पाकु पलो, सन्मुखु थ्या स्वरूपजे॥

२५६३

भागि॒वती भारी, लख्य लखाइनि अन्भई॥
समुझे को सामी चए, उतमु अधिकारी॥
जागी॒ जहिं जग॒त्र जी, पटी नेसारी॥
बेहद जी बा॒री, पटे वेठो पाकु थी॥

२५६४

भारी उपकारी, सामी मिल्यो सतिगुरू॥
जहिं अविद्या[4] कोट जन्म जी, क्षिण में निवारी॥
सूर्त सुपेर्युनि जी, घट घट डे॒खारी॥
आत्म खूमारी, चढ़ी वेई चितते॥

---

(१) बुरो (२) ज्ञान उपदेसु (३) वॾो जग॒त्र जे प्रपंच खे सटे छडि॒यो (४) ऊंधह

२५६५

भारी खेपु[1] चढ़ियो, अविद्या[2] जो हिन जीअखे ॥
पलमें शाहु गदारु थ्यो, पलमें पीर चढ़ियो ॥
रहे पहिंजे हालमें, अठई पहर अर्यो[3] ॥
सामी अण[4] घर्यो, नितु घाट घड़े आकास में ॥

२५६६

भारी खेपु चढ़ियो, अविद्या जो हिन जीअखे ॥
मञे वेठो पाणखे, पीरु फकीरु पढ़ियो ॥
रहे काया कुन्ड में, अठई पहर अर्यो ॥
सामी अण घर्यो, घड़े घाट आकासजां ॥

२५६७

भारी पटु[7] प्यो, अगयों वाच[8] अवाच जो ॥
साक्षीअ खे सामी चए, तहिं जोड़े जीउ कयो[9] ॥
अणहून्दे दर्याहजे, वह में वञी प्यो ॥
जदी साधूअ सङ्गु थ्यो, तदी जागी ज्युर्यो पाणमें ॥

२५६८

भारी प्यो पटलु[11], अन्धनि खे अविद्या जो ॥
भवनि भौसागर में, खयों खाम खलतु ॥
सहजे सुजागनि जी, मिटी ममत्व मलु ॥
जागी जन्मु सफलु, सामी कयाऊं साध सङ्गि ॥

---

(१) खुमारु (२) अज्ञानजो (३) अटिक्यो (४) अण डिठो (५) नितु अंदर में प्यो डिसे (६) डिसो सलोक २५६५ जो पदा अर्थु (७) पर्दो (८) मायाजो (९) ईश्वर जो ख्वाब जो जाहे तहि सों माया पर्दो डिनो (१०) जहिं हे अण ठहंदरु मनुष्य सरीरु ठाहियो (११) पर्दो (१२) मायाजो

२८६९

भारी भर्मु प्यो, जुदाईअ जो जग में॥
मारे तहिं माणुहुनि जो, अकुलु गुमु क्यो॥
सामी बची को साध संगि, को बर्यामु[1] ज्यो॥
बिना बोध ड्यो, डिसे कीन अख्युनिसां॥

२८७०

भारी भूतु प्रेतु, लोभु लगो लोकनि खे॥
काया माया कुल सां, हर्दमि रखनि हेतु॥
रहे अलेपु आकास जां, को सामी सन्तु सुचेतु॥
डिठो जहिं अद्वैतु, अन्दरि बाहरि आत्मा॥

२८७१

भारी भौसागरु, लहर्यूं मारे लोभ जूं॥
लोड़े बोड़े लोकनि खे, विझी कुन[1] कपरु॥
को प्रेमी लंघे पारि प्यो, छदे मोहु मकरु॥
पूरणु परमेश्वरु, सामी डिसी सील्लु थ्यो॥

२८७२

भारी लगी भिट, अविद्या जी अन्धनि खे॥
पुठीं[3] देई पाणखे, कनि कोट कष्ट॥
सामी सुजागनि जे, वित[4] में चेतनु चिट॥
ऐन अभेदु अमिट, माणिनि दौर दर्संजा॥

(१) बहादुरु–जाणूं–प्रेमी सन्तु (२) भर्म जो पर्दो (३) गुमु करे–विसारे–भुलाए (४) सरीर में सदा चेतन सता में लीनु रहनि

२८७३

भारी सभ सूक्षमु, अथी अरूपु आत्मा ॥
अचे वञे कीनकी, अन्भय रूपु अगमु[1] ॥
समुझी दि॒सु सामी चए छदे॒ भेदु भर्मु ॥
दे॒वाने ज्यां द॒मु[2], वारे वेहु वजूद॒में[3] ॥

२८७४

भारी हिक बला[4], वेढ़े वेई सभ खे ॥
जोड़े जीअनि खे, थी ह॒णे रात्यूं दी॒हं खला[5] ॥
मोड़े मूहुं मुठीअ खों, वेठा के वि॒ला ॥
जन्खे ज्ञान कला[6], सामी दि॒नी सतिगुरूअ ॥

२८७५

भाव भगति जी भंग, पीती जनि प्रतीति सां ॥
से दे॒ई कन्डि[7] कल्प खे, सामी थ्या सबं॒ग[8] ॥
वेठा अन्भय[9] तखित ते, टंग ते रखी टंग ॥
रात्यां दी॒हां रंग[11], मिली कनि महबूब सां ॥

२८७६

भाव भगति जी भंग, पीती जनि प्रतीति सां ॥
से सामी पिण्ड[12] मटे, थ्या महबती[13] मलंग ॥
सुम्ह॒यां सुषुप्त[14] सेजते, टंग ते [15] रखी टंग ॥
रात्यूं दी॒हां रंग[16], मिली कनि महबूबसां ॥

---

(१) अथाहु–बेपर्वाहु (२) स्वासो स्वास (३) एकान्त में अन्तरि वृितीअसां (४) माया (५) फासाए–अटिकाए (६) सिक्षा–उपदेसु (७) प्रपंच खों पासो करे (८) पूरणु (९) समाधीअ में (१०) आसणु करे (११) मजा–आनंदमें (१२) फुर्ना छदे॒ (१३) प्रेमजो मस्ती में लीनु थ्या (१४) वेठा समाधीअमें (१५) आसणु करे (१६) आनंद

२८७७

भीती सा भीती, बाकी रखु रहति सां॥
पुछी वदु प्रेम्युनि खों, सची रस रीती॥
सामी सावाधानु थी, बाजी[1] जनि जीती॥
पाकी[2] पलीती, लंघे चढ़िया लख्यते[3]॥

२८७८

भुलनि खों भर्मु, मिटे कीन मरण जो॥
मञे वेठा पाण खे, रतु पुड़ हदु चमु॥
को नेहीं त्रिभय रहे, सामी सम सूक्षमु॥
जहिंखे खातरि जमु, कई समुझाणी सतिगुरूअ॥

२८७९

भुली धार्नि भेष, मूर्ख भेष असुल खों॥
उल्टी दि॒सनि कीनकी, अन्दरि पुर्षु अलेखु[4]॥
जो सिधि करे थो, सभखे सुत्ह[5] साक्षी सेषु॥
ज़ाणिजि मीनु न मेषु, सप्त सां सामी चए॥

२८८०

भुली धार्नि भेषु, मूर्ख भेष असुल खे॥
जागी दि॒सनि कीनकी, अन्दरि पुर्षु अलेखु[6]॥
जहिंमें मीनु न मेषु, सामी आदि जुगादिजो॥

---

(१) जन्मु (२) मायावी खिटि खिटि (३) पदते (४) आत्म सता (५) जो सभ खे ज़ाणे थो–सभमें व्यापकु आहे (६) आत्म सता

२५८१

भुली पाण भिटे, थो मूर्खु चुहुरीअ चाहसां॥
घटि वधि जाणी पाणखे, रात्यूं दीहं पिटे॥
तदी छोति भिटे, जदी सामी मिले स्वरूपसां॥

२५८२

भुली भज चट्ठ, भवनि भौसागर में॥
खणी नितु खपि जो, सामी साणु ट्ठ[1]॥
खेप[2] खटी घरि आयो, को प्रेमी पिण्ड सट्ठ॥
लोई शाल पट्ठ, जाणनि अन्भय उनजो॥

२५८३

भुली भोगनि काणि कोहु वहें थों वहमें॥
वठी वेन्दुइ ओचिते, मारे कालु मसाणि॥
समुझी तूं सामी चए, मन खे मोड़े आणि॥
मिली मौजां माणि, पाणु[3] वराए पाणमें॥

२५८४

भुली विश्व सारी, सामी अविद्या भर्म में॥
कोर्युनि में को हिकिड़ो, गुर्मुखु वीचारी॥
जहिं मिली साध संगति सां, ममत्व सभ मारी॥
अन्भय जी बारी[4], खोले वेठो खुशि थी॥

---

(१) सरीरु (२) ज्ञान उपदेसु वठी नासुमातु प्रपंचु सटे आत्म स्ता पाणमें जाणी घरजो घरमें पहुतो (३) पहिंजो पाणखे पाणमें लहु (४) अन्भय आत्म सता जो रस्तो टाहे आनंद में वेठो

२५८५

भुली वेई भास, सामी डिसी स्वरूपखे॥
जगत्रु सभोई लय थ्यो, अचे मंझि आकास॥
कटे अविद्या फास, सतिगुर चाढ़यो सीरते॥

२५८६

भुली सभु सन्सारु, देही मने पाणखे॥
जन्मे मरे दुःख सहे, छदे न अहङ्कारु॥
बिले कहिं गुर्मुख क्यो, वास्तव वीचारु॥
डिसी साक्षी सारु, सन्मुखु थ्यो सामी चए॥

२५८७

भुली हिन बन्दे, स्वासु खजानों गुमु क्यो॥
खणी विधाई पाणखे, धिके मंझि[१] धन्धे॥
डीओ[२] बारे घरजो, डिठो कीन अन्धे॥
प्री पाण कन्दे, सहायता सामी चए॥

२५८८

भुले थयड़ा डीहं, आदी घर अपार खों॥
पवे सुधि स्वरूपजो, कृपा विना कीअं॥
धर्ती हरी न थिए, बिना पाणीअ मीहं॥
साध संगति जे नीहं, सामी कार्ज सिधि क्या॥

---

[१] खटि पटि में [illegible] [२] [illegible] री डीओ बारे अन्धे कोन डिठो

२८९

भुले थ्यरा द्रीहं, आदी धाम असुलखों॥
पए सुधि स्वरूपजी, क्रिपा बिना कीअं॥
धर्ती हरी न थिए, बिना पाणीअ मीहं॥
साध संगति जे नीहं, सामी सभु सिधि थ्यो॥

२८९०

भूतु लगो आहे, अविद्या जो हिन जीअखे॥
पाणु पहिंजो पाणमें, वेठो विञाए॥
अणहून्दे सन्सार में, थो अदुलु हलाए॥
मूहुं मढ़ीअ पाए, सामी दि़से कीनकी॥

२८९१

भूतु लगो भारी, अणहून्दो अन्धनि खे॥
देही ज़ाणी पाणखे, नचे नरु नारी॥
रहे अलेपु आकास जां, को विरले वीचारी॥
सटे पिण्ड सारी, सामी मिल्यो स्वरूपसां॥

२८९२

भूतु लगो भारी, समखे भेद भर्म जो॥
पाए भवनि पाणहीं, गि़चीअ में ग़ारो॥
सामी रहे को सूमों, भ्रम जां न्यारो॥
जागी जगु सारो, लई दि़ठो जींहं लख्यमें॥

२५९३

भेषु धरे आयो, ख्याली पाण खलिक में॥
चाह वराए चितसां, नाना रंगु लायो॥
ग़णितीअ लेखे खों परे, अचिर्जु मचायो॥
सामी समायो, जल पपोटो जलमें॥

२५९४

भेषु धरे आयो, खावन्दु पाण खलिक में॥
चाह वराए चित सां, नाना रंगु लायो॥
ग़णितीअ लेखे खों परे, अचिर्जु मचायो॥
सामी समायो, न्यारो रहे न्भजां॥

२५९५

भेद बिना भग़िवानु, सन्त लखाइनि सभखे॥
रखनि न रतीअ जेत्रो, अन्दरमें अभिमानु॥
समुझे को सामी चए, को गुर्मुखु ईहो ज्ञानु॥
पाए दर्सनु दानु, सीत्लु रहे स्वभावमें॥

२५९६

भेद बिना भग़िवानु, सन्त लखाइनि सभखे॥
समुझी थ्या सामी चए, महबती मस्तानु॥
लय ढ़िठाऊं लख्य[1] में, जग़ी सभु[2] जहानु॥
करे अम्रितु पानु, इस्थति थ्या आकास जां॥

[1] जाणप सां लीनु थ्या [2] [illegible] मंझि ढ़िठाऊं

२५९७

भेदु भर्मु भासे, जहिंखे जीव ब्रह्मजो॥
तहिंखे कालु कल्स जो, ग्रहे ग्रासे॥
साख दि॒नी सामी चए, कहिं नेहीअ त्रासे॥
जहिंजो पटु पासे, समुझाए क्यो सतिगुरूअ॥

२५९८

भोगु न दि॒सी भुलु, सामी चए सन्सार जा॥
कालु तुहिंजे कन्ध ते, थो खाए खर्चु असुलु॥
मिली वठु महबूब सां, छदे॒ हैबत हुलु[२]॥
मानुष्य देहि अमुलु, मोटी ईन्दइ कीनकी॥

२५९९

भोगनि भुलाए, छदि॒या जीअ जहानजा॥
भवनि पहिंजो पाणहीं, फाही गलि पाए॥
कालु न दि॒सनि सिरते, वरी वाझाए॥
क्या सभि विञाए, हीरो जन्मु हथनि मों॥

२६००

भोगनि भुलाए, विधा जीअ जहानजा॥
धिका खाइनि धर्म जा, कोट जन्म पाए॥
सामी बचो को सूर्मो, साधूअ जे साए॥
ममत्व मिटाए, मिल्या शुधि स्वरूपसां॥

[१] ज्ञान उपदेसु करे पदी पासि क्यो [२] फिकुर–फुर्ना

२६०१

भोगनि भुलाए, विधा जीअ जहानजा ॥
पाणु पहिंजो पाणमें, वेठा विञाए ॥
सामी समुझनि कीनकी, कोट जन्म पाए ॥
छुटो[1] छुटाए[2], त अचनि अन्भय पदमें ॥

२६०२

भोगिनि भुलाए, विधा जीअ जहानजा ॥
सामी सुम्हया सुखि थी, पेट्ठ गि़चीअ पाए ॥
कालु न दि़सनि कन्ध ते[5], खर्ची थो खाए ॥
लेखो चुकाए, अची घुटीन्दुइ ओचितो ॥

२६०३

भोगनि भुलाए विधा जीअ वहण[6] में ॥
गोता खाइनि गैब जा, कोट जन्म पाए ॥
सामी बचो को सूर्मो, साधूअ जे साए ॥
ममत्व मिटाए, पूरणु दि़ठो जहिं पीअखे ॥

२६०४

भोगनि भुलाए, बिधो जीउ वहणमें[7] ॥
पुठी[8] दे़ई पाणखे, गोता[9] नितु खाए ॥
उल्टी[10] दि़से कीनकी, मूहुं मढ़ीअ पाए ॥
जागयो[11] जागाए, त सुखी थिए सामी चए ॥

---

[१] ईश्वरु [२] क्रृपाकरे [३] वीचार जे [४] रस्ति में [५] स्वास [६] प्रपंचमें [७] प्रपंच में—खटि पटि में [८] पाणखे न जाणी [९] सन्सार समुद्रमे प्यो भिटिके [१०] प्रपंच खों पासो करे अन्तरि हृदय झीणो नथो दिसे [११] ईश्वरु—सतिगुरू दयाकरे त...

२६०५

भोगनि भुलायो, प्रत्क्षु पूरणु आत्मा॥
सनि जाणी सन्सार खे, भर्मे भुलायो॥
सामी संगि साधूअजे, उल्टी घरि आयो॥
नकी विञायो, नकी पातो पाण रे॥

२६०६

भोगनि भुलायो, सभ कहिंखों सुधी॥
सतिगुर पहिंजे सच सां, जहिंखे जागायो॥
सुख दु:ख जे सागर में, बिझी वहायो॥
उल्टी घरि आयो, सामी चए को सूर्मो॥

२६०७

भोगनि मंझि भुली, प्या जीअ जहान जा॥
मरनि मनि मर्म रे, रात्यां दींहं रुली॥
सामी लधो कहिं सूर्मे, अन्भय घरु असुली॥
मेटे कल्प कुली, इस्थति थ्यो आकास जां॥

२६०८

भोगु भोगे भारी, कूड़ा रजनि कीनकी॥
खयों वतनि सिरते, तमा नगारी॥
सुखी रहे सामी चए, को विलो विचारी॥
बेहद जी वारी, पटे दिठो जहिं पाण खे॥

२६०९

भोग भोगे भोगी, रजनि न रतीअ जेत्रो॥
जन्जी माया मोहसां, मति कई मोगी॥
माणे सुखु स्वरूपजो, को जागायो जोगी॥
सदा निरोगी, सामी रहे स्वभावमें॥

२६१०

भोले भुलाए, सभखे माया मोहिणी॥
मति खसे भोगो करे, वहमें वहाए॥
सामी बचो को सूमों, साधूअ जे साए॥
वेठो वजाए, नंगारो निबाण जो॥

२६११

भोले भुलायो, अणहून्दे अज्ञान जे॥
पुठी[1] देई पाणखे, दह दिसां धायो[2]॥
स्वपन[3] में सामी चए, सभु रंगु[4] रचायो॥
अखि[5] खुल्ये आयो, एन अभेद आकासमें॥

२६१२

भोलो थ्यो भारी, जुदाईअ[6] जो जगमें॥
तपी[7] तहिंजे ताव[8] सां, नचनि नर[9] नारी॥
सामी वेठो सम[10] थी, को विलो वीचारी॥
बेहद जी बारी, पटे दिठो जहिं पाणखे॥

(१) पाणु भुलाए (२) भिटिक्यो (३) मिथ्या सन्सार में (४) प्रपंच में भुल्यो (५) ज्ञानु मिल्यो त भोलाओ छुटो साक्षी चेतन आत्म अन्भय थ्यो (६) ईश्वर जो भोलाओ थ्यो (७) भुली (८) भर्म सां (९) प्या भिटिकनि (१०) ज्ञानु प्रप्त करे (११) बिना हद-अथाहु दर्वाजो खोले दिठो (साक्षीअ जो अन्भय थ्यो)

२६१३

भौसागरु[1] भारी, लहर्यूं मारे लोभजूं ॥
गोता[2] मारे गैब जा, तहिंमें विश्व सारी ॥
लंघे चढ़ियो लख्य[4] ते, को उतमु अधिकारी ॥
सामी सच्चारी, मुखि रखी मौजां करे ॥

२६१४

भौसागरु भारी, लहिर्यूं मारे लोभजूं ॥
सामी तहिंमें समुझ रे, वहे विश्व सारी ॥
लंघे चढ़ियो लख्य ते, को उतमु अधिकारी ॥
समता सचारी, रखी पहुता पदमें ॥

२६१५

भौसागरु भारी, लंघियो वञे न लख्य[6] रे ॥
तोड़े सभि साधन करें, जोगु जतन जारी ॥
समुझे को सामी चए, उतमु अधिकारी ॥
खोआरीअ जी खारी, सटे विधी जहिं सिरतों ॥

२६१६

मउज नशीनु चेलो, वेहे गुर गादीअ ते ॥
जहिंखे लगो ज्ञान जो, गैबी गुलेलो[8] ॥
दिसे देहि अभिमान रे, अलखु अकेलो ॥
सदा सुहेलो[9], सामी रहे स्वभाव में ॥

---

(१) सन्सार सागर में (२) फुर्ना–संकल्प (३) अजायो प्यो मिटिके (४) जाणप में (५) दिसो सलोक २६१३ जो शब्दा अर्थु (६) बिना ज्ञान जे (७) प्रपंचु मिटिकणु (८) अलख प्रेम (९) सोभ्यावानु

२६१७

मढ़ीअ[1] मंझि मढ़ी, तहिंमें महां मढ़ी॥
पाण[2] मढ़ीअ खों पारि थी, ड्रिसे चिट चढ़ी॥
सन्से जी सामी चए, करे न कन्डि खरी॥
भञी भर्म भड़ी, नाथु मिली निजु नाथ सां॥

२६१८

मता मन मोटो, मिली थिए माया सां॥
हणदुइ कालु कहर जो, सामी चए सोटो॥
जाग़ी अविद्या[4] निंड्र मों, ख्यालु सटे खोटो॥
छदे थीउ छोटो[5], त प्री करेई पहिंजो॥

२६१९

मधुरु मधुरु मुर्ली, कान वजाई मुखसां॥
बुधी गोपीअ गुवार जी, सामी सुर्ति भुली॥
अविद्या ग़न्ढि खुली, ड्रिसी मूहुं महबूबजो॥

२६२०

मन जी ग़ाल्हि ग़णी[1] कल्स कटे कीनकी॥
स्याणा पण्डत सूर्मां, बीठा हथ हणी॥
सामी सटि मथेतों, अविद्या पिण्ड खणी॥
त अचे पाण धणी, महिर करेई मौज जी॥

---

(१) मानुष्य सरीरु रूपी मढ़ीअ में हृदय रूपी महां मढ़ी (२) पाण साक्षी चेतन क्लाजो आहे तहिंखो परे दस्वे द्वार में अन्भय करे ड्रिसण सां प्रतीति थींदो (३) सन्सा भर्म मिटी वेंदा तदी पाण खे साक्षी सता ज़ाणी सतासां अभेदु थींदो (४) मायाजे भोलाए मो (५) निमाणो (६) वीचारु-फुर्नो-सन्सो (७) अज्ञान

२६२१

मनन जी माखी[1], चटे जीअ चर्या थ्या ॥
काया माया कुलमें, कल्त नितु कांखी[2] ॥
कहिं सुजागु[3] सहीकई[4], सामी थी साक्षी ॥
छदे हलाखी,[5] जुर्यो रहे जगदीस सां ॥

२६२२

मनन[1] मंझि मुठा, ज्ञानी ध्यानी ग्रहस्ती ॥
सूधी राह छदे करे, पाइनि पेर पुठा ॥
वारो[2] वार समुझ रे, कल्त काल कुठा ॥
मूर्ख रहनि रुठा,[3] सामी शुधि स्वरूपखों ॥

२६२३

मनमुख मूहुं फेर्यो, गुर्मुखु सदा सन्मखु रहे ॥
मनमुखु समुझे कीनकी, अविद्या[4] घुण घर्यो ॥
सामी निवार्यो, गुर्मुख सन्सो जीअजो ॥

२६२४

मन मंदांयूं जे क्यूं, थो दिसी हाउं दुके ॥
बिना ताण[11] नबीब[12] जे, हर हर[13] प्यो भिटिके ॥
सामी फकीं[14] फके, तदी निम्राणो निहालु[15] थे ॥

---

(१) मस्ती (२) प्यासी–धुजाऊ (३) ज्ञानीअ (४) अन्भय कयो (५) प्रपंचु (६) मां पणे में (७) बेसमुझथी वरी वरी प्या जन्म मरण जे चक्र में भिटिकंदा (८) सदा ईश्वर पंर प्या भिटिकनि (९) माया जे जार में फाथलु (१०) मिटार्यो–कढियो (११) याद्रिकये (१२) ईश्वर जे (१३) जन्म मरण चक्र में प्यो अचे (१४) उपदेसु वठे-ज्ञानु प्राप्त करे (१५) उधारु थे

२६२५

मन्यो जहिं चयो, गुमुंख गरीबीअ सां॥
तहिं सुजाग़े सूमें, सर्व त्यागु क्यो॥
ढ़िठाईं आकास जां, रमी रामु रहयो॥
ऊन्हो अग मयो, सामी माणे सान्ति सुखु॥

२६२६

मन्यो जहिं चयो, सन्तनि सापुर्षनि जो॥
तहिं सुजाग़े सूमें, सर्व त्यागु क्यो॥
ढ़िठाईं आकास जां, रमी रामु रहयो॥
ऊन्हो अग मयो, सामी माणे सान्ति सुखु॥

२६२७

मन्यो जहिं वचनु, सामी साध संगति जो॥
करे वसि वेसाह सां, वेठो मनु पवनु॥
सहजे तहिं सेवक ते, प्रभू थ्यो प्रसनु॥
ज़ाणी पहिंजो जनु, पलक पराहूं न थिए॥

२६२८

मने मन[1] खललु, थो नाहकु तप्ति[2] में तपे॥
आहे साक्षी सभजो, सदाई सीत्लु॥
भर्म मंझि भुली करे, ज़ाणे चलु[3] अचलु[4]॥
सामी जल खे मलु, कद़ी लग़े कीनकी॥

---

(१) मनजी खटिपि (२) प्रपंच में फासे (३) नासुमानु थो समुझे (४) पर सदा काइमु आहे (५) जीए जलु शुधु आहे तीए साक्षी आत्म सता सदा इस्थरि आहे

२६२९

मनु पवनु मेले[1], महबती[2] मगनु[3] थ्यो ॥
चढ़ी[4] गैब गगन में, खुशीअ सां खेले ॥
सन्सा ससि ठेले, सामी डि॒नाई सीरमें ॥

२६३०

मनु मूसो[5] मर्कटु, भूतु प्रेतु सिंघु स्यालु सर्पु ॥
नचे[6] नचाए पाणहीं, बणी नाना बाजी नटु ॥
साख डि॒ए सामी चए, को नेहीं निषकपु[7] ॥
पीउ पूरणु प्रघटु, जागी डि॒ठो जहिं जोतिमें ॥

२६३१

मनु मोहे[9] मधगरु, जहिंजे अशिक[10] अपारु[11] थ्यो ॥
लोड़े लधो लिवं सां, दि॒ल्मों तहिं दि॒ल्बरु ॥
कहिंखे[12] सले कीनकी, पाए प्रेम नगरु ॥
सदा बागु बहरु, सामी रहे स्वभावमें ॥

२६३२

ममुष्यु महबती, मस्तु रहे महिराण में ॥
चढ़ी जहिंजे चितमें, महबत जी मस्ती[15] ॥
सूक्षमु थ्यो सामी चए, मारे मनु[16] हस्ती ॥
ज़ाणे सुञ[17] वस्ती, रहे अलेपु आकास जां ॥

(१) वसिकरे (२) प्रेमी (३) आनंद में प्राप्त थ्यो (४) दस्वे द्वार ते पहुची आनंद प्यो वठे (५) कूओ (६) बांदरु आदी रूपु आहे (७) जो पाणही प्यो अनेक नमूना करे ऐं भिटिके बाजीगर वांगे (८) शुधु आत्म ज्ञानी जहिं सभु ज़ाणी डि॒ठो आहे (९) वसिकरे (१०) प्रेम (११) पदते पहुतो (१२) तहिं हृदय कोष खे शोधे वीचारे आत्म सता जो अन्भय क्यो (१३) अहिरो आनंदित सुख में पहुतो जो कहिखे चई न सघे (१४) सदा आनंद में प्यो गुजारे (१५) प्रेम जे सिक में प्यो लीन थे [१६] सत इन्द्रयुनि खे वसि करे फुर्ना फिटा कया [१७] सभ भास्कारी भुलाए छदे

२६३३

मर्जीअ खे मारे, सामी सवे कोनको॥
पेही जहिं पाड़ कढी, नानत[२] निवारे॥
हद बेहद जे विचमें, वेठो रूपु धारे॥
जादे निहारे, तादे सजणु सामुहों॥

२६३४

मर्म वराए मनु, सुखी सीत्लु न थिए॥
तोड़े सभि साधन करे, वञी वासे बनु॥
ईहा गाल्हि अन्भई, को समुझे साधुजनु॥
जहिंजो[६] मनु अमनु, सामी क्यो सतिगुरूअ॥

२६३५

मर्मु न रखनि मनि, मूर्ख मानुष्य देहिजो॥
भुली भौसागर में, पहिंजो पाण भवनि॥
दिनी साख सुप्ति सां, सामी सचारनि॥
जागी[८] दिठो जनि, अन्दरि बाहरि आत्मा॥

२६३६

मरी जनि महबत, कई कर्ता पुर्षसां॥
से साधू से सूर्मा, से आशिक अर्पत॥
चढ़िया अन्भय अछते, लंघे पंजई तत्व॥
गोर्ख नार्द दत, साख दियनि सामी चए॥

---

(१) इन्छा–खाश–वाशिना (२) मां पणो जहिं कढियो [३] सदा हृदय में आत्म अन्भय में लीनु थी प्यो व्राट रूप दिसे [४] पोइ सभमे हिक आत्म सता प्यो दिसे [५] मन जे भर्म नासु ध्यण खों स्वाइ कदीं सुख जी प्रात्ती न पाईंदो [६] जदी मनु मांपणे खों सतिगुर पासे करायो तदी मुख खे पहुतो [७] लज [८] भिटिकन [९] आत्म अन्भय करे दिठो [१०] पाणु कढी

२६३७

मरी[1] जहिं मजो, वदो साध संगति जो ॥
सो सुत्ह सिधि स्वरूपजो, छदे कीन छजो[2] ॥
लय[3] डि़ठाईं लख्य में, सामी जगु सजो ॥
सदा रहे रजो, करे न भीष सुख्यनि जां ॥

२६३८

मरी सूरु[1] सती[2], भोगे भोग सुगंजा ॥
सुत्ह सिधि स्वरूपसां, को मिल्यो महबती ॥
जहिंखे डि़नी सतिगुरूअ, गहरी ज्ञान गती[3] ॥
जीए लोई रंग रती, तीए रतो रहे रंगमें ॥

२६३९

मस्ती[7] दानाई[8], बुई व्याईअ[9] बुधिमें ॥
समुझे को सामी चए, वासुलु[10] वेसाही ॥
डि़ठो जहिं अख्युनि सां, अचिर्जु इलाही ॥
फुर्नें जी फाही, कटे चढ़ियो कोटते ॥

२६४०

महबत जन्जे मनि, से पाणहीं पधिरा ॥
दरि दरि देवाननि ज्यां, भुली कीन भवनि ॥
सामी साध संगति सां, मिली मौजां कनि ॥
रता रंगि रहनि, सदा सुपेर्युनि सां ॥

---

(१) पाणु कढी (२) मजो–स्वादु–रसु–आनंदु (३) सभु पाणमें डि़ठाईं (४) बहादुरु (५) पतिव्रिता स्त्री (६) कला–शक्ती (७) मां मस्तु (८) मां स्याणो (९) मां पणेजे द्रुतमें (१०) जाणं

२६४१

महबत जन्जे मनि, से पाणहीं पधिरा॥
ड़िसनु पसी दोस जो, रात्यूं डीहां रहसनि[1]॥
भर्या सागर प्रेम जा, अन्भय रसु चखिनि॥
सामी कीन लिकनि, धर्तीअ ऐ आकास में॥

२६४२

महबत जन्जे मनि, से पाणहीं पधिरा॥
पीअनि पीआरिनि प्रेम रसु, ड्याई ड़ुई ब़नि॥
सामी सदा रहनि, अनल जां आकास में॥

२६४३

महबत जन्जे मनि, से पाणहीं पधिरा॥
हथें[2] पेरें पेट भरि, सामी सदा रिढ़नि[3]
जीअण मरण दुःख सुख जो, सन्सो सोचु न कनि॥
चड़ी प्री पसनि, लंघे अविद्या[4] सिन्धु खों॥

२६४४

महबत जन्जे मनि, से रहनि निमाणा जग़में॥
सामी सुपेर्युनि जी, सदा भड़ रखनि॥
लाभाली[5] ज़ाणी करे, कीनो[6] किबिरु न कनि॥
आज्ञा मंझि रहनि, ज़ाण विञाए पहिंजी॥

---

(१) खुशि थ्यनि (२) कम कंदे घुमंदे सुम्हये (३) सदा लैलीन्ता में प्या गुजारिनि (४) मायात्री संसार जे अज्ञान खां पासो करे सदा आत्म अन्भय में रहनि (५) लाभु हाणी—चङो मन्दो (६) मांकियो

२६४५

महबत जन्जे मनि, से सदाई सन्हिरा॥
सामी सुपेर्युनि खों, पलक न पासो कनि॥
अन्दर ब॒ाहरि दह दिसां, सम स्वरूपु डि॒सनि॥
रता रंगि रहनि, ममत्व मिटाए मनजी॥

२६४६

महबत जी माखी, चटे डि॒ठी जहिं चितसा॥
सटे विधी तहिं सिरतों, हैबत हलाखी॥
ज॒ाणे सभु कर्ता करे, राति डी॒हं राखी॥
सामी थी साक्षी, माणे मौज मुक्ति जी॥

२६४७

महबत जी मारी, लधी जहिं लोड़े करे॥
लगी तहिंखे अशिक जी, तमा रे ताड़ी॥
डि॒से डि॒हारी, सामी सुपेर्युनि खे॥

२६४८

महबत जी मिसिरी, खाधी जहिं गुर ज्ञानि सां॥
सामी सुख सन्सार जा, तहिं खों व्या विसिरी॥
कल्प काल दीवारि खों, प्यो पर्ची पारि किरी॥
अचे कीन फिरी, जनम मरण जे दुख में॥

२६४९

महबत जी मेन्दी, लाथी जहिं लिङनि खे॥
सा सामी सुपेर्युनि दे, वेसासिणि[1] वेन्दी॥
पर्चीं पेराठयुनि[2] जूं, मिन्थूं मञीन्दी॥
सुत्ह थी सेन्धी[3], सुम्हन्दी[4] सुषुप्त सेजते॥

२६५०

महबत जे[5] मैदान में, मोअनि[6] कई मजिलस॥
माहिलु थ्यो महिराणमें, चखी[7] चटीअ चस॥
मोटी मोटयो कोनको, रिढ़यो मंझि रहस॥
सामी प्यारे पुर्ष, महबती मस्तानु क्यो॥

२६५१

महबत जो मज़्कूरु[9] बुधो जहिं ड्याईअ रे॥
अचे तहिंजे जीअमें, जागयो भगति अंगूरु[10]॥
देहि अभिमानु छदे करे, थ्यो गगन में गर्कूरु॥
हाजुरां हजूरु, सामी दिसे सुप्री॥

२६५२

महबत बार्यो मचु[12], अजाइबु अन्दर में॥
सरी ब्यो सामी चए, कूड़ो कल्स कचु[13]॥
सेष रहयो हिकु सचु, साक्षी सभ सन्सार जो॥

---

(१) प्रेमिणि (२) सन्तनिसां (३) वांदो थी (४) आनंद मे लैलीनु थी सुखी गुजारे (५) प्रेम नगरमे (६) सन्सार खों पासे थी अन्तरि वृिती लगाए लैलीन्ता जी मजिलस कई (७) परिप्या–प्रसिधि थ्या (८) सदा आनंद जो रसु प्या वठन्दा रहनि (९) वरी जन्मु मरणु पासे जाणी आनंद रहस में मसतु गुजारिनि (१०) वचनु–शब्दु–मन्तु (११) फलु–प्रेमु (१२) इस्थति (१३) अग्नि (१४) प्रभु

२६७३

महबत मध[1] भरी, ग॒ाल्हि ब॒धाई सतिगुरूअ॥
समुझी मनु सीत्लु थ्यो, बेहद ज्योति[2] ब॒री॥
सन्धे जी सामी चए, वेई टिकड़ टरी॥
तमां तारि तरी, पारि डि॒ठो पीउ पहिंजो॥

२६७४

महबत मंझि मर्मु[4], ज॒ातो जहिं गुर ज्ञानि सां॥
वार्यो[5] जंहिं वजूद[6] में, देवाने[7] जां दमु॥
डि॒ठाई अख्युनि सां, अलखु ऐनु अगमु॥
सामी सभु आलमु, आहे जहिंजे आसिरे॥

२६७५

महबत मस्तु करे, आशिक चाढ़िया[9] अर्शते॥
जिते डी॒ओ तेल रे, अगम[10] ज्योति ब॒रे॥
ज़ाण[11] विञाए पहिंजी, वेठा ध्यानु धरे॥
पलक न थिए परे, सामी सुपेर्युनि खां॥

२६७६

महबत मस्तु करे, आशिक[12] नियां असगाह[13] में॥
पचीं क्याऊं पहिंजो, सामी पटु[14] परे॥
दि॒सी मूंहुं महबूब जो, वेठा ध्यानु धरे॥
प्री पाग भरे, डि॒ए प्यालो नूरजो॥

---

(१) आनंद भरी (२) प्रकासु थ्यो (३) घुर्जनि सां भर्यलु सरीरु घुर्जों छडे पारि तर्यों पहिंजो पाणमें पाणु डि॒ठो (४) इशारो-अटिकल-हिसाबु (५) मार्यो-क्यो (६) हृदय में (७) पाणु-मापणो कढी समाधि मे इस्थति थ्यो (८) अन्भय जे अख्युनि सां आत्म जोती प्रकासु अन्भय थ्यो (९) पद ते चढिया (१०) अथाह ज्योां पणो कढी (१२) प्रेमी (१३) आनंदमें (१४) अज्ञानु

२६५७

महबत मिठाई[1] आई देस अगमखों[2]॥
प्रेमी सभि प्रसनु थ्या, खुशीअ सां खाई॥
सदिके क्याऊं सुख तों, वाई वदाई॥
सामी सदाई, माणिनि दौर दर्सजा॥

२६५८

महबत मिठाई[3], मिले मुल्ह अपारसां॥
वञी पुछो तन्खों[5], दि॒ठी जनि खाई॥
चढ़िया अन्भय[6] अछते, विञाए वाई[7]॥
सामी सदाई, सन्मुखु दि॒सनि सुप्री॥

२६५९

महबत मुठा[8] ठग॒[9], भारी पंज भर्म जा॥
मोहे मारे मति खसे, सभखे कनि डगमग॒[10]॥
के सुजाग॒ा सूर्मा, रहनि ऐन अलग॒॥
सामी थी सर्बग॒य[11], माणिनि मौज मुक्तिजी॥

२६६०

महबत मुहिंजो मनु, तुहिंजे सिक सोघो क्यो॥
लूअं लूअं मंझि लग॒ी रहियो, तके तुहिंजो तनु॥
पुछे पुकारे सद॒ करे, ब॒धे सभु वचनु॥
दुःखीअ खे दर्सनु, सुततु दे॒ सामी चए॥

---

(१) आनंदु (२) हृदयमें प्राप्ति थी (३) आनंदु (४) अथाह सा—गुरक्रिपासां (५) सन्तनि खों (६) ऊंच पदतें (७) पाणु—मांपणो विञाए (८) कढिया (९) कामु क्रोधु आदी (१०) ढावा ढोलु कनि—नासु कनि (११) पूरणु

२६६१

महबत्युनि खों मीतु, पलक पराहूं न थिए॥
लख्य लखाई सतिगुरूअ, जनि ते पर्मु पुनीतु[1]॥
दे॒ई कन्दि कल्प खे, थ्या सीत्लु सुर्जीतु॥
ग्रहस्त मंझि अतीतु[2], सदा रहनि सामी चए॥

२६६२

महबत्युनि जो मतु, कामिलु आहे हिकिड़ो॥
सचु ज़ाणनि सांईअ खे, ज़ाणी जूठि जगतु॥
सामी पुछु प्रतीति सां, गोरखु नाई दतु॥
छदे॒ वेल वखतु, लंघे चढ़िया चिटते॥

२६६३

महबत्युनि जो मनु, सीत्लु रहे स्वभावमें॥
सामी कनि स्वरूपजो, बिना भेद भजनु॥
घटि वधि वाणीअ वाचखे, कल्पी दि॒यनि न कनु॥
कढी कानो पनु, दि॒सनि अन्भय अनाज[3] खे॥

२६६४

महबत्युनि प्रमाणु[4], पर्चो लधो पूर्बो[5]॥
जिते तूं मां नाहिं का, नको दानु इसनानु॥
नको जीउ न ईशु को, नको ज्ञानु ध्यानु॥
सामी चए समानु, पुर्षु वसे परमात्मा॥

---

(१) क्रिपालू (२) न्रिलेप थी (३) अनाज रूपी साक्षी चेतनु (४) त्रिबा॒णु पटु (५) असुल जो

२६६५

महबत्युनि मज्कूर[१], वेही क्यो पाणसां॥
अविद्या जो अन्द्र मों, सभि कढयाऊं सूरु[२]॥
हाजरां हजूरु, सामी दिसनि सुप्री॥

२६६६

महबत्युनि मज्कूरु[३] सामी सभु सही क्यो॥
दि॒ठाऊं दे॒हीअ में, किल्लो[४] ऐ कोहिनूरु[५]॥
कहीं अगि॒यों कण जेत्रो, पधिरो कनि न पूरु[६]॥
सो कीअं सलिनि सूरु[७], जहिं कारणि जोगी थ्या॥

२६६७

महबत्युनि मजिल्स, पर्ची कई पाणमें॥
बो॒लिनि वाक्य वेसाहजा, सामी साणु रहस्य[८]॥
माणे दौर[९] दर्स, इस्थति थ्या आकासजां॥

२६६८

महबत्युनि मरणो, सामी रख्यो सिरते॥
वदाऊं वेसाह सां, साधूअ जो सर्णो॥
इस्थति थ्या आकास जां, छदे॒ पाण पणो॥
जा॒णनि रसु घणो, सुत्ह सिधि समाधि में॥

---

(१) वीचारु (२) फुर्नो (३) वीचारु–रस्तो (४) ठिकाणो (५) जोती स्वरूपु चिमत्कारु (६) कर्तव्य (७) धुर्ज–तेजु (८) प्रेम सां (९) आनन्द अवस्थाजा

२६६९

महबत्युनि मार्यो, गैबी गोतो[1] घरमें॥
अन्मय लालु लही करे, जीउ जुसो ठार्यो॥
निर्खी[2] निवार्यो[3], सामी डि॒सणु देह्जो॥

२६७०

महबत्युनि माड़ी[4] डु॒बी दिलि दर्याहमें॥
लालु लधाऊं अण मुल्हो, मर्म रे भारी॥
सामी विश्व सारी, जा॒गनि तेजु तहींजो॥

२६७१

महबत्युनि माड़ी[5], लधी लख्य[6] अगम[7] जी॥
तहिंमें लाए लालु थ्या, तमां[8] रे ताड़ी[9]॥
गा॒ल्हि न कर्नि गुझजी, सामी उघारी।
डि॒सनि डि॒हाड़ी, पहिंजे अख्यें पाणखे॥

२६७२

महबत्युनि मिड़ी, मजिल्स कई पाणमें॥
पीअनि पीआर्नि राम रसु, वाक्यनि साणु विढ़ी॥
सुत्ह प्यो सामी चए, चेतनु चंडु॒ खिड़ी॥
रहतिवान रिढ़ी, तहींमे तद्रूप थ्या॥

---

(१) पहिंजो पाणमें वीचार्यो (२) खुशिथी (३) कढियो (४) डि॒नी (५) ठिकागो (६) जा॒णणु (७) ईश्वर जी (८) वेपर्वाह थी (९) लैथ्या

२६७३

महबत्युनि मुल्कु, जीत्यो सभु जुगतिसां॥
लाए बेठा लख्य जो, गुर्गम तत्व तिलिकु॥ (तत्व)
अन्दरि ब़ाहरि हिकु, सामी दि़सनि सुप्री॥

२६७४

महबत्युनि मेलापु, पर्ची क्यो तनि पहिंजो॥
पीअनि पीआर्नि प्रेम जो, प्यालो ऐन[1] अमापु[2]॥
लूअं लूअं लालु गुलालु थी, जपिनि अजपा[3] जापु॥
मेटे सभु सन्तापु[4], सामी माणिनि सान्ति सुखु॥

२६७५

महबत्युनि सभि मत, लइ क्या तहिं लख्यमें॥
जहिंमें तूं मां नाहिंका, नको पंजई तत्व॥
छदे़ मोह ममत्व, सामी मिल्यो स्वरूपसां॥

२६७६

महबतीअ माणिकु, लधो दिलि दर्याहमों॥
अन्दरि ब़ाहरि आत्मा, हर्दमि दि़से हिकु॥
सहजे थ्यो सामी चए, फुर्ने खों फार्कु॥
लिवं सां ब़धी लकु, पलि पलि पीए प्रेम रसु॥

---

(१) शुधु (२) अथाहु (४) अन्तरि धुनी (४) संकिलप विकिलप–प्रपंचु

२६७७

महबतीअ माणिकु, लधो पहिंजे घरमें॥
अन्दरि बाहरि आत्मा, हरि हन्धि दिसे हिकु ॥
सहजे थ्यो सामी चए, फुनें खों फारकु॥
लिवं सां कढी लकु, पलि पलि पीए प्रेम रसु॥

२६७८

महबतीअ मुलिकु, जीत्यो सभु जुगति सां॥
द्वैत कढियाईं दिल्मों, रखी सम सिदिकु॥
अन्दरि बाहरि हिकु, सामी दिसे सुप्री॥

२६७९

महबतीअ मुलिकु, सामी क्यो सभु पहिंजो॥
रख्याईं गुर ज्ञातिमें, सन्से बिना सिदिकु॥
होतु दिठाईं हिकु, चढ़ी नूर महलमें॥

२६८०

महबतीअ मेड़े, सुर्त रखी गुर सब्द में॥
न्याई त्रिति[1] नगर दे, रहति सचीअ रेढ़े॥
जिते दोस्त दर्स जो, खेटु[2] विधो खोड़े॥
वेही हिन्दोड़े[3], सैल करे सामी चए॥

(१) दस्वे द्वारमें (२) जोती प्रकास (३) समाधि स्थितिमें

२६८१

महबतीअ मेलो, क्यो कल्प कढी करे॥
रहे पहिंजे हालमें, सहजे सुहेलो॥
वखतु ए वेलो, सामी साधे कोनको॥

२६८२

महबतीअ मेलो, क्यो पहिंजे यारसां[1]॥
जहिंमें आहे कोनको, सामी भय भोलो॥
कढी सभु रोलो, माणे दौर दर्सजा॥

२६८३

महबतीअ लायो, मुर्चो[2] पहिंजे मन में॥
करे आचमनु[3] अगस्त जां, सागरु[4] सुकायो॥
सामी सम सीत्लु थी, मध्यमें[5] मठु पायो॥
खाई[6] अघायो, सुत्ह सहज आनन्दमें॥

२६८४

महबती मक्सदु, कहिंसां रखे कीनकी॥
पीतो जहिं प्रतीति सां, मुक्तो महबत मदु॥
कट्याई कल्प जो, दिल्मों दुःखु दर्दु॥
पाए पूरणु पदु, सामाणो सामी चए॥

---

(१) ईश्वर सां–आत्मा में लैलीनु थ्यो (२) अ‌ड्डो–ठिकाणो–किलो–निश्चो (२) समाधि स्थति थी (४) सन्सारजो भर्मु कढियो (५) हृदयमें स्थानु रूपी मठु ठाहियो (६) [illegible]

२६८५

महबती मगनु, रहनि पहिंजे हालमें॥
पातो जनि प्रतीति सां, गहरो ज्ञान अन्जनु[1]॥
सामी ड़िसनि सर्ब गति, परमेश्वरु पूरनु॥
मेटे सभु मननु[2], मुशिके कुशिके कीनकी॥

२६८६

महबती मगनु, रहनि पहिंजे हालमें॥
सामी ज़ाणनि कोनको, सिक बिना साधनु॥
क्याऊं वसि वेसाहसां, पर्चो मनु पवनु॥
सभ अङ्ग संम्पनु, देउ डि़ठाऊं देहिमें॥

२६८७

महबती मगिनां, पासे थ्यनि न पीअ खों॥
छत्र सिंघास्न राज सुख, त्यागे जनि ड़िना॥
ज़ाणनि सभ स्वप्न जी, नाना रूप रचिना॥
भाणे मंझि भिना, सदा रहनि सामी चए॥

२६८८

महबती मतिलबु, कहिंसां रखनि कीनकी॥
रहे जन्जे रूहमें, रात्यां ड़ीहां रबु॥
कटे सट्याऊं कल्पजो, सामी सभु कस्बु॥
तोड़े लाए लोकु लक्बु, तांभी मस्तु रहनि महिराण में॥



(१) उपदेसु (२) मां पणो

२६८९

महबती मतिल्बु, कहिंसा रखनि कीनकी॥
रहे जन्जे रूहमें, रात्यां ड्रीहां रबु॥
चढ़िया अकह कन्ध[1] ते, कटे कल्स कबु[2]॥
तोड़े लाए लोकु लब्बु, तांभी सम रहनि सामी चए॥

२६९०

महबती मतिल्बु, कहिंसां रखनि कीनकी॥
रहे जन्जे रूह में, रात्यां ड्रीहां रबु॥
सामी वेठा साफु थी, छदे कूड़ु कल्बु[3]॥
लाए लोकु लकबु, तांभी मस्तु रहनि माहिरागसें॥

२६९१

महबती मतिलबु, कहिंसां रखनि कीनकी॥
रहे जन्जे रूहमें, रात्यां ड्रीहां रबु॥
सामी सदाई करे, तनिजो एन अदबु॥
न ढवं[4] सां ड्रेई ढबु[5], कनी पाकु पंजनि खो॥

२६९२

महबती मधुरी, बाणी बोलिनि बेहदी॥
वर्ती जनि वेसाहसां, गुर खों ज्ञाति घुरी॥
दिठाऊं आकास जां, तन में पदु तुरी॥
मेटे भली बुरी, सामाणा सामी चए॥

(१) पदते (२) सघु (३) कट (४) अड़िकल–रमिज़ (५) दग–रस्तो

२६९३

महबती मने, को जीअन्दे मरणु जग में ॥
सामी जहिंखे सबक जो, प्यो प्रलाउ कने ॥
समुझी इनीहं गाल्हि खे, बेड़ो लाइ बने ॥
जीए धरे ध्यानु धने, पथर मों पैदा क्यो ॥

२६९४

महबती मरी, जीअन्दे प्या सभि जग में ॥
सामी जन्खे सतिगुरूअ, ज्ञाति दिनी गहरी ॥
दिठाऊं अभेदु थी, बेहद ज्योति बरी ॥
सटे भर्म भरी, माणिनि दौर दर्सजा ॥

२६९५

महबती मरे, दर्सन कारणि दोसजे ॥
जीए मछली नीर खों, पलक न थिए परे ॥
चात्रिकु कारणि मेघजे, सदा बिलाप करे ॥
सामी ध्यानु धरे, सिपु रहे स्वातीअ जे ॥

२६९६

महबती मलंग, काणि न कढनि कहिंजी ॥
पीती जनि प्रतीति सां, ऐन अन्भय भंग ॥
सुम्हंयां सुषुप्त[१] सेजते, टंग ते रखी[२] टंग ॥
रात्यां दींहां रंग, मिली कनि महबूबसां ॥

(१) समाधि सुख में (२) आसणु लगाए

२६९७

महबती मलंग, मिल्या रहनि महबूबसां॥
जीए जली ज्योति स्वरूपु थ्या, दीआ दिसी पतंग॥
सामाणा सामी चए, जलमें जल तरंग॥
सदा अलेपु असंग, रहनि विदेही देहिमें॥

२६९८

महबती मलंग, रहनि पहिंजे हालमें॥
पाता जनि प्रतीति सां, गहरा ज्ञान अन्जन॥
सामी दिसनि सर्व गति, परमेश्वरु पूरन॥
मेटे सभु मनन, मुशिकनि कुशिकनि कीनकी॥

२६९९

महबती मलंगु, कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
जहिं देई कन्डि कल्प खे, क्यो साधूअ संगु॥
अन्दरि बाहरि आत्मा, दिसे कोन अभंगु॥
लूअं लूअं लाए रंगु, सामी लालु गुलालु थ्यो॥

२७००

महबती मलंगु कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
देई कन्डि कल्प खे, क्यो जहिं सतिसंगु॥
अन्दरि बाहरि आत्मा, दिसे ऐन अभंगु॥
लूअं लूअं लाए रंगु, सामी लालु गुलालु थ्यो॥

२७०१

महबती मशहूरु, लिके छिपे कीनकी ॥
चढ़ियो जहिंजे घरमें, अन्भय आत्म सूरु[1] ॥
सामी सन्तनि सां मिली, चेत[2] कयाईं चूरु ॥
जीए नैननि में नूरु, तीए साक्षी दिसे सभमें ॥

२७०२

महबती मस्तान, झूलनि[3] झरोकनि में ॥
सामी सुपेर्युनि रे, ब़ी सुधि रखनि कान ॥
पलि पलि पीअनि प्रेम रसु, कढी अविद्या[4] आन ॥
रहनि मंझि जहान, सदा अलेपु कवंल जां ॥

२७०३

महबती मस्तान, ध्या सहज स्वरूपमें ॥
बिना सिक सजण जे, ब़ी सुधि रखनि कान ॥
अर्पाऊं अजीब खे, तनु मनु धनु प्राण ॥
सदा रहनि गल्तान, सामी सुपेर्युनि सां ॥

२७०४

महबती मस्तानु, पर्चा रहनि पाणमें ॥
बिना सिक सजण जे, ब़ी सुधि रखनि कान ॥
अठई पहर अन्दर में, जपिनि रीअ[5] जबान ॥
जगु ज़ाणे नादान, सामी साक्षी सभजा ॥

---

(१) सिजु–चिमतिकारु–प्रेमु (२) मापणो नासु क्याईं (३) अन्हद धुनी में लीनु रहनि [४] अज्ञानु भोलाओ [५] बिना [illegible]

२७०५

महब्बती मस्तान, पासे थ्यानि न पीअखां॥
छत्र सिंघासन राज सुख, त्यागे जनि डि़ना॥
जा़णनि सभ स्वप्न जी, नाना रूप रचिना॥
भाणे मंझि भिना, सदा रहनि सामी चए॥

२७०६

महब्बती मस्तान, रहनि घूरम[1] घरमें॥
जन्हे पर्चो पहिंजी, भगति डि़नी भगिवान॥
सामी चए सन्सार जी, कल्प रखनि कान॥
निपटु थी नादान, वर्तनि विधि निषेद रे॥

२७०७

महब्बती मस्तान, रहनि पहिंजे हालमें॥
बिना सिक सजण जे, बी सुधि रखनि कान॥
जीए बा़लक नादान, सामी रहनि सन्सारमें॥

२७०८

महब्बती मस्तान, रहनि पहिंजे हालमें॥
सामी सुपेर्युनि रे, कल्प रखनि कान॥
जीए बा़लक नादान, रहनि अलगु इन्छा खां॥

(१) उन्हे

२७०९

महबती मस्तानु, कोर्युनि में को हिकिड़ो॥
जो[1] कळे चढ़ियो कलूब[2] ते, धर्ती ऐ आस्मानु॥
प्रत्क्षु पछिन्तो[3] रे, डि्से अन्भय भानु[4]॥
जागी सभु जहानु, सामी ज़ाणे स्वप्नो॥

२७१०

महबती महबूबु, पाए वेठा कछमें॥
सामी पर्ची पाणसें, नितु खिल्वत[5] कर्नि खूबु॥
लेटनि लाल[6] पलंग ते, करे हिकु कबूलु॥
ममत्वसां मतिलबु, रखनि न रतीअ जेत्रो॥

२७११

महबती महिमानु, सदा ज़ाणे पाणखे॥
डि्से कालु कुलहनिते, रात्यूं डी्हां साणु॥
रखे न रतीअ जेत्रो, मन में ममत्व माणु॥
पाए पदु निबाणु, सीत्लु थ्यो सामी चए॥

२७१२

महबती मांदो, कदी थिए कीनकी॥
जहिं जोड़े जीउ जुगति सां, अन्तरि मुखि आंदो॥
विसि विसि खों वांदो, सामी सदाई रहे॥

(१) वीचारे (२) द्वारते (३) बिना सन्देह (४) आत्म प्रकासु-सुयु
(५) खुशी-आनंदु (६) समाधि में

२७१३

महबती मांदो, कदी थिए कीनकी॥
जहिं जोड़े मन पवन खे, अन्तरि मुखि आंदो॥
सुत्ह लधाई सुनिमों[1], हरि धनु[2] हेकांदो॥
वेठो थी[3] वांदो, सामी चए सन्सार खों॥

२७१४

महबती मांमूरु[4], रहनि पहिंजे हालमें[5]॥
काया माया कुलमें, वञनि कीन वहलूरु[6]॥
ज़ाणनि सभ सन्सार खे, जीए बेड़ीअ जो पूरु॥
हाजरां[7] हजूरु, सामी दि॒सनि सुप्री॥

२७१५

महबती मामूरु[8], रहनि पहिंजे हालमें॥
थ्या मज्बूतु[10], मर्मसां, नओं दि॒सी नूरु[11]॥
सामी चए सन्सार में, पधरि[12] विझनि न पूरु[13]॥
सो कीअं सलिनि सूरु[14], जहिं कारणि जोगी थ्या॥

२७१६

महबती मुक्तो, कोर्युनि में, को हिकिड़ो॥
जहिंखे दि॒नो सतिगुरूअ, पर्चो प्रेम पतो[15]॥
सामी ज़ाणे कोनको, मन मे मंत्रु मतो[16]॥
रहे रंगि रतो, सदा सुपेर्युनि सां॥

---

(१) अन्तरि अभ्यास द्वारा अन्भय क्याईं (२) आत्म प्रकासु (३) पासे थीं (४) मशिगूलु-रुधल (५) अन्तरि वृितीअमें (६) फासनि (७) पहिंजो पाणमें (८) मशिगूलु-रुधल (९) अन्तरि वीचार में (१०) प्रेमसां (११) अन्तरि प्रकासु (१२) फासाइनि (१३) [illegible] (१४) कष्ट (१५) उपदेसु-ज्ञानु [१६] मां मुहिंजो

२७१७

महबती मुत्कुलि, पासे थ्यनि न पीअखों ॥
खसे वदी खुशीअ सां, दोस्त जन्जी दिलि ॥
सामी आया सन्सार में, सुभावकु साइलि[1] ॥
झग मगी झिलिमिलि, दिसे ऐन अन्भई ॥

२७१८

महबती मुरीद, पासे थ्यनि न पीअखों ॥
जन्खे मिली महांगिरी[2], दिबु दर्सन जी दीद[3] ॥
मरी थ्या मज्लस में, सामी चए शहीद[5] ॥
अठई पहर ईद[6] मिली कनि महबूब सां ॥

२७१९

महबती मुस्नाक[7], कागि न कढनि कहिंजी ॥
दिनाऊं दाइणि दिसी, तमां[8] खे तलाक ॥
सदा सुपेर्युनि सां, पचा रहनि पाक[9] ॥
बोलिनि बेहद वाक्य, स्वभावकु सामी चए ॥

२७२०

महबती मुसिताक[10], पासे थ्यनि न पीअ खों ॥
क्याऊं कल्प कढी करे, अख्युनि में ओताक[11] ॥
सामी सिक सचीअ सां, पचा रहनि पाक ॥
बोलिनि बेहद वाक्य, ऐन अभेदु अन्भई ॥

---

(१) शाहिद थी (२) पंक प्रेमसा (३) उपदेसु–मन्त्रु–शब्दु (४) अ तरि त्रितीअ में (५) पूरणु (६) आनंद (७) मस्त (८) धुर्ज-इच्छा (९) लैलीनु (१०) मस्त (११) ठिकाणो–नजर में नजर (१२) लैलीनु

२७२१

महबती मुस्ताक[१], पासे थ्यनि न पीअखों॥
जन्खे जानि जिग्र में, क्या सिक सोलाक[२]॥
सदा रहनि सामी चए, पर्छिन्ता[३] खों पाक॥
बोलिनि अन्भय वाक्य, एन अभेदु अन्भई॥

२७२२

महबती मुस्ताक[४], पासे थ्यनि न पीअखों॥
मारे क्या जनि मनजा, ख्याल सभेई खाक॥
सदा रहनि सामी चए, पर्छिन्ता[५] खों पाक॥
हद्परे[६] ओताक, आहे जन्जी अन्भई॥

२७२३

महबती मुस्ताक[७], रोअनि रतु अख्युनि मों॥
दाहूं कनि दर्दसां, फटिया अशिक[८] फिराक॥
सजण तुहिंजे सिक क्या, लिवं लिवं मंझि सूलाक[९]॥
वेहणु न थिए वाक[१०], सुततु मिलु सामी चए॥

२७२४

महबती मुस्ताक[११], लिकनि छिपनि कीनकी॥
पाए[१२] वेठा प्रेम सां, अख्युनि में ओताक[१३]॥
सदा सुपेर्युनि सां, पर्चा रहनि पाक[१४]॥
बाभण बोलिनि वाक्य, दर्द भर्या दीदारजा॥

---

(१) मस्त (२) छेद (३) प्रपंच खों परे (४) मस्त (५) प्रपंच खों परे
(६) दस्वे द्वार (७) मस्त (८) प्रेम जा फाथल (९) छेद (१०) अंकलो
(११) मस्त (१२) ठाहो करे (१३) छिमणा नजर (१४) लैलीनु

२७२५

महबती मुस्ताक[1] पासे थ्यनि न पीअखों॥
डि्ठो जनि अख्युनि सां, दर्सन जो दीमाकु[2]॥
सदा रहे सामी चए, पर्छिन्ता[3] खों पाकु॥
बो्ले अन्भय वाकु, ऐनु अभेदु अन्भई॥

२७२६

महबती मेंठाजु, सचो रखनि सभसां॥
कूड़ो कौड़ो मूहं मों, कढनि कीन आवाजु॥
पूरणु ज़ाणी पीअखे, माणिनि अन्भय राजु॥
सदा बे मुहताजु, सामी रहनि स्वभावमें॥

२७२७

महबती मोथाज, कहिंजा थ्यनि कीनकी॥
रखनि न रतीअ जेत्री, बिना दर्सन हाज॥
पर्चो क्याऊं पहिंजा, सामी चए सभि काज॥
अन्भय जा आवाज, भिना कढनि भावसां॥

२७२८

महबूबनि जी मोड़[4], समुझी जनि सामी चए॥
मिटी तहिंजे मन मों, सहजे सोढ़[5] सकोड़॥
बन्धन सभि ब्याईअजा, छोड़े छडि्याई छोड़[6]॥
लिवं वराए लोड़, रखे न रतीअ जेत्री॥

---

(१) मस्त (२) अन्भय क्यो (३) प्रपंच खों परे (४) कर्तव्यु (५) मैं-मेरो-प्रपंचु-इन्छा (६) कढी छडुयाई

२७२९

महबूबनि मुकी, डेई इशारत[१] अन्भई॥
समुझी मनु सीतलु थ्यो, चिन्ता सभ चुकी॥
लहज़े मंझि लंघे प्यो, सामी सिन्धु[२] सुकी॥
अची खेप[३] डुकी, सलामति सराहि में॥

२७३०

महबूबनि मुकी, प्रीति प्रेम भगति जी॥
पढ़ी मनु प्रसनु थ्यो, चिन्ता चाह चुकी॥
लंघे चढ़ियो लख्य[४] ते, अविद्या[५] सिन्धु सुकी॥
सामी सम डुकी, खेप[६] खटी सागरमों॥

२७३१

महबूबनि मुकी, शीशी[७] शौक शराब जी॥
सामी पीतो[८] साध सङ्गि, कहिं प्यासे[९] पुल्की[१०]॥
खणी सटियाईं सिरतों, अविद्या[११] पिण्ड उकी॥
झुगे[१२] मंझि झुकी, माणे दौर दर्स जा॥

२७३२

महबूबनि मुको, डेई इशारो अन्भई॥
समुझी मनु सीतलु थ्यो, व्यो अज्ञानु उको॥
लहज़े मंझि लंघे प्यो, सामी समुड्र[१४] सुको॥
च्वणु सभु चुको, करे केरु कल्मा॥

(१) उपदेसु–ज्ञानु (२) सन्सार खों निकिरी पारि पहुतो (३) मानुष्य जन्मु सफलु थ्यो (४) ऊच पदते (५) मायावी प्रपंचु छदे (६) पारि पहुतो जन्मु सफलु क्यो (७) प्रेम भर्यल उपदेस जी (८) उपदेसु बुधो सतिसंग द्वारा (९) प्रेमीअ–मसुक्ष (१०) खुशिथी (११) मायावी प्रपंचु (१२) हृदय आनंदमें सथिति थी (१३) अन्भय आत्म स्ता में लीन रहे. (१४) प्रपंच खों छुटी व्यो

२७३३

महबूबनि मुको, सुत्ह सनेहो सचजो ॥
ज़ाणी जूठि जगत्व खे, आशिक सटिनि उको ॥
सामी समुझी न रहियो, मन में मरी चुको ॥
वञी तिति ढुको, जिते तूं[1] मां नाहिं का ॥

२७३४

महां चत्रु प्रबीन, प्रेम क्या वसि पहिंजे ॥
मानु वदाई सभ छदे, थ्या आशिक लौलीन ॥
भोपा पूजिनि कीन, सामी प्रेम पिसाच सां ॥

२७३५

महां छलु प्रबलु, माया महबूबनि जी ॥
विधो जहिं जहान में, नाना भाइ खललु ॥
सामी चढ़ियो सभखे, अण हून्दो अमलु ॥
पहिंजो पाण पटलु[2], देई वेठा पाणखे ॥

२७३६

महां तीष्यणु ताउ, अथी अविद्या[3] सिन्धु जो ॥
छदे आलिस ऊंघ खे, उथी करि[4] उपाउ ॥
लोड़े लहु हिमथ सां, सामी मर्दु मलाहु[5] ॥
अहिड़ो दिल्बरु दाउ[6], मोटी ईन्दुइ कीनकी ॥

(१) आनंद अवस्था ते पहतो (२) पर्दो (३) मायावी संसार जो
(४) जन्मु सफलु करि (५) [illegible] (६) [illegible] सरीरु

२७३७

महां तीष्यणु वहु, अथी अविद्या[1] सिन्धुजो॥
रखी चाह अन्दर में, सामी सूर न सहु॥
महबतीअ मलाह[2] खे, लिवं[3] सां लोड़े[4] लहु॥
त पारि लंघण जो पहु[5], पर्चीं डि॒एई पलमें॥

२७३८

महां दुर्लभु दर्सनु, साधूजन सापुर्ष जो॥
सामी मिले तनिखे, जहिंते प्रिंथिए प्रसनु॥
तनु मनु सभु कचनु, करे कल्प कढी करे॥

२७३९

महां प्रब॒लु ज़ाणु, माया महबूबनि जी॥
सामी सभ कहींजो, जहिं भुलायो पाणु॥
साक्षी रहे साणु, सो नजरि अचे कीनकी॥

२७४०

महां प्रबलु माया, तरी सवे कोनको॥
जहिं सिध साधिक जोगी जती, भयमें भुलाया॥
मने वेठा पाणखे, कल्प जी काया॥
सतिगुर छद॒ाया, सामी छुटा से दुःख खों॥

---

(१) मायावी प्रपंच जो (२) ईश्वर से (३) प्रेमसां (४) गो॒ल्हे (५) रस्तो

२७४१

महां सूक्षमु राह, अथी पद अगमजी ॥
पहुतो कोन पन्धु करे, बिना सिक वेसाह ॥
छदे चिन्ता चाह, तूं सामी घरु सही करे ॥

२७४२

महिमां साधूअ संगजी, परे खों परे ॥
सेषु लखाए सहस्र मुख, वेद विमल[1] उच्चरे ॥
ब्रह्मा विश्नु महेसु महद्जन, सामी साख भरे ॥
कोट उपाव करे, मनु वाणी पहुचे कीनकी ॥

२७४३

महिर करे मालिकु, जहिंते पर्चो पहिंजी ॥
सामी साध संगति में, अचे सो आशिकु ॥
समुझी वाक्य वेदान्त जा, मेटे फेरु फर्कु ॥
हर्दमि ड्रिसे हिकु, अन्दरि ब्राहरि आत्मा ॥

२७४४

महिरों कई महबत, मुर्शिद खासु मुरीद सां ॥
लाए लालु गुलालु थ्यो, रहमत[2] जी राहत ॥
सभ घट ड्रिसे सुप्री, बिना हीर हुजत ॥
वहद्त ऐं कसिरत, ओरे ज्ञाणे ऐन खों ॥

---

(१) वाक्य (२) कृपा

२७४५

साटि[1] क्याईं मूरु, सिक रख्याईं सूद्में[2] ॥
कहिंजे अगि॒यो कीनकी, पधरि क्याईं पूरु[3] ॥
सामी दि॒सनि सुप्री, हाजरां हजूरु[4] ॥
कटे कल्प करूरु[5], वर्तनि वेद वीचार सां ॥

२७४६

मानुष्य जन्मु अमोलु, कहिं पातो पूरण पुन्यते ॥
नहिंखे तमां[6] तारिसें, रेढ़े करि न रोलु ॥
ओथे लहु सामी चए, आत्म पदु अदो॒लु ॥
भञी भ्रि॒योईं भोलु[7], माणे मौज मुक्ति जी ॥

२७४७

मानुष्य जन्मु अमोलु, कहिं पातो पूरण पुन्यते ॥
सो भौसागर जे भीड़ में, रेढ़े करि म रोलु ॥
सामी सन्तनि सां मिली, लहु आत्म पदु अदो॒लु ॥
हर हर अहिड़ो टोलु, हथमें ईन्दुइ कीनकी ॥

२७४८

मानुष्य जो औतारु, कहिं मिल्यो पूरण पुन्यते ॥
नहिंजी क्यां केली, वदा॒ईं विस्तारु ॥
सहंसरो में सामी चए, को जा॒णे सन्तु सच्यारु ॥
क्यो जहिं दीदा॒रु, गुर्गम पर्चो पहिंजो ॥

---

(१) मूरु रूपी ईश्वरु छद्दे (२) सूद रूपी व्याज प्रपंच सां प्रेमु रख्याईं (३) मानुष्यु जन्मु सफलु कीन क्याईं (४) प्रत्क्ष पाणमें (५) कचिरो रूपी प्रपंचु कटी (६) घुर्ज इछा (७) भमु–भोलाओ

२७४९

मानुष्य देहि अमोलु, पातुइ पूरे पुन्य ते॥
तहिंखे भव जल भीड़ में, रेढ़े करि म रोलु॥
मिली वठु महबूबसां, छद् बादि मखोलु॥
हरहर अहिड़ो टोलु, सामी मिले न सुथिरो॥

२७५०

मानुष्य देहि अमोलु, मूर्ख खोहिनि मति रे॥
मिली वठु महबूबसां, करे मनु अदोलु॥
कालु तुहिंजे कन्ध ते, नितु वजाए ढोलु॥
रिढ़ी थींदे रोलु, सिज[1] लथे सामी चए॥

२७५१

मानुष्य देहि उत्मु, कहिं पातइ पूरण पुन्यते॥
सामी चए तहिंजो, रखिजि मनि मर्मु[2]॥
अथी बे कीम्त जो, हिकड़ो हिकिड़ो दमु[3]॥
छदे कल्प[4] कमु, जागी जपिजि नाम खे॥

२७५२

मानुष्य देहि धारे, मूर्ख खोहिनि मति रे॥
मिली वठु महबूबसां, साञ्चुरि सम्भारे॥
सामी चए हिक साइत में, मौतु नींदुइ मारे॥
हीरो जन्मु हारे, पौदें पोइ दुःखनि में॥

(१) स्वास पूरा थ्यण वक्ति (२) शमु (३) स्वाशु (४) प्रपंचु

२७८३

मानुष्य देहि धारे, सफलु करे को सूमों॥
जो मिली साध संगति सां, सति शास्त्रु वीचारे॥
प्रत्क्षु पूरणु आत्मा, ड्रिसे ड्रीओ[1] ब्रारे॥
नानत निवारे, सामी माणे सान्ति सुखु॥

२७८४

मानुष्य देहि पाए, सफलु करे को सूमों॥
मिली साध संगति सां, लिवं सची लाए॥
पूरणु ज़ाणी पीअखे, ममत्व मिटाए॥
सामी समाए, जल पपोटो जलमें॥

२७८५

मानुष्य देहि पाए, मूर्ख खोहिनि मतिरे॥
मिली वडु महब्रूबसां, लिवं सची लाए॥
कालु तुहिंजे कन्ध ते, खर्चु थो खाए॥
पोइ पिटीन्दे पछुताए, सिज लथे सामी चए॥

२७८६

माया क्या मर्कट[3], मोहे जीअ जहान जा॥
भवनि[4] भौसागर में, ग्रिचीअ पाए ग्रट[5]॥
कटी सभ कल्मा, समुझी कहि सुभट[6]॥
पाए खिम्यां[7] खट, सामी सुम्हयों सराहिमें॥

(१) ज्ञान उपदेशु वठी (२) भर्मु कढी–मां पणो कढी (३) वान्दर
(४) भिटिकनि (५) प्रपंच में फासी (६) सुलछिणे (७) शान्ती पाए
(८) हृदय आनंद में स्थति थ्यो

२७८७

माया क्या मोग़ा, सामी जीअ जहानजा ॥
हणनि वातु, वीचार रे, उठनि जां ओग़ा ॥
जनी नां जोग़ा, था तर्क चलाइनि तनिते ॥

२७८८

माया करे गुलामु, सामी विधो सभखे ॥
को नेहीं व्युसि निकिरी, न्रिविकलपु निष्कामु ॥
लधो जहिं गुर ज्ञातिसां, अन्भय आदी धामु[1] ॥
जहिंमें रमता रामु, सूर्य जां साक्षी रहे ॥

२७८९

माया करे मकरु, मूर्ख मोहिया मोहसां ॥
पुठी ड़ेई पाणखे, भवनि भौसागरु ॥
सामी तर्यो साध संगि, को दानाहु दुतरु[2] ॥
पूरणु परमेश्वरु, ड़िठो जहिं अख्युनिसां ॥

२७९०

माया करे मकरु, मोहे मारे सभ खे ॥
रखे न रतीअ जेतो, ड़ाइणि कहिंजो ड़रु ॥
को प्रेमी लंघे पारि प्यो, भारी भौसागरु ॥
पूरणु परमेश्वरु, सामी ड़िठो जहिं साध संगि ॥



(१) घरु-रस्तो (२) जाणूं

२७६१

माया करे मकरु, मोहे मारे सभखे॥
रखे न रतीअ जेत्रो, ड़ाइणि कहिंजो ड़रु॥
सामी बचो को सूर्मो, सुज़ाग़ो[1] सुभरु[2]॥
पूरणु परमेश्वरु, ड़िठो जहिं आकासजां॥

२७६२

माया करे मकरु, मोहे मारे सभखे॥
रहे अलेपु आकास जां, को त्रासो निड़रु॥
पर्चो लधो जहिं पहिंजो, अन्भय आदी घरु॥
सामी जर[3] अजरु, माणे मौज मुक्ति जी॥

२७६३

माया करे मकरु, मोहे मारे सभखे॥
विझी ग़र्ट्ठु ग़िचीअ में, घुमाए घरु[5] घरु॥
इस्थति रहे आकास जां, को साधूजनु सुभरु[6]॥
पूरणु परमेश्वरु, सामी ड़िठो जहिं सम थी॥

२७६४

माया करे मकरु, मोहे मारे सभखे॥
सामी बचो को सूर्मो, त्रासो निड़रु॥
मारे मनु म्वासु, जर्यो[7] जहिं अजरु॥
भारी भौसागरु, लंघे चढ़ियो लख्यते[8]॥

---

(१) ज्ञानी (२) प्रेमी (३) मां पणो कढी (४) प्रपंच रूपी फासी (५) जन्म भोग़ाए (६) प्रेमी—ज्ञानी (७) जहिं ईश्वर जो मेलापु कयो (८) पदंत

२७६५

माया करे मजाक[1], मोहे मारे समझे॥
रहनि अलेपु आकास जां, तालहमन्द[2] तराक[3]॥
समुझा जनि सामी चए, मरी महा वाक्य॥
तमां खे तलाक, डेई कढियाऊं देहिमों॥

२७६६

माया करे मजूरु, छदि्या जीअ जहानजा॥
वञनि मति मर्म रे, विष्यनि काणि वहलूरु॥
रहे पहिंजे हालमें, को महबती मामूरु[7]॥
जहिंखे निर्मलु नूरु[8], सामी दि्नो सतिगुरूअ॥

२७६७

माया करे बल छल, मोहिया जीअ जहान जा॥
वहिया वञनि वहमें, कहिंखे पवे न कल॥
सोटो हयुंसि समजो, कहिं साधूजन सबल[9]॥
जहिंखे प्रेम पहल[10] सामी पीआरी सतिगुरूअ॥

२७६८

माया खसे मति, मोगो क्यो माणुहुनि खे॥
जन्मु पाए जगमें, भवनि नाना भति॥
समुझी थ्यो सामी चए, को आशिकु उपरन्ति[11]॥
जहिंखे साध संगति, लख्य[12] लखाई अन्भई॥

---

(१) मोथाज (२) प्रेमी मस्त (३) जनि सन्सार खों पासो क्यो (४) पाणु कढी (५) इन्छा-घुर्ज (६) सरीर मों (७) भरिपूरि (८) उपदेशु-ज्ञानु (९) वलिवान-पूरण (१०) [illegible] (११) पासे (१२) जाणप कराई

२७६९

माया खसे मति, भोगो क्यो माणहुनि खे॥
भोगिनि भोगु भर्म जा, सामी ज़ाणी सति॥
को सुजागो सूर्मो, डल्टी[1] थ्यो उपरन्ति[2]॥
नक्यो[3] क्याऊं तिति, जिते आहि न[4] नाहिं का॥

२७७०

माया खसे मति, सभजी वर्ती वेसाह सां॥
स्वप्न जे सन्सार खे, सामी ज़ाणनि सति॥
पाणु पछाणनि कीनकी, अन्धा थी उपिरन्ति[5]॥
व्या विञाए पति, अमोलकु अकुल रे॥

२७७१

माया खसे मति, सामी वदी सभजी॥
स्वप्न जे सन्सार खे, मूर्ख ज़ाणनि सति॥
कोर्युनि में को हिकिड़ो, आशिकु थ्यो अपरन्ति[6]॥
जागी जुर्यो तिति, जिते तूं मां[7] नाहिं का॥

२७७२

माया जगतु ठगे, सामी सारो वसि क्यो॥
जन्खे सायो सन्त जो, तन्खे कीन लगे॥
लंघे वर श्राप खों, पहुता यार अगे॥
जिते ज्योति[8] जगे, अठई पहर अन्भई॥

(१) सन्सार खों पासे करे (२) निश्चन्तु थ्यो (३) ठिकाणो (४) कुझु न चई सघिजे (५) सन्सार खों अलगु थ्यो (६) सन्सार खों परे थ्यो (७) कुझु कोन्हे–सुनि अवस्थामें (८) आतम अनभय प्रकाशु

२७७३

माया जीअ मोहिया, लाड़े लाए पहिंजे ॥
ॿिझी ॼारु भर्म जो, सभजा खम्भ[1] खोहिया ॥
के पक्षी[2] च्यसि निकिरी, उज्यलु[3] अछोहिया ॥
बेहद जा ॻोहिया, ॾीआ ॾिठा जहिं ॾीलमें ॥

२७७४

माया बुरी बलाइ, कहिंखे छदे कीनकी ॥
सामी लुटे सभखे, ॾेई हिसु[6] हवाइ ॥
तहिंजो लेखो नाहिं को, जहिंखे सचु सहाइ ॥
सूर्त सभहीं जाइ[7], ॾिसे कुलु आलम में ॥

२७७५

माया भुलाए, जीअ क्या वसि पहिंजे ॥
कहिंखे छदे कीनकी, सभ खे नचाए[8] ॥
सामी बचो को सूर्मो, साधूअ जे साथे ॥
वेठो लिवं लाए, चेतन चिदाकास में ॥

२७७६

माया भुलाए, विधा जीअ जहान जा ॥
नाना रूप रचे करे, वेठा ठगु ठाहे ॥
पहिंजे पहिंजे मतिखे, सभुको वॾाए ॥
मूहुं मढ़ीअ पाए, सामी ॾिसे कीनकी ॥

---

(१) रस्ता बन्दि क्या (२) प्रेमी (३) शुधि वीचारवान (४) अण ॾिठा
(५) आत्म सता जो अनुभव क्यो (६) लोभु लालचि (७) हिकई
(८) फासाए-भर्माए

२७७७

माया भुलाए, विधा जीअ भर्ममें॥
अन्धो डि॒से कीनकी, मूहुं मढ़ीअ[१] पाए॥
सामी अविद्या[२] निन्डू॒मों, सतिगुरु जागा॒ए[३]॥
न सुखी थी खाए[४] अन्भय फल आकास जा॥

२७७८

माया भुलाए, विधा जीअ भर्म में॥
सामी डि॒से कीनकी, मूहुं मढ़ीअ[५] पाए॥
जहिंखे अविद्या[६] निन्डू॒मों, सतिगुरु जागा॒ए[७]॥
सो वेही वजा॒ए, नंगारो न्रिबा॒ण जो॥

२७७९

माया भुलाए, विधो जीउ भर्म में॥
अण[९] हून्दे दर्याहमें[१०], गोता[११] नितु खाए॥
सामी डि॒से कीनकी, मूहुं मढ़ीअ[१२] पाए॥
सतिगुरु जागा॒ए[१३], न जागी॒ जुरे पाणसां॥

२७८०

माया भुलाए, विधो जीउ भर्म में
पाणु पहिंजो पाणमों, वेठो विञाए॥
अण[१४] हून्दे दर्याहमें, गोता[१५] नितु खाए।
मूहुं मढ़ीअ[१६] पाए, सामी डि॒से कीनकी॥

---

(१) शीशे में–पहिंजो पाणमें (२) अज्ञान भर्ममों (३) बचाए (४) पाए (५) पहिंजो पाणमें- हृदय शीशे में (६) अज्ञानमों (७) बचाए (८) अनाहद धुनिमें स्थति थी न्रिबा॒ण पदते पहुचे (९) डि॒सण मात्र (१०) सन्सारमें (११) ग्यो भिटिके (१२) पहिंजो पाणमें नथो डि॒से (१३) उपदेशु करे–क्रिपा करे (१४) मिथ्या सन्सारमें (१५) ग्यो भिटिके (१६) पहिंजो पाणखे नथो डि॒से

२७८१

माया भुलाए, विधो जीउ भर्म में ॥
पाणु पहिंजो पाणमों, वेठो विञाए ॥
स्वप्न में सामी चए, कोट जन्म पाए ॥
अविद्या[1] पटु लाहे, सामी ड्रिसे कीनकी ॥

२७८२

माया भुलाया, भवनि[2] जीअ भर्म में ॥
मने वेठो पाणखे, कल्प[3] जी काया ॥
उल्टी[4] पहिंजे घरमें[5], के आशिक जन आया ॥
जेके जागाया[6], सामी पूरे सतिगुरूअ ॥

२७८३

माया भुलायो, सामी जीउ स्वरूपखों ॥
देही मने पाणखे, सन्से मंझि आयो ॥
जीए नारीअ निन्ड्रमें, बालकु विञायो ॥
जागये[7] जागयो, नदी कणो कल्प[8] न रही ॥

२७८४

माया भुलायो, सामी जोड़े जीअखे ॥
नांगु ड्रिसी नोड़ोअमें, डरों डहकायो ॥
गुणितीअ लेखे दुःख जे, सन्से मंझि आयो ॥
सतिगुर समुझायो[10] नदी समुझी सुझों[11] पाणमें ॥

---

[१] अज्ञान जो पर्दो नयो लाहे ड्रिसे [२] भिटिकनि (३) नासुमानु सरीरु
[४[ सन्सारखों पासे थी [५] पाणु डिठो [६] उपदेशु क्यो—क्रिपा कई
(७) पहिंजे रूप खों (८) ज्ञान जो प्रकाशु थ्यो (९) भर्मु व्यो
(१०) ज्ञानु ड्रिनो—क्रिपा कई (११) पहिंजो पाणखे ज्ञाताई

२७८५

माया मकर करे, मोहे मारे सभखे ॥
सामी रहे को सूर्मो, पापिणि खों परे॥
पीतो जहिं प्रतीति सां, प्यालो पाकु[1] भरे॥
सभमें दि॒सी ठरे, पहिंजे अख्यें पाणखे॥

२७८६

माया मचाई, कूड़ी रांदि कल्प जी॥
तहिंमें मोहे खलिक सभ, फाहीअ फासाई॥
विृले कहिं गुर्मुख खे, समुझ में आई॥
सामी सफाई, मुखि रखी मौजां करे॥

२७८७

माया मचाई, कूड़ी रांदि कल्प जी॥
सची ज॒ाणी सभुको, छाणे नितु[2] छाई॥
विृले कहिं गुर्मुख खे, अन्भय[3] में आई॥
सामी सदाई, इस्थति रहे आकासजां॥

२७८८

माया मचायो, कूड़ो खेलु कल्प जो॥
तहिंमें कनि तद्रूपु थी, मूर्ख मनु भायो[4]॥
विृले कहिं गुर्मुख खे, अन्भय[5] में आयो॥
सामी समायो, जल पपोटो जलमें॥

---

(१) प्रेमजो–ज्ञान कला (२) सचु ज॒ाणो प्रपंचु रूपी रख प्यो पाए (३) समुझ (४) ममत्वु क्यो (५) ज॒ाण थी

२७८९

माया मचायो, भारी भेषु भर्म जो॥
तहिंमें मोहे सभखे, दह दिस दौरायो[1]॥
विर्ले कहिं गुमुख से, अन्भय[2] में आयो॥
पहिंजो परायो, ख्यालु छदे खामोशु थ्यो॥

२७९०

माया मति खसे, वर्ती माणुहुनि जी मोहसां॥
गुझी गाल्हि अन्दर जी, कहिंखे कीन दसे॥
सामी हंयुसि कहिं सूमें[3], बेहद[4] बाणु कसे॥
हर्दमि दिसी हसे, पाणु[5] वराए पाणसां॥

२७९१

माया मति खसे, सभजी वटी वल सां॥
सामी अन्भय आत्मा, देहों दूरि दसे॥
हंयुसि गटु[6] गिचीअमें, कहिं दर्दवन्द[7] दसे॥
हर्दमि दिसी हसे, पाणु वराए, पाणखे॥

२७९२

माया मति मलीनु, मोहे क्यो माणुहुनि खे॥
रहनि खाब[8] ख्याल में, अठई पहर अधीनु॥
जागी ज्यों स्वरूपसां, को प्रेमी प्रबीनु[10]॥
जहिंखे पाकु यकीनु, सामी दिनों सतिगुरूअ॥

---

(१) भिटिकायो (२) समुझ (३) प्रेमीअ (४) ज्ञान कला वठी अन्तरी सब्द धुनी रूपी बाणु हंयो (५) पोइ सदाई पहिंजो पाणमें लीनु थी प्यो पाणु दिसे (६) माया खे फासाए वसि क्यो याने माया जे जार खां परे थ्यो (७) प्रेमीअ (८) सदाई प्यो पहिंजो पाणु दिसे त मां असुल केरु आहियां ? (९) कूड़े (१०) पको

२७९३

माया मति मारी, लोभाए लोकनि जी॥
खंयो वतनि खुशि थी, खोआरीअ जी खारी॥
सदा कनि समुझ रे, जतन ऐ जारी॥
सामी चए सारी, ज्या विञाए आर्जा॥

२७९४

माया मति मोगी, मोहे कई माणुहुनिजी॥
भवनि काणि भोगनि जे, बुधा ड्योगी॥
माणे सुखु स्वरूपजो, को जागयो जोगी॥
अनतु अरोगी, सामी रहे स्वभावमें॥

२७९५

माया मति मोगी, मोहे कई मूढनि जी॥
पछिन ज़ाणी पाणखे, सदा फिरनि सोगी[1]॥
माणे सुखु स्वरूपजो, को जागयो[2] जोगी॥
अनन अरोगी, सामी रहे स्वभाव में॥

२७९६

माया मति मोगी, मोहे कई मूढनि जी॥
भुली भौसागरमें, भवनि था भोगी॥
सामी मिल्यो स्वरूपसां, को जागयो जोगी॥
अन्भय अरोगी, धिरी लधो जहिं घरमों॥

---

(१) शोकमें-वीचारमें (२) [illegible] प्रेमी

२७९७

माया मति हरे, मोगो कयो माणुहुनि खे ॥
भवनि भौसागर में, नाना रूप धरे ॥
को आशिकु चढ़ियो अछते, सर्व त्यागु करे ॥
सामी दिसी ठरे अन्दरि ब्राहरि आत्मा ॥

२७९८

माया मध भरी, मोहे सुझाए मति खसे ॥
सामी मोहे सभखे, कष्ट करे कहरी ॥
अहिड़ी कहिं गुरुमुख खे, पेई खबर खरी ॥
तमां तारि तरी, चढ़ियो चेतन चिटते ॥

२७९९

माया मध भरी, सूरत धारे सोहिणी ॥
पुठीअ लाए पहिंजे, क्याई खलिक चरी ॥
सामी सुधर[२] जनखे, पई खबर खरी ॥
त्या सिध तरी, पहुता पूरण पदमें ॥

२८००

माया मध मातो, सामी सभु सन्सारु थी ॥
कोर्युनि में को हिकिड़ो, आत्म रंगि रातो ॥
मिली साध संगति सां, कहिं साहिबु सुञातो ॥
वारे खतु खातो, कढयाई कल्प जो ॥

---

(१) घर्ज छदे (२) प्रेमी

२८०१

माया मवाली, क्या जीअ जहान जा ॥
छदे सम्ता सुख खे, थया सामी सोआली ॥
लधी खाणि[1] खुशीअ जी, कहीं नेहींअ न्राली ॥
खावन्द रे खाली, कत्वो डि्से कीनकी ॥

२८०२

माया मवाली, क्या जीअ जहानजा ॥
पाए भवनि पाणही, सिर मथे छाली[2] ॥
उल्टी डि्सनि कीनकी, खावन्द ख्याली ॥
सामी समाली, आहे जहिंजे आसिरे ॥

२८०३

माया मवासी[3], क्या जीअ जहानजा ॥
पाए भवनि पाणहीं, फुर्नें जी फासी ॥
विृले को गुर्मुखु बचो, उत्मु अभ्यासी ॥
अलखु अबिनासी, सामी डि्ठो जहिं समथी ॥

२८०४

माया मवासी[4], क्या जीअ जहानजा ॥
भुली भवनि पाणही, चितमें चौरासी ॥
सामी कटी कहिं सूमें, फुर्नें जी फासी ॥
अलखु अबिनासी, जागी डि्ठो जहिं जोतिमें ॥

---

(१) आतम अन्भय स्ता (२) रख (३) चर्या (४) चर्या (५) प्रेमीअ-ज्ञानीअ

२८०५

माया मवासी, मोहे क्यो मूंठनि खे॥
भुली भवनि पाणही, जितमें चौरासी॥
सामी बचो को साध संगि, विले वेसासी॥
अलखु अविनासी, जागी डिठो जहिं जोतिमें॥

२८०६

माया महां छलु, परे रहे को सुमों॥
जहिंखे शौक सचे जो, चाढ़ियो गुरूअ अमलु॥
सुत्ह सिधि स्वरूप खों, पासे थिए न पलु॥
एन अभेद अचलु, सामी माणिनि सान्ति सुखु॥

२८०७

माया महां प्रबलु, जीती वञे न जीअखों॥
विधो जहिं जहान में, अणहूंन्दो खौफु खलल्लु॥
उथन्दे वेहन्दे निंड्रमें, सामी छदे न छलु॥
को गुर्मुखु रहे अचलु, जहिं जागी डिठो पाणखे॥

२८०८

माया माउ वणी, मोहे भुसाए सभखे॥
सामी खसे सारु धनु, खूहमें विझे खणी॥
क्युसि गुसु गुर ज्ञाति सां, कहिं हर्जन हथु हणी॥
घरमें घर धणी, डिठो जहिं अभेदु थी॥

(१) ज्ञानी

२८०९

माया मिठाई, खाई जीअ खोआरु थ्या॥
भवनि भौसागरमें, सामी सदाई॥
चि्रले कहिं गुरमुख खे, अन्भय में आई॥
पहिंजी पराई, तालि मेटे तद्रूपु थ्या॥

२८१०

माया मित्रु बणी, मोहे मारे सभखे॥
रोले पहिंजे रा_ में, सदा साणु खणी॥
सामी बचो को सुमों, साधूअजी सरणी॥
घरमे घर धणी, अचलु डि्ठो जहिं आदिजों॥

२८११

माया मिरेई, रचा ठाह ठगीअ जा॥
मारे मूर्खनि खे, ढाइणि दुःख डेई॥
चि्रले कहिं गुरमुख खे, सामी सुधि पेई॥
लोकु प्रलोकु बेई, लंघे चढ़ियो लख्यते॥

२८१२

माया मुंझाए, मोगो कया माणुहुनि खे॥ कयो
पाणु पहिंजो पाणमों, वेठा विझाए[1]॥
सामी लधो कहिं सुमें, साधूअ जे साए[2]॥
वदो[3] सो पाए, जो असुलु हुयो आदिजो॥

---

(१) भुलाए (२) कृपासां (३) भागो

२८१३

माया मुंझाए, भोगो क्यो मूढनि खे ॥
पाणु पहिंजो पाणमों, वेठा विञाए[1] ॥
सामी लधो कहिं सुर्में, साधूअजे साए[2] ॥
अन्दरु उज्लाए[3], माणे सुखु स्वरूपजो ॥

२८१४

माया मुंझाए, विधा जीअ वहणमें[4] ॥
सामी सभखे गैबजा, गोता[5] खाराए ॥
को प्रेमी लंवे पारि प्यो, मन खे मनाए[6] ॥
दीओ जाग़ाए[7], दिठो जहिं अनभई ॥

२८१५

माया मूंहं कारी, कहिंसां नेबहु कीनकी ॥
सभखे मारे मोचिरा[8] देई देखारी[9] ॥
सामी बचो बलाखों, को भाग्यवानु भारी ॥
जहिंखे पीआरी[10], सतिगुर सुर्की सचजी ॥

२८१६

माया मूंहं कारी, मोहे मारे सभखे ॥
कहिंखे छदे कीनकी, देई देखारी ॥
रहे अलेपु आकास जां, को भाग्यवानु भारी ॥
जहिंखे सुधि सारी, सामी पेई साध संगि ॥

---

(१) भुलाए (२) कृपासां (३) वीचारे (४) प्रपंचमें–भर्ममें (५) भिटिकाए (६) वसिकरे (७) ज्ञान उपदेसु पाए (८) ईश्वर खों भुलाए (९) शक्ती (१०) सतिगुर उपदेसु सचो दिनो

२८१७

माया मूहं कारी, मोहे मारे सभखे॥
कहिंखे छडे कीनकी, देही जनि धारी॥
रहे अलेपु आकास जां, को विले वीचारी॥
सामी संभारी, जहिं आदी अन्भय पहिंजी॥

२८१८

माया मूहुं कारो, करे मोहयो माणुहिनि खे॥
पाए भवनि था पाणहीं, ग़िचीअमें ग़ारो॥
सामी रहे को सूमों, न्भ ज्यां न्यारो॥
जागी जगु सारो, लै दिठो जहिं लख्य में॥

२८१९

माया मूहुं कारो, मोहे क्यो माणुहिनि जो॥
ज़ाणनि मति मर्म रे, मूर्ख मोचारो॥
सामी रहे को सूमों, न्भ ज्यां न्यारो॥
जागी जगु सारो, लै दिठो जहिं लख्य में॥

२८२०

माया मोह मई[1] कहिंखे छदे कीनकी॥
विझी ज़ारु भर्म जो, सभ विश्व वसि कई॥
सामी बचो को सूमों, साधूअ सरणि पई॥
लोकु प्रलोकु बुई, लंवे चढ़ियो लख्यते॥

(१) भरी

२८२१

माया मोहु रचो, कूड़ो कल्स कालजो॥
तहिंमे जगु तद्रूपु[1] थी, नाना भाइ नचो[2]॥
को साधू जनु सूमों, वला खों बचो॥
आत्म सुखु सचो, सामी माणे सर्वगति॥

२८२२

माया मोहे गुलाम, क्या जीअ जहानजा॥
पुठी[3] डेई पाणखे, दरि दरि भर्नि सलाम[4]॥
मस्तु रहनि महिराणमें, के नेही निषकाम॥
जन्खे रस्ता राम, डिनी समुझ सामी चए॥

२८२३

माया मोहे छलु, करे कुल जहान खे॥
सामी बचे को सूमों, साधूअ संगि सबलु[5]॥
डिठो जहिं आकास जां, आत्म पदु अचलु॥
मेटे सभु खललु, वर्ते वेद वीचार सां॥

२८२४

माया मोहे जगु, विधो सभु बंधणमें[6]॥
कोयुंनि मों को हिकिड़ो, बचो पुर्षु अलगु॥
जहिं उलटी[7] पद अवाच[8] जो, लिवं सां लधो दगु॥
सामी थ्यो सर्वगयु[9], चाह मिटाए चितजी॥

---

मिली हिकु थ्यो (२) अनेक प्रकारे थ्यो भिटिके (३) भुली (४) मोथाज (५) पको-मज्बूतु (६) भर्म में (७) वैराग व्रिती धारे (८) अन्तरि आनंद पद प्रेम सां रस्तो लधो (९) पूरणु थ्यो

२८२५

माया मोहे जीअ, विधा वाच[१] वहणमें[२]॥
गोता[३] खाइनि गैवजा, बिना समुझ सचीअ॥
लंघे चढ़ियो[४] लख्य ते, को प्रेमी प्रीति पकीअ॥
जहिंखे पचीं पीअ, सामी सावधानु क्यो॥

२८२६

माया मोहे मति, मोग़ो क्यो माणुहिनि खे॥
भुली पवनि पाणहीं, खणी साणु खपि॥
सामी रहे सम सदा, को आशिकु इस्थति॥
जाग़ी शिवु[५] शक्ति, डि़ठो पाण जहान में॥

२८२७

माया मोहे मनु, मोग़ो क्यो मूढनि जो॥
भवनि भौसागर में, ज़ाणी सति स्वपनु॥
सामी माणे सेज सुखु[६], को जाग़यो साधूजनु॥
परमेश्वरु पूरनु, डि़ठो जहिं आकास जां॥

२८२८

माया मोहे मनु, मोग़ो क्यो मूढनि जो॥
भवनि भौसागरमें, धारे नाना तनु[७]॥
विृले कहिं गुर्मुख लधो, उल्टी[८] आत्म धनु॥
सदाई प्रसनु, सामी रहे स्वभावमें॥

---

(१) हवामें (२) भर्ममें (३) भिटिकनि (४) उपदेसु वठी–जाणूं थी
(५) पाणमे माणखे–पहिंजी स्ता (६) आत्म अन्भय सुख–समाधि सुखु
(७) अनेक जन्म (८) [illegible]

२८२९

माया मोहे मनु, मोगो क्यो मूढनि जो ॥
सदा कनि सामी चए, बिना ज्ञाति[1] गमनु ॥
पर्ची लधो कहिं पहिंजो, वेसासीअ वतनु ॥
मेटे जन्मु मरणु, इस्थति थ्यो आकासजां ॥

२८३०

माया मोहे मारे, देई ओट अन्धनि खे ॥
भवनि भौसागर में, हीरो जन्मु हारे ॥
सामी सुजाणा बचा, धीर[2] सची धारे ॥
बेहद दीओ बारे, पूरणु डिठाऊं पीअखे ॥

२८३१

माया मोहे मारे, सभिनी खे सामी चए ॥
भवनि भौसागरमें, बुली बलु हारे ॥
को प्रेमी लंवे पारि प्यो, धीर सची धारे ॥
बेहदि दीओ,[3] बारे, देउ डिठाईं देहिमें ॥

२८३२

माया मंझि अपसु, विृले को गुर्मुखु रहे ॥
कई जहिं कल्प[4] खों, सामी समुझी बसि ॥
कदी थिए कीनकी, मन इन्द्रयुनि जे वसि ॥
क्षिम्यां जी खसि खसि, घोटे पीए प्रेमसां ॥

---

(१) विना वीचार हलति (२) [illegible] (३) [illegible] वीचारे (४) प्रपंच खों

२८३३

माया मंझि उदास, रहनि साधूजन सूमी॥
अचे अजगैबी लगी, जन्खे प्रेम प्यास॥
सामी मिली स्वरूप सां, थ्या खिल्वती[1] खास॥
बेहद[2] कनि विलास, चढ़ी चेतन चिटते॥

२८३४

माया मंझि उदासु, विॾे को गुर्मुखु रहे॥
क्यो जहिं गुर ज्ञाति सां, अन्तरि मुखि अभ्यासु॥
चढ़ी ॾिठाईं चेतते, अन्भय जो आकासु[3]॥
सामी ॼाणे नासु, द्रष्टमानु सन्सार खे॥

२८३५

माया मझिं उदासु, विॾे को गुर्मुखु रहे॥
जहिं मिली साध संगति सां, क्यो अन्तरि मुखि अभ्यासु॥
जीए घटनि में आकासु, तीए साक्षी ॾिसे सभमें॥

२८३६

माया मंझि उदासु, विॾे को गुर्मुखु रहे॥
जहिं मिली साध संगति सां, क्यो अन्तरि मुखि अभ्यासु॥
पर्ची ॾिठाई पाणमें, चेतन[4] चिदाकासु॥
सामी ॼाणे नासु, जगत्रु सभु जगदीस रे॥

---

(१) प्रेमी भगत (२) समाधि अवस्था में स्थति ईश्वर सां ध्या वार्तालापु कदा आहिनि (३) [illegible] (४) आत्म अन्भय स्ता

२८३७

माया मंझि उदासु, विृले को गुर्मुखु रहे॥
सो द्रष्टमान सन्सारखे, निश्चे जाणे नासु॥
सामी साध संगति जो, वठे भवंर जां वासु॥
जीए घटनि में आकासु, तीए साक्षी डि्से सभमें॥

२८३८

माया मंझि उदास, सामी रहनि सापुर्ष॥
जीअण मरण दुःख सुखजो, मन में रखनि न आस॥
साक्षी ज़ाणी सभसें, थ्या दासनि जा दास॥
कटे अविद्या फास, चढ़िया अन्भय अछते॥

२८३९

माया मंझि पसंनु, मूर्ख रहनि मति रे॥
भोगे भोग भर्मजा, खोहिनि मानुष्य तनु॥
माणे सुखु स्वरूपजो, को जाग्यो साधू जनु॥
मेटे सभु मननु, सीत्लु थ्यो सामी चए॥

२८४०

माया मंझि मगनु, मूर्ख रहनि मति रे॥
कालु न डि्सनि कन्ध ते, नितु तके थो तनु॥
जाग्री जुर्यो पाणसां, को प्रेमी पूरनु॥
जहिंखे आत्म घनु, सामी डि्नो सतिगुरूअ॥

२८४१

माया मंझि मगनु, मूर्ख रहनि मति रे॥
जुदा ज़ाणी पाणखे, धार्नि नाना[1] तनु॥
सामी माणे सेज सुखु, को प्रेमी पूरनु॥
अन्भय आत्म धनु, घिरी लधो जहिं घरमों॥

२८४२

माया मंझि मगनु, मूर्ख रहनि मतिरे॥
जुदा ज़ाणी पाणखे, धार्नि नाना तनु[2]॥
सामी सिक वारनिखे, मिल्यो आत्म धनु॥
अन्भय आत्म अनु, सफा क्याईं सुर्तिसां॥

२८४३

माया मंझि मगनु, मूर्ख रहनि मतिरे
भोगे भोग भर्म जा, खोहिनि मानुष्य तनु॥
ज़ाणे सुखु स्वप्न जो, को जागयो साधू जनु॥
मेटे सभु मननु, सील्लु थिए सामी चए॥

२८४४

माया मंझि मगिरूरु, मूर्ख ज़ाणनि मतिरे॥
सति ज़ाणी सन्सार खे, सामी सहनि सूरु[3]॥
कालु न दिसनि कन्ध ते, थो करे नितु कलूरु[4]॥
राजा राउ मजूरु, मारे जहिं मिटी क्या॥

(१) जन्मनि में प्यो [illegible] (२) [illegible] भोगिनि (३) दुःखु (४) हिसाबु

२८४५

माया मंझि मगरूरु, मूर्ख रहनि मतिरे ॥
कालु न ॾिसनि कन्धते, कन्दो चकिना चूरु ॥
सामी हलनि हलीम थी, भागुयवान भर्पूरि ॥
त्रिकी[1] ताजा[2] नूरु[3], कूड़ी ज़ाणनि कल्पना ॥

२८४६

माया मंझि मस्तानु, मूर्ख रहनि केला ॥
कालु न ॾिसनि कन्धते, कशूं बीठो कानु[4] ॥
वर्तनि वेद वीचारसां, के नेहीं त्रिअभिमान ॥
भगुति ॾिनी भगिवान, जहिंखे पर्चीं पहिंजी ॥

२८४७

माया मंझि मस्तानु, मूर्ख रहनि मतिरे ॥
कालु न ॾिसनि कन्ध ते, कशूं बीठो कानु ॥
वर्तनि वेद वीचार सां, नेहीं त्रिअभिमानु ॥
भगुति ॾिनी भगिवान, जन्खे पर्चीं पहिंजी ॥

२८४८

माया मंझि मवास, मूर्ख रहनि मतिरे ॥
इस्थति ज़ाणी पाणखे, ऊन्हीं रखनि आस ॥
कालु न ॾिसनि कन्ध ते, थो सामी ग़ुणे स्वास ॥
लटे[6] सभि लबास[7] खाधा जहिं ख्यालसां ॥

---

(१) फिसिकी–परमात्मा खों विछुरी (२) नओं–ताजो ॾिसी (३) खुशि थ्यनि
(४) ॿाणु (५) ॿाणु (६) कढ़ी (७) ठाहजोर–ढंगु–ॾेखारो

२८४९

माया मंझि मुक्ति, विॄले को गुमुंखु रहे॥
जहिंखे ड्सी सतिगुरूअ, जुबें जी जुगति॥
ड्रेई कंडि कल्प खे, चेतनु[२] क्याई चिति॥
अन्भय सुखु अमिति, सामी पाए सम ध्यो॥

२८५०

माया मंझि मुक्ति, विॄलो को गुमुंखु रहे॥
जहिंखे ड्रिनी सतिगुरूअ, सामी जोग जुगति॥
सम ड्रिसे जिति किति, अन्भय पुर्षु अख्युनिसां॥

२८५१

माया मंझि मुंझी, प्या सभि जीअ जहानजा॥
मरनि मति मर्म रे, रात्यूं ड्रीहं रुझी॥
सामी कहिं साधूअजी, अविद्या आग बुझी॥
जहिंखे गाल्हि गुझी, सतिगुर ड्सी स्वरूपजी॥

२८५२

माया मंडे मंडाणु, मोहे मारे सभखे॥
कहिंखे छदे कीनकी, खाली खुशीअ साणु॥
रहे अलेपु आकास जां, को सामी सन्तु सुजाणु॥
पाण वराए पाणु, जागी ड्रिठो जहिं ज्योतिमें॥

(१) मेलाप जी (२) आत्म अन्भय जो

२८५३

माया रचाई, कूड़ी रांदि कल्प जी॥
तहिंसें मोहे मोहसां, सभ विश्व फासाई॥
विृले कहिं गुर्मुख खे, अन्भय में आई॥
सामी सफाई, करे चढ़ियो चंगते॥

२८५४

माया रचाई, कूड़ी रांदि कल्प जी॥
विृले कहिं गुर्मुख खे, अन्भय[1] में आई॥
सामी मिली स्वरूपसां, ममत्व मिटाई॥
सभ थी सदाई, माणे मौज मुक्तिजी॥

२८५५

माया रचायो, कूड़ो ठाहु ठगीअजो॥
सामी तहिंमें सभखे, मोहे मुंझायो॥
विृले कहिं गुर्मुख खे, अन्भय रसु आयो॥
पहिंजो परायो, ख्यालु छदे खामोशु थ्यो॥

२८५६

माया रंगु रचो, भारी भेद भर्म जो॥
मोहे मारे सभखे, करे कालु कचो॥
को सुजागो सूर्मो, बलाखों बचो॥
सामी सुखु सचो, गोलिहे लधाईं साध संगि॥

---

(१) ज्ञाणमें

२८५७

माया सभ मोही, खलिक़ पहिंजे ख्यालसां॥
भुलाए भगवन्त खों, द्रोहु करे द्रोही॥
सामी बचो को साध संगि, आशिक़ु अद्रोही[1]॥
ब्रोध[2] रूपु ब्रोही[3], खेती जहिं खामोश सां॥

२८५८

माया सभि ग़ुलाम, क्या जीअ जहान जा॥
पिटिनि कारणि पेट जे, वद्रा वीर वर्याम[4]॥
सामी बचा के सूर्मा, त्रिविकिल्पु[5] निष्काम॥
जन्खे रम्ता राम, द्रिनो द्रर्सनु देहिमें॥

२८५९

माया सभि मोहे, जीअ क्या वसि पहिंजे॥
सामी सन्त अचाह खे, सघे कीन जोहे[6]॥
विधा जहिं खोहे[7], पंजई[8] पर पक्षीअ जा॥

२८६०

माया सभु मांधाणु[9], अणहून्दो उभो[10] क्यो॥
मूर्ख तहिंमें मति रे, हणनि[11] पहिंजो पाणु॥
रहे अलेपु आकास जां, को नेहीं त्रिबाणु॥
सामी सज़ण[12] साणु, मिली नितु मौजां करे॥

(१) पको–बिना द्रोह गुनाह (२) उपदेसु–मंतु (३) लुली–वदी–हथिकई (४) बहादुर (५) बिना फुर्ने बिना कामना (६) फासाए (७) वसिकरे (८) कामु क्रोधु आदी (९) प्रपंचु (१०) रचो (११) फथिकनि (१२) आत्म अन्भय साणु

२८६१

माया सिधि क्यो, अण हून्दो सन्सारु सभु ॥
स्वप्नमें सामी चए, जीए नाना जीउ थ्यो ॥
पाणु भुलाए पहिंजो, सन्से मंझि प्यो ॥
तद्ाी भर्मु व्यो, जदि जागी जुर्यो जोतिसां ॥

२८६२

मार्गु[1] चोराए, प्यो पान्धरू[2] पन्धमें ॥
सामी चढ़ियो सीरते[3] सागरु[4] सुकाए ॥
वेठो वांझीअ[5] पुत्रसां, सुत्ह लिवं लाए ॥
बिना[6] मुख खाए, अम्रित फल आकासजा ॥

२८६३

मारीअ[7] सत खिड़क्यूं[8], सभिनी में दि्सु सोझिरो[9] ॥
वेठो थी तहिं[10] महलमें, खावन्दु धीर धर्यूं ॥
एन्हीअ खिल्वत[11] खासमें, के पहुचनि प्रेम भर्यूं ॥
सामी रहनि ठर्यूं, पाए सुखु सोहागजो[12] ॥

२८६४

मासो[13] चोराए, रख्यो जहिं रतीअ[14] में ॥
सो सील्लु थ्यो सामी चए, पदु पूरणु पाए ॥
लन्दू प्रेम अगम जा, नितु खुलासा खाए ॥
मन में मुशिकाए[15], गूंगे जां गदि गदि थी ॥

---

(१) उमिरि विञाए (२) कर्म भोगमें (३) दस्वे द्वारते (४) प्रपंचु भुलाए (५) आत्म स्ता जा उतिप्ति खों परे न दिसण जी (६) स्वासो स्वास अन्हद धुनीअ जो आनंदु पाए (७) सरीर में गिचीअ खों मथे भाङेमें (८) सत द्वार याने अख्यू कन नास्का सुखु (९) आत्म प्रकासु सता चिमत्कारु (१०) सरीर मे (११) आत्मा साक्षी, चेतन कला, भर्पूरि थी, अदो करे (१२) आनंद अन्भय में (१३) ईश्वर पतीअजो (१४) गुर मंत्रु-उपदेसु-ज्ञानु-स्वास (१५) बुधी-वृती (१६) आत्म सुख जा स्वादी लदूं प्यो खाए (१७) खुशि थ्ये-आनद मे रहे

२८६५

माहि़लु[१] मरी[२] जीयो[३], सामी मोटी[४] न मरे ॥
पातो प्रेम[५] नगर में, लिकी तहिं लीयो॥
ड़ि॒सी ड़ि॒सण[६] द्वारखे, थ्यो खालिसु खीयो ॥
दे॒ई तूलु[७] तकियो, सुम्हयो, सुषुप्त सेजते ॥

२८६६

मिठो लगो मारूं[८], महबत्युनि जे मन खे ॥
समुझाऊं सामी चए, द॒र्सन[९] जो दा॒रूं[१०] ॥
तारि[११] मंझो तारूं[१२], लंघ्या लख्य[१३] अगमसां ॥

२८६७

मिलण जी महि़मां, कहि़ड़ी चवां मुखसां ॥
पर्ची खयां पाणही, जानीअ सभि जिमां ॥
सामी कटे कीनकी, चशिमनि[१४] मों चशिमां ॥
खिल्वती क्षिमा, करे पीअनि प्रेम रसु ॥

२८६८

मिल्यो महदु[१५] पुर्षु, कहीं पूरण पुञते ॥
तहिं फेरे हथु मथेते, क्यो अन्तरि मुखु ॥
मिटयो अविद्या दुःखु, सामी ड़ि॒सी स्वरूपखे ॥

---

(१) जा॒णूं–पूरणु (२) सन्सार खों पासे थी (३) ईश्वर सां लीनु थ्यो (४) वरी जन्म मरण में कीन ईंदो (५) दस्वे द्वारमें (६) आत्म अन्भय सता (७) समाधि में लैलीनु थी आनंदु पातो (८) प्रेमां भगि॒ती–ईश्वरु (९) मिलणजो (१०) रसितो दगु॒ (११) सन्सार समुंद्र (१२) तरीन्या (१३) जा॒णपसां (१४) अख्युनि मों अख्यू–प्रेम जी तार (१५) [illegible]

२८६९

मिल्यो महां पुर्षु, जहिंखे अचे अन्भई ॥
मिटयो तहिंजे मन मों, जन्म मरण जो दुःखु ॥
कहिंखे सले कीनकी, सामी सम्ता सुखु ॥
सदाई सन्मुखु, रहे सार स्वरूपजे ॥

२८७०

मिल्यो सन्तु दयालु, वठी थ्यो घरि पहिंजे ॥
दाति[1] ड़िनाईं दिबु[2] रतनु, क्याईं दासु निहालु ॥
सामी सभु सुवालु[3], मिटी व्यरो मन मों ॥

२८७१

मिल्यो साधूजनु, अन्दरि अविद्या न रही ॥
लोहो पार्स सां लगी, सहजे थ्यो कन्चनु ॥
मिटी व्यरो मन मों, सामी सभु मननु[4] ॥
आत्म पदु अननु[5], पाए पर्चो पाणमें ॥

२८७२

मुई कढु ममत्वु, अविद्या जो अन्दर मों ॥
पाए पांदु ग़िचीअ में, पिरु[6] पर्चाइ सुततु ॥
नत रोअन्दे रतु[7], विछुर्यँ वेल इन्हीअं खों ॥

(१) उपदेसु (२) अन्तरि अन्भयजो (३) प्रपंचु (४) मांपणो (५) अ दृटु—अखंडु
(६) ईश्वर सां लैलीनु थीउ [७] मरण वखति

२८७३

मुई पाणु म ग़णि, मतां दिसे दुःख दोहगजा॥
पोए पाइ गिचीअ में, सामी महबत मणि॥
त सहजे सोहागिणि, प्री करेई पहिंजी॥

२८७४

मुक्ति मञे मूढ़ो[१], भुली प्यो भर्म में॥
सामी भवें भवन[२] में, जीए वाचूड़ो॥
सही क्याईं साध संगि, सभ क्रिति ऐ[३] कूड़ो॥
गोठु[४] छदे गूढ़ो, कादे वञे कीनकी॥

२८७५

मुक्ती ग़ाल्हि उती[६], सतिगुर सुख अगम[७] जी॥
सामी ज़ाणे सभमें, हिक आत्मा अदुती[८]॥
समुझी मनु सीत्लु थ्यो, रही न कल्प[९] कुती॥
वञी द्रष्टि खुती, चेतन चिदाकासमें॥

२८७६

मुक्तो ममोष्यी[१०], सामी मिल्यो सतिगुरू॥
जहिं पर्ची दिनी पहिंजी, अन्भय अनोष्यी[११]॥
जागी बिना जतन जे, अविद्या सिन्धु सोष्यी[१२]॥
पाणीअ रे पोष्यी, वाड़ी सहज आकासमें॥

---

[१] मूर्खु [२] दसाउनिमें प्यो भिटिके [३] कूड़ो प्रपंचु (४) ईश्वर खे [५] प्रेमी [६] चई [७] अथाह (८) द्वैत रहतु (९) मायावी कल्प्ना (१०) प्रेमी भगतु (११) दुःखी (१२) सुकाई–पासे थ्यो (१३) स्वासो स्वास रूपी वारी छिके आकास रूपी दसवें द्वार में पहुती

२८७७

मुख सां रामु चए, सान्ति[1] न अचे जीअखे॥
अन पाणीअ जे नावसां, उञ भुख कीन लहे॥
नगरि पहुंचे कीनकी, बिना पन्ध कए॥
गुर्गम रहति रहे, त सुखी थिए सामी चए॥

२८७८

मुठा सभि मनन[2], ज्ञानी पण्डत पुस्तकी॥
बिना सुख स्वरूपजे, कनि उत्तर[3] ए प्रश्न॥
पाए वेठा कछमें, त्रिष्णा द्राइणि रन॥
विॊले कहिं हर्जन, सामी सारु सही क्यो॥

२८७९

मुन्ड न[4] मुन्डे वेहु, हलु हीये[5] सां होतद॒[6]॥
तो जे सेण सज॒ण क्या, अथी दूरि[7] तनीजो द॒ेहु॥
सामी पारे[8] पेहु, पुछु तनीखों खबिरां॥

२८८०

मुर्ली मध[9] भरी, कान[10] वज॒ाई कून्जमें॥
महा[11] मिठी मोहिणी, धुनि अपारु धरी॥
ब॒धी ब॒िनि[12] कननि सां, लूअं लूअं सभ ठरी॥
सुधि ब॒धि सभ विसरी, सामी चए सन्सार जी॥

---

(१) मन में प्यो आशाऊं, फुर्ना रखी भिटिके (२) मापणे-पाणु मने (३) वादि विवादि (४) मथो न कूराए वेहु-प्रपंचु ठाहे न वेहु (५) हृदयमें (६) ईश्वर द॒े (७) जन्म मरण चक्र (८) सतिवीचारमें (९) प्रेम भर्यल अन्हद धुनी (१०) ईश्वरी सताजी सदाई सरीर में वज॒ेथी हले थी (११) अती आनंद सां मोहींदर धुनी अपार हलेथी (१२) तहिंखे अन्तरि अभ्यास द्वारा अनुभय करे आनंदु थ्यो जो सन्सार जे मायावी प्रपंच जी सुधि ज॒ाणप भुलीवई

२८८१

मुलिकीअ खे मुलिकी, मिल्यो मनु देई करे॥
पर्चो क्याऊं पाणमें, प्रयनि जो पुलिकी[१]॥
लगनि बाहि ब्रिहजी, सन्ध सन्ध में सुलिकी[२]॥
मरी थ्या मुलिकी, ड्याईअ रे ब्राभणु चए॥

२८८२

मुशिकुलु क्यो आसानु, सामी पूरे सतिगुरूअ॥
पर्चो डि्नाई प्रेम सां, अन्भय आत्म ज्ञानु॥
रहियो न रतीअ जेत्रो, अन्दर में अभिमानु॥
सम दि्से भगिवानु, चीटीअ ऐ कुञ्चर में॥

२८८३

मुस्लिमान मको, हिन्दू पूजिनि देउरा॥
कढी गैरु[३] अन्दर मों, को थ्यो थिर थको[४]॥
जहिंखे पेरु[५] पको, सामी दस्यो सतिगुरूअ॥

२८८४

मूढ़ दि्यनि आङुरि[६], था पहिंजे[७] गुईअ पाणखे॥
अटलु[८] राजु छदे करे, भीष[९] कनि दरि दरि॥
मिली साध संगति सां, तू सामी सद्दो करि॥
बिना भजन हरि, मुठा जीअ मननमें[१०]॥

---

(१) वीषारु (२) तिखि-- प्रेमजी (३) प्रपंचु (४) भिटिक्यो (५) रस्तो-ज्ञानु-उपदेसु (६) चन्दु-अहक (७) पहिंजो पाणखे (८) आत्म सुख खों भुली (९) आशा इन्छा रखी प्या भिटिकनि (१०) पाणु मनिणमें

२८८५

मूर्ख करि न खोआरु, चौरासीअ में पाणखे ॥
अगुहीं[1] रुल्ये केलो, हाणे थीउ हुशियारु ॥
मिली महद्[2] जननि सां, पहिंजो करि उधारु ॥
अहिड़ो समों सारु, सामी लहन्दे कीनकी ॥

२८८६

मूर्ख करि न मोहु, काया माया कुल सां ॥
साणु न हलंदुइ महल तहिं, दीन्दुइ तोते द्रोहु ॥
सर्वगति सामी चए, सभसां करे ड्रोहु ॥
तद्दी कंदे कोहु[3], अगयों अचे अजीबनि जे[4] ॥

२८८७

मूर्ख कनिं वादि, बिना समुझ स्वरूपजे ॥
गाल्हियूं वेदनि जूं बुधी, सामी रखनि न यादि ॥
पर्चीं लहनि कीनकी, आत्म पदु अगाधि ॥
बिना सुख समाधि, पण्डतु जाणनि पाणखे ॥

२८८८

मूर्ख कर्म करे, भुली भोगिनि पाणहीं ॥
भवनि भौसागर में, नाना[5] रूप धरे ॥
कटी फास[6] फुनें जी, कहिं गुर्मुख गहरे ॥
सामी दिसी ठरे, अन्दरि बाहरि आत्मा ॥

---

(१) अगयनि जन्मनि में (२) महां पुर्ययनि सां (३) छाकन्दे (४) ईश्वरजे
(५) जन्म पाए (६) नोड़ी

२८८९

सूर्ख करि म माणु, काया माया कुलजो॥
अचे हणदुइ ओचते, कालु कहारी बाणु॥
कूड़ा हलन्दइ कीनकी, सामी चए साणु॥
साझुरि पाणु सुञाणु, मतां पवे पोइ दुःखनिमें॥

२८९०

सूर्ख करि म माणु[2] काया माया कुलजो॥
अचे हणदुइ ओचिते, कालु कहारी कानु॥
मारे जहिं मिटी क्यो, बुढो बारु जोआनु॥
सभुको सम्य साणु, हल्यो वञे हेकिलो॥

२८९१

मूर्ख करि म माणु, काया माया कुलजो॥
अचे हणदइ ओचितो, कालु कहारी बाणु॥
संगी थीन्दुइ कोनको, सामी चएई साणु॥
साझुरि पाणु सुञाणु, जागी अविद्या निन्ड्रमों॥

२८९२

मूर्ख करि म माणु, काया माया कुलजो॥
कहिंसा निन्हे कीनकी, ईहो सौदो साणु॥
अविद्या छल असार खों, पुझी[5] रखिजि पाणु॥
साक्षी पाणु सुञाणु, त सुखी थिए सामी चए॥

---

(१) वड़ाई (२) वड़ाई (३) वड़ाई (४) वड़ाई (५) समुझी-वीचारे

२८९३

मूर्ख करि म माणु, काया माया कुलजो॥
चढ़ियो कालु कुल्हनि ते, रहे सदाई साणु॥
जाग़ी अविद्या निन्ड्र मों, करे वडु कल्याणु॥
ईहो वेलो ज़ाणु, सामी राम मिलण जो॥

२८९४

मूर्ख करि म मोहु, काया माया कुलसां॥
छद्रे वेन्दइ छिनमें, ड्रोही करे ड्रोहु॥
उल्टो द्रीन्दइ द्रोहु, सामी चए सिरते॥

२८९५

मूर्ख करे छल वल, खोहिनि मानुष्य देहिखे॥
मिली वडु महबूबसां, मोचारीअ महल॥
मोटी ईन्दुइ कीनकी, अहिरो समो सव्ल[२] ॥
नत पोदें झरि [३] झंगल, सिज[४] लथे सामी चए॥

२८९६

मूर्ख करे ममत्व, खोहिनि मानुष्य देहिखे॥
मिली वडु महबूब सां, छद्रे हठु हर्कत॥
मतां अचे ओचिते, कालु हणेई लत॥
पोइ भवे पर्वत, पसूं थी सामी चए॥

---

(१) वदाई (२) मित्र (३) जुवानमें (४) [illegible] पखति

२८९७

मूर्ख करे ममत्वु, भवनि[1] भौसागरमें॥
पछिनु[2] जाणी पाणखे, रोअन्दा वतनि रतु॥
उल्टी कहिं आशिक दिठो, तन्में[4] तुर्या तत्वु॥
वारे[5] खातो खतु, सामी माणे सान्ति सुखु॥

२८९८

मूर्ख कीन दिसनि, सन्मुखु सुपेर्युनि खे॥
अविद्या जीअ अन्धा क्या, दिनो पटु प्रयनि॥
भर्म मंझि भुली करे, था पना नितु पढ़नि॥
तप तीर्थ ब्रित नेम जग, जहदु क्यो जागनि॥
गुफा बन पहाड़ में, भुख उञ दुःख सहनि॥
नाना भेष धरे करे, था देहि अमोल्य दहनि॥
बिना साध संगति जे, वहण मंझि वहनि॥
के लखाया लहनि, सामी सुपेर्युनि खे॥

२८९९

मूर्ख कोहु करें, वदाई वीचार रे॥
काया माया कुल जा, दिसी ठाठ ठरें॥
कालु तुहिंजे कन्ध ते, बीठो बाण भरे॥
सारो जगु दरे, सामी तहिं जाल्म खों॥

२९००

मूर्ख कोहु गणे, थो सिटां कूर्यू जीअमें॥
ईहो पिण्डु खलल जो, सामी कीन खणे॥
जुबें रे जगदीस खे, बी गाल्हि कान वणे॥
खणी कीन हणे, मिटी मैलु ममत्व जी॥

(१) भिटिकनि (२) नास्मातु (३) सन्सार खो पासेयी (४) पहिंजो आत्म तत्व जो अन्भय करो (५) कर्म भोग में कीन ईंदो (६) ईश्वर में लैलीन्ना

२९०१

मूर्ख कोहु फसें, थो भुली माया मोहमें॥
ब॒ाभणु चए बुधि तुहिंजी, वदी कहिं खसे॥
जाग॒ी दि॒सु तहिं देवखे, जो विद्यमानु[1] वसे॥
मतां कालु द॒से, प्यो कुटेई कोप्री॥

२९०२

मूर्ख कोहु मरें, थो अविद्या जे अहङ्कार में॥
मिली साध संगति सां, सर्व त्यागु करें॥
सामी अजरु[2] जरे, त सन्मुखु दि॒से सुप्री॥

२९०३

मूर्ख कोहु मरें, थो लग॒ी कूड़े मोह सां॥
साणु खणदे कीनकी, हिलों बार भरे॥
समुझी दि॒सु सामी चए, शुधि वीचारु करे॥
लाहे छोन धरें, अविद्या[3] पिण्डु मथेतों॥

२९०४

मूर्ख कोहू म्वासु[4], रहें माया मोहमें॥
अचे कन्दुइ ओचिते, गर्जी कालु ग्रासु[5]॥
जाग॒ी अविद्या निन्ड्र मों, करि कल्पन[6] खे नासु॥
चेतलु चिदाकासु[7], सुत्ह दि॒सें सामी चए॥

---

(१) सदाई (२) चेतन सत्तामें लीनु थे (३) अज्ञान जो पर्दो (४) मवाली-मस्तु (५) खाईवेन्दुइ (६) इच्छाउनखे (७) शुधु आकास वांगे

२९०५

मूर्ख खे ज्ञानी, सामी क्यो सतिगुरूअ॥
भरे हयाईं प्रेम जी, क्रिपा सां कानी[1]॥
रही न रतीअ जेत्री, नानत[2] नादानी॥
जागाए जानी, दे॒खार्योई दी॒लमें॥

२९०६

मूर्ख घड़े घाट, खोहिनि मानुष्य देहिखे॥
मिली वठु महबूबसां, लाए लिवं लिलाट॥
मतां अचे ओचिते, हणेई कालु चमाट॥
पोइ न लहन्दे वाट, सामी चए सम देसजी॥

२९०७

मूर्ख चौरासी, भुली भवें थो पाणहीं॥
अविद्या[3] जे अहङ्कार जी, पाए गलि फासी॥
सामी सदाई रहे, मधमें[4] म्वासी[5]॥
उल्टी अबिनासी, देउ न दि॒से देहिमें॥

२९०८

मूर्ख छदि॒ ख्यालु, कूड़ो माया मोहजो॥
जपे वठु जगदीस खे, कढी पोलु[5] पलालु॥
अचे बीहन्दइ ओचिते, सिरते कहड़ी कालु॥
दि॒सी पहिंजो हालु, रोअन्दे रतु अख्युनि मों॥

---

(१) उपदेसु (२) द्वेतु भेदु (३) अज्ञानजी (४) प्रेममे (५) भर्पूरि
(६) सन्सार पासो करे नथो तोहि देव खे दि॒से (७) प्रपंचु

२९०९

मूर्ख छदि॒ गुमानु, काया माया कुलजो ॥
जपे वहु जागी करे, भेद बिना भगि॒वानु ॥
अचे हणदुइ ओचिते, कालु कहारी कानु ॥
सामी सभु जहानु, मारे जहिं मिटी क्यो ॥

२९१०

मूर्ख छदि॒ मखोलु, कूड़ो माया मोह जो ॥
मिली वढु महबूबसां, करे फ़िकिरु फोलु ॥
मतां अचे ओचिते, हणई कालु गुलेलु ॥
थीन्दे डावांडोलु, सिज लथे सामी चए ॥

२९११

मूर्ख छदि॒ ममत्व, काया माया कुलजो ॥
मिली वढु महबूबसां, सामी चए सुततु ॥
मोटी ईन्दइ कोनको, अहिड़ो हथि वकितु ॥
पोइ रोअन्दे रतु, अख्युनि मों आजज़ु थी ॥

२९१२

मूर्ख छिके छिक, फाहीअ फासनि पाणहीं ॥
भोगि॒नि भोग॒नि सां मिली, नाना भाइ नर्क ॥
दि॒ठो अन्भय आत्मा, उल्टी कहिं आशिक ॥
महिर कई मालिक, सामी जहिंते साध संगि ॥

२९१३

मूर्ख ज़ाणनि दूरि, नारायणु नैननि खों॥
भवनि नितु भुलनि जां, दुःखनि जे दस्तूरि॥
सामी आशिक अन्भई, हर्दमि रहनि हजूरि॥
जहिंखे पहले पूरि, पारि लंघायो पातिणीअ॥

२९१४

मूर्ख जीअ खराबु, क्या कल्प पहिंजीअ॥
जन्मी मरी जमखे, हर हर डि॒यनि हिसाबु॥
कोर्युनि मों को हिकिड़ो, करे खुशीअ सां खाबु[1]॥
जहिंखे शौकु[2] शराबु, सामी डि॒नो सतिगुरूअ॥

२९१५

मूर्ख जीअ ज़ुखी[3], जगु॒में रहनि मतिरे॥
चाल चलनि अज्ञान जी, बिना रस रुखी॥
मिली थ्यो महबूबसां, को सामी सन्तु सुखी॥
गु॒हिरी गुर्मुखी, मुखि रखी मौजां करे॥

२९१६

मूर्ख थ्या गुलाम, बिना ज्ञाति गुरूअजे॥
हर्दमि हथ ब॒धी करे, सामी कनि सलाम॥
रहनि अलेपु आकास जां, के नेहीं निष्काम॥
जन्खे रम्ता राम, पाणु लखायो पाणसें॥

---

(१) स्वप्न समुझे (२) प्रेम जो नशो (३) दुःखी

२०१७

मूर्ख थी मगिरूरु, खोहिनि मानुष्य देहिखे॥
मिली वडु महबूब सां, साबितु रखी शहूरु[1]॥
कालु तुहिंजे कन्धते, थो तिखो वजाए तूरु[2]॥
मारे चकिना चूरु, सामी क्यो जहिं समखे॥

२०१८

मूर्ख थी मगिरूरु, खोहिनि मानुष्य देहि खे॥
मिली वडु महबूब सां, साबितु रखी शहूरु[3]॥
मतां अची ओचिते, करेई कालु कलूरु[4]॥
पोइ न लहन्दें पूरु[5], पको पारि लंघणजो॥

२०१९

मूर्ख थी मस्तानु, खोहिनि मानुष्य देहिखे॥
मिली वडु महबूब सां, छदे गैरु गुमानु॥
अजु कल्ह अचे ओचिते, कालु हणदुइ कानु॥
थीन्दे पोइ हैरानु, मरण वेल सामी चए॥

२०२०

मूर्ख दे आई, माया बणी ममत्व जी॥
फुरे क्याई फोक सभि, देई वदाई॥
सामी सुजागनि खों, भगी भउ खाई॥
महतामी[6] साई, करिनि गुमु ज्ञानिसां॥

---

(१) होशु (२) नादु (३) होशु (४) नादु [illegible] (५) रस्तो (६) मोहीन्दर

२९२१

मूर्ख धारिनि भेषु, हद्दिड़े भेष असुल खे॥
जहिंमें वसे पाण थो, पूरणु पुर्षु अलेखु॥
अथी मीनु न मेषु, समुझी दि॒सु सामी चए॥

२९२२

मूर्ख नाहिं मज़ाक[1], लाहिणु अशिकु अलाह सां॥
पुछी दि॒सु तनीखों, जन्जी सूड़ीअ ते ओताक॥
खल लाहे दि॒यनि पहिंजी, तालिह[2]वन्द तराक[3]॥
तोड़े थ्यनि खाक, तांभी सामी संभारिनि यारखे॥

२९२३

मूर्ख नाहिं मजाक, लाहिणु अशिकु अलाह सां॥
सामी सुपेर्युनि जी, अथी सूड़ीअ[4] ते ओताक[5]॥
सिरु सटे सौदो करे, कै वञी पहुता पाक॥
खाकी थ्यरा खाक, नूर महल जे नीहंते॥

२९२४

मूर्खनि मेरे, कागु॒र कोट कठा क्या॥
सामी लोभ लहरि न्यां, रहति बिना रेढ़े॥
आशिक चढ़िया अछते, वर्क सभि वेढ़े॥
सुर्ग खों नेड़े, सुत्ह दि॒ठाई सुप्री॥

---

(१) सुथिरो–जल्दी (२) तौकिली (३) तुर्तु–त्यारु (४) दस्वे द्वारते
(५) ठिकाणो

२९२५

मूर्ख पूजा कनि, था पर्चेरीअ पथर जी॥
मन में मैलु रखी करे, देही नितु धोअनि॥
लाए भोग॒ भ्रान्ति जा, बिना प्रेम नचनि॥
से कीअं प्री पसनि, अविद्या जन्जे अग॒में॥

२९२६

मूर्ख वगी ब्वासु[1], खोहिनि मानुष्य देहिखे॥
मिली वटु महबूबसां, छदे॒ लोभु लबासु[2]॥
अजु॒ कल्ह अचे ओचितो, कालु कढन्दुइ स्वासु॥
थीन्दे पोइ उदा॒सु, आखरि में सामी चए॥

२९२७

मूर्ख बिना मति, भुली प्या भर्म में॥
सति जा॒णी सन्सारखे, खपनि मंझि खपि॥
आशिक चढ़िया अछते, करे शुधि सम्बति[3]॥
निन्दा ऐ उस्तति, सामी जा॒णनि सम थी॥

२९२८

मूर्ख भोगे॒ भोग॒, रज॒नि न रतीअ जेत्रो॥
तोड़े पाइनि अन्तिमें, सामी नाना रोग॒॥
रहनि अलेपु आकास जां, के औधूत असोग॥
जप तप साधन जोग॒, सांधे जनि सिधि क्या॥

(१) चर्या (२) मकरु (३) रस्तो—वीठि

२९२९

मूर्ख मति मलीन, पिटिनि कारणि पेटजे॥
मानुष्य देहि अमोल्य जो, कदुरु जाणनि कीन॥
उल्टी अन्तरि मुखु ध्या, के प्रेमी प्रवीन॥
सदा साणु संगीन, सामी रहनि सुमेर जां॥

२९३०

मूर्ख मन जे भाइ, कोहु करे थो कल्पना॥
कहीं पदु पातो कीनको, सचीअ सिक स्वाइ॥
समुझी तूं सामी चए, अन्तरि मुखि लिवं लाइ॥
लूअं लूअं मंझि लखाइ, मूर्त महबूबनि जी॥

२९३१

मूर्ख मन मती, वादि कर्नि वेदान्तजी॥
जीए खाए खाब दुःखनि जा, स्वप्न मंझि सती॥
कोर्युनि मों कहिं हिकिड़े, समुझी रमिज़ रती॥
प्रत्क्षु प्राण पती, सामी दिसी सम थ्यो॥

२९३२

मूर्ख मनु लाए, भोगिनि भोग भर्मजा॥
कालु न दिसनि कन्ध ते, जो खर्चु थो खाए॥
सामी बचो को सूर्मो, साधूअ जे साए॥
चिट चौको पाए, इस्थति थ्यो आकास जां॥

२९३३

मूर्ख म्वासी[1], खोहिनि मानुष्य देहिखे ॥
मिली वटु महबूब सां, छदे हटु हांसी ॥
मतां अचे ओचिते, कालु विझेई फासी ॥
भवन्दे चौरासी, सामी चवेई सान्ति रे ॥

२९३४

मूर्ख म्वासी[2], सचु सुञाणनि कीनकी ॥
सामी प्या सन्सार जे, फुर्ने में फासी ॥
जागी कहीं जोगीअ कई, क्षिण में खलासी ॥
अलखु अबिनासी, दिठो जहिं अख्युनि सां ॥

२९३५

मूर्ख माया काणि, कोहु मरें थो मति रे ॥
गील्हे वेन्दुइ गार में, जा आहे सभजी खाणि ॥
द्रावंण ज्या पाणखे, ताणे मंझि न ताणि ॥
उल्टी पीउ पछाणि, त सुखी थें सामी चए ॥

२९३६

मूर्ख मुल्हि गिधो, भुली भूतु भर्म जो ॥
जन्म मरण जे दुःख में, बधी पाणु विधो ॥
ईहो इशारो अन्भई, कहिं प्रेमीअ पुधो ॥
सम्ता मंझि सिधो, सूक्षमु थी सामी चए ॥

(१) चर्या (२) चर्या (३) जरि जा जीतु

२९३७

मूर्ख मूर्खाई, छद्निन कीन क्षिण भरि॥
पुठी दे्ई पाणखे, छाणिनि नितु छाई॥
दानाहनि जे दि्लि में, सुत्ह सफ़ाई॥
अन्भय में आई, सामी तनि खे सम्ता॥

२९३८

मूर्ख मेरिनि मालु, इस्थरु जा्णी पाणखे॥
जपे वटु जग्दीस खे, छदे् खाम ख्यालु॥
अचे भजन्दुइ ओचिते, सामी चए कन्धु कालु॥
दि्सी पहिंजो हालु, रोअन्दे रतु अख्युनिमों॥

२९३९

मूर्ख मेरि म मालु, इस्थरि जा्णी पाणखे॥
मिली वटु महबूबसां, छदे् खाम[1] ख्यालु॥
अचे पौदुइ ओचिते, सिरते कहरी कालु॥
मिलणु पोइ महालु, सामी चए अथी समुझ रे॥

२९४०

मूर्ख मै मेरी, मिठी जा्णनि मनमें॥
प्रीति न कनि प्रतीति सां, पर्चीं पकेरी॥
कालु न दि्सनि कन्ध ते, वजे् थो वेरी॥
भस्म जी ठेरी, सामी क्यो जहिं सभखे॥

---

(१) अजाया

२०४१

मूर्ख मै मेरो, सटे विझु सामी चए॥
मिली वञु महबूब सां, समुझी सवेरो॥
कालु तुहिंजे कन्ध ते, थो फिरे चौफेरो॥
दम्यों जनि[1] देरो, से मारे न्याई सूर सभि॥

२०४२

मूर्ख लगे न मुल्हु, पचें[2] मंझि प्रयनिजे॥
समुझी डिसु सामी चए, छडे हैबत[3] हुलु॥
रखी सिक अन्दर में, प्रेम हिन्दोरे[4] झुलु॥
नाहकु भर्म न भुलु, पुठी[5] डेई पाणखे॥

२०४३

मूर्ख बादि कई, पण्डतु जाणी पाणखे॥
बुधायई सभखे, चारई वेद चई॥
सामी सार स्वरूप खे, क्याई कीन सही॥
व्यरो पाण वही, डेई हथ ब्यनि खे॥

२०४४

मूर्ख सभि मुझी, प्या वेदनि जे वाचमें॥
सामी लख्य[6] स्वरूपजी, कंहिं स्याणे समुझी॥
जहिंखे डिनी कुन्जी, सतिगुर ऐन आकासजी॥

---

(१) अन्भय आनंद स्थर्ता (२) प्रेममें (३) खटि पटि (४) अन्भय जे आनंद में सुखी थीउ (५) काण भलाए (६) लखण

२९४५

मूर्ख है है कनि, माया कारणि मनमें॥
मति ज़ाणी सन्सार खे, नाना दुःख सहनि॥
कालु पहिंजे कन्ध ते, अन्धा कीन दिसनि॥
सामी हल्या वञनि, रोअन्दा रतु अख्युनि मों॥

२९४६

मूर्खु कीन हटे, कूड़ कपृ प्रपंच खों॥
मानुष्य देहि अमोलखे, थो सागर[1] मंझि सटे॥
थूहरु[2] लाए घरमें, थो[3] सामी अम्ब पटे॥
मोत्युनि[4] साणु मटे, वठे कचु कड़ूर जो॥

२९४७

मूर्खु कोहु रटे[5], रात्यूं डींहां लोभ में॥
विधी आत्म पदजी, इनीह राह लटे[6]॥
जीउ[7] क्याई पीअखे, मस्तीअ साणु मटे॥
जागी[8] छोन कटे, सामी कलप पहिंजी॥

२९४८

मूर्खु चौरासी, भुली वञे थो पाणहीं॥
नको जम गणु धर्म गणु, नको फन्दु फासी॥
दिसी इनीहं गालिह खे, अचे मनि हासी॥
सामी अबिनासी, नाभु मने थो निन्डूमें॥

---

(१) अजायो मायावी प्रपंच रूपी समुन्द्र में विझे (२) पाण खे प्रपंच में भिटिकाए (३) स्वास रूपी अम्ब विञाए पटे छदे (४) से मोती रूपी स्वासनि खे विञाए कर्म भोगु रूपीकच जा अनेक जन्म प्यो भोगे (५) भिटिके (६) ढके–बन्दि करे (७) इश्वर आत्म अन्भय स्ता खे सरीरु ज़ाणी अहङ्कार में विधो (८) ज्ञान प्रापति करे (९) पहिंजा भर्म कल्पना कढु

२९४९

मूर्खु थो मारे, पहिंजे हथें पाणखे॥
लगी माया मोहजे, कूड़े लिवं लाड़े॥
दिसे न सार स्वरूपखे, सामी सम्भारे॥
गपणि मंझि गारे, थो हीरा लाल अण मुल्हा॥

२९५०

मूर्खु प्यो पाए, भाकुरु पाण भर्म खे॥
अविद्या सन्दे सीरमें, गोता नितु खाए॥
पना नितु प्रतीति रे, वेठो वाझाए[1]॥
जड़ी छुटो[2] छदाए, त सुखी थिए सामी चए॥

२९५१

मूर्खु पाण मरे, थो खोहे मानुष्य देहिखे॥
मिले कीन महबूब सां, सची सिक करे॥
काल्लु तुहिंजे कन्ध ते, बीठो बाणु भरे॥
पौंदे पोइ परे[3], सिज लथे सामी चए॥

२९५२

मूर्खु विञाए, थो हीरो जन्मु हथनिमों॥
मिली साध संगति सां, लेखे न[4] लाए॥
ढांवर ज्यां पाणखे, फन्द रे फासाए॥
मूहुं मढ़ीअ[5] पाए, सामी दिसे कीनकी

(१) पढ़े (२) ईश्वरु क्रिपा करे (३) जूण्युनिमें (४) वीचारु कीन करे
(५) जंर जे जीत वांगे (६) पहिंजो पाणखे नथो दिसे

२९८३

मूर्खु विषु खाए, थो आत्म अमृत खे छदे॥
हीरा लाल अण मुल्हा, थो रोले विञाए॥
सामी दिसे कीनकी, मूंहुं मढ़ीअ पाए॥
हटु क्यो हाराए, थो मानुष्य देहि अमोल खे॥

२९८४

मूर्खु सो आहे, जो सचु सुञाणे कीनकी॥
पाणु पहिंजो पाणमों, वेठो विञाए॥
समुझ रे सामी चए, धिका नितु खाए॥
झाती कीन पाए, घिरी पहिंजे घरमें॥

२९८५

मूहन मुहिंजो मनु, तुहिंजे सिक सोघो क्यो॥
लूअं लूअं मंझि लगी रहयो, तके तर्फे तनु॥
पुछे पुकारे सद करे, सहे सभु वचनु॥
दुःखीअ खे दर्सनु, सुततु दे सामी चए॥

२९८६

मोहन वजाई, मुर्ली[1] कदिली[2] बनमें॥
रखी[3] धुनि धीर्य सां, तान ति ी लाई॥
गोप्युनि ए गुवालनि जी, सुधि बुधि सुलाई॥
सामी[5] सदाई, रहनि सुख सन्तोष में॥

---

(१) धुनी (२) हृदय कोषमें (३) धीर्यु धारे लिवं में लीनु थ्यो (४) प्रेम्युनि जी सन्सार खों बुधी फिरी वेई (५) सदा आनंद सुखमें लीनु थ्या

२९५७

सूहंसां चए केरु, ऊन्ही ग़ालिह अर्शजी ॥
जहिंजो लभे कोनको, सामी चए सिरु पेरु॥
पर्वत में राई रहे, राईअ मंझि सुमेरु[२] ॥
घिरी[३] लधो जनि वेरु[४], माइलु थ्या माहिराण में॥

२९५८

सूहं सां बक बके, सभुको, सार स्वरूप जी॥
कोयुंनि मों कहिं हिकिड़े, लधो थाउं थके॥
जहिंखे ह्यों सतिगुरूअ, बेहद ब़ाणु तके॥
गंगा गया मके, भवे कीन भुलनि जां॥

२९५९

सूहंसां बक म बकु, सामी खिल्वत खासजी॥
आशिक अजीबनि जो, हर्दमि रखनि हकु॥
अठई पहर गर्कु, रहनि पहिंजे हालमें॥

२९६०

सूहंसां महा वाक्य, बुधी बोलिनि केत्रा ॥
समुझी के सीत्लु थ्या, महवती मुस्ताक॥
मारे क्या जनि मनजा, ख्याल सभेई खाक॥
पर्चा रहनि पाक, सामी सुपेर्युनि सां॥

---

(१) ईश्वर जी (२) पर्वत जो नालो आहे (३) पेही (४) वरु–दगु–रस्तो

२९६१

मेरे जहिं सूड़ी, कृपा साणु कठी कई॥
मिटी तहिंजे मन मों, कल्प सभ कूड़ी॥
वेठो पाकु प्रयनि सां, लाए लिवं गॗड़ी॥
पकोड़ा पूड़ी, सामी खाए, सम थी॥

२९६२

मोअनि जो मशहूरु, मार्ग पुछु मोअनि खों॥
पाड़ौ पर्छिन्ता[1] जो, पटियो जनि अंगूरु[2]॥
रखनि न रतीअ जेत्रो, सामी सन्सो सूरु॥
हद बेहद भर्पूरि, प्रत्क्षु ॾिसनि पीअखे॥

२९६३

मोअनि जो मार्गु, मरी[3] पुछु मोअनि खों॥
हल्या वञनि हेक्लिा, पोइ न विझनि पगु॥
लंवे चढ़ियो लख्य[4] ते, सामी सारो जगु॥
सदा अल्प अलगु, रहनि विदेही देहिमें॥

२९६४

मोअनि जो मार्गु, वञी पुछु मोअनि खों॥
जे जीअन्दे तन अभ्मिान खों, आशिक थ्या अलगु॥
सही क्याऊं साध संगि, सामी सजणु ठगु॥
जहीं सारो जगु, ठॻियो ठॻोरीअ सां॥

(१) नासमाझु (२) फल-प्रबंध (३) प्राण छडे (४) पदते

२९६५

मोअनि जो मार्गु, वञी पुछु मोअनि खों॥
जे जीअन्दे तन अभिमान खों, आशिक थ्या अलगु॥
सामी सुपेर्युनि खों, पोइ न विझनि पगु॥
तोड़े जखे जगु, तांभी मस्तु रहनि महिराग में॥

२९६६

मोअनि जो मार्गु, वञी पुछु मोअनि खों॥
जे जीअन्दे तन अभिमान खों, थ्या अलेपु अलगु॥
पाताऊं प्रतीति सां, सामी सुखु सर्वगयु॥
तोड़े जखे जगु, तांभी मस्तु रहनि माहिराग में॥

२९६७

मोअनि जो मार्गु, वञी पुछु मोअनि खों॥
जे लंघे चढ़िया लख्य ते, सामी सारो जगु॥
ज़ाणनि स्वप्न असार जो, सुख स्वरूपु स्वर्गु॥
सदा अलेपु अलगु, रहनि विदेही देहिमें॥

२९६८

मोचारो[1] मूहं कारो[2], अन्दर[3] कारे मागहूअं खों॥
समुझे सुजानु को सूर्मो, ईहो इशारो॥
चढ़ी[4] वज़ाए चिटते, निर्भय नंगारो॥
नभ जां न्यारो, सामी रहे सरीरमें॥

---

(१) अन्भय आनंद रूपु (२) बिना मूहं (३) बिना सरीर वारो माणहू
(४) अहन्द आनंदमें स्थति थी त्रिवाण पद ते पहुचे (५) जो सरीर में हुन्दे भी न्यारो आहे

२९६९

मोचारो मूहंकारो, मनकारे माणहूंअ खों॥
सचु ग़ाल्हाए सचु बुधे, सचु डिसे सारो॥
करे न कतर जेत्रो, दुम्भु ऐ देखारो॥
प्राणनि खों प्यारो, सचु ज़ाणे सामी चए॥

२९७०

मोह्या दर्स दीदार, आशिक अम्ली सन्त जन॥
रखनि न रतीअ जेत्री, सामी सुर्ति सम्भार॥
सदाई निधार, रहनि पहिंजे हालमें॥

२९७१

मोहे मुहिंजो मनु, सजण सिक सोघो क्यो॥
अख्यूं लिवं लाए रहियूं, तर्फ सारो तनु॥
भाएं कीन भलो बुरो, कुटम्बु कम्बीलो तनु॥
दुःखीअ खे दर्सनु, सुततु दे सामी चए॥

२९७२

मोहे सभि माया, जीअ क्या वसि पहिंजे॥
भवनि भौसागर में, कोट धारे काया॥
तन्जो लेखो नाहि को, जे जागये जागाया॥
सैल करे आया, आदी अन्भय घरमें॥

---

(१) सत्र ईश्वरु ऐ उन्जी रचिना सभु सति था चवनि, जीए
"आपि सति कीआ सभु सति, तिसु प्रभ ते सगली उति पति"

२९७३

मंझे तन तंवार, वज़े वेल सभकहीं॥
चङ्ग तम्बूरा केता, सामी साज अपार॥
अठई पहर अन्दर में, सन्दी प्रीअ पचार॥
कहिं कहिं मङण हार, सोझी हिन सरोज[1] जी॥

२९७४

मंझे धुनि ध्यान, अथी धुनि ध्यान में॥
समुझी दिसु सामी चए, तूं ईहो आत्म ज्ञानु॥
अविद्या जो अभिमानु, मिटी वञेई मन मों॥

२९७५

मंझे धुनि ध्यानु, अथी धुनी ध्यान में॥
समुझी दिसु सामी चए, ईहो आत्म ज्ञानु॥
पर्चो पेराठ्युनि सां, कढु दिलमों गैरु गुमानु॥
त अविद्या जो अभिमानु, मिटी वञेई मनमों॥

२९७६

मंझे रहति रहे, पाए ज्ञाति[7] गुरूअजी॥
लगो रहे लख्य में, कहिंखे कीन चए॥
मैलु विञाए मन जी, दुःख सुख सभि सहे॥
तदी सुखु लहे, सामी सुपेर्युनि जो॥

---

(१) सरीरमें ज़ातो (२) धयान में सदा धुनी हले थी (३) धयान कला सां तहिंजी जाण थींदी (४) इन्हीअ आत्मज्ञान खे ज़ाणु त धुनि छा आहे? ईहा आत्म स्ता ज़ाणु (५) पोइ अज्ञान जो मापणो मिटेई (६) सलोक २९३४ जी सागी माना (७) उपदेसु (८) वीचारम

२९७७

मंझे लोक लिकें, तूं पाणु न करें पधिरो॥
अठई पहर अजीब जे, मंझे सिक सिकें॥
चाकनि[१] मंझि चिकें, त पाण बधनी पटियूं॥

२९७८

मंझे शौक शरावु, सालिक ड॒िनों सचजो॥
पीअन्दरे मनु पत्यो[२], भुलो हर्फु हिसावु[३]॥
रात्यूं दीहं रबाबु, बा॒भण[४] ब्याईअ रे वजे॒॥

२९७९

मंझों[५] तारि तरी, आशिक चढ़िया अछते[६]॥
दीख्या[७] दाति गुरूअजी, हृदय मंझि धरी॥
सुत्ह थ्या सामी चए, ममत्व मंझो मुरी[८]॥
सटे भर्म भरी, पर्चो ड॒िठाऊं पाणखे॥

२९८०

मंझो सिक सचीअ[९] सां, सामीअ ड॒िनो[१०] द॒सु॥
ऊधौ ऐ माधो मिली चए, कढ़ौं पहिंजी कसु[११]॥
पहो[१२] पहिंजो पाणमें, पूरण पदमें पसु॥
त पोइ खाऔ खसु,[१३] मिली पहिंजे प़िरसां॥

(१) नौकिरी-शेवा-ध्यानु (२) लैथ्यो (३) खटिपटि (४)धुनी (५) प्रपंच खों छुटी (६) ऊचपदते (७) ज्ञानु-ऊपदेसु (८) निकिरी (९) पूरे प्रेमसे (१०) रस्तो ड॒िनो (११) घटितायूं (१२) वीचारे (१३) अन्तरि ज्ञाती पाए द॒िसु (१४) आनंदु-मजा-सुखु, पोए पहिंजो पाणसां लीनु थे

सलोक „ट,, खों „म,, सूधी

नः १६११ खों २९८० सूधी

जुल्द ॾ्यो

पूरो थ्यो

ॾिसो जुल्दु ड्रियों

# भुलिनामो भाङो ड्॒यो

| सलोकु | सिट | ग़लति | सही |
|---|---|---|---|
| १६३९ | २ | सभि | सभु |
| १६६८ | २ | जग॒दीखु | जग॒दीसु |
| १६९० | ४ | मखी | जखी |
| १७२० | ४ | पर्ची | पर्चीं |
| १७२८ | १ | दूरौ | दृरौ |
| १७६६ | ४ | रखी | रिषी |
| १७६७ | ४ | बुधी | बु॒धी |
| १७९० | ३ | निषदु | निषेदु |
| १८११ | ३ | च । | चए |
| २१४२ | १ | प्रम | प्रेम |
| २१६४ | ४ | साथ | साध |
| २२०६ | ३ | ज्रणिजि | ज्राणिजि |
| २२१२ | १ | पहु | पसु |
| २२३७ | ३ | स्बरूपमें | स्वरूपमें |
| २२४० | ३ | पची | पर्चीं |
| २२४७ | ४ | वाक | वाका |
| २२५४ | ३ | रुप | रूपु |
| २२७१ | २ | दस्याई | द॒स्याईं |
| २२८२ | ४ | निहारी | निहोरी |
| २२९९ | २ | लिचं | लिवं |
| २३०२ | २ | रघिननि | सघनि न |
| २३१८ | १ | सन्सार | सन्सारु |
| २३३७ | ४ | श्रधि | श्रुधि |

| सलोकु | सिट | ग़लति | सही |
|---|---|---|---|
| २३४८ | १ | बुध | बॖध |
| २३५१ | ४ | पचो | पर्चो |
| २३५३ | २ | जारु | जोरु |
| २३६७ | ३ | रंगुको, सिरु | रंगुको, नको सिरु |
| २३७१ | ४ | घिरी | घरी |
| २३८१ | २ | घरमें | घरमें |
| २४१० | ४ | सोकु | साकु |
| २४२७ | ३ | श्रोधे | श्रोधे |
| २४३० | ३ | श्रोधे | श्रोधे |
| २४७५ | २ | अन्द्र | अन्दरि |
| २४७८ | ३ | श्रोधे | श्रोधे |
| २४७९ | १ | भारी | भारो |
| २५२७ | २ | कया | कयाईं |
| २५३७ | ४ | आहिड़ो | अहिड़ो |
| २५३९ | ३ | रोज़ | रोज़ु |
| २५४० | ४ | ओदिरो | ओदिरो |
| २५४३ | ४ | श्रुधि | श्रुधि |
| २५४६ | ४ | जोए | जीए |
| २५४९ | २ | जनखे | जनिखे |
| २५५२ | १ | भाग्विति | भाग्विती |
| २५५२ | २ | रङ्गिली | रङ्गीली |
| २५५६ | २ | सामो | सामी |
| २५५८ | ३ | उपख्तु | उपरन्तु |
| २५५९ | ४ | सभु | समु |
| २५६० | ४ | ए | ऐ |
| २५६६ | ४ | घर्या | घर्यो |

| सलोकु | सिट | गलति | सही |
|---|---|---|---|
| २५६६ | ४ | धरे | घरे |
| २५७६ | २ | मटे | सटे |
| २५८१ | २ | धटि | घटि |
| २५९२ | १ | भारी | भारो |
| २५९६ | ४ | अमृत | अमृतु |
| २५९८ | २ | तहिंजे | तुहिंजे |
| २६०० | ४ | श्रुधि | श्रुधि |
| २६१४ | १ | भारो | भारी |
| २६२२ | ४ | श्रुधि | श्रुधि |
| २६३१ | १ | जहिजे | जहिखे |
| २६६० | २ | थ्या | थ्यो |
| २६६० | ३ | रिढ़या | रिढ़यो |
| २६८६ | ४ | अङ्ग | अङ्गे |
| २७३८ | २ | प्रिथिए | प्रीथिए |
| २७४६ | ३ | श्रोधे | श्रोधे |
| २७८२ | २ | वेठो | वेठा |
| २७९१ | ४ | हदमि | हर्दमि |
| २८१२ | १ | कया | कयो |
| २८१२ | २ | वेठा | वेठो |
| २८३४ | २ | चयो | कयो |
| २८६८ | १ | पर्षु | पुर्षु |
| २८८१ | ३ | बिहजी | ब्रिहजी |
| २८९३ | ३ | कल्याण | कल्याणु |
| २९०३ | ३ | श्रुधि | श्रुधि |
| २९२७ | ३ | श्रुधि | श्रुधि |
| २९४३ | २ | बुधायई | बुधायाई |
| २९७९ | २ | हृदय | हृदय |